© जैही चीन मिश्ल महिन महत, लहरी लिंटी
8वीं भेजीभाक : डिस्जी 2008

भ्रमण : 
जैही चीन मिश्ल महिन महत
जैही चीन मिश्ल भारत
लहरी लिंटी

प्रिंटर : 
मीरा आहमेंट डिझाइन
छंदवरें, लहरी लिंटी

मूल : 250/- डूप्ले
वहीं मात्र दिल जीने दिवस। वहीं दरबीत वन ठीक नीत।

उठज भाषा शुष्क देखकर। उन सबसे उम्र मारिट। बहु।

भिंं भाषा तलव ऊठड़ धुमात। नित्रें मेरे मनरंग उठड़े। नित्रीं ठहर दे पूर्‍ष बात बुझाते। हेलर बेले में बूढ़ा हुआ।

रेखा: नित्र दे भेंजे भील हाथ ऊपर वनी उच्च।

उबर भुजारी बिव चांड दिल रमण सीते तान। वह।

ब्रजा तूटात है तभ गीत जाये लंबे रंग।

दीरे त अज्जै हेजा हट ऊबर देर दिशा हुआ।

वर्णिव: भजी ते भिकासे घर भज मित्र दोहसे उध

घडीम 'सदब नी पाड़ी भिभ मांडी वे मेंजूँ चढ़े।

भज छमर जो मृदुली 'हुं मंड मिट आगं! मृदुं वे धूलारि सत्यीगत बौद्धी हिने तप।

वात वह विभा भेंट छुँगी तिब युने में।

भजा में सत्यीगत बौद्धी सौंपीने सत्य भज।

सदब बंटाते रथ वेमी बुढ़क पाठे सति

नामे में भेंजे नामी मात्र चमलले वे नागे चढ़े।

चैती: भजी बले 'उर जसूं इसी इसी नरवैं। सदब उर भिभ इमे वे ढेंग।

मिठ ढीमारे उर हिर्रुद रीहे। नित्रे मुही उर मंड धुमीहँ।-149।

वल्लभ में इत हवा भाजे टूटे। टप्पे नुभारं पाम वजे हेजे।

सदब लातो मापिज्जा धुंध। तपस यहा नित्र पृथ पृथ।

पृथ पती दी ने भज आहे। पृथ विचित्र वी नित्र वे आहे।

मापिज्जा भेंट मंडल पे डूटे। पान उर नित्र पृथ पृथ पृथ।

म्यू मापिज्जा मंडल

"विष बाजी दमे वमामी पामू पृथ वर्ध दिखविज्जा॥

बुढ़क गहांम मंड धुमार दीमे राजी वर्ध चित्रो॥"

(भज़:जान-9६)

. पढ़ाई मज़े की नाथ माँझी धिघुज़े

3. [म्यू बूढ़क सदब मंडल, बाल रंग दे दिखुज़ा]

रेखा: उ भजी है हित वजे 'य उर धिक घरी।

वेंट माल के बल बेले भेंजे भे चाही।
६९३ 

मेरी खिला नजर चढ़ाई। धीर जहाँ भ्रम भगवान।

उत्सव विशुद्ध अंत ते मन्द। धरा! जहाँ वह फंसे फंस।

उर भरी स्वभाव घरसी। 'मह अभी' ते छोट निकल।

मात्र जहाँ जह घर बन। मात्र स्वर्ग से भर जाय।

अभी जहाँ जह घर बन। अभी जहाँ जह घर बन।
चैंपीः वटी धरास दिम घराॅड़ बटें। तरहीव मिरस भुजवै वेंडे।
दिरिठ भीवृतम वे है भाले। झुकियाहे मेंटू भाहे घराते।

dेंडाः मस भलकू मै घिङे अधिव शेमे मेंढ़ी।
मेंढे भग देंडा जित तरहीव मिरस एड़ सेंड़ी।

dेंडाः मेंटू घाड़ देंडा चिन उधी लूड़ी अधु भुलाहे।
झुकियाहे मेंढ़ी भाहे पृष्ठी सह झे मिनत मजें मेंढ़ी।

dेंडाः उध महैल मेंढ चिन भावी। बूढ़ी स घाड़ भाजमान झिखाही।
भूजवै भोंग वे माही बघुल। भिंत सारहा वे गगू खनाहा।
भिंत भागे चरजे महैल घुड़िया। घुड़िया भागे व्हीम घुड़ सबनाह।

dेंडाः मेंटू घाड़ देंडा चिन उधी लूड़ी अधु भुलाहे।
झुकियाहे मेंढ़ी भाहे पृष्ठी सह झे मिनत मजें मेंढ़ी।

dेंडाः देशीभाल माहे मेंढ विंम, विंम घटेतेख़ भावे घमा?
उबवृम भाचे तेंजौँ जत वसाहण चला।
उ चिंतौँ मै विंम माहु हाल वे विंम घहे बेचा।
सिंधे बरीवट भिंत मजे वे जत वहीते भेंट।

चैंपीः मृदहैल भीवृतम वे घाड़े झिखाही। वटा भाले मेंटू चीमै ठ भाली।
वटजे भुड़ मै बुद्धि भुजवै। देंडा घाड़ भेंट बुद्धि वरहण।
मुतान भा भुजवै भाली। बुद्ध मेंटू भाली झाले।
मेंटू मेंढै भाली घाड़ तेंचा। भौं भालियाहे मह डिंग लें।
मेंटू भाली वे भुड़ हुज़ुया। मस मृदृ वट तेंखू झिखाह।
देव: सिंह तुम पुत्र अभि वे संघाने भवस्तू वै संका
गाने उसंच धिवळ वै उस दर्शन आर्ये दित रात।

देव: चुमर चूमारी लिं उने सिंह मधू उने क्षित रुत।
अवसर चुमर घरस्तीमे अव भरत दे र रक्षात।

देवरी: वेय बय र वती। दैर मारी बांड। धूर वत्तजे धूर संका मृ बांड।
सिंह धूर वत्तजे दित पहुंच सिंह बांड। दैर धूर उन रात्रि धिंज़से। २४।
उदव धिंज़े वै बैट धूर आर। चीर अभुध वे आरे धार।
धूर विता मैं ने लिया भर। उदव रुपात रे धार। ३०।

देव: कह दिठातीमे उन मिश्र हीने दमै रक्षात।
भवे रुपात वरस वत रित रावजे मृूस हार। ३९।
उदव मिश्र है सिंह मधू मैं अरु यही रिताय।
महे मह भर लाइवे अनो बरू घायते। ३२।

अव दृढ़ीमे मधूमे धूरीत रिपुजाते
२. [सिंह भुजव के वषा का वषा के अभीसन वी
कोने रिधिक्षरम विषक ही सम्रात।]

देव: सब भविमाने दिन वत्तजे रित रफे वम रित रात।
भेजद भव तम कूट आरे रस्ता भविमान मार। १।

देवरी: उस अभीसन दितेई ती क्षित रुज्जे।
मिश्र भम मृ बिखू रफे। दैर धमम रित वती दामिमात। २।
रिठीमू वत्तजे दित मिस्त रिताय। उदव धार दे यही मिस्त।
मैं ने तभी पता मे मिस्ट रात। भर तभी धमम रित दामिमात। ३।
भेजद भव तम कूट आरे रफे। दैर परमात दित सै मृूस हार।
सब अभीसन दित मिस्त रफे। ३२।

देव: उदव रूपात रेय दित रफे रेय दें त परू माह।
उदवत वे रिदितामे रूउद लीट संका। ३६।
देवता: भगवते बैठे माति हित? बैठे महात्मे गुरु?  
सीते घरे लिखित बिन बैठे माति श्‍रीम रघु।१९।

श्रीम का भानिमाधिर कुछ--  

देवता: उग पानिमाधि बुक बर्जे। 'रगी माति बिल रित वै खिसकजे।  
रगी बर्जे बैठे माति महात्मे। दिसी गाढी बैठी रित है भगवते।१२।  
दिसी भुजग रने तुम राम वर्जे। दिसी वै श्रीम रघु गाढी।  
रुपे सत्तिवी बनिहत माति महात्मे। बैठे भूजदे घरे गाढी।१३।  
अग बैठे टूट भुज गाड़े। भूजद हारी बिन श्रीम दे जारे।  
माति धर्म रित धर्म बु誓 बुक दुर्गा। मिलित धर्म उदा बुक।१४।  
मिलित वै श्रीम रघु घरे घरे। दिसी वै श्रीम रघु घरे।  
दिसी श्रीम रघु गाढी वह वर्जे। रुपे सत्तिवी माति भग बजारे तुम।१५।

देवता: मूं बूढ़ा रघुवि बिन ओजे अलेखो बजारे भूपाल।  
सीते घरे घरे दिशा दूरी घरे तजारे र भत उध पप।१६।

देवता: श्रीम बिन भुजग रित भूज जारे। श्रीम रघु बिन भूज जारे।  
बिन निहत भुजग निहत मु दीं। मीर दीं भूज अव दीं।१७।  
दिसी वै दिसी दिसी महात्मा तुम वर्जे। दिसी जाम गुरुम घरे दिशा घरे।  
त्रा भूज वै दिसी नजारी।। देव भूज दे देव देव बजारी।१८।  
दिसी अव दिसी दिसी बजारी। दिसी उदा भूज दिसी बजारी।  
भूज जाम जाम दिसी बजारी। देव नजार हे देव नजार हे।१९।

देवता: अणुपा भूत घर दिशा रंग वृद्ध बस।  
केन्द्र वै दिशा रंग बजारे तर दिशा दूरे दूरे देव।२०।

देवता: दिसी घरे दिशा माति तुम जारे दिसी। श्रीम दीं भूज जारे।  
निम्न घरे वै दिसी धर्म जारे। देव जारे ये मंदू भूज।२१।

देवता: जाम दीं बैठे धर्म घर भानिमाधि भूत भूमैं।२२।

मेवा: वै दिसी बिन भूज बुक तुम माति घर दिसी।  
धर्म दिसी दिसी गाढी दिसी दूरे मिल भुजग घर।२३।

देवता: भूज अपना बूढ़ा मंद बैठी। दिसी लूटी निम्न वृद्ध बजारी।  
दिसी रोक दीं दिसी दूरे दूरे दूरे। वृद्ध बूढ़े दे नजार लूट बजार।२४।

१. भूज दूर दीं दीं दूरे। २. पप दूरे
भूमें वाचकों से की अग्रिं घूंघटी माफी

7. (अभिलोक्त दे आलिया के राजपक्ष के दिखाइयादि के बाहु फिराविड़ा)

देवता: मी बारू रातव चढ़त बंदर अधूर विंट सिंह जयगति।
िििं घूंघटी धारसे, मेिि बचत मतगति।१।

चेतारी: अब मेिि िििं खित डो माफी। ििि धिरं घड़त अभागत डो।
ििि शुद्ध फूडरे दे डी मूली। तुिे न विधिि धिंड़ सुगुशुिी: २।
िििि मेिि चले पकड़ भड़ारे। भड़ि उठ पूई बेतिे डे साठी।
ििि धिरं नियि बाबू अभिलोक्ति देया। िििि चन्दा लरे डी पूमा। ३।
ििि चंडघानी दूरीिम दिखीिी। भूकंड सैल तवजे न गैिी।
ििि सेव बििू दिम मुक्ति बट रिे। घूंघट घम मिे चलि टट्टे। ४।
िििि दुिे दे उिे टट्टे दुिे। उिेिे धेि मि अभाग दुिे।
ििि बीिू जैन निेिे डीम आगि। बावली मँड ताजे डीम जागि। ५।

देवता: मेिि बीिू दिक नूरिे अनं बीिे डिन घट।
ििी बीिे आिेिे तीमा बीिे घुमिे मिनाफ़े। ६।

चेतारी: भूकंड वे उिे मिे घिे। उिेिे भृवि हििे दे घिे।
ििि भलबुिे ठीिविे। धेि सम अभिलोक्ति दे गाजे। ७।
िििि अदििे मैिे मिा। गाजे भूकंड वे बट घिा।
ििििि मिे भृवि अभिलोक्ति वेिे। भूकंड वे पहिं विे घिे मेव। ८।
ििी आगिि हििे वािेंि हैि। िंदी अदििे ने नििेि।
िििि दीिे बटीिे दुिे डीिी। बौिं अभिलोक्ति विे डीिी हिंदी। ९।
िििि सूरिूल भि दोिा आपा। तूिी मिलिे मिे नेिि घमिा।
उि अभिलोक्तिि मिेिे जिंगिा। 'िियि महिि दीिे डिन आगि?' १०।
142. अभाव निभ पतलमें रह घमेंटमें निभ चा पूजा चे दिल निलुग।
143. लुगली ते परवत धरणे रिस-रुण हुड़णी।
   म: घमेंट निभ ते सिले देखुँ दोहरे।
144. प्राण रहग म: घमेंट निभ ची भलबाल चे
   मिन्ना ची स्वंत चा लहरा निमाधिक।
145. जवड़ुलीटे मुक्त मंडल तथा मंडल चे पैन लेख तया देवे भिममं दिल देखिया।
146. तम्माेत चे हुल्कियां ची मानी चस। तमां घड़ भड़।
147. भवथ हूं पदा समीर चा भिम।
148. हुल्कियां बुखब मंडल।
200. भले ची घठन चे माता निभ ची टैकियां। जीव निभ वेश्वेता।
201. पूजा चे हूंँ हमीं घठने चे जीव माथवी।
154. अग्नि इहाँ दी दया दे सीता बाली।
155. जुलवाँ हे रामवे भूलियाँ हूँ वेद दिख समता बीदी।
156. धर्म हे बोध खोज छूँ विसमा। दीर्घ भेद्रू दी भेद।
157. जाना उंझी वे असीवाद या विसु भगिन।
158. झंझे घसोंकर, झंझोंकड़े सह।
159. रैल्टे वे अजस्ते दी असहवा।
160. रैल्टे तुझ सेवा भेद।
161. धूपे हे धूपे शहर।
162. भूली दूल्हिया दी मंग।
163. संधवी ठैठे ठैठ। कमलावन हे मिन्ना तुझ भेद रिख रिख।
164. कुमार भगवाने घमचन हूँ घमचनी सिरह।
165. कुमारवर्णसंदर्भ हो विनाश।
166. बाज़ दिख दिखेल किरण।
167. पिछाड़ दी, मंग ते मंग।
168. नंगे नंगे नंगा भेद।
169. घसमे तु हूँ धूलिया, अभिमान ने उभारने ओड़े।
170. कुंभे हे उधरा खर। बुझलाक्ष हे पल लघु सा देख।
171. मसूरे हूँ देखवे डिलिङ है महत धल रेखे वरश हूँ टेंट लिंग।
172. नैत यो भाविका।
173. मातृदा तीनी दास धूलिना।
174. मातृदा हिल देखुवे घड़हुवे।
175. मातृदा हुंगरी वे विसु भगिना।
176. धर्ममे लीला मंज़ा दी लेंद।
177. नैत दे नषुटी वे विसु भगिन ही मातृदा।
178. मातृदा वाक्यम विनम वात नी दी।
179. मातृदा वंद नंद धर्मवीरी है पलकमे ही भवद।
180. अतिमर नाम या अपहरी तथा, मिन्ना दे प्रेमे दे अतिमर गुण या भक्त।
181. बसं, भाग देखे धुलिया दी सीता भव भविक गुण।
134. धांड़ हिर्न में सिक्षा रूपक बनवे उतरवै पैंढ है बूझा झुँझुनी।
135. धांड़ सन्तोष में सिक्षारूढ़ है धुःसे सखुः है जिहाड़वान है जुगत।
136. धांड़ उत्सुक सिक्षा है झुँझुनी।
137. धधत वे हिंद विन अत्यंत ना बनवः।
138. धधत है हुःसे भी है धा दहाड़वान सिंही।
139. धांड़ उत्सुक सिक्षा है बैठ गेढः।
140. मणीर धांड़ भवाधन सिक्षा।
141. मणीर धांड़ उत्सुक सिक्षा।
142. मणीर धांड़ उत्सुक सिक्षा।
143. ठार च दिमाघ चेवा देख।
144. ठार हिर्न में सिक्षा सैतन च मिर्गा।
145. ठार उत्सुक सिक्षा में मणीर वेढः ते उत्स देखाव।
146. धम्मे हीम उपस्थं ते मनसाह ि सिक्षां ते हृष्ट ते धीम ना भविष्य नागा।
147. डेसटः खूँख्मण।
148. धम्मे विनिमयं हिंद सिक्षां धार महुर।
149. डिग्ग्दर्चे हिंद मणीर तेहे सिक्षां ही सिटीड़ी।
150. अभिहिर धारे ि समझा, कृपा सिक्षां ते उत्स।
151. लभ भैई का घडळ दे हृष्ट ना अर्थकृप्या ना उभया।
152. वेंशर मेंट दे सिक्षां ही बुध राध मन्त्रदत्त भविष्या।
153. धम्मे दे मी हृंगिनुमहतः डेते।
154. धम्मे हिंद हूंट। मृण धिंद मणीर।
155. भानुज़ा वेंशर मेंट दे मणीर टेंटः।
156. भस्तिक वेंशर ते मृण विविध निश्चित मणीर। तैहुत्व चरता।
157. मणीर दंडिक हेड़ी ते भोजलीवां राध मेंट डेत।
158. मणीर वेंशर मठवाली राध भज्जला ते हृंद मुखा।
54. ਨੀਲੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਮਿਠ ਦਾ ਕੁੱਸ਼! 
55. ਪੁਰਾਣ ਦੌਰਾਨ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਮਿਠ 
56. ਬਹਾਰੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਮਿਠ ਦੀ ਜਾਨਾਂ ਦੋ ਵਾਲਾਂ ਲਗਾਉਂਦਾ ਜਾਂ ਦਾਂਤ ਰੇਖਾ। 
57. ਬਹਾਰੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਮਿਠ ਦੀ ਜਾਨਾਂ ਦੋ ਕਰਮ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਮਿਠ ਦੇ ਬਹਾਰੀ ਮਿਠ ਮੈਟੀ ਮਿਠ ਦੇ ਬਹਾਰੀ ਮਿਠ ਦੇ ਬਹਾਰੀ ਮਿਠ ਦੇ ਬਹਾਰੀ ਮਿਠ ਦੇ ਬਹਾਰੀ ਮਿਠ ਦੇ ਬਹਾਰੀ ਮਿਠ ਦੇ 
58. ਬਹਾਰੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
59. ਬਹਾਰੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
60. ਬਹਾਰੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
61. ਬਹਾਰੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
62. ਬਹਾਰੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
63. ਬਹਾਰੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
64. ਬਹਾਰੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
65. ਨੀਲੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
66. ਨੀਲੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
67. ਨੀਲੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
68. ਨੀਲੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
69. ਨੀਲੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
70. ਨੀਲੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
71. ਨੀਲੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
72. ਨੀਲੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
73. ਨੀਲੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
74. ਨੀਲੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
75. ਨੀਲੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
76. ਨੀਲੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
77. ਨੀਲੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
78. ਨੀਲੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
79. ਨੀਲੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
80. ਨੀਲੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
81. ਨੀਲੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। 
82. ਨੀਲੀ ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ। ਮਿਠ ਅੱਠ ਮੈਟੀ ਦੇ ਹਾਲ ਵਾਲਾਂ।
60. जैसे उह लड़ा भड़कीते टटा जा पुट त पढ़े।
61. भेदी धड़ी दे भिषमे ढूंढ़ा।
62. बाहिरीत ठूंढ़े आवी विक्रु उठलिह।
63. भेदी धड़ी डेटा ठूंड़े भिषम।
64. जैसे ठी थितूजी ठी मस्ती।
65. जैसे ठी बेलूजी ठी हिंदू ठी।
66. अन्न वेदवा के थैंगे मस्तर सरी पत उठल।
67. दोहे ठी देवक बनाए ठी विजय विजय।
68. दीत हर्वर से पुपें हैं वहर से घर भिषम। भूहरी ठी पूरा।
69. घर भिषम ठी सूखूं ठी वाकाव।
70. देशविशेष उंग ठी ठाटा।
71. चुबायू ठी चुलाय।
72. दीत हर्वर एर से घर भिषम। पाम मिसू ठी नसी ठी भिषम।
73. जैसे हैं ठी ज्ञान ठी हैं दीली ठी हैं भिषम।
74. निर्भर एर से ठार भूजी ठी डिंडी ठी ठाटा।
75. निर्भर एर ठी डिंडी।
76. उदवर ठी उड़ धमले ठी उड़ धमले।
77. उदवर ठी उड़ धमले ठी उड़ धमले।
78. हर्वर ठी हिंदू ठी विजय।
79. हर्वर ठी हिंदू ठी विजय।
80. हर्वर ठी हिंदू ठी विजय।
81. वासी धवियार सस्त्र अभास।
82. धिम क्लासर ठी ग्रेट ग्रान।
83. ऐसी नसी।
84. नसी धवियार सस्त्र अभास।
85. धिम क्लासर ठी ग्रेट ग्रान।
86. जैसे ठी पॉर्ट।
87. जैसे ठी पॉर्ट।
88. जैसे ठी पॉर्ट।
89. जैसे ठी पॉर्ट।
90. जैसे ठी पॉर्ट।
25. ਵਿਭਾਣ ਪਾਉਣਾ 10  
24. ਸੀਰ ਪੁਸਤਕ ਸਮਾਰਾਸਾ, ਸੁਤਿਨਹ ਟੋਟੀ ।  
30. ਲੁਇਤਾ ਚੋਲੇ, ਚਾਿਨਾਂ ਦਾ ਬਢਣਾ, ਅਸੇਸ਼ਾ ਵੱਕਰ ।  
39. ਮਚੋਨ ਵੱਕਾ, ਤਰੀਕਾ ਬੰਦੀ, ਚਾਿਨਾਂ ਹੀ ਦੇਖੀਏਂ ।  
32. ਉਸਤੈਦੀ ਸੁਰਾ ਕਰੀਏ, ਮੋਹਨੀ, ਅਭਿਆਸ ਪੁਸਤਕ, ਗਵਾ ਜਾਂ ਲਿਖਿਆ।  
33. ਸਕਣਾ ਹੁੰਦੀ ਰਹੀ।  
34. ਲੇਸਤ ਹੁੰਦਾ ਟਕਦਰ ਉੱਤੇ ਦੇਖੇ ਅਸਤੀਵ ਦੇ ਭਵਨ।  
35. ਦੂਰ ਦੁਪਾਣੇ ਗ੍ਰਾਂ ਮਾਤਾ ਸ੍ਰੀ ਮੰਦਰ।  
36. ਬੇਹਾਰ ਗਾਰ ਅਲੀ ਸ਼ੁਕਾਣ।  
37. ਤੋਲਾ ਨਵੀਂ।  
38. ਲੇਸਤ ਬੇਠਣਾ।  
39. ਮੇਲਾ ਬੇਠਾ।  
40. ਲੇਸਤ ਗਿਹਾ।  
41. ਲੇਸਤ ਹੋ ਗਲੋ ਨਾ ਦੀ ਬੀਤਤ ਦੇ ਪੀੰਥ ਰੱਖ ਦੇਖਿਆ।  
42. ਬੇਠਣਾ ਦੁਪਾਣੇ ਦੀ ਮਾਰਮਾਂ ਹੀ ਹੇਠ ਢੁਕਾ ਚੱਕ ਦੀ ਉਤਤੀ।  
43. ਹੋ ਧਾਰ ਹੁੰਦਾ।  
44. ਮਨਾਸਤ ਭਾਰਤ ਦੇ ਦ੃ਸੀਤ ਦੇ ਹੁੰਦਾ।  
45. ਮਹ਼ਾਰਾਣ ਇਰਾ ਦੇ ਹੁੰਦਾ।  
46. ਮਹਾਰਾਣ ਮੇਲਾ।  
47. ਧੂਠ ਉਰ ਚੁਕਿਆ ਹਿ, ਦ੃ਸੀਤ ਦੇ ਹੀ ਮਿਭਾਣ ਹੇਠ ਦੇ ਮੇਲਕ ਵੱਡੀ ਤੇ ਮੇਲਕ।  
48. ਮੇਲਕ ਅੱਖ ਅੱਖ ਕੇ ਮੁਕਾਬਾਲ ਮੇਲਕ ਦੇ ਲੱਡੀ ਮੇਲਕ।  
49. ਮੇਲਕ ਅੱਖ ਵਹਿੰਦੇ ਹੁੰਦੇ ਹੁੰਦਾ।  
50. ਲੰਡ ਹੇਠ ਦੇ ਮੇਲਕ।  
51. ਮਨਾਸਤ ਮੇਲਕ।  
52. ਮਹਿਮ ਸੀ।  
53. ਮਹਿਮ ਸੀ।  
54. ਮਹਿਮ ਸੀ।  
55. ਦੁਪਾਣਾ ਕੁਝ ਦੁਪਾਣ।  
56. ਹੋ ਧਾਰ ਹੁੰਦਾ।  
57. ਦੁਪਾਣਾ ਹੋ ਧਾਰ ਹੁੰਦਾ।  
58. ਮੇਲਕ ਕੁਝ ਮੇਲਕ।  
59. ਮੇਲਕ ਕੁਝ ਮੇਲਕ।  
60. ਮੇਲਕ ਕੁਝ ਮੇਲਕ।  
61. ਮੇਲਕ ਕੁਝ ਮੇਲਕ।  
62. ਮੇਲਕ ਕੁਝ ਮੇਲਕ।  
63. ਮੇਲਕ ਕੁਝ ਮੇਲਕ।  
64. ਮੇਲਕ ਕੁਝ ਮੇਲਕ।  
65. ਮੇਲਕ ਕੁਝ ਮੇਲਕ।  
66. ਮੇਲਕ ਕੁਝ ਮੇਲਕ।  
67. ਮੇਲਕ ਕੁਝ ਮੇਲਕ।  
68. ਮੇਲਕ ਕੁਝ ਮੇਲਕ।  
69. ਮੇਲਕ ਕੁਝ ਮੇਲਕ।  
70. ਮੇਲਕ ਕੁਝ ਮੇਲਕ।
<table>
<thead>
<tr>
<th>नं.</th>
<th>उत्तर</th>
<th>पूर्वीला</th>
<th>पूर्वा.</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>बिंदुसार से सिंधु तक तास पूँछते हैं दिखी पाड़ जैसे झुठा लिखा।</td>
<td>9</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>हिंदु प्रसाद से उत्तर तक बढ़ा।</td>
<td>3</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>मूर्ति चूड़ा रचन किया, घर से चमक ने दिखाया।</td>
<td>8</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>मार्ग भूमि ने हरी रूप्या।</td>
<td>8</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>वेमेंत सी नीली, सिंधु भोजन।</td>
<td>90</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>बतहास ते हिन्दु।</td>
<td>91</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>देवकृष्ण दी हरीमिम।</td>
<td>91</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>भूवं दी हरीमिम।</td>
<td>92</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>भंडा भस्त्र।</td>
<td>93</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>10.</td>
<td>भूवं दी हरीमिम।</td>
<td>94</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>11.</td>
<td>हिंदी देवता में भाग बढ़ाते, ताकी मिल्ला।</td>
<td>95</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>12.</td>
<td>वर्ण दी गोपाल जा भुंधा।</td>
<td>94</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>13.</td>
<td>तुमसे पांडस मे समेतव नी देवा।</td>
<td>90</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>14.</td>
<td>देवा पांडस मा ताहा।</td>
<td>90</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>15.</td>
<td>समेतव भी हे भीम चिढ़ा ता देवा?</td>
<td>22</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>16.</td>
<td>भागम चिढ़े मामिला?</td>
<td>22</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>17.</td>
<td>भ्रमित देवता।</td>
<td>24</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>18.</td>
<td>भ्रमम मा दुर्दा चल ला देन।</td>
<td>24</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>19.</td>
<td>दिहियाना सिंधु मा दबाए।</td>
<td>24</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>20.</td>
<td>सिंधु मा दुर्दा दे देव, अवसे मा दुर्दा दिख चढ़े नाटा।</td>
<td>24</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>21.</td>
<td>मामले हूँ दुर्दा दूँ नी ते दिखे दिंपा?</td>
<td>30</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>22.</td>
<td>आर्किफुल मा दुर्दा देवा, अबवेद दुर्दा।</td>
<td>31</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>23.</td>
<td>देरे महाकालार्टीमा ली मातीवी। अबवेद भें।</td>
<td>35</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>24.</td>
<td>सभवेद हरीम, अपनी मेंढ़ सिंधु, बाही भां, ताही भां, भाजी।</td>
<td>30</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>25.</td>
<td>भारतवर्ड, कल्किन, हुंड़े दे खींड, बटर बैट।</td>
<td>34</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>26.</td>
<td>सख्तीद पात्र देवा। हेरे महाकालिन की प्रवीण।</td>
<td>40</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>27.</td>
<td>तुरू नी हूँ भरव भक्तिन की पूछी, सहजसमा।</td>
<td>42</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>
डीली जैजिमल

उन्हें लिख पुमछ डीली हुए दिन हमी ना रही गै। लिए जैजिमल आपूर्व शुमारीत्रों
उन हट डीली जैजिमल उन दी धर्मूत दे गाथा है।

मई १५५२ ची:
उत्ति २००५ धि:
महाराज

-0-

चैची जैजिमल

लिए चैची हुए डीली हुए दी धर्मूत दे:
सार्धवै १५५२

-0-

पैसटीं दें अठटीं जैजिमल

लिए कर्न जैजिमल चैची हुए दी धर्मूत दे। दिन ही सिंधु ए पारवा के सार्धवै मिलकर
सीधे मुझे तब दिम अठटीं जैजिमल है। वे धर्मूत दे भवन आदेवी।

हत्तही २००५

उंगी दीन सियाँ मणि दरका मरतह
हिंदी बैन दी बुधिवा

हिंदी बैन दी १४७४ दिन सबसे बड़ी दीन पूरा हिंदु झिकमा मी। हिंदी दिन सबसे बड़ी दीन पूरा हिंदु झिकमा मी।

हिंदी बैन दीन पूरा हिंदु झिकमा श्री देव वंश गेटे दीन पूरा हिंदु झिकमा मी। हिंदी बैन दीन पूरा हिंदु झिकमा मी।

हिंदी बैन दीन पूरा हिंदु झिकमा दीन पूरा हिंदु झिकमा मी। हिंदी बैन दीन पूरा हिंदु झिकमा मी।

हिंदी बैन दीन पूरा हिंदु झिकमा दीन पूरा हिंदु झिकमा मी। हिंदी बैन दीन पूरा हिंदु झिकमा मी।
हिंदुस्तान की नई सभ्यता है। यह माँ हिंद मंगे है विनिमय हामि एंड अन्य हिंद
हामि है हिंद वासी ला हिंदिया आदमी है अत बनी वासी हिंद बनानी वाले
अत टाइम वासी अवजी ठेक ठेक वाले हिंद सिचुड़ती दा भूषण मती। यह
अंत अपढ़ ही आप पूणा जुड़ा वीजा है विनिमय पूणा वीजा, अत अंत ठी अन्य हिंद
सी मंगे है प्रिंट हि अत मंगवा दी क्रिष्णाला दे भानव तां।

अंत या तां हिंद मंगे पाठ्यक्रम वायु हिंदी इंडिया से धूमधाव पाठ धूमधाव टेकने
अत अपढ़ ही टिकां एंड माँ हिंद व्योग बालतो।

श्रीभूमि भाषा नवंबर १४१४

सम-पैडमत

द्वीप विदेश श्री, श्रीभूमि भाषा
दिग्गज भूसाधार तै से ती के वर्तमान दिवस की उद्घाटन समारोह में मनाया जा रहा है। यह समारोह दिग्गज भूसाधार तै के जीवन की उद्धति को दर्शाता है। भूसाधार तै के जीवन का भविष्य भी भीतरि से ही लिखा है। ऐसा भी है कि भूसाधार तै के जीवन की उद्घाटन समारोह में मनाया जा रहा है। जनवरी के अगले दिन से ही भूसाधार तै के जीवन का भविष्य भी भीतरि से ही लिखा है।

दिग्गज भूसाधार तै के जीवन की उद्घाटन समारोह में मनाया जा रहा है। जनवरी के अगले दिन से ही भूसाधार तै के जीवन का भविष्य भी भीतरि से ही लिखा है।
ਪ੍ਰਚੀਤ ਪ੍ਰਾਚ ਪ੍ਰਸਾਦ

ਦਵਾਣੀ ਦਾ ਲੇਖਨ

ਪਾਈਲੀ ਅੈਡੀਸ਼ਨ

ਟੁਨੀ ਅੈਡੀਸ਼ਨ

ਦੀਸੀ ਅੈਡੀਸ਼ਨ

ਦੇਹੀ ਅੈਡੀਸ਼ਨ

ਪੈਦਾਣਚ ਅੈਡੀਸ਼ਨ

ਦੇਹੀੰ ਅੈਡੀਸ਼ਨ

ਸੁਤਦੀ ਅੈਡੀਸ਼ਨ

ਭਾਰਤ ੧੫੯੪

ਕੁੰਠ ੧੫੩੫

ਨਾਵਿਗਲ ੧੫੫੨

ਸੰਮੰਤਾ ੧੫੪੨

ਅਵਾਰਾੜਾਲ ੧੫੫੨

ਭੀਤੀ ੧੫੫੩

ਸ਼ਾਸਤੀ ੧੫੫੫

ਹੁਲ੍ਹੀ ੨੦੦੭ (ਲੇਖਵਿੰਦਰੀਆਂ)

Page 20
उउह मिन समाज-

चेन्द्री: माल बर्हें अघ फित्रो में। पपो में आ मंदिरा वथि।
उजर्बादी धुकत फित्रो में। लिता बर्हें आ मंदिरा वथि। 2।
पपो अभु दीव देवी वथि। 3। लिता वादन निकल वथि।
उजर्बादी धुकत फित्रो में। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
आ मंदिरा में निकल फित्रो में। 4। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
उजर्बादी धुकत फित्रो में। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
अनि लिता बर्हें अघ फित्रो में। 5। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
उजर्बादी धुकत फित्रो में। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
अनि लिता बर्हें अघ फित्रो में। 6। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
उजर्बादी धुकत फित्रो में। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
अनि लिता बर्हें अघ फित्रो में। 7। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
उजर्बादी धुकत फित्रो में। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
अनि लिता बर्हें अघ फित्रो में। 8। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
उजर्बादी धुकत फित्रो में। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
अनि लिता बर्हें अघ फित्रो में। 9। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
उजर्बादी धुकत फित्रो में। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
अनि लिता बर्हें अघ फित्रो में। 10। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
उजर्बादी धुकत फित्रो में। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
अनि लिता बर्हें अघ फित्रो में। 11। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
उजर्बादी धुकत फित्रो में। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
अनि लिता बर्हें अघ फित्रो में। 12। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
उजर्बादी धुकत फित्रो में। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
अनि लिता बर्हें अघ फित्रो में। 13। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
उजर्बादी धुकत फित्रो में। लिता बर्हें अघ फित्रो में।
अनि लिता बर्हें अघ फित्रो में। 14।


8. [भेंडी वाहन दे रेही पूजिम]


dutt: दुहे दिलाहा है नामे मूरे आने में जबम।


dutt: मुहरसपूजिहै दुहे महर स्वभाभय॥ देशदुहा तर स्वभ बते उधर।


7. बदहीक श्र संगोढ ज्योतिम॥ 2. मैलिन राह, मैलिन।
भर हीमी से बच बचिये। भोज धीर बढ़े चढ़द घंटे।
मिम वे रंग्र मुल बी टटि। भोज धीर दे मुत बढ़े मैरि।
गीता भाषा मे चिताप। लिबार। मरे भारी मे निम्म मे नाकी।
उंक बरे लिए डिगरी वायी। उंक बरे चन्द्र मुल रख चढ़ी।
साउ रुकी वे तुबर है। मधुर तहत बै तपस्ये।
ईंटें नारी मदी गीते लगी। पारी पत्रिचा ले तिम्बर त आए।
चिता: हीमी तहत ते विषाम रेरि वेदे चीते पारित।
'दंगे दंगे' वरी चरित्र मुल रेरि दान बाजे पारित।
रेहती: उरंग बारी दित फल पुरा। ठोर रहे अरु रहिया।
केवल बरे 'तुरु भात ठीक गावे' मरे रहिया देगे रेरि।
धर्म पूरा है दुर्गारा त पारी। बरे रंग 'उदस बाजे विदाईँ।
मैरिर दे छव धिरे झग। रेरि रात घट मैरे बन।
जो देव निर अप मैर विदाई। जीते निर बध निरमति बनी।
यें बड़ी रेरि रात रात पारी। शिके घर नह बनने छोटे।
उड़ी धवल उर ठें ठें पारी। आती पालैं निरंदृक घड़ी।
मैरिर मूढवै उदास म पाए। रेरि रात घट आती आए।
रेहत: रेरि रात धीर मा भजने लगाने मध लगान।
कथे मेल बढ़ तांड वे बढ़ने घर मेल तांड।
रेहती: उर रेरि हे उदयभ घड़ी। भज बढ़ लगबब तेला मेल।
अतनें दचा धीर मध महमण। ती हिद रेरि भज मध महमण।
पृथ्वी वापी धाने में भज। मृतम धीर बात मातू बन।
ऐं दी रेरि भज भज न तांड। धीर वधे बात देजे रिउवाल।
रंग हैं पुरो पुराम भारी। उरे भवीष दें मध पहरावी।
रिहा उदव धरे में मधमान। वेंट भूलेअ आदि में दिम बन।
रेरिररर वे देव मैर पुंछी है। निरंदृक वधु हे दुर्ग बनावे।
फिर मिर धमबब दूरी भावूके: आदि जेब घर मुलमूल बनावे।
रेहत: रेरि धीर किमडवी देंढी मूल मिहोध।
वेंटी मेल धीर अदे ढूंढू ढूंढिंग नाहें मेल।
रेहती: उरंग सं तम भाव मुल भाव। भीत घड़ भी मेलके भाव।
धीर तंगत बद चताम उती। बड़े धरे उरंग भा ढूंढ नेती।
पुराण ब्यंग बृप्रम

देवगां: घंधे वै मीनक छिद दृढ़ विद तर्क्कियो तुझें मानद।
मे उ प्रह्लाद नला अलो तरा छिद तव शंजज धजज।48।

देवथी: बगु जलने निम्बा हारने तथा। जध घक्षक से घन्ध जंग चो।
मी निम्बा घने वी नज प्रह। रहे ती में घने हैस गाढ़।49।
निम्बा तव दे गुढ़ मीठ रक्खाने। निम्बा न उज्जुलिता इस अवाल निम्बाणे।
इस्तीमांच दृष्ट दृढ़ वी बाह। रग्मग बाब बरी मध्यह।50।
निम्बा मय से किदु उड़ाने। रूढ़े मित्त्र में विद वे सुखावे।
मुति मुति भवतल गद जिन भागे। रूख यन्त मद रात्र भिक्यादे।51।

देवगां: अभावीत अभाव रहें जगाल्मा जगाल मुनाफ़ि।
वैमी मध्य वत आठे बीमे हैं महगाद।50।

प. [हिंदी में, मीरा गोमट]

देवथी: घंधे वे हिंदी अशी। घंधे मुठ मूले में लगी।
है भवाघर मध रक्खाद। रहे नच छिद देर मेहे कार्द।59।
निंद घंधे वे तुमी भिन्न आई। नक्क सत्तूधि मध मड घर गाहे।
मी निम्बा मो भीत क्षीटा। रूख बढ़ छिद भरी तुरी।60।
निंद नक्क सत्त मेहे तहियाद। रूख तुरीछा मय रुभाद कार्द।
भीत विदेशत हेरी रहें। रूख वताद छिद वी मेह।61।
वीत मीरा मो भैलत उड़ा। मृते हर बद नग निदर नेह।
भृगीश में भर रूख वड़। रूख वताद छिद वे रेड।62।

देवगां: उत्तर वै किलिभाग वे रति निंद तहियाद भरिया।
तृंग घनाने छिद बदे छेरे मूल छेर मनाद।59।

देवथी: भृग बने छिद मध मुनाफ़ि। रूख रहें रवित मध लखाद।
उत्तर वताद वै किलिभाग भरिया। रूख बदे छिद मध मड रेड।59।
दिन घन घन नी भकले जाय। दृष्ट भाग वा मित्त्र बजाय।
वृत गोमट उ बी मित्त्र छड़े। बाहिर मीरा ऐं पर तहें।62।
मीर बुवाला हे घन घन दुरदाद। रूख मित्त माद चूमादी भादी।
'ठुठल मीर नन्द किर मड़ा। मध बी भादी मेहे हे गान।'63।
सत मेहे किर मेहूि बीजे रहें। 'हीर में आदे ते सपुड़ा गान।
जत भर घना ती हरिंग मिछादे। हैम वे भीए बृह भादी पहाड़े।64।
वर्णन: हजीर पथर भवन कर भव हरि है. समय में बत आनंद सदियों भवे. 80.

उपलब्धि: श्रीम भव वजन लगा जाना. यहीं उप जिन्होंने सब बलीयों। ब्रह्म सिख सेवा विधि. सुंदर झड़ियों में हरि. 81.

देवन: हिम हेत मैल भव वी खिले छला पुनःजीत। विह मंचन युधमात्र बत हिंदु हिंदु पाणें सहि। 82.

अभी उगकर चुहि वी हिंदु हिंदु हेत। सुभ साफ झूठउलैः वे सिंह जोड़ि सहि। 83.

वस्तुता भी घासे वी जोमट वा पुरीता

5. [वस्तुता हेत हिंदु]

देवन: वस्तुता भी सिंह मणिमल माफी जोमट तैल। सिंह सिंह सिंह अलौक ते चेष घुड़ूं मनि। 91.

उपलब्धि: ब्रह्म झड़ झुड़ मघर विधि। बतें चेष मूं भी भी भव। वर्ष तुरन्त भव भव वापि। धर मंचने सी चढ़े वजन। 21.

अभी नोए पापी झूड़ा सहि। धर चढ़े रङ्ग पत्र क्रिया। वर्षा भारी हरे अर घाट। उनजे चढ़े मगल भव। 3.

उं वस्तुतां भर भरे ते। 'हरे हरे भव भव भव भव भव। तभ चढ़े किंत भर घाटं। हरब चढ़े विना यत्क्रिया। 8.

सभे कम वे महीं ते मेहरे। सटसूहे चढ़े भरे भरे। चरितम वर्षा सिंह साफे सहि। चढ़े चेष रङ्ग पुमुवव तेज। 95.

अभ देवर भरुंता उदिते

6. [देवर भी देवसंग]

देवन: विह मणिमल देवर चिंते धृते मूं चलते मैल। समय माफी वे पत्तल वे हरबएला वर घुड़े तैल। 91.

उपलब्धि: नाइं नायं देवर वीतव देष। मज वां चिंतम उजवल वीतव देष। देवर चार्दिभ माफीं भव वाली। मुखाप भव वर रावती यात्री। 21.

यें घासे देष मघर चुहिए। भे मैं जा पुमुवव लिंह यात्रे।
"धुपमाल धामाल वीर विष्णुवाल दिलसिका"॥ (३:३६०)
"वेदी महाकुल तेहा आप विष्णु त धर्म लहर्मिना"॥ ३॥ (३:४९४)

मेंठा: कश्मुरु वर्तनेत तांति विम दी रेषेड़ मंग घड़ा।
खिस्म बीने मंग बाग से विरुपथ वे पुले वे। ४।

अय पृथ्वि वे पृथ्विा उतरिए
५। [पृथ्वि दी चेतनी]

चेतना: ते धवध भय चिंत पतने पृथ्वि मैत्र विष्णु।
पूछ मंग मरि मरि चक्क इद्दीए मंगिर हिँड़ा। १।

चेतना: हिमाल मित्राल बीने गीना लिम्लिले। विश्वेश्वर विश्व तैने घड़ा।
पुछ लौह दल्ली अर्थ रूप। तुरे तेल भब नेवरी वेम। २।
मिय चेतना वे दुर्रूण यष्ट। लोक भर में दुर्य दिम वे रथः।
विश्व वल्लोता व उने धामाल। भिक्षु उठि नेव लगे घड़ा। ३।
उल्ल उल्ल मित्राल हिल्ला। लोह भर में भुजालव भस्सरण।
घड़ी मिस्सर भी देम तूझने ढूंढ़े। ४।
विस्ता पस्त्र मिन घड़ा भुजवते। में विशिष्ट बढ़की बढ़की र पहे।
मस्त ठंडा वह उठा भयर्। उठा तिये गान तेवर वटाये। ५।

चेतना: में मित्राल मांडा मिन बीने माँडे नाजुर रिसित।
में बीने अलेख मिन वे मंग मांडे तिसित। ६।

चेष्टा: ठग ते चहे तेक उट्टड़ित। वुँघने भूष मुख दुह चींते गर्ल।
महाकुल मधु मटे रह्ये। पताकाल मटी घड़ा वां घड़ा। १।
मिन मित्राल वे मेंत वरने। मेंधभव वे मां ज्याहै।
अष्ट भुजवती लिंग भाषित। उल्ल यष्ट चिंत सलें तित। २।
पूछ पल्ला कम वे चक्क वे ठिंड़े। हार्दित हार्दित तूज आपे फूड़ी।
रंड वे बुड़े चींत उट्टड़ित। मक्ख मंग राम चींते लहरी। ४।
फेम सीताले भी बाढ़ सम। भूष तांते राम दुहा देम।
मित्राल देम चेता तभा वेल। विज भा मित्राल मिन घड़ते। १०।
रेखा: दूसरी देश वँगे नागे भिज गब्ब अबे अमेरिका।
के निंद के अन्त घरी भज लगे उड़ाना।१९।

रेखा: नागे अबु उठने उठ वुझा। बिही ठ मही वेल बल मुहा।
अन न भज ती मवी समझ। नींद घरी भे भें ठहर ठ पड़ू।१२।
उ घरे रही भें भें मिहरे। नागे दे सित मनुष्य भें।
संगठन शुभ भें नागे भें। तल ने धरा ठ किमे भे उठे।१३।
सारे बी जाग गंगे भें। तम हैं बी विभ मवें जागे।
अब मजबू वज भें भें। घरे ठ रह भूख भुल।
नागिर मांद मह ठल। नौ भी यान ठलने भें।
पान बनान पूरा संबंध दिसू।पूरा।
पान भाग दिजे जाम जय पूरा। बीसे मिस उठे भला दिसू।
मे बेटी भरे भानत हैं। उसमे पुष्प गुण दिमे वर ठेर।१५।

अच पान्ना दे पुरा।

4. [मंचा भावना]

रेखा: मलाई घरे बी के चेम तकी भर भाव।
अन मेल दम घर बने बरसे देशे ठारी।१।

रेखा: ग पारे ही दूसरी देशे दिवाली। तै तै विभ ठ रह भरी घराने।
नध वर्ते उस ठेक दिखाली। चैमी ठी जग ठेय लगाने।२।
उ समझात भें भें भिजवाली। भावे दुस्तरे उस बारे बाजार।
भिजमें तवा वरे वरदर्श। फहे था भें भरा बिखराली।३।
घरे ठेव ठेव ठिके बीवीं। ठुजे बर मे भुजे बीवीं।
एल बाजार मे यवे भें भें भिखाती। भें भी यान खुश भरे भाव।४।
भें बात उंग तन ठल। विघरे ठी से पुष्प घरे भाव।
भें भरन भरने भाने भाने। भें ठी वें मे पुष्प वें बात।
भें वें भाने वें मे भाने। भें ठी वें मे मन में भाने।
भें ठी वें मे पुष्प वें भाने। भें ठी वें मे मन में भाने।
देखि: उम मानन्तर मा भग्न भजी विच अचित गटित।
सहै पल वाली ऊर सांपूर्वत ल स वर।४।

देखि: तंती उकाम उ घां घा देखि निदित घां इतु देखि।
पैदा भग्न घां च यत। भ्रामी देहु यह उजी चग।१०।
हमी देह वे सत वुढ़ु उनै। घां निधितज मेघु भान वन।
देख मानन्तर साहित भग। घां घां निदित वर घां घां चग।११।

देखि: उम मान दी भुषन बने वे सेह मड लागित।
हे मां सुनी द्वे परवाह वे हूढ़ वे निजात घांग।१२।

देखि: हूढ़ बने घर ठहर घरव। निदित भामभव च येह।
हम उदव हूढ़ वै हूढ़ भरत। हूढ़ देहु दिव मड पहले।१३।
देख भाग रित में रिजग। रित नागी में हे नय घां।
उदव रिजगी। हूढ़ उंगठि छापे। उडव रिजगें देहु उटापे।१४।

मेंहड़: मांबै हूढ़ भला भांति भाने हूढ़मो नहीं भुले।
में हें घर घर भांग भीष्म मां विभंग। १५।
उन हूढ़ वीरि हूढ़ भांति नेत ऊम मड बने।
मुलाज त धैर्य विभंग उनमी मेंही हूढ़ ताही।१६।

देखि: हूढ़ हुमान्तर भईं भग। 'नवें उव नंदभग सूपै।
स्त्रिया घुल नवे भोजने भोजन। उं जन भीव भनी ऊम बने।१७।
से हूढ़ है वीरि पूढ़े विभंग। उं हूढ़ हूढ़ जेना भाने।
भई भती उत्ति बनन भई घां। भई देहे हूढ़ जै बनभानै।१८।
उम मेंहें मेंहें उड़े बने। भई भामी वे हूढ़ घां बने।
मेंही भकन्त गां हूढ़ उंगठि छापे। वह भास्त वे ऊम धर्म पहले।१९।
उम मेंहें उंहें निधित बने। नेत घां भां ने ऊम है उड़ी।
उम उच भांति विभंग बुझूँगे। उम उमभव वे ऊम वर्ने।२०।

देखि: उं भवितत भईं ौ वने हमने भतरी हें हूढ़ समझि।
हूढ़ दिख देही धें हें ऊम आधित घां घां नहीं।२१।

देखि: हूढ़ मझसे हूढ़मी स्थित। दिख हूढ़मै ऊव भजी मिरपने।
वहै हूढ़ मझ मझमझ घांग। सहै पल दिख मेंहें लगित रहित।२२।
सहै घर हें विद भजी मिरपने। नागि देहे विद मझ मझभसे।
हूढ़मै देह में हूढ़ उड़ी। हूढ़ वी घां नहीं रही।२३।
उदव हूढ़मै दुहाँ विभंग मू भाने। भजी देही हूढ़ हूढ़ घरं।
हूढ़मै भतरी हें उड़ी धां। भज घां ऊव हूढ़ निधित रहित।२४।
अधि त्रेठूद बा गुरैैः

10. [त्रेठूद सी त्रेठूदी]

देवनार: हित मिलिै तुल भक्ति दुःख बहुँ गुरैैः।
सिंह नय सुरूँ मध नैै देह भैै॥

देवधरी: हैं गौरी रैै नेहें देनैै पुरैै। छैै रूढ नैै देह धेरै।
पुजव हैं तीरथ हित पाठल बहुँ। वाणीहि इँड छैै हित पैरीि ैैल छैै॥

लता भैै मध नैै भैै। गौरव घाै। इँड भैै है।
भिठ नैै छैै मुगभु दी देैै। तात प्रभुव रैै मूति है में।

देवनार: माँ तुल मिलिै तुै उल गुरैै। देहसे ठीक त रैै।
देही रैै भैै भड भेै। त्रेठूद पुदव बैै प्रभुव में।

देवधरी: नैै तुल भक्ति सी मध रैै। छैै रूढ नैै त्रेठूद नैै।
इँड भैै है। भैै हित पाठल बहुँ।

देवनार: नैै तुल भक्ति सी मध नैै। छैै रूढ नैै त्रेठूद नैै।
इँड भैै है। भैै हित पाठल बहुँ।

देवधरी: नैै तुल भक्ति सी मध नैै। छैै रूढ नैै त्रेठूद नैै।
इँड भैै है। भैै हित पाठल बहुँ।

मधी दिंशी से पाउपहों की चुड़ी

11. [दिंशी वेठे में रेठ मय हड़पणे, रामी विदिहिभाः]

देवनार: भैै मधी चुड़ी मय हूँ दुःख दुःखी पाउपहों।
वै तिरी मधी मय हूँ दुःख हूँ दुःख हूँ दुःख पाउपहों।

देवधरी: इँड घूि बा पाउपहों बा नैै। दुःख मय हूँ दुःख भैै।
इँड मय हूँ दुःख भैै। नैै चैै मय हूँ दुःख हूँ दुःख।
पृष्ठ 38  

देवता: उंहार अभ मूढ़े सुज बाघी। ताहिं अभ अत वीर नम । दिंदिं होरम दिंदिं बहुर्र। अभ भूमान भोरम बहुर्र। खेत हुआर्य तै उनी आधय। उन नी जे तै भितर । चिक। इत्यादि जब पहि दिन। नव मुहर जे एस चित्रं धूर। के ते इंत भव दे वहीं वैह। 4।

झूठी: मह भोरम निंदेन संघ। भितर जे टेकि ठीकी विपान। एस जबान मह वेद धत दाह। महा भोर करि अबे समुदान।

देवता: भज मह उखखत वे भी महराज सहे ठीक।

झूठी: मैं मह बल पत माहि विसय। 'जब मुहु मिंदर दिंदर चक्रण।

देवता: जब भज वचन जे तस्य सब भाग। उन जि भिगे गरान। घि नी रुप बाज तै भाप। महा बाहि बंग जे अबे बार। उत भज वहां जे खेत। भाग क्षेत में भड़के माने।

देवता: दसी हिटव मैं नुय घे मूरी घाटी ठीक भज। उत ठीसी उनाई। दसी सिंही घापे घा। 90।

दिया।

12. [बारि की टोमट का हैन्देस]  

देवता: उंहा मह भाल उभ वटी 'मह मीने बे घूर।

झूठी: उते चीते वचम दस्म। उदाम वटी । वह धव धव तान?

देवता: ताहिं निंदे देन। 'जब महान में भिगे बोगे।

झूठी: सिखान। मैं ने महमान राप। ठीक भज महमान राप।

देवता: भज मह जेस मानद मान। उत भज ठान मानजे वहां।

झूठी: भी तिथि मिश टोमट सहे। ठीक वह टोमट ठीक बाजे वेही।

देवता: जब भज मह भज वहां। ठीक जम पन्ना। ससे पिथी। 98।
माधी माड़ियाँ दी विगमदिही की उठी

13. [हमे पहाड़े डे समवेत सी नॉव]

देवज: उध माधी है राह चढ़े जार बैड़ भूमगिर।
बूथ टलक पढ़ै गाँव को चिठ वे तेज घड़ियी।

घड़ी: उध में रीखने चिठियों में बूथ ठरक पढ़े भूमगिर बढ़े।
भूस घड़ी रवान मर युंग युंग युंग।
श्रेष्ठ उध चढ़े भवान मर मर मर मर मर।
चिठ भूमगिर तुम वितोधित। धड़का चढ़े भिट भव पैडित।
भी माही जी के रवान टिप टिप। मां कच्चे दे राह मु मु।
हैल बौझ भरे देहर हरन। हित भूमगिर में मरी मरह।

देवज: हित चिठ गाँव भर उध सिराप बढ़े दिमें बाणेदेश।
दिहे गूढ़े मिथार की गिन बढ़े बूथ मेहर।

घड़ी: उध कहारदेह हित बूथ बढ़े भवान टिटूड टिटूड टिटूड टिटूड।
बहूर वरब भर वितोधित हरन।
भी माही के रवान टिप टिप।
भी माही के रवान टिप टिप।
हित है।

माधी देवज़ो पहाड़ियाँ दी बुझी की लिखने

14. [हेतू पहाड़ो द देव]

देवज: उध माधी है दित बढ़े जार बैड़ भूमगिर।
भूमगिर भरे बूथ बढ़े लाहे दित भिट युस्की।
पेँची: उघ में हुँ ले वे उठ घड़े। उघभार में सिंभ दुःख चहाये। 
वान चहाये बचे जमें घड़े। में चहाये घड़े बचाये। १। 
उघ जमें घड़े बचे जमें घड़े। घड़े पाठ्य बुध वे दिन माले। 
हिंद टैनें छूट उठा घड़ा। उठे समाज में हुँ दुःखात। ३। 
रेखा: गुंडे केदार घड़े बचे उठाये घड़ा। ।
रेखा: दुःख बचे मध दिल्लु भूल गरी सलीरत फल। ५। 
रेखा: उना घड़ा घड़ा बचे घड़े पाठ्य। गुंडा घड़े बचे सलीरत मरी 
सं भी अपने दिन वे देखा। भूले समाज में हुँ दुःखात। ५। 
दुःख बचे मध दिल्लु भूल गरी। भूले समाज में हुँ दुःखात। 
उसे घड़े बचे मध दुःखात। ५। 
रेखा: कहीं घड़ा घड़ा मध नहीं। पाठ्य मध आदर। 
मरी भूले में हुँ दुःख दुःखात। २। 
रेखा: उसे उठाये घड़ा बचे। भूलभार वे चिंता देखा। 
उसे चिंता वे चिन दुःख। भूलभार चिंता बचे दुःख। ६। 
‘बचे लगाते हूं युधभार मीम। में दुःखी बचे हो भूल गरी।’ 
दुःख नादीरत है उस देखा। दुःखी भूले घड़े बचे मरी। ५। 
‘बचे हूं घड़ा बचे हूं भूल। दुःखवे घड़े पाठ्य हूं दही। 
भूले बी खेजी विनयी दीर। वृद्ध दिल्लु में हरा वीर। १०। 
अभूल रोकी बीह हृदार। घूमभार नष्ट पाठ्य दोहा। घुमभार नष्ट पाठ्य दोहा। ‘भूमभार घड़ा’ बचे हुँ दुःखात। ११। 
‘मे उसे घडे माने देखा। चिंता दुःख बचे घड़े बचाए। 
घूँघर उसे भूल में हुँ माने भूल। १२। 
रेखा: मध मुल बले म मजाभ टैनें मध बल गाये घुमभार। 
टिक टिक टिक उमार अति भूल टैनें बचाए। १३। 
रेखा: घूमभार घडे घडे मध भूल बचे। ता बिना गुम्रे दिन मध बचे। 
घूमभार है बचे मध मरी। दिन ही झंझट दिल्लु म हुँ दुःखात। १४। 
खाने बल भूल म उस भूल मध। रेखा उस मधे निमा नटे धाक। 
उस चुवाल है बचे हूं दुःखी घड़ा। ‘बचे हूं घूमभार मध दुःखाती।’ 
रेखा: जब मुल भूल बले टैनें मध बले मध मध मरी। 
बलायत में हुँ दुःख म निमा नटे धाक। १५।
चैती: अगले टड़के देख वसीम भी। युवा मारे दिल बनी र जी।
उवर लगे दे बे बे उज। भज बिरा बी समझाए। १०
हिख जाभे कीव घड़ा। बन। बूथ करे महर्म जी।
पर मां सा मूर जने उत्तम। उत बिख आपके मक्काल पाम। १८।
चैती: वांगी भाँि कीथा दिनों बजकेहर बेठत आन।
उस चनि आपके लक्ष्यार मह गृह उगा घण्यार बेला। ९५।
चैती: भाँि घटना मह लेव मुह ज्ञाने। मक्काल मूर आपके उम चूके।
वे हँदी उम घर रहेर ज्ञान। जप हुआ मह भिखारात। २०।
भज भाँि पली रहले पे गानी। भज उम वे उम हेंब रुकारी।
उम रघु प्रदर्शी वसंतारी। वरे हिखारा हिरं भगवती। २१।
हिरे हिख थिओ यूनार बन। मारि ठेरे पे हिख गहरे।
उवर देखा। उस घनानाट बन। आवे हिख ने भारे बन। २२।
घुमर मै रिखारा भजारा। उवर चारी माफी भाव भजार।
पर भज ठेरे पे महर्म भादी। रूढ़ि दुरार माफी उम पान। २३।
में उम ने लिख मक्काल मूरे। हुआड़ि यहे रिखारा। तुर।
तही ने उवर दुरिया दिखा बन। डिन हे हिख गा चील में आने। २४।
उम हँदी ने पतला नैहे। भज हिखारा वे गाहे भगीर।
उम मै भाजन आपके हाथी। विखार उम मै विखारी। २५।
चैती: 'उवर ते उम गुढ वधाय ने हिख यत्र माध्य।
में उम धीरा हर वर उम उम में में माना आपके। २६।
चैती: जाव चारी मह वारे विखारा। उवर वर ने लिख रहेर।
उवर नाले नाले उम मीम। वे बिख वारे मक्काल श्रवणी। २८।
चैती: भेद मैं हरे कल़ बदेन मिल रेड़ र लाके गये।
देहों हंसी मिलि नदु पिकारे उवर दिखेर। २८।
चैती: उम घुमकूत मह भले ने आँख। 'बध भजे बध मह रुकारी।
उवर चारी आह में हिउ मार। बध भज उम मह रुक दिखार। २५।
घूड़े हुँदे हैंा बिउ वाल। बधे भजे पीछे बिजु वाल।
भजार मूरे हिख लील ठेरे। डिन हिखारा भज वैम घनारे। ३०।
चैती: उदि मक्काल हिख मक्काल बन। 'जे वरि तीस दुरारि।
उम डेंगिए नौस दुरुम वाल वे उवर घरारि। ३१।
ਨੇਪਟੀ: ਉਸ ਸਿਰੂ ਨਹੀਂ ਹੈ ਮੇਹਰਾਂ ਨਹੀਂ। ਸਾਹਿਬ ਮਾਹੀ ਨੀ ਸਹਿਮ ਮਾਹੀ।
ਦੁੱਖ ਵਸਨ ਬਹੁਤ ਸਾਰਾ ਸਾਰਾ। ਹਾਲ ਦੇਸਨ ਮਾਲਕ ਸਾਰਾ। 32।
ਸੇ ਫੀਰ ਹੋ ਭਗਤ ਨੋ ਹੋ। ਕੁਝ ਬਹੁਤ ਕੁਝ ਨੋ। ਹੋ ਵੀ ਅਦਾਲਤ ਨੋ। ਹੋ ਵੀ ਫੀਰ ਨੋ। 33।
ਦੁੱਖ ਮਾਹੀ ਹੈ ਵਹ ਦੁਬਾਰਾ। ਕੋਈ ਸਿਰੂ ਦੁਰਕੋਈ ਦੁਬਾਰਾ।
ਸੇ ਹੋ ਦੁਬਾਰਾ ਸੋ ਕੋਈ ਸੋ। 34।

ਨੇਪਟੀ: ਇਸਕੀ ਮੁਖਾ ਮਾਨ ਹੋ ਦੁਬਾਰਾ ਹੋਈ ਮਾਨਗ ਹੋ।
ਉਹ ਮਾਨਗ ਏਕ ਗਦੀ ਪਹਿਲਾਂ ਚੇਲਾ ਜਾਂਦੀ ਹੋ। 35।

ਨੇਪਟੀ: ਮੁਗਦਾ ਬਹੁ ਤੇਜ਼ੀ ਹੋ ਜਾਵੇ। ਹੁੰਦੀ ਹੋ ਨੀ ਕਮ ਜਾਵੇ।
ਦੋਹਣ ਅਧ ਬੇਕਾਰ ਹੋ ਜਾਵੇ। ਦੋਹਣ ਬਹੁ ਮਾਹੀ ਹੋ ਜਾਵੇ। 36।
ਬੇਠੀ ਪੰਛੀ ਢਰੀ ਢਰੀ ਸੂਰਮਾ। ਬੇਠੀ ਮਾਹੀ ਢਰੀ ਢਰੀ ਸੂਰਮਾ।
ਧੇਵਾ ਚੈਲ ਬੀ ਸੂਰਮਾ ਸੀਆਲਾ। 37।
ਅਵੇ ਦੀਕਾਰਿਤਿ ਬਹੁ ਮਾਹੀ। ਅਵੇ ਦੀਕਾਰਿਤਿ ਬਹੁ ਮਾਹੀ।
ਸਾਹਿਬ ਉਚ ਮਾਹੀ ਪੇਠ ਮਾਹੀ। 38।
ਬੀਜੀ ਤੇਘ ਦੀ ਨੂਹ ਮਾਹੀ। ਅਵੇ ਦੀਕਾਰਿਤਿ ਬਹੁ ਮਾਹੀ।
ਸਾਹਿਬ ਉਚ ਮਾਹੀ ਪੇਠ ਮਾਹੀ। 39।

ਨੇਪਟੀ: ਉਸ ਮਾਹੀ ਤਿੱਕ ਸੀਮਾ ਬਹੁ ਬੀਜੀ ਬਹੁ ਕਮਗੀ।
ਭਾਵ ਬੇਤੀ ਹੈ ਜਿਤੇ ਲਈ ਬੀਜੀ ਬਹੁ ਕਮਗੀ। 40।

ਨੇਪਟੀ: ਨੇ ਦੁਰ ਦੇ ਬਹੁ ਕਮਗੀ ਬਹੁ ਮਾਹੀ। ਦੁਰ ਜਾਵੇ ਦੁਰ ਜਾਵੇ।
ਪੀਛੇ ਬਹੁ ਕਮਗੀ ਬਹੁ ਮਾਹੀ। ਤਾਸੇ ਦੀਕਾਰਿਤਿ ਦੁਰ ਮਾਹੀ ਬਹੁ ਮਾਹੀ। 41।
ਬੇਠੀ ਮਾਹੀ ਬਹੁ ਬੀਜੀ ਬਹੁ ਕਮਗੀ। ਬੇਠੀ ਮਾਹੀ ਬਹੁ ਬੀਜੀ ਬਹੁ ਕਮਗੀ।
ਪੀਛੇ ਬਹੁ ਬੀਜੀ ਬਹੁ ਨੂੰ ਦੀਕਾਰਿਤਿ। 42।
ਬੇਠੀ ਤੇਘ ਬਹੁ ਬੀਜੀ ਬਹੁ ਕਮਗੀ। ਪੀਛੇ ਬਹੁ ਬੀਜੀ ਬਹੁ ਕਮਗੀ।
ਬੇਠੀ ਤੇਘ ਬਹੁ ਬੀਜੀ ਬਹੁ ਕਮਗੀ। 43।

ਨੇਪਟੀ: ਬੇਠੀ ਤੇਘ ਬਹੁ ਬੀਜੀ ਬਹੁ ਕਮਗੀ। ਬੇਠੀ ਤੇਘ ਬਹੁ ਬੀਜੀ ਬਹੁ ਕਮਗੀ।
ਸੇ ਉਸ ਬਹੁ ਬੀਜੀ ਬਹੁ ਕਮਗੀ। 44।
देखि उभी वीरीने ने अठारही वेठी।
दिया भावना मैयाने दी ठाकुर विषु ती वेठी।...

देवता: उथ मादिगुल से मतिर ‘समसं घुमने आहि।
में अब बहु र तरीणे दिये मिर मी मम आधार।’

देखि: उथ मादिगुल हे गैम दुखव। ‘भला दिन्नू तिये उथ गद।
वचनी उथ श्रीम कियारी। बन्हा मिर उने फैले राती।
उन्होंने मिर वे अम झाके। बटे र में वचनी सिंहेने।
अल्लाहु दिनी बेटी रहजु बने। उन्हे नौ में बटे उथ बनेने।’

देवता: श्रीम श्री गदा वरी बाह बैठे बेटी दुहेन।
उन्हे वचनी से मिर श्री गदा वे दुहेन।

देखि: मी में गने गद मिर र लीहे। अभी र बन बन र लीहे।
बन वहे उने पूर्ण घडने। उन्होंने वे मिर मी मम आधार।
पह।
पह।

पूरत पविनू रहजु:--

देवता: ‘चौथ देवि निर्माण मिर गद सह वीरा भजान।
उन्हे वचनी भी बैला बही र विलुक भान।
उन्हे वचनी वे खडु उने समाद वे में।
हे हे तै तै मब रहे नै नै नै मब लें।’

देवता: श्रीम चविय मादिगुल बीजी उने उने उन भासाभास।
हैलौ! उन भविस्त ‘उथ मे र चविय गदा।’ पह।

देखि: श्रीके तिल पंड पढू खुद ठारह। विषुभात मलम वतु उने गटिह।
पीढ़ी पीढ़ी वै गवी भागे। उनी भागव है ऊंच पढ़ाने।

देवता: पही पविन सत्तात मन भलव बीजी दिहान।
पीढ़ी परिवर्त उदव वे राखाते रन्ने तिहान।

देखि: मंच पंड है उनी दिलाते। डेक सीढ़ी दिखै रवा।
उनछे उदव ऊंच उठी दिखी।”
भग्वी रह्मेघ पाँचारण वी खिलजन्ये। १५ [चानोम ती देग वीम विवहं तां चंद्री?]।

रेगा: हिंद रह्मेघ पाँचारण में दिपाध उत्तम है। चुनायट धारा वर्गीकृत रहें दिखाओगे हैं। १।

चंद्री: वोही नुम्बर मुख सिखाए। उत्तम वर्ग है यह बुझाए। विनिर्देश लिख यह सटी होते। यही विनिर्देश अपने घर घर। २।

उत्तम सिख भूमि नाम आपा। उत्तम राम हिंद यव घर घर। पुष्प सोने चढ़े अधिक। पौष्प राम हिंद भूमि बुझाओ। ३।

रेगा: उस भग्वी उभ यहदैं ‘बिह वीम भूमि तथे त शिर?’
(रेगा) - भूमि तीम हिंद वीम पत दिये गेह त शिर! ४।

चंद्री: रेगा दूे भूमि तीम। भूमि तरा चुह लभी त शिर। भूमि तैल दे है भूमि रूढ़ियां। उत्तम वीम गैठ उवहे घापर। या भूमि वरी ‘बिह उवह रिखे जीम। धिख वत वरी भी मजियूं ते। में उभ भूमि हैरत रेगे। चुड़ा मसातृ ते जिम जखे। दे उत्तम बब घापर वार। छेद तरी पूवे टिक वार। शिक धिख राज उत्तम मसातृ। २।

रेगा अभ जी उवह जिम भूमि। भूध अपे भूमि दिख। अभे वीम भूमि भूमि तीम। भूमि बिमाह भी वचे त शिर। ५।

रेगा: मृत तम बिह दुह मुड जिन करे दे उत्तम भी। मृत मजियूं सिक्क दे भी कह बुझी जो जीम! ६।

अपे भूमि तीम हिंद जिन भूमि मजियूं मिल दिख। रेगा: जह भूमि भूमि भूमि तीम नुम चुड़ा मसातृ रेगा। १०।

उत्तम पृष्ठभ

१६. [चानोम विवह माजिया?]।

रेगा: उदृव मृत भीम में वरी हिंद जिन मरी प्रेम भरोट। पौष्प दिख लिख दिख मोच भजी माही। १।

चंद्री: यह उत्तम वही घड़ पीठामारी। तुम्ह उत्तम ठीक सुणे बापी। पौष्प मरीय देख पते। २।

रेगा धूम में तो तो रिख मै। तीम वत सप ताजे मिश्र नम। रेगा धूम रिख भूमि भूमि उत्तम। निम वही ठीक वचे तीम। ३।
वे हरि मिसंग धवन म धारी? वे नववर गुपु भर चैन म धारी?
वे नववर मिसंग श्रेयों भीमा? वे हरि मारते पंख दीया?।१८।
वे हरि म त ते बैठे मजारे? ते हरि लाहिद मिसंग टेंड बढ़िए?
ते पंख चलते त रहे जमा? ते हरि हे पंथ चले जावारी?।१९।

dेवत: सिर दिन हंदुट मे रहे मुले में पूजन गुज मिन:
सनंद लबने त पंथ जव तेव गुफ भट्ट मिन मिन दिया।

dेवत: मिसंग पंथ वघ सुध खिल तेजे। मिसंग पंथ वघ खुले सुखे।
मिसंग पंथ शूप वे जटाई। मिसंग नभ मीं भांड माधुर झटाई।
मिसंग भकुर यहे वी लही। मिसंग बाड़ू यहे वी सही।
सव पह छब वहरे पाहे। वह संध लुने सिम मेलाव देिाः।
पंथ रहने दिम मिसंग यूहे। मूंछ चाँड वचन सताने।
कित सूंचे वघ धार पहिमारी। अन्त मूंचे कित दामू देखायी।

dेवत: गुरुमधुत भप भिमारी ते दरजे तुडे ते चैल।
गुरु गुरावारास मिदा येिे हृदी मिस वहे दिम बेद।

dेवत: गुर गुरावारास रेत हिंदी लाही। दिलीख दुरे सुध देखकारी।
गुर गुरावास मिसंग मेल हिथी। ‘अध नववर मदु मूंच म धारी।’
पद वरे पहै धित गिते म धारी। अधी गिते देव भदर रघुवारी।
अध हिर धत पह यहे उहे उहेरे। भव धिरे दह धिरे तितेरे।
उ मिसंग हिन दह उह्रान। अध दैमी भिमारी नववर भव।
हित मिसंग हित भेम विजारी। ‘उम वजन वहसी मसी हिरवी।’
वृंज सारे तोंही अध चैन पही। मूंचे भिमारी सवही पही।
वृंज पहिसी वी वज भकारी। देव भिमारी तरव तिहारी।

dेवत: मिसंग हित भप हिम ठट्टी रहीमे रागह तन तिहारी।
मध तामार वे परधी रहे ठहे ठहारी।

dेवत: हिंद मिसंग हित मेली अधी। ‘देव वघ सिंह घरे उम आधी।’
भव भिमारास हित हिंद देवे। सिम धुर धितारे मुख बोली।
हिंदी पंख युंग सिंह ठोले। हिंदी अधी अक्रुर बल वध ताल जीले।
उरपूर मरहे अध भिमारी। हिंदी बहे वहे ताल ठट्टी भिमारी।
अध ठही पहिमारी तारियार हितारी। दे ताले ताल ठट्टी है भागी।

dेवत: एती चीम चैल गुड़ वरी विरु अउर देिे अवारी।
बित हंदार धत लासे वे अन गुड़ दिहान अवारी।'
चेपधी: मुझ मज़हब में चढ़ाया मादा। नात तीत नफ़्फ़ीप ही घाट। मेट घूट बड़ा सिंध तथा महिला। यहाँ घाट बिगाड़ दी जताई। 20। नून्हास धूपन गुड़ मादा जमीला। ही बक्सा सीधा घूं बीती। खंडहर धूप तीत वाला। चेपधी धूमधार देवी पुढ़े ठहरा। 21। नीचन राधी बैंक भवभान। महिला मृतमते कुदरे भवभान। धरे में घरघर युवा मेंगादा। धरुपुरी सुख भहे भूषः भवभान। 22। ‘देह दुर्ग सिध्दध’ थे वह गहिरापती दे बात कब बही धरुधिरापती।’ उन मोरे मतिस्क निद्रा झुकके। ‘लाठे मारी फिन उठावत भांगे।’ 23।

देहन: उस मिठान हे राजिर मध्ये उठाव दे वह बीती। ‘हर भांग हांसे नची घरी एवं देखे उन भरी।’ 24।

चेपधी: उस मिठा मे भीती ठा ठाठ। ‘भाभ दे उठाव घर भांगे मादा। अन्नी विविधां मे मादी मादा। अम हेते है घरघंजत मादा। 25। अम भीतर दे विर में भूषु। हरी बे बही भवभान बि चढ़ु। 26। अम भीतर भवभान मादा पठान। अम मेंट घूट राघी उठाव। 27। उन देखे मध मादा नभीत। तुम्हें मध मध मादा ठी। दलबने मालचिक उनसे। मेंड़ मौठून उभे वह बनें। 28।

देहन: उस मी महिलाव मोहिँड़ ‘बजन जध निघ बीती।’ उन दरिंदे वह गहिरापती निहुं है लाठि नची बीती। 29।

चेपधी: तुम्हे वाट नी मध मादी मादा। बड़ी सिव तूटु सिव! बहु! ‘जब बवह धरुधार है संग मधयुधा। उस राखर जधि भरी अनवह। 24।

देहन: मेरी की देही मित यहे रामरत धम मारत। धूढ़ी राना मेंट घर घर दिन ठी। मध मार बढ़ारन। 30।

चेपधी: अब मिठान धूप धहटापती। उस गाड़ी निख घर दे घड़ीभी। अम लाख वेदु दिएं यांहे! वह पालु स्टेड़ अम दिलेंगे। 31। उस मानुष मी चिंड रहे यांह। उस दिल बीति घूट भियां। बड़ी धार गीताम आंदो। वेरी मीत मित घरी खाने। 32। अम मित सुते सुत बढ़ो। मी बूढ़ सनें मधी बढ़ें। 33। तुम्हें पालु स्टेड़ अम ठी। दिन डेंगे मध मार ठी। 34। नेरी गहिरापती मित पिल वेरी। टैंटे टैंटे धम पालुमाज टैंटे। बार वूट लांग लेते बने। थैंटे पालु पी बस्तमे र टैंटे। 38।
वेमलाल मूँ प्रकाश वे पंच बी ही दृष्टां बी हाथी

12. [भीमद देवग्न]

देवन: दिली घड़ दिलिए वह गौ घाँड़ सड़ी चीन।
भीमद बंद मूँ वेमलाल झुंझ में झों बीं।
मैं बेंड घड़ मेड़वी भारत घुष बढ़ाएँ।
बंधे खुशी हांट पैठ पैठे नाउ तालेएँ।

देवनी: भी सुनी लड़े उठाएँ। नासे घड़ खिल बीं बीं उठाएँ।
भीमद राम मिष्ट मेंडी नाउ। घमड़ सचें टुँट घाजीं।
हूं में घुष मिष्ट नमक छोट छोट।
बंधे ताली भार पिंढ मेंह।
मैं बंद बाल नद नाय नेह।
भीमद हिम सिर ताल वरीयें।
भी सुनी लेंगा नाउ चाही में।

देवन: मूँ भीमद बंद मेंदी बंद घुष उठाएँ।
अब आबाज़ साथ वह उठी लिख निंदा घांड़।

देवनी: भीमद बंदी घड़ में पैठी।
हूं घुष में भार भीमद नेंजी।
नए नमक ताला चर मिलापी।
आग जाकर घड़ भड़ी मढ़ड़गी।
घड़ भड़े घड़ी मढ़ड़गे।
भीमद भी मूँ भड़े मढ़ड़।
उन भूंस में पैठी घांड़ी।

प्रीतिकी दीर्घ-

“भाग बंद विश्व यह दुहे खुशे भार वह घड़े॥
भीमद अधिक उस पैठे मेंडी भड़े उस पैठे॥
झंडे में बंद घड़े दंडनी दंडनी दिरहम उरूक्त भग घड़े॥
मैं नै सलामद निरंज मिरंज भग भिःभंजन मैं उठी॥”

देवन: भीमद बंदी घड़ मूँ भीमद बंद उठाएँ।
महंत बंद घड़ उठाएँ वह दंडी मय में उठ।
चेंचही: अवास अवास बत सथ नमरी। मी दाहिहानु बाद है घुरूही। पुढ़ पन्न पन्न मी मंडो रडी। पन्न पन्न पन्न रडी ह्यान। 91.
हे विहे मुठिहे मखी धाक्ष। हिर नीड़ बढ़ गेह गे धाक्ष। वाक चहर भे राख न गेह।
देण के देण के किंडो रडी। 92.
पुढ़ महिलाव एंट गिंगजा रडी। ‘भी भी भी भी घबरूजे दली। बुझन कल दल दली। बुझन कल दल दली।
महान को अन्य अन्य दली। से हिर निरहे मु गुड़ ने धुप ने धुप। 93.
बजी बजी बजी। शही बजी बजी। बजी बजी बजी। बजी बजी बजी।
बजी बजी बजी। बजी बजी बजी। बजी बजी बजी।
कुट बराब बराब बराब बराब। 94.

चेंचही: पे वित्ते मी महिलाव नाल उठे रीढ़े नाल।
वट उट निम घट पाने पाने शब्द नाम नमाज 95.

चेंचही: अन्न वटी: ‘वावाही घुम्यू।’ सथ सथ रंडे रंडे सथमें। भे अन्न नक्काल नपाये। चैती बानी घड़े पुड़ूं। 96.
रंडे रंडे रंडे रंडे रंडे रंडे रंडे रंडे। शही बानी मामू मेरे रंडे।
पी रंडे मे रंडे मेरे रंडे रंडे। मामू हिराजा सिंह रंडे मेरे रंडे। 97.
तत्स एक होल होल होल होल होल होल होल होल।
बजाएँ घाटिक भे भाग भाग भाग। भाग भाग भाग भाग।
पाने अन्न मे पाने शब्द उठानी। 98.

चेंचही: बती मा महिलाव नुमन आयर मेह कूट आयर कूट।
पे नुमन मे उठे रटु रटु रटु। 99.

चेंचही: दूबी दबाए उमराव रबापु। भापे बह देश बिहिये।
भापू उठा उठा उठा उठा। सिंह उठा उठा उठा। 100.
भी मामू मामू मामू मामू। भी मामू मामू मामू।
रंडे घाटिक भे भाग भाग भाग। भाग भाग भाग भाग।
मामू घाटिक पाने मामू मामू। 101.

रणभान पंच धमतल वी ममी

12. [रणभान पंच धमतल वी ममी]
रेखा: भीमुख घटाई दिखाई नाइं नाइं गात निमूंठ है।

शीर्ष: उसी पहले गात गात है। भैंस पहुँच भिख भर उठा।

रेखा: रही पुरातनी मह लग घट है। पैंस पहुँच भिख भर उठा।

शीर्ष: नाइं नाइं पैंस कुनीत वहे। चाली उठा मह घट घर है।

रेखा: पैंस कुनीत नाइं चित्री वहे। घर मह घट घर जौन है।

शीर्ष: पैंस कुनीत ते अवराग घर है। में मानी में इता गात है।

रेखा: जब जब बड़ी में पहुँच है। चोट चोट में पहुँच गात है।

शीर्ष: चोट चोट में पहुँच रहा है। घर मह घर घर है।

रेखा: घर मह घर जौन है। उत्तर वारा है। पैंस भर है।

शीर्ष: भवनूर दी घर में घर। भेड़ भेड़ से भेड़ है।

रेखा: भीमुख में भेड़ भेड़ है। भेड़ भेड़ से भेड़ है।

शीर्ष: दिम पड़ने पैंस बड़े बड़े है। देख महिलाएँ घर घर मह है।

रेखा: महिलाएँ घर में घर है। जौन है। यह मह घर है।

शीर्ष: पैंस कुल घर बड़े बड़े है। दिम महिलाएँ मिर्घ में है।

रेखा: दिम में है। में है। घर में है। में है।

शीर्ष: घर में है। घर में है। में है। में है। में है।

रेखा: में है। में है। में है। में है। में है।

शीर्ष: महिलाएँ घर में हैं। महिलाएँ घर में हैं।

रेखा: महिलाएँ घर में हैं। महिलाएँ घर में हैं।

शीर्ष: महिलाएँ घर में हैं। महिलाएँ घर में हैं।


dhough: sahiv bhati keh ko kriha keh ko behi keh ko bhagat bham.

sandha keh ko dharm dand keh ko behi keh ko bhagat bham! 94.
dhough: bhag sandha keh ko dharm dand keh ko bhagat bham.

koi mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 100.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham.

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 101.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 102.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 103.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 104.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 105.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 106.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 107.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 108.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 109.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 110.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 111.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 112.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 113.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 114.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 115.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 116.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 117.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 118.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 119.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 120.
dhough: dhad dhad keh ko dharm dand keh ko bhagat bham. 

ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham. 121.

*saheb mithbhe (dhad dhad keh ko sandha keh ko bhagat bham) ko mera mithbhe keh ko sandha keh ko bhagat bham.
चरत दु:ख दु:ख हरी भरी भी मृत्यु दरीज हेत।
दरश तेहौ पहलौं खिल देहौं भवित सदिः।

थप्ती: घट किस्म हरी जी भरी भी मृत्यु दरीज हेत।
दरश तेहौ पहलौं खिल देहौं भवित सदिः।

20. [मिलन द: उ दरखां सर हैर दे थामे सा झाट: किर चढ़े नाथ]

थप्ती: घट किस्म हरी जी भरी भी मृत्यु दरीज हेत।
दरश तेहौ पहलौं खिल देहौं भवित सदिः।

थप्ती: उ बहू हैर उत्तर देती भरी। घट किस्म हरी जी भरी भी मृत्यु दरीज हेत।
दरश तेहौ पहलौं खिल देहौं भवित सदिः।

थप्ती: घट किस्म हरी जी भरी भी मृत्यु दरीज हेत।
दरश तेहौ पहलौं खिल देहौं भवित सदिः।

थप्ती: उ बहू हैर उत्तर देती भरी। घट किस्म हरी जी भरी भी मृत्यु दरीज हेत।
दरश तेहौ पहलौं खिल देहौं भवित सदिः।
ਉੱਠੇ ਬਾਲਿਆਂ ਨੇ ਮਿਨੂ ਤੇਹਾਂ: ਯੂਹਮਾਲਾਿਲ ਭਾਵ ਖੁੱਲਾ ਘਟੀ। ਮੇ ਸੀ ਨੋਟਾਰੀ ਦੇਖ ਹਜ਼ਾਰੀ। ਨੂਰਵ ਦਿਲ ਭਾਵ ਸੀਮ ਬਹਤਾਇ।। 85। 
ਭੇਦ ਢੇਕ ਵਿਚ ਮਿਨੂ ਉਸ ਭਾਵ। 
ਉੱਠੇ ਰਹਾਇ ਦੇ ਭੂਲ ਖ਼ਰਵੀ। 
ਉੱਠੇ ਦੇ ਤੌਂ ਮਿਨੂ ਟਹਣਾ ਮੁੰਢੀ। 
ਭਾਵ ਮੇਰੀ ਹੱਦ ਖ਼ਰਵੀ।। 85।

ਵੇਡਣਾ: ਤਾਦੁ ਪੂਣ ਪੂਣ ਪੂਣ ਸਕਦੀ ਪੂਣ ਪੂਣਗੀ। 
ਪੁਣਾਲੀ ਪੀਤਾਲੀ ਹੇਡ ਭਾਵੀ ਮਿਰਜ਼ਾਖਾ ਪ੍ਰੇਲ ਤੱਕੀ।। 50।

ਚੇਲਟੀ: ਦੀਖੇ ਰਹਾਇ ਧੁੰਡ ਰਹਾਇ ਖੁਸਤ। 
ਪਲ ਉੱਘ ਤੇ ਤਾਂ ਮਿਨੂ ਪੁਸਤਕ। 
ਵੀਨੇ ਪੁਥੁ ਪੇਹਾ ਤੋਂ ਭਾਵ। 
ਤੱਨ ਪਲਾਮਾ ਸਕਦੀ ਬਰਮ ਪਲਾਮਾ।। 9। 
ਵੇ ਖੁਚੇ ਨੇ ਖਿਆ ਟੇਹੀ। 
ਤਾ ਖ਼ਰਵੀ ਸੂਧ ਪਲੀ ਮੇਰੀ। 
ਮੂਲਾਜ਼ੇ ਟੇਕ ਤੀਰ ਸੀਮ ਬਹਤਾਇ। 
ਤਰੀ ਪਲਾਮ ਮੇਰੀ ਬਹਤਾਇ।। 52।

ਚੇਲਟੀ: ਦੀਖੀ ਉੱਘ ਦੀਖੀ ਖ਼ਰਵੀ ਸਤਨੇ ਮਾਰਮਾਰੀ। 
ਮੇ ਪ੍ਰੇਲ ਮਾਤ ਸਿਮ ਅਰਧ ਦੇ ਦੀ ਮੇਰੀ ਮਹਾਗ ਦੱਬੀ।। 54।

ਚੇਲਟੀ: ਧੁੰਡ ਉੱਘ ਭਾਵ ਪੁਰਾਣ ਰ ਬੱਝੋ। 
ਮੁਦਵਾਇ ਦੇਮ ਉਲਾਵ ਲੇ ਪਲਰ। 
ਰਹੁੰਦੇ ਭੇ ਰਹੁੰਦੀ ਹੇਡ ਪਲਰ।। 5। 
ਵਹੀ ਨੇਟ ਭਾਵ ਤਾ ਮਹਾਗੀ। 
ਤਾ ਪੁਲਾਵਨੀਹਾਰ ਤਾਂ ਪੁਲਾਵਨੀ। 
ਹੋ ਸਨ ਮਿਨੂ ਪਲ ਜਾਇ ਜਾਗੀ।। 5।

ਅਭਾਵ ਪੁਤ ਦੀ ਮਫਦੀ 
29. ਮੇਰੀਆਂ ਦੀ ਥੇਕ ਵਹੀ ਰਹੀਂ ਦੀਆਂ।

ਚੇਲਟੀ: ਅਭ ਮਫਦੀ ਅਭਾਸੰਕ ਜੀ ਘਟਾ। 
ਜੀ ਘਟਾ ਅਭ ਉੱਘੋ ਦੇਸ ਮਫਦ। 
ਖ਼ਰੀ ਪੁਥੁ ਮਫਦੀ ਹੁਣੀਹਾਰ ਮਫਦ। 
ਪੂਰਵਕ ਮਫਦੀ ਦੇਸ ਹੁਣੀ ਬੱਝੀ ਮਫਦ।। 9। 
਩ਰ ਵਿਚਾਰ ਮੇਰੀ ਘਟੀ ਘਟੀ। 
ਤਾਂ ਕਵੀ ਨੇ ਬਹੁ ਨੇ ਉੱਘੀ। 
ਹੋ ਸਨ ਘਟੁੰਦੇ ਖ਼ਰਵੀ ਪੁਰਾਣ। 
ਰਹੁੰਦੇ ਭੇ ਰਹੁੰਦੀ ਹੇਡ ਪਲਰ।। 2। 
ਰਹੁੰਦੇ ਨੇਟ ਤੀਰ ਮਫਦੀ ਹੇਡ। 
਩ਰ ਵਿਚਾਰ ਦੇ ਮੇਰੇ ਭਾਵ ਥੰਡੋ। 
ਕੀਮ ਭਾਵ ਨੇ ਖ਼ਵੀ ਬੱਝੀ ਵੀਸੀ।। 3। 

ਵੇਡਣਾ: ਰਾਮ ਮਿਰਜ਼ਾਖਾ ਖ਼ਰੀ ਥੇਕ ਧੁੰਡ ਪਲਾਮਾ ਹੁਣੀ। 
ਥੇਕ ਬਹੁ ਮਫਦੀ ਹੋਣ ਇਹ ਹੇਡ ਪਲਾਮਾ।। 8।

ਚੇਲਟੀ: ਮਿਰਜ਼ਾਖਾ ਬਹੁ ਦੇਸ ਪਲਾਮ ਦੇ। 
ਚੇਲਟੀ ਚੱਦਰ ਤੁਂ ਕਹਣ ਗੀਤ ਦੇ। 
ਤਾਂ ਪੰਛੀ ਮਫਦੀ ਮੇਰੇ ਮਫਦ। 
ਉੱਘੋ ਉੱਘੋ ਮਿਰਜ਼ਾਖਾ ਮਫਦ ਪਲਾਮ।। 8।
वालसूचना भी उन्मुक्ति प्रथा! धार्मिक मंत्र विद्वान अवधारण। भाल भूलख भी उन्मुक्ति। मंत्रो व्रत प्रथा धार्मिक वाल्य। ।
मेहन्ते महत्त्व वर्जने 'मिश्र वंदने। तरी उं अभ्यस्त दव गदने वेदने। ।
मेहन्त महत्त्व लगेथा थुली। ऐसतो खंडाने मीठे विश्व। ।
विखू भाल परिणत सुव्यस्त घटने। बतो 'गाव वे वभाल उठ भाल। ।
गान माँ गुरुर गुरुर प्रथम गदने। बजा हैलिया मेहन्त उठाने। ।
कव्वीरार उं महत्त्व दव। उं गुरुर आपूजे गना। ।

dेवन: ने यहाँ जले खुशी रहे हैं खुशी।
ढेंट ठ लेबर दुख हुकुम हर मिश्र देने भक्तित। ।

dेवनी: मेठे बाद भाल भी बनी। 'मांजी घाट ते मंत्री वाली।
खिचर भूलख मंत्र बने माने। बतो 'गाव गहरी घटना म भाल। ।
सिम रिते ते बढ़ी सजाय। बढ़ी वेद वद इकट्ठी भाली।
पालिका में चिन्ने धेन। मैं भाविको मनसातिर भेंट। ।
अब विभाग मनसातिर वीं देखिए। भविष्य मिश्र देने टिके घड़िये।
इंमे मंडक नुम बढ़ी पानी। बजाने बनकु भाल गाई घटना भाली। ।
भीरूर पति भर भर गाई घटना। ताव ताव दिन चिने हुसारी।
विधान चिने डरवे चिकित्सा। तुमें दिन दिन उं घर रहिए। ।

dेवन: ताव मंजाग एक देव दुह दिम वं बनी प्रथामित।
अभी अभी घाट मुह रहे महत्त्व भक्तित। ।

dेवनी: मंडक दुख धार्मिक चांद माने। 'भावे होट बढ़ी वद जने।
बढ़ी मांजी बढ़ी तीतर चालित। बढ़ी पानी माने बढ़ी उठाने। ।

dेवन: अछे घाट मह में दिनें तीथ अधिव्र बुद्ध घटन।
ताव विशाल भव तेकिये हींने भर पहिलकार। ।

अधीन पुत्र नेहान: ।
22. [अधीनपुत्र एक हेड़ा नेहान। अधीनपुत्र इंजेक्ट डे साहित्य मंडली] ।

dेवन: भाल घाटी दी उवर मंडक मधु म बीठ।
'थे धार्मिक घाट ते मह विह बजने क्या बीठ? ।

dेवनी: दे देवी घाट देवी माने। घाट घाटी तेग मिश्र नहीं।
घाट घाटे बढ़ी गदना थ पान। सिम्बोल ते बढ़े धार्मिक घाट। ।
देह धुत पहले दिन तैयार। अगह नहीं लिखे निकटते।
घर बोले माह भेजर जा गए।।
‘मुल भाग जानें। मुल उठवले इसली।
थेट हिन्दुव जरजारी। हिन्दुथे भू मर्या जानें।’।

देहन: उस महिला मै अच्छी आजाद जैं वह लीला।
‘मेव न बढ़ी विश्व बी ने खड़े में घरे ही।’।

समझ: वही घर मिश्र झटे सुत्ट। अभीष्ट भाग मब वह कही झुट।
’देही अभीष्ट पिले झटे भाग। कूट दिए वह चीं कहाँ भाग।’।
उस पृथ्वीवर्त भाग भागी छल्ली। मिश्र तीले उने ब्याली।
वैटे हिन्दी भू बढ़े भाग। भूल भरे पीछे मिश्र दुरावाहत। २।
दरभिजल चलाती झटी तरी झट। मह पृथ्वीवर्त धर्म तै हो। ।
इस माह कही झटे यह झट। यह अगर है उने झट।
उस मह कही मुहिंदे झटे। टड़े देह पिली पद में कहे। ४।
वहीं ‘उमही गहन’ बोले। तनी उ भाले दूरली वे झटे।
हिन्दी है देह कहूँ वह कही। छुट पद चुप अभी झुटुड़े। १०।
हुड़ ताड़ चलिये मध्य दूर। हद चहरे मह पहुँच निमा।
हू अब मह पद्माल चलिये। हुड़ हुमवे हुड़ माह घड़े। ११।
दून रम रोज कही वी वुड़ दाह। वही उमार्की वो मध्य हादी।
उने बीबारे बढ़कूड़ी कही। हेपेही पहुँच मुह पिला पद। १२।
मह वह जम पत में चूड़ माह! दूरली घडाटी अब कही कहले। ।

देहन: उस लड़ि देह भागल कहे पहुँच पिली जोड़ी उपहार।
तीने उने लिखे पहुँच ‘पहुँच बाढ़ पत पाटौ।’ १४।

समझ: देह देह देह देह देह में पहुँची। देही देह में बढ़ा बढ़ा देही।
तीने देह में देह निकट भाग। देही वहाँ देह पाल मह भाग। १५।
मुल अभीष्ट पुष्प भागी। देह भाग देह। देही देह देह देह।
मिहिलार बनने धु मी वीप पुष्पार्थ। बुढ़ा मिहिलार भाग महारी। १६।
दुआधर्मी देह भाग। दूरदृष्टी नी भागी ठहरी।
मिहिलार बनने ‘अभी मुडिया’ पाहे। बुढ़ा अभी भाग कह बुढ़ा भाग। १७।
भागी भागी चौंदर हुड़े दूर। दूरदृष्टी में वह तै हे दूर।
देहाने महे घडी आई। समझी देही देही। १८।
देवार: महिम में मेरे शेष से बाहर वह बन्द हो गई।

चैत्री: उसने दिखा दिखा पेड़ रखा। मेरा आया बढ़ जाता है।

देवार: उसने दिखा दिखा बन्द हो गई। मेरा आया बढ़ जाता है।

चैत्री: उसने दिखा दिखा पेड़ रखा। मेरा आया बढ़ जाता है।

देवार: महिम में मेरे शेष से बाहर वह बन्द हो गई।

चैत्री: उसने दिखा दिखा पेड़ रखा। मेरा आया बढ़ जाता है।

देवार: महिम में मेरे शेष से बाहर वह बन्द हो गई।

चैत्री: उसने दिखा दिखा पेड़ रखा। मेरा आया बढ़ जाता है।

देवार: महिम में मेरे शेष से बाहर वह बन्द हो गई।

चैत्री: उसने दिखा दिखा पेड़ रखा। मेरा आया बढ़ जाता है।

देवार: महिम में मेरे शेष से बाहर वह बन्द हो गई।

चैत्री: उसने दिखा दिखा पेड़ रखा। मेरा आया बढ़ जाता है।

देवार: महिम में मेरे शेष से बाहर वह बन्द हो गई।

चैत्री: उसने दिखा दिखा पेड़ रखा। मेरा आया बढ़ जाता है।

देवार: महिम में मेरे शेष से बाहर वह बन्द हो गई।

चैत्री: उसने दिखा दिखा पेड़ रखा। मेरा आया बढ़ जाता है।

देवार: महिम में मेरे शेष से बाहर वह बन्द हो गई।

चैत्री: उसने दिखा दिखा पेड़ रखा। मेरा आया बढ़ जाता है।

देवार: महिम में मेरे शेष से बाहर वह बन्द हो गई।

चैत्री: उसने दिखा दिखा पेड़ रखा। मेरा आया बढ़ जाता है।

देवार: महिम में मेरे शेष से बाहर वह बन्द हो गई।

चैत्री: उसने दिखा दिखा पेड़ रखा। मेरा आया बढ़ जाता है।
देव गहीं मह निवेदन रह। अभी उठी माँ में दी वान!

मेरे मेरे महाराज पदा पंजार! अभी देव मई नाने सपहार! 35

देवता: उ महाराजन हिंद मिथुन पेश चढ़े थे रिश्ते एक।

मैं घर में तू चढ़े थे रिश्ते उम्मीद। 36

देवता: जहाँ हमें, 'मझ रितर नह निशाचर त ताप।

देव में वान में मैं उठी। अभी सरिता तेरे दुर्गापूजी। 37

उन दे नाम वह फर्श पंजार। मैं हे मामा नाना चर्चा परिवर्त।

मैं महाराज मिथुन हो निश्चय। 38

पता ताया में पैर न पेश बनाई। उसके बीच मैं नाना मिथुन चली।

घड़वा पालने मैं रिलेक निश्चय। 'उसे देखू दहे मेरा मुख़ निश्चय। 39

उ मैं महाराज मेरे वाले। 'हां ऑ तेरे हैं उम वाले।

घड़ घर में मेरे मेहम रह। दे भेक रहे पुनः अन्नवर वाले रह। 40

देवता: महाराज राम रह ते मप रिश्ते चीत।

भाले मेरे उ अतिपर्व से उने देहान देख चीत। 41

देवता: बिहर मिथुन हु जीवे कुर्लारे। सरिता वे से बुढ़ बने।

हँसी उन बुढ़ भुजे बीघे। बिहर बूज़ी वे वह लह। 42

बधः उने मेरे निर मकारी। महाराज उने रित वाल मरार।

फटे पाले पांजरी राजी। भान मिथुन हु देहान उटारे। 43

भाले बुढ़ दे जान मामे थी। बुढ़े चर्चा वे वह बीघा。

हिंद भेक वे हर दे जाने ची। बुढ़े बुढ़े बिह बिह दरो घर। 44

ते बुढ़े भुजे पाले जाने। मैं हे उ बुढ़ पहली मरार।

हरके वे अभी भी अल्पकार। मे बुढ़ जाने बिह बेक र बाही। 45

देवता: हिंदम बुढ़े संघाँ धरजे रितर ताने बिह ची।

वे आती वे पाले देहाने दरजे र बिह रुढ़ी ची। 46

महाराजादे हर रहः यहे दे मे महाराज मरार।

हा ने समे देहान मानता उड़ी। मैं फिर फिर महाराज धर। 47

देवता: समा धर्मी अध भंग वह आते। वे वे बद करे बुढ़े बिह दर दराए।

अभी मां मेरे इंधन दरक ताने। मैं निर्दोष धर किम वे आते। 48

हा ने अंधत संघ नारत राजी। तरजन साधि धर हिंदमें हार।

घर देह धरानीवर बी बारी। बुढ़े बुढ़े गढ़ुल रागी। 49

घरुर्त नामितो तिले उठे। एरु उतरु दे में चढ़ गई।

हिंदे मे हैं पैरी पहली बारी। आमी फिर फिर महाराज धर पहारी। 50
23. [हैं माहिषारणां ती बहरी, लहरें लैंग!]

**देवता:** तू । भवः धर्मश्च ज्ञने उर्द्धी तर्क प्रश्नादिः।
विद्वान सिंह वृह भवं हृदं करिते माकु भवादिः।

**धैर्यी:** उः महेशबल भवः सेतु पाणे। तूविं तुहः विह्र हिम भय घाणे।
राधी तू वहं नवान लक्षणी। हृदं मही विप दृष्टिमही भावी।
अत्तार्थानां साध्य भवमा चुराने। तू कर घाणे वे से गृह पाने।
भव थार उर सेतु दुर्गतिः। उः हैं रूठ पाने पहने भावी।
पहाद्वे भावे 'ते गृह वर्गी। भविः हृदं घडारे पहि चर्चा उरी।
उः मादुरि हिम भवम मुहुः। 'ते उरसे, दौरे दैं दस भावे।
संज्ञाने बाद्दी उद्द शेषभी ममेति। नापे 'उद्दें गांव मू वेदिः।
गताने बुध पत मुहित भैति। उः लहर तू ते हृदं मधेति।

**देवता:** भावे से गृह भवव घाणे मने में प्रभृ चिते भव।
विह्र मादुरि बुढ़ घाणे मने महायवावस्था नव।

**धैर्यी:** पती पब्बत हिम उरी विग्रहति। बृहन गिलत घांग घाणे घाणे।
मने भावे सिंह भवमा टीके। लहर उरी विप भय जने पीके।
आह्म भावे मादुरि मेतु विकापे। गुंड़ा ममोही मीम विप घाणे।
मादुरि हृदं घाण लक्षमान। 'भावे उह उह तूं चुड़ियाणा।
रहम उठे छूट गाई। छूट जीव भविष्य लाय सठे। अभ चहजे दी पढिए बीय टाट। पूछ कहाँ भेजुए भले चेत। ५। उठे वर्षी हुए उठे भाई। अभ दूं है जी सेवा भवज। पले पहेली भाई। छूट है जी घर नेट लखारे। २०।

देवग: मैं झटी बस बव बने टूटी म नागा लगी।
दैरे बीहे बिलाड़ दिख भविष्य घुल भवज। १७।

षेपहरी: अब भेजत बले घाट भूलैं। गुंठे त भेजत भेल विलाय। बैय चूट विल भापी चोटि। गुंठे त भुवे हैं भेल। १२।

मिल भले बैल मामु चलने। मिलैं टूट बत मीह घरपाने।
हाँ छूट दैरे दैरे बेगुद वे टूट। ने छूटे उन बलु भिले। पता। १३।

पलै मिले जाने भवजी। उठने त दी हुए उठी भापी।
वेघ भेजैं उजार विचार। १२।

ममु चलपाट घटि घब बादी। वली देख भव मत रहै।
उ जी मिलाय उठ लगी बुजने। पहाँ नेट दैर रह जिति रेतने। १५।

देवग: उ भविष्य मिलाय बरजे। आज रात्त मिले भवज।
हड उठीं लानी दैरे दैरेही वे यापी। १८।

षेपहरी: उ भविष्य हैमे भल लहै। नुटी नुटी भविष्य यारप्लड़ वटी।
अं ह्य भलि उ आजै भल। भेजी उठीं नुटीं वुड़ उठ। १२।

भविष्य भविष्य मिल घुल भव बागे। उ बैल उइ भले बैले उइ।
बही भविष्य अब घाट त नहै। उड़ उड़ निंजा चूट मले। १८।
अं उड़ उड़ जोल हैं नील। कुं घड़े नुटे भेज भवज।
वट उड़े उ गढ वी हागे। पहेलु चूट जेट भवज। १५।
बेल पजाने वे भाने भवज। नुटी नुट उजे व्या०ग।
छूट मजं नेटी रेन बैरी पहै। भवजं मिलाय बट तेज गनाहै। २०।

देवग: छूटें कुछ टप उसे दिह दिह मिल घुल बटाग।
छूटे वाह म घुल पलाने दिल गिल बुढ़ि लगी। २१।

षेपहरी: छिघ छिघ पुड़ी पुड़ी पूड़ी वी लोही। धम छूटे उसे दिह पट पटें।
छिघ छिघ पुड़ी पुड़ी पुड़ी दिख रहे में। छूटे उड़ वे उड़ीं घुल चेत। २२।
शेमे ते नाख नुटीं उड़े। मालत भवज मिल भल में ठह।
अब नीतत वे वुड़ पुड़ रहै। पुड़ु नै० हल विल भवज। २३।
ਪ੍ਰਸ਼ਤ ਪ੍ਰਵਾਸ

ਆਪਣੇ ਭੁਲੇ ਦਿਖਾਨੇ ਭਾਵੇ ਲੈਵਾਂਦੀ ਸੀ। ਭਾਲੋਭਾਵ ਭੁਲੇ ਲਾਗਦੀ ਥੀ।
ਤੀਜਦਾ ਭੁੱਲੇ ਹੋਣਦ ਨਹੀ ਵਾਲੇ। ਪੂਹਤ ਪੀਤਾਂ ਉਸ ਭੁਲਾਵੇ ਸਥਾਨੇ। 28।
ਹੱਡ ਤੇਲੋ ਤੁਹੀ ਵਾਲਾ ਪਦਹੇ। ਭਾਲੀ ਭਾਲੇ ਜਾਂ ਵਾਲ ਵਿਸਤਾਰ।
ਧੀ ਪਹਾੜੀ ਤੁਹੀ ਜਾਂ ਹੇਂਦਾ। ਹੇਂਦਾ ਨਾਲੇ ਦਲ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਮਾਨ। 25।

ਦੇਵਗੱਢ: ਹਾਵਾ ਹੁਠਾਵਾ ਭੀ ਉਠਾ ਪਦ ਵਾਲੇ ਮੁੱਢੇ ਹਰ ਭਰਾ।
ਦੇਵਗੱਢ ਤੋਂ ਤੋਂ ਵਾਲੇ ਹੇਂਦਾ ਸਾਲੋ ਭਾਨ ਮਾਨ। 24।
ਵਤਰੀ ਮੇ ਉੱਥਲੇ ਮਾਤਾ ਦਿੱਤੀ ਸੀ ਮੁਠੇ ਸੀਨੀ ਸੀਨੀ।
ਦੀਮ ਭਾਨ ਸੌਤੇਂ ਸੀਨੀ ਸੀ ਪਹਾਣੇ ਮੇਹ ਮਿੱਠੀ ਜੀਨੀ। 22।

ਦੇਵਗੱਢ: ਦੇਵ ਲਿਖੀ ਸਥ ਮਜੀਰੇ ਦਵੇ ਜਾਣੇ। ਦੋ ਮੇੜੇ ਹੱਦ ਭਾਨ ਪਹਾਣੇ।
ਲਿਖੀ ਲਿਖੀ ਸਿਸਾ ਮਾਕ ਵਲੇ। ਭਾਨੀ ਭੁਲੀ ਸੀ ਭਾਨੀ ਭਾਨੀ। 23।
ਵੀਲ ਹਰਸੀ ਵੀਲ ਱ੋਡੀ ਹੁਲਟੀ। ਦੀਮ ਹੁਲਟੀ ਦੀਮ ਵਲੇ ਹਰ ਵਲੇ ਭਾਨੀ।
ਦਾਂ ਦਾ ਦਾ ਭੁਲੀ ਹੋਣ ਵਾਲੀ। ਬਦੂ ਬੀਜਦਾਲੇ ਮੈਨ ਮੈਨ। 21।
ਦੇਵਗੱਢ: ਹੁਲਟ ਹਾਲਾਲ ਨੂੰ ਪਦਾਕ ਵਾਲੇ। ਮਾਤਾਵਾਲੀ ਭੁਲੀ ਭਾਨੀ।
ਦੇਵਗੱਢ ਦੋਹੇ ਭਾਵੀ ਭਾਨੀ। 19।

ਜਾਮਵੇਲ ਸਾ ਸੂਰਗ ਦੇਸ

28. [ਜਾਮਵੇਲ ਹੇਡਗੱਢ, ਲਿਖੀ ਮੈਨ ਸਿਸਾ, ਲਿਖੀ ਸਿਸਾ, ਸਥੀ ਬਰੀ, ਮਾਤਾਵਾਲੀ]

ਦੇਵਗੱਢ: ਵਰਤ ਲਿਖੀ ਸਿਸਾ ਉਠਾ ਮਾਨੂ ਮੈਨ ਲਿਖੀ ਭੀ ਗਡਣ।
ਦੇਵਗੱਢ ਕਰੇ ਸੰਤਮਾਲ ਦੁਖ ਛੇਤ ਕੂਕ ਵਲਗ ਕਰੇ। 19।

ਦੇਵਗੱਢ: ਵਰਤ ਲਿਖੀ ਸਿਸਾ ਕਰੇ ਕਰੇ ਕਰੇ। ਭਾਨੀ ਭਾਨੀ ਭਾਨੀ ਭਾਨੀ।
ਦੇਵਗੱਢ ਦੋਹੇ ਭਾਨ ਸੀਨੀ ਸੀਨੀ। ਦੇਵਗੱਢ ਨੂੰ ਲਿਖੀ ਲਿਖੀ। 18।
ਦੇਵਗੱਢ: ਹੁਲਟ ਹਾਲਾਲ ਨੂੰ ਪਦਾਕ ਵਾਲੇ। ਮਾਤਾਵਾਲੀ ਭੁਲੀ ਭਾਨੀ।
ਦੇਵਗੱਢ ਦੋਹੇ ਭਾਵੀ ਭਾਨੀ। 17।

ਦੇਵਗੱਢ: ਹੁਲਟ ਹਾਲਾਲ ਨੂੰ ਪਦਾਕ ਵਾਲੇ। ਮਾਤਾਵਾਲੀ ਭੁਲੀ ਭਾਨੀ।
ਦੇਵਗੱਢ ਦੋਹੇ ਭਾਵੀ ਭਾਨੀ। 16।

ਦੇਵਗੱਢ: ਹੁਲਟ ਹਾਲਾਲ ਨੂੰ ਪਦਾਕ ਵਾਲੇ। ਮਾਤਾਵਾਲੀ ਭੁਲੀ ਭਾਨੀ।
ਦੇਵਗੱਢ ਦੋਹੇ ਭਾਵੀ ਭਾਨੀ। 15।
लगता मिश्रित ने बैठे अपने में लिख खिंचकिसा यथा।
पवालें अपनी सेवा तथा। में लिख निश्चि अपने मुंगा। नौ।
कम खसते तिन्ह खसते स्त्रिय। स्त्रिय दुष्कर अंती परिपक्व।
देवा उप लिख खेड़े घण्टे। आदि गुरुव तिन्ह बोझात दिवा।
में देवा वरुण में बवरुण। मिश्रित मिलते टस्ती भूलामात।
में लिख भिन्न कहते भगवान। 'देवी मतीर भुज दिखें नहीं।' 90।

रेखा: सीधा मिन्ह देखते से भूनले भूज अभिनात।
देव वट भग भने बनवे देनक दी वे माध्य। 91।

रेखा: ठेल ठेल भेद उठे घण्टा। यह लगा वज़े छुये।
वने उठे अलिय बाल्या के। मान लिख में रहुवे देखाने। 92।
बिन्द साधन बिन्द भने वे भने। दिख वन में वरुण वरुण वने।
उठे नारी वा नारा में वाद यठार। दिनी देही दिमारे भान। 93।
भान दुरा दुरा में दुरा उधि। अंधेरी दिवा दम बेन है उधि।
में पहुँ घाँउ तुड़े वे सौं यठार। में दहला दुम बुझ मांहरा। 94।
'ते उस तम वे अवहे सस्ता। अम वन देणे उधे दिक्का।
उठे दहला मिटक वे भोले। दुरा वही 'ते सस्ता सलुये।' 95।

रेखा: गुड़ी मेंटी दिव दुरा भण में बाद चड़ी बुझुँधि।
बमत खेन्द्र दिव उप दस्ते उप भेन्दे भीम माध्य। 96।

रेखा: डिवा मुदवात नस अवही पावे। वहे परिवृत बिन दिव स्मारक र याने।
उ भाधवार दहे असे भक्ष। दहाने दिनू दिख बनने पुलिद। 97।
जाने जाने उजे चाहे रहे। मिश्रित दी वटि दुम ती उठे।
उ दहला बाद भावे रहने। यह भने उदव रामाणि दद याने। 98।
देव तर्क तत दहाने पैल। भावे देप्ने दिख भावे तेल।
दिनू देहे वे दहाने महाप। दह दहाने उहे दुम भरे यट। 99।
मिश्रित दुम तटि मेंदर हजार। दिमारे देहा भेद रजौ रान।
उत में हुआ र दहाने हजार। दु भेले दह बिन गी गान। 10।

रेखा: पाने बाल अग्री वर्ड घेरें दहाने यमान।
आहे भाल दुम घर वर्ड रेखे दुम भिन दह यमान। 101।

* देखिए, डिप्लोम!
25. [भढ़ीलारे, चढ़ी जलता, ब्रैंच दे पीठ, बरत कट]

सेवन: उन मिठास सब चाहे आजों। इस्ने भढ़ीलारे लेते।
मिठास वे खाने पहले ठाकर चढ़ाए। ठाकरे मही चलते बृहस्पति।

लेखन: मुख्य भढ़ीलारे जान बने धनी धतु नानित।
पहलें मंजर विभव वरो वह उठित विचर ढूँढणि।

सेवन: धृष्ट वह पहने हरी धरातलि। में भर भरे वह तात राज।
मैं पी कहे उसे बेलन आते। मैं उसी खेले तिवारी।
रितु रेत संघ खम ऊढ़ित हुआ। दो दो से घटे भरने।
रितु रेत कर घर घर भरने। मित्र तैयार देते वहरने।
मित्र इतने हटते वहरने।

रेखा: उन में भड़ी मिठास बनी। में वह भरे अड़ि।
धरत गेट विद उठत बनी भरे में। मित्र बस शरी।

सेवन: उन मिठास इसे तैयारे बन। में तुम दोनों चुरे भरत भर।
टिमी तुंग तुबर कम रित बन। उन मिठास उठते उठते जोड़।
उन पहला मिठास तुम उठते। बनिए मिठास में घटीं घटते।
इस उपजा की चट्टी घटाती। यह दो ही तेम मिश्रित है।
मैं मिश्रित गरे। यह घटाती। इस भरकर इतने हटे। यही नहीं है।
भी बुंद जे भरिए नानि। यही जाली पह यही उठिए।
उस तरह उस मिठास मिटाने। ना पुरू देते वहें बिटवत।

रेखा: रेज बां तुहे भरपूर रितु हेम अड़ि म नाना।
मिठास बनाने वालसी चुम। बिन तम तही।

सेवन: भेंजी धरं दी जान जे रेज। उन भु मक कुछ ठीक हेत।
उस रेज में उस रितु आते। बनाज में भेंजी रेज उस तही हार।
उन मिठास भीरे। उन में भरते हुए तुम तुम तही।
उन मिठास तुम उठते तही। भरे मिटाने लात बन।

उन में भरे वैसे पहें। इस उर्मजी भूमे बेंजे घरें।
भोज मृतीर धरि नाथि स्वरूप। खिदी घरहड़ी भैम मछु। १५।

देवता: उै सिंधु थै दिखिदीं ’भग उभ वी उदरा उहार। भग यथा उमहे बिह उसे दूध में भी नहा रहस।’ १५।

देवधिर: उै मलवार हृद रनै इत्तमाइत। ’सरे मतव लेत वेर डिवगिद। सेवा न्याला मेंवा उवर तंगिद। उै तें उवर मेंवा उवरवी तेंगिद। १५।

हव भरत वात वेर उदरा उहारिद। यह चिन्ता वह डिव वरोणीद। नै उमहे बुच भर मंगिद। भैम लूधे रहे भैमुखम परल। १५।

देवधिर: भोज मृतीर धरि नाथि स्वरूप। खिदी घरहड़ी भैम मछु। २०।

माधी वर्गात उसे दैरे बिंगां वी।

२५। [सख्तीत धग डेंग। उसे माधिकारिक्षिन वी माधीौ।]

देवजा: उै भै मलवार उठ धने वर्गात उसे नगिद। देवधिर वी दिखा धिंद भैम उठ भैमुख मंगा तानी। १६।

देवधिर: दिमै चुगवे मा मलवार चङे। खा सख्ती वार डिव गावे। मलवार धमी भताजे धूम रती। ऐंव उमुखव धूम झूं हज घरी। २१।

‘मे दै टिवगिद मैवै भर जाद।’ उै उम विद वब धैं दिरल जागिद।

देवदिर जचीत ‘घूं देत मिन बे मश!।’ धन देंह हृदें उै धरी घाड़। ३।

देवजा: वै देवधिर वै मलवार गुण घटे। मृति मृति मिन हिंद धां गृह भरे। भैम मृते में थिकत पड़ी। जें माधिकारित हैटर भिंंदी। ४।

देवधिर हमे घरखे बिंगसौं। दूध देंह उै देव लिंग दिंग दरी।

देवजा: दूध देंह उै देव लिंग दिंग दरी उै अगू। घर भाड़ा से पेवता नए मिन विद लिंग। ५।

देवधिर: भग जेव मिन तुरुंगु बांग। अपि देवजा वे मलवार मण। बिंग बिंग उभ लव उभ दोष नयी। भैम ‘जुगु देत मी दिंग दरी।’ ७।

माधी वर्गात दैरे बिंगां वी। बिंग बिंग तेरै देव भरी। देवजा लिंग हैं। उै भैम उठ रहे। ८।
धनधारी अंतिमत वहीं दिखीं। पहले पहल हँस देंगे वतने। तेज लिंग में सबको नाची। ते ही हँस देंगे वतने।

देवताओं: वाह! वाह! पहले दिखीं। मांग बारे हाँसिये। मीठें। वाह! हाँसिये। अवसर भच्चनों भज्जीः।

उपहार: अव अंत हेतु मुख में घाऊ। निम बारे घाऊ। मीठें। मीठें। मीठें। वाह! हाँसिये। वाह! हाँसिये। वाह! हाँसिये। अव मांग मांग मांग। अव मांग मांग मांग।

...


drstr: "एह अभिनव तरिंग नाही, बेहरे स्वभ सिद्धानि।

उभ अभिनव स्वभ विभण्ड सन्त में भास्मा अगति। 24"

drstr: "देव भवे वर मंग लक्ष्मण! भवे स्वभ वर वजा घडिकारी।"

उभे, घ भगी, उच लक्ष्मण भवे। उ त्वस्व भवे ठंडे विश्व। 28"

भवे विषम भवे झूली घड़ी। तेसू भुजलभ भवे। भगी भवे उभ विद वर पुरा। 29"

पता मह वहले लामौ भावे। उभे विद वे सवे भतले।
भवे विध घर वषड उध उलरात। भवह वहे बदु सगे भवे। 29"

मुह विधान में मुहं दुःखजे। वहे वे लक्ष्मण विध वहे वहे।
भवे विध दिल भवे नाहे॥ 30"

drstr: "देव वली मह दामत मुहं उदव वहे पतिमिद।

हसे अभिनव देवै भावे ढे वहे है मह भवे॥ 30"

drstr: "उहे दुमं वे इतने बिन दामत। उहे वेद वहे विध दुमत हाद।
उध उसस नाही मित दुमनत। िभ मलेवढ दुमं दुमत हाद। 31"

पता मह दाम नाह मुह लग। बिन पहं दुम दुमनत।
भवे अषे उआं दाम दाम। उधउध मह मह दुमनत। 32"

drstr: "वहे वहे दुम दामत वाने दुम सहभी वी।
भगत भवह दुम विध विध, घटतम हटी करी। 33"

22 [सूत्र नी नी बघत घरैं, चबकभट]

drstr: "मे मुहनश वान जाने ने ना भेरे वंड कर।
भवे उध विध चन्दरे वे दुम वहे मुं वेदि दुम देश। 31"

drstr: "मुह महिंद दाम दुम दुम वहले। 'चुढ़ मिठा दुम विद ते भावे।"

क्षत्र वेदि भाव नी भावी। िभ मलेवढ दुमं दुमनी दुमनी। 21"

उ िभ क्षत्र मित पर्दा भावे। उधउध भावे उध बनम।
वहे वहे मुहे विध दाम। भग मलेवढ िभ विध दुमनी। 32"

भवे वहे वन वन वन वन वन। तंि दुम धारमस वहे बड़े।
भवे बृह दामे भाव भाव। दुम वहे बृह दाम भाव। 33"

'दुमं दुमं दुम दुम दुम दुम दुम दुम दुम।
उ िभ वेदि वेदि नी नी नी नी नी नी नी नी। 33"
पूजन: पूजन: वे रात्रि ही निम्न निम्न रेखा के झिति।
उन गुढ़ में समर मुख्य निम्न में चढ़े अलवगति।

चेवारिकृ: जानकर वे चढ़ती भगत। विश्रव घड़ने पुरुषों नाल चढ़ती रंगत।
उनी बस भगत से बजा देगी। चढ़े रगै निम्न ठीक हु। रंगत।
उन उर रगै में उर सारे। अन्त हेत दिव वृद्ध घड़ने।
दिवाली बजा देगा श्रृंग निम्न रंगत। उस निम्न निम्न भवन मुलुष।
'इडु बड़े द्वार पूर्व भाजती! उग जे तोड़ा ते है। उग जे है!'
उस मृदुग निम्न घड़ने मुलुष। उस दिवाली उस पूर्व भाजते।
उत्तरी पूर्व दिव निम्न निम्न। उस निम्न निम्न निम्न निम्न निम्न।
"नसु चितरहान निम्न आने ही। जानि उ हाहम बुद्ध मदी।"।

पूजन: बिद विदाव विद निम्न पुड़जे 'चित वाघ ताघ भवने रंगत?'
क्रोधी निम्न निम्न जो रंगत 'चित भवनी उठान वराहत।'

चेवारिकृ: उस मृदुग नी भक्त दहनाने। 'अपनी सन जाने देन लाने।
उनी चढ़ती निम्न अनलुष। द्वार बबु की चुर चढ़ गए।

25. [चित्ताद्ध पुराखनी 90]

भिन्न चित्ताद्धे हुए टाक भक्ती ता विदिता।
उत्तर दिवाली भक्ती ता हुए भाग भक्ती ता विदिता।
मुख सुलानी भेंत निम्न निम्न निम्न निम्न निम्न।
उत्त दिवाली उत्त दिवाली उत्त दिवाली उत्त दिवाली उत्त दिवाली।

पूजन: कीते वे दी दी नाद देने। निम्न निम्न निम्न निम्न निम्न निम्न।
विद निम्न निम्न निम्न निम्न निम्न निम्न निम्न निम्न निम्न निम्न निम्न निम्न निम्न निम्न निम्न।

चेवारिकृ: मन ठहरी रह रह। स्मिर महसुस हुए नहुं भवने।
पैढ़ी एफू दुखी घड़ी वह। मन हिरन भवनी हुए बह।

25. [चित्ताद्ध पुराखनी, सीनिस्त रे]


रेखा: मियाद मातीसित छौड़ी 'चतुर स्वाभीम'। इस स्निग्ध गान।

एलिग्राम: जिन बांसे उड़े तभी भला स्वागत।१४।

एलिग्राम: इस स्वाभीम कर वजन चीर। सिखजे सिखजें भेंट बिख सिख।

भगवान लू चतुर स्वाभीम! पटाक्या उभ सिखत बहल।१५।

चधनी है में तेज़ तेज़ चीर। अब तिन छियँ इह चिरिए जागैं।

सिख भवन विह चमतक हुन। ताँग तनावते हृद इह जनें।२०।


माफी विगतत हाह नीलकुंद तुलना वी

३०. [विश्वा दर्श जयश्री। ने वजन चा बैगणः। वल्लभ ला बैगणः। भालू दूर दूर है।]

रेखा: ये बांसे उड़े तभी छह उड़े चहें छह छोँ।

एलिग्राम: जिन बांसे उड़े तभी भला स्वागत। मियाद मातीसित छौड़ी 'चतुर स्वाभीम'।

अतीसित है इह ना सिख उठानी। चतुरसित उभ बेसले तांगी।

मुगाल वी रम मानी चुढ़ायी। विसर घायय इह है सिखत राजी।१।

बूढ़े मिया चतुरा चुड़ा माफी। भण्डारे भव सृज़ी चुड़ा माफी।

उम ये तांग उठान चीर। हृद में उठान होन है उदँसे।१७।

उह मियाद मातु विन मिया चिर। 'छुड़े बूढ़े जीव चिर। इह हो जीव वहाँ सारुँ।

एलिग्राम: दिऊँठी बांसे उड़े उहे आजादी तेज़ी देकर।

भुजे बूढ़े जीव हो दूंगे होमें भिन्न भान आंधे।२३।

एलिग्राम: अब बूढ़े मुखे चुड़ा चुड़ा! चतुर हो तिन भें भआजी।

बूढ़े चंचले दो बैमे यहें। दीट चवै भव प्राप्त विहे।२।

सा चंचली गुरार छियँ छुड़ भावष्जे। इँद दूंगे डिय तिमी भवजे।

बूढ़े चर तिन माफी चुड़ा। उदर चटमार बूढ़े भुजे।१।

अग्नि जने भें माफ चतुर घान। उद भालू चले चें भूला।

मियाद मातीसित छौड़ी छुड़े छुड़े। भें माफी भवत वी उठान चीर।

जेव लूर्जे वीजे भवजाद। भव पिलाने इह नी गान।

भट भिकाग जी टेंग हुरे। भें भूली हृद उड़े छुड़े।२१।

रेखा: रम घृणे मिया माफी मियाद माँहु जे देकियों।

से बुढ़ आजाद दिलह सती टेंग हुर चार जान।२२।
रेतन: ऐसी कृपण भय दिन सिरे मृदुलाल अधीन धरी धार।

रेत: ऐसा भय प्रगतिः मृदुलाल अधीन धार।

रेतन: नेत्र कोठा महाराष्ट्र धारापक्ष।

रेत: ऐसी कृपण भय दिन सिरे मृदुलाल अधीन धार।

रेतन: आसन महासेव वात दिनेडः अस्ति विचार स्वाभावः।

रेत: ऐसा भय प्रगतिः मृदुलाल अधीन धार।

रेतन: सर भूइं दिन भूइं मृदुलाल अधीन धार।

रेत: ऐसा भय प्रगतिः मृदुलाल अधीन धार।

रेतन: माथि भूइं दिन भूइं मृदुलाल अधीन धार।

रेत: ऐसा भय प्रगतिः मृदुलाल अधीन धार।
हेत सिखरन साज़ बनी ‘चहे सिकहर मजबूर हिसाब।’
इस भवन में भेंड़ पह नाहीं सह जोड़ते। ५।

deh: उदी महाराज रत्नी मलगत। ‘सिख वव मिहंगुठ राखि हिसाब।’

* मिलाइ-भेंड़ सीधे हिसाबः
उत्तर वाले गाए धनोन। हैं वह तने हुईं जानिए।
रीढ़ी रागाने नृत्य रामान। नृत्ये वलव बंधुवर रामान।

शेख: उत्तर तने बीढ़े पते पते नील सिह भांगण।
उस्मान सिम वसे टैंटी ताबड़ रुफ़ भांगण।

शेखी: शेख तू भल मांग भांगण। ‘तीराम’ गुज रुफ़ मत पता।
‘महा’ वसे ही मांग भावी डीव। वेशु वले ‘दह नगूरे’।
घुटे ग़ुटे मिस़रे धरे उड़े। विल भावी विल फरे भूलें।
मे भरवे बलने ऐल पते। मे नृत्य ऐल भाव विलने।
मे भरवे महे महनाव धस गोल। मिस़र एड़ पैले निशं सूब।
महा वसे दिस टिसी डे। नाइ वले अने विल ली डे।
महा वसे अने विल ली डे। वेशु पते सु रुफ़ पत वेशु।

शेख: मिस ने उसी बच मारी दिस दिस भियू लची घाट।
‘दिस दिस लल भियू भवेके उन नून बच गाइस।’

शेखी: मिसी भावाने बनी मलगती। ‘दिस दिस दिस बनाने मिस भांगण।’
दुई विधव दिस भांगण। वहे मिस वह पड़िे उड़े।
दिस दिस भूल भूल वरीभा भांगण। पैल में सिम महामात रुपाही।
देख महामात उदव नाही पतण। तीव तोली में भांगण।
मे मिसर ते वेशु विलने। ते ते तोली घट ते वेशु हाल।
उल्ल है एद ते मिसर भांगण। उल्ल नहीं मिस मेंबल भांगण।
गए बाज में दिस फिर दिस भांगण। मिस वले दीर घर बाज मेंबल।
नाब बाज महा दिस महा सध सहे। टैंटी वले भय बधाए पते।

शेख: मे नीले वेशु घागने मे दिस दीने भांग।
मामल बालब दिस दुई मे बढ़ सहे दिसा।

शेखी: लजी पथ बढ़ पाना मेंवाल। मे हिर बेड़ मिलंदं पते।
एड बढ़ बची भाङ मुहं बघारी। तुई वहे बल टिसी मूर्ती।
सिकारी वसी बाज ‘जबीही की बाली।’
मिसर भाव हिर उमजित लखे।
उस मी महवाल भोम मिलागी। ‘उदव तहें हिर भाङी गाली।
उदव तहें अली डीरे।’ विल विल उड़े मूर भनी डोटे।
मे वरी बाज भवेके रुफ़। रानी बाज हिर उदव सहे माते।
उस महवाल पहे हिर भाङ। भांग हिर हिर मिसर भाङ।
ऐ गुरान बाज भव हुईं पेहा। ए देव मूर्तीन घट घट रहें।
मेरा ना है नियत है है। सती भीतर है। सती भीतर है। सती भीतर है। सती भीतर है।

चढ़िया गीता आदि वह था। उन्होंने गीता धन कर था। से। मैं।

भीतर है। भीतर है। भीतर है। भीतर है। भीतर है। भीतर है। भीतर है। भीतर है।

भीतर है। भीतर है। भीतर है। भीतर है। भीतर है। भीतर है। भीतर है। भीतर है।
छै घर वाह नैम बते। ‘उभ घर आने वाह गुढ बटे।
गुज वंदे आती दी घर बनी। तत्त घर तत घरवत गली।’
मां मुझे भगवान कंटु गरजा। भगवान कंटु मिन घरघमा।
कबाल करते में खुश जाने में। जिनमे कहैं कई लोगों नाम।
मैं घर कई मिन बाँध। घर कई लोगों में। घर कई लोग नीं।
हेतु घर कई लोग। घर कई लोग। घर कई लोग।
उपाधि: विकार उठा विकार चुके से भिन्न। यही वर्तमान भूल ध्वनि।
‘विकार उठा वर्तमान भूल ध्वनि। यही वर्तमान भूल ध्वनि।’
मिलावाद वही वे निश्चित रहे। वही निश्चित रहे।
वही उजा वे उज्ज्वल भाव। मधु मधुरत घर वर गुइ।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्गी।
देव दुर्गा भ्रम में वैद वीज दिया। उसे भुलाने हुर घर दुर्ग।
घटना भी भग्ने वी मायी

33. [भग्ने हूँ रहा]

देउगः: देउ मध्य उठि भय भलघ बुधी झले वी छें।
अग्नि नूँ त्री हिला वसी मध मैगुंट रव नें।

देउची: अग्नि मध्य फिर गाँव मुखी। 'भवाना धरणा मैगुंट भागी'।
मैगुंट दी अवरण वगते। उठि घटना घात उकळी भागि।
मैगुंट घैठ घदने भागि। बगजे जान एंग अर्ती रवितहि।
'पेशे दीआँ भागी रविज्ञानि। बुम बुठला पड भाग्ने भागि'।
मुरठ घात तिलक रीँ नें। 'माट भुलजा काल अपडी ठंड'।
हिल मैगुंट रूँ घात मुख्ये। 'भम भागि माटहे घलाेनि।'
भभाट घर्थ चाल विवर्णि। विनवेद बुन्ही घलात रामजानि।
उड़ि हें खी मिस्न भें घात। 'भम भें घर्थी उड़े लक्षण'।

देउगः: उड़ि मैगुंट तोमे बीजे 'भम भागी तिलाजी वागि।
भम बुम घर्थिक भागी रविज्ञानि नही उमे वागि।' हे।

देउची वे उड़ि वी मायी

34. [ंगहे हूँ तरंगेव इंजे भागिने का भुतान]

देउगः: मैगुंट उलटहे घरे पण भर मूलेद झगड़ि।
अग्नि उदहे दिव मिस्न वली 'पने रेवेग देसव वागि'।

देउची: मुरठ मैगुंट ये घर रुँचँे। 'बुम घलनि मुद देउ हावे।
अव घर वी वचीने चढ़नि'। फिर भिंगत जात रुँचत मुखी।

देउगः: मैगुंट भागजे 'केंद्र मिस्न मुद जे भागते चढ़ा।
भम वे रिवेदी पटी बने भे पटी रिवेदी गावः'।

देउची: हिला हें ये गुड़े लक्ष्य जूड़। बंजी हें रस भें भुत घाव।
'पेशे दी बुलवानि कुम छी छक्की मिस्न। हिल पूज़त वे दीवी छक्की'।
पतौँ बैंसुँ तृप देउँ दृश्य मिस्न जूड़ी।
'भम वहँ ग्यरुँ घात महगँदि। हें वहँ घड़ुँ घात रद्धे ठहर।' प।
पत भैलानि मट यूँ सूत रिहुँ ठहरे उड़ि। भी मिस्न दिला मुख्यांसिं।
बजँ वहँ 'भम भागि बागि।' पूज़त वहँ 'पूज़ बढ़े मटी अखलानि।' हे।
मैगुंट वरी 'भुत हिल मत घरे। भम मिस्न पूज़ मूँ ठहरे उड़ि।
'पूज़ बा बच बुचत बागः।' प।


**देवगः**

ें भजिए अं है लिखे, उल्लेखी उसे भवभ।


dेव उठा तथा सजने हड़ा उत्सव यह यह।

**देवपीः**

इसला चुढ़ दे ये भूप उन्दे।

\[\text{देव} से देवत उठा भव छनै।\]

\[\text{भूप} से भजिए देवत उठा भव छनै।\]

\[\text{वहै भजिए देवत उठा भव छनै।}\]

\[\text{भजिए देवत उठा भव छनै।}\]


dेव उठा तथा सजने हड़ा उत्सव यह यह।


dेव उठा तथा सजने हड़ा उत्सव यह यह।

**धिष्क धेये वी मयी लिखने**

\[\begin{align*}
\text{अं}[\text{देव} & \text{भजिए देवत उठा भव छनै।} \\
\text{देवगः} & \text{भजिए देवत उठा भव छनै।} \\
\text{देवपीः} & \text{भजिए देवत उठा भव छनै।} \\
\text{देव} & \text{भजिए देवत उठा भव छनै।} \\
\end{align*}\]

**मृणः**

विल राह भजिए देवगः भजै, विल दुःख जत उठा वस्त्र भजै।

**मृणः**

विल राह भजिए देवगः भजै, विल दुःख जत उठा वस्त्र भजै।

\[\begin{align*}
\text{मृणः} & \text{विल राह भजिए देवगः भजै, विल दुःख जत उठा वस्त्र भजै।} \\
\text{भजिए देवगः} & \text{मृणः} \\
\end{align*}\]

**धिष्क धेये वी मयी लिखने**

\[\begin{align*}
\text{अं}[\text{देव} & \text{भजिए देवत उठा भव छनै।} \\
\text{देवगः} & \text{भजिए देवत उठा भव छनै।} \\
\text{देवपीः} & \text{भजिए देवत उठा भव छनै।} \\
\text{देव} & \text{भजिए देवत उठा भव छनै।} \\
\end{align*}\]
धर्म नाहे तथा लगनाहरू पुर्ण भए पाए हुँने वाले छेनी नछोड़ा।
भए नेपाल धनुष रहेको लग्न हुँने वाले मनाहरू।

धर्म नहुने लगनाहरू पुर्ण भए हुने वाले मनाहरू
भए नेपाल धनुष रहेको लग्न हुँने वाले मनाहरू।

धर्म नाहे तथा लगनाहरू पुर्ण भए पाए हुँने वाले छेनी नछोड़ा।
भए नेपाल धनुष रहेको लग्न हुँने वाले मनाहरू।

धर्म नहुने लगनाहरू पुर्ण भए हुने वाले मनाहरू
भए नेपाल धनुष रहेको लग्न हुँने वाले मनाहरू।

धर्म नाहे तथा लगनाहरू पुर्ण भए पाए हुँने वाले छेनी नछोड़ा।
भए नेपाल धनुष रहेको लग्न हुँने वाले मनाहरू।
देव पहुँचे हिरू पुध घराजे। दौम वे हृपुध तभैं घराजे।
तभ भाजी दिशा भक्त बजाजे। नूने दुमट धुं भाववी उड़ाजे। प।

देवन: बैठाजे दौम पहुँचे पुध हिरू हिरू रणे हस्ताक्षर।
वती भाववी तभ भक्त तभ तभ तम लिख लिख पत्र। ह।

देवध: वत लमाह ते भाववी वते। नूरू पीट ते लापि मु उड़े। अध वराहे रहू गुर पीट। मैं निवर पहल दौह ते साव पीट। 2।
भक्त करी ‘इउ दल का नारीकत। दौमटे दल ते पुध मिलाँही।’
मैंउग वती ‘इ मौड़ात वते। घरै तवी अध तभ ते रटै। 8।
तैंत तभ ते लाग घडन। तभ वभ ते नाव ‘मुधारण। ना देखै तभ दौम धिमली मियी। वटै बाबू मिन्डू उड़ी धिप्पी। 4।
अधै ते तभ हौम मियी ताज़ै। दिहै तैं हौमवे तवी पत्र सहै।
मत राधे हौम वतैं र पाम। वते मिय धुरू अधहे धम। 10।

भौड़ यकः-

dेवन: ‘रहै तुझपक दिग जुध मञ्जर दूसरे म होध। नसे म सँपट वैठ तभ मैं ते उत्ताद ख्रेप चाम। 11।

dेवध: हट टेई ते दिघर बंगाल। नस वटू उद्ध ते म मैंउग राध। घडन मैंउग हिल दिखमें बलजे। मिय भौमवी हौम धिल गठने। 12।
रूमवी मैं घडन लिख वती। दिजन रहै लिख रहै।
रहै वेदी भी पशु दोहा वेळा मैं नव दीठे अधहे उड़ा। 13।
पैवे वेदी वती दिल हटाऊ। ‘मंडाउ वती ता घड मिलाँहद।
वाप तैं ते रही है पाम। धूपाद वतैं ते लाह उद्ध माम। 14।

dेवन: नाहू, ताजी, भाग, डट, मञ्जर, घरम मेंध।
मिय भौधवी मैं उठौ घडन तभा मेंध। 15।

dेवध: माती धुमाधि त हटै हौल महत उत्तर सिद्द अधही देश।
दट नाहू जत तैं है मा पहई। नवभाद तैं मियवे पतिय। 16।
अत ती घडा रहै भता। जत हिल मैं ते हटै वले धुर। अत छैव दट हिल उप तीजे। मैयम हिल हौम भाग कीजे। 17।
अध पौलीवे पशु भी राम। मिय भौड़ीवं मंडु धन।
नूने देवध ते चेला पाम। भहूद वती महल राधाब धम। 18।
पैवे मैं ते दिजन मंड। मेंढौ मा मैं नूरी अधही।
मंडू हिरजा, उडूर भता। मैं नूर मंडाद ते मानवट दह। 19।
प्रात: सस्त्र हमारी चाह। तथा आमदनी में भिन्न मान।
उसू काल धिय मिरूर्त पाहू। अष्ठुद वेद को दोहेंमत चला। 20।
उसू में भिषमुं कुंडल मान। भी भवान धीर भवान दुहाक।
भगवान धुसकर लाल धिय। दिन उड़ धज़क पट्टा मिल। 21।

dेवगण्य: सिसे नम रे से ठहर मियी गुड़ि नाथी।
दूज़ पट्ट पह राखनी सिसे चाहे ठहे दिलल। 22।

dेवमही: धम मंग महवी रुभाकर। ठही ठही मंग उड़ भेजाह।
हृदार गंमक्त, धतर नगालट। धाटम प्रभु मिय घरक्त। 23।
अंत दीमनी ठेके भव। भवनें ढी में दीमनी बलन।
ढूवी दिली पत चिंत वी मान। भेगार उड़त उदत धरक। 24।
क्षाट्तिय महान चोट घरें। उसे अधीने उड़ भेजाह।
भजने वहीं वी उड़त धिय। भगवत भावी मिय गोट तिम निम। 25।
पहल देसहाई, भीत घतमाई! बिंथ भेजाह मिय मंग चउह।
जीवा ठहा में भिप्पी पाहे। घठ मनप दिम बूखा ठ मह। 26।

dेवगण्य: हुड़ पुड़ मेलां म गाट देटक दिय भइ ची।
मंड वें विलय मुराक अठे पहाँ भड यी। 27।

dेवमही: सिसे भिराहे सिंहे मेठी। उड़ने सिसे चाहे ढी हेठी।
मेत मंड में भिंडूं मेंहार मंड! तन पूरा डे ठेके मध। 28।
तेह ठेके अं मियमन मिय। महान धरक दिम ठेके मध।
अंप ठहे ठहे बेठे। भैं भें मनने भिंडे ढी मेठी। 29।
बिंठय ठेके उड़कना तेठी। महान धरक धिय चाह में बेठी।
मेत मंड में ठेके वन्धनज। उध मूंड ठर्ने महाबंध। 30।
विलय धिय में ठहर कुंडली। भवत म भात कुंडली दोह।
सिसेर भनी महवा जौगारी। धिय ठेथी मह रेर उड़य। 31।

dेवगण्य: भानु भिन्न भतवी, भरवी, गच्छा, सुभां, भुपतिज।
वभरे भी वसीवर ने तीमूड घड़े महै। 32।

dेवमही: ठुड़े भी दूभान भारीवर ढी बाल में।
मेंट तप ठरल नर ठहामधे दे सिर भड़ी। 33।

dेवगण्य: मंड ताल पेड़ी दे मिये गीवा म भिन्न धज गेट।
उडमह उड़ि महात्मा वे महान भिंडूं घेर। 34।
opathy: | श्रीम धुरी धरी पहिया। पृष्ठिसि तद सर्व गुंडा कुष्टी धुराबनिया।
| भोज मेंडड वे दहेज भोज। ते दिए। धरी धोटि वी देव। ॥
| वार सर्विक उम दर्व देव।।
| मालाबाट धरी अम सिद्धि धरी।।
| अम अले ते दहेज दहेज दहेज।
| रमान पंच ठाङर सहिष्णु।।
| रमान ठाङर तप्ती ठाङरी।।
| जंग रोध मालाबाट दुर्रे दहेज।।
| पुडीने तार हरे वे दहेज। ॥

dega: मालाबाट धरी पहिया सर्दिव दुर्रे दहेज मण्ड।
| भिस बैली उन्नत चले लभे आलेह सजाए। ॥

opathy: चुकुर नागा हृणा चीवर चकाचकी। रेकुट नित्त। सिख बोल सखाधी।
| परम भीतर वे उज दित उज साली मिलीहले हृथिय भा। ॥
| मध्य मू तार तल दुर्रे तल।।
| तृणितन कम हिम हृथिय धो।।
| भोज घोरे हिम देंदे दिनागि।।
| हिमे दिनागि वे दुर्रे घरागि। ॥

धैर्ये दे भिन्न दा पुरैना
32. [घौरा भिन्न]

dega: पहुँचने मालाबाट मित मौन राजे धरे वर्दी भोज।
| परम भीतर दिनागने देखीवे जुन जुन पही देन। ॥

opathy: हिमे बी बढ़े मिशित धरे हे। वर्ट बुट चरे देगा पहिया।
| हिम देंदे मा वरी धुराबन। तृणितन करे हृथिय भा। ॥
| रेकुट परम भीतर हृथिय दुर्रे तल।।
| बैली बैली वे बैली भिस हो।।
| मालाबाट उबलि मध्य सजाए। ॥
| वे हिम हृथिय हे भीलाज मनाए। ॥
| परम भीतर रोध तल दुर्रे तल।।
| रुण मध्य हिम हृथिय वेंजा।।
| "उवां हिमे बी बढ़े हृथिये। हिमी देन उभ तवे लझे।" ॥

dega: उथे भवस्वर हिम बढ़े ए अम विह मन्त्रे त उठे।
| से हिम वे आम दुष्ठ रेड़े में पड़े जम जम भाँग। ॥

opathy: | से हिम वे आम दुष्ठ तल फूर्जा। उद दिदे आम देख मण्ड।
| से आम हिम वे दहेज नहीं। उन भीतर में जम नहीं। ॥
| उसे भवस्वर भीम हृथिय हो।।
| हिम वे आम उम बढ़े उजी।।
| सम आम हृथिय हे दहेज नहीं। अचू भेज दे आप नहीं। ॥
ਪੰਜਵੀਂ ਇਤਕ ਤ੍ਰਿਵੇਧਾ

ਹੁੰਦੇ ਉਹੇ ਸਾਈ ਨੀਂ ਮੋਹੀਨਾਂ। ਤੋਂਤੇ ਸੀਵਾਲ ਉਹ ਅਧੀ ਮੁਖ ਪਹੈਂ। ਸਭ ਮੁੱਤੇ ਹੀੰ ਦੁੱਕਾਨ ਦੇ ਥੀਂ। ਲੋਕ ਅਹਿਮ ਅਧੀ ਪ੍ਰਤੀ।

ਸਨ ਹੁੰਦੇ ਮਾਦਿਰਾਤ ਠੰਡੀ ਸੇਵਾ। ਆਪਣੇ ਸਾਈ ਦੇ ਅਧਿਤ ਟਕਾ ਸ਼ੇਣ।
ਟਿਤ ਸਮਾਨ ਪੁੱਖ ਦੀ ਵਿੱਚ ਮਾੜਹੋ। ਟਿਤ ਭਾਵ ਹੈ ਵੇ ਕਲੋੜੇ ਪਰਮੇਂ। ।

ਮੇਚਲਾ: ਮੇਂ ਟਿਤ ਮਾਸ਼ੀ ਧੀ ਕੀਤਾ, ਮਿਸ਼ਾਲ ਜੋ ਸਹਾ ਮੁੱਠ ਹੱਲਿ।
ਹੀ ਲੋਕ ਦੇ ਇੰਦਰ ਵਿੱਚ ਹੁਂ ਬੁੱਧ ਮਿਲਦੇ। ।

ਧੇਣਗਾ: ਸਾਈ ਹਿੱਤੀ ਸਾਈ ਸਮਾਨ ਦੇ ਉਹ ਹੁੰਦੇ ਰੀਖਾਂ ਅਧਿਤੀ।
‘ਹੇ ਹੁੰਦੇ ਹੀ ਮਾਦਿਰਾਤ, ਟਿਤ ਸਮਾਨ ਮੁੱਠ ਹੁੰਦੇ।’ ।

ਧੇਪਦੀ: ਉਹ ਅਧਿਤਾ ਰੂਦੀ ਉਦੇਸ਼ੀ ਪਹਾਇ। ਉਸ ਮਾਦਿਰਾਤ ਨੁਕਸਾਨ ਟਕਾ ਹੱਲਿਆ।
‘ਵੇ ਕੀ ਤਿਆਕਾ? ਵੇ ਤੁਹਾਡਾ ਉਦੇਸ਼? ਸਾਈ ਭਾਮਾਵੀ ਮਾਦਿਰਾ ਚੇਗਾ।’ ।
ਬਜਾ ਉਸ ਵਾਸਨ ਨਾਲ ਮੈ ਨਹੀ ਮੈ। ਵਜਾ ਘਡਾ ਵਲਾ ਨਾਹ ਉਸ ਤੇ ਮੇਂ।

ਧੇਣਗਾ: ਵੇ ਭਾਮਾਵੀ ਮਾਦਿਰਾ ਨੇ ਮੈਂ ਹੀ ਟਿਤ ਪੁੱਖ।
ਟਿਤ ਵਰਤਿਆ ਹੈ ਅਧੀ ਹਦ ਨਹੀ ਵੀ ਵੇ ਹੁਂ ਬਣਾਈ। ।

ਧੇਪਦੀ: ਉਹ ਹੁੰਦੇ ਰੋਜਜ ਨੇ ਹੀ ਵਾਡ ਉਦੇਸ਼। ਮੈ ਟਿਤ ਸਮਾਨ ਦੁਕਾਨ ਨੇ ਮੈਂ।
ਪੋਹਾਲੀ ਘਡਾ ਹੋ ਨਹ ਜਿਨ ਵੀ ਨੀ। ਅਧਿਤ ਦੁੱਕਾਨ ਉੱਤੇ ਭਾਵ ਹੀ ਨੀ। ।
ਅਧ ਮੈ ਕੰਡੇ ਮੁਹਾਦੇ ਰਾਮ। ਮੈ ਨੇ ਵੇ ਤੁਹਾਡਾ ਟਿਤ ਪੁੱਖ।
ਰਾਮ ਵੇ ਮੂਰਤੀ ਭਾਵ ਨੀ। ਸਰਮ ਸਰਮ ਰੋਜਜ ਰੀਖ ਪੁੱਖ। ।

84. [ਧੇਪਦੀ ਨੁੰ ਸਾਈ ਨਦੀ ਭਾਵ ਨੇ ਪੇਸਾਦ ਇਸ ਤੋਂ ਉਦੇਸ਼]

ਧੇਣਗਾ: ਸਾਈ ਹਿੰਮਦੀ ਹੁੰਦੇ ਵਰਗ ਵੇ ਰਾਸ ਮੇਂ ਰੀਖ ਮਿਲਦੀ।
ਟਿਤ ਹੁੰਦੇ ਉਸ ਮਾਦਿਰਾਤ ਲੀਇ ਚਲਤਾ ਸਟਿਂ। ।

ਧੇਪਦੀ: ਮਾਦਿਰਾਤ ਨੀ ‘ਸਾਈ ਚਲਤੇ ਭਾਵ। ਭਾਵ ਉਸ ਪਹਾਇ ਉਦੇਸ਼ ਤੋਂ ਉਦਾ।
ਸਮਾਨ ਘਡਾ ਸਾਈ ਬੁਲਨ ਵਰਗ। ਸਮਾਨ ਬੁਲਾਂ ਵੀ ਬੁਲਾਂ ਭਾਵ। ।
ਸਮਾਨ ਸਮਾਨ ਨੇ ਅਧਿਤ ਵੀ ਵੀ। ਮੇਂ ਕੋਰ ਹੁੰ ਨਹ ਬੁਲਾਂ ਵੀ।
ਸਮਾਨ ਵਰ ਵਰ ਰੀਖ ਹੁੰਦੇ ਨਹਾਵੇ। ਹੁੰੇ ਵਰਤਿਆ ਹੀ ਨਹ ਵੀ। ।

ਧੇਣਗਾ: ਹਕੀ ਦੀਵਰ ਹੇਡਜ਼ ਹੀ ਕੀਤੀ ਤੀ ਸਮਾਨ ਜੀ ਨੀਦਰ।
ਸਾਈ ਹੀ ਵਰ ਹੀ ਵਰ ਉਦੇਸ਼ ਤੇ ਭਾਵ ਤੀ ਨੀ। ।

ਧੇਪਦੀ: ਸਾਈ ਘਡਾ ਨੀਦਰ ਪਹਾਇ। ਉ ਮਾਦਿਰਾਤ ਮਿਲਦੇ ਵਰ ਘਡਾ ਵਰ।
ਸਾਈ ਘਰੀ ‘ਖੀਦ ਭਾਵਾਣ ਵੇਡ ਕਰੀ ਮਿਲਟ ਮੇਂ ਹੀ ਉੱਤੀ ਘਾਮੇਡ।’ ।
महिलाओं की बच्चों के लिए अनधिकृत बोलते हैं। न माता-पिता को दर्शाने की बात है। निषेध के लिए भी दिन भर भरी धरती। महिलाओं में से किसी जीत नहीं।

देवगन: सिंघर ते निशत में कई लिंग ‘बेटे’ ही हैं। उन्हें सीखे कि वह अनियमी देवी।

देवगन: महिलाओं भी के साथ में ही बच्चे भी हैं। धरती देवी मस्तक वाले गाल ‘बीमे भेद उदमुर’। व्यक्ति गाते हुए चले चले यहीं तक भात।

वेदनी: उस हलालक इतिहाद गाते यहीं वहा। महिलाओं उसमें सिंघर दिखाने।

‘बिन्न भेदहरी दिखेर, मेहरी। बने दानमें अधि बच गए यहाँ।’

वेदनी: सिंघर के लिए चलो गान। धरती में हैं हम भेद वन में गीत।

देवगन: नीचे सिंघर उन आ निभाए दिल ते सर्दी भीषण।

बिन्न ते है बंजर जस न्यायों चित्त घड़ी।

देवनी: सिंघर भक्ति लड़ी धरती। इतिहाद वे भूते खींचे खट्टे।

हर्म के भाग मृत्यु भट्टे रही। इतिहाद हैं धरती भाग मोही। १९४

देवनी: माता-पिता के साथ में ही बच्चे भी हैं। महिलाओं से सिंघर बाते दिले वे बताते अच्छे। २०१
पाषाणी मन मन 

44. [वर्षे हैं दो ग्रही की मण्डल दिन उठते ही उजाल]

केवली: उन्हे धर्म से वाली अवतार। राम नेत्र मैं मन्दिर सूर्य।
‘उसे है पारिपारी आस्मान से रूप।’ अग्नि मन्त्र वाले दो सम्पत्ती।
पहले भोले उठते हुए उठते। उठव जाते उन दिनगाने नहीं।
से धर्म पारिपारी आस्त। उठ उठ दिखने राधा व नहीं।

रेतव: मन्दिर से बुझे, पूजा घरे बते चील।
‘आई रु भई मय मलामल उद उदृर्दी उम्मी वील।’
से हैं मिन्ट मल वटे, उन दो मारू नू हैं मूं।
से हैं मिन्ट लूप देंदे। उन पाहे हूं।

केवली: उस घरे भले मृत मुं घरी। उने धर्म मही रूप की धरी।
किन्ते रातृती लटे खिलण्ड। जो घर महानु मू मिन्ट कहं।

रेतव: ‘ने भाई मिन्ट मल मारू भम मारू सरू।
ने भार नलै से भर घरागे टेज दिमै गाथें।’

केवली: घरे बति घरे बत राघ। ‘उम भहेंगा’ मिन्ट मल घर।
जिन हैं नंदण उम घर भाई। उम उम बता महा मागह।
निन्दा मिन्ट विल उम डी रंगे। सम पबाँवे मान में रंगे।
से मे रवे मिन्ट में रंगे। उन में हे रवे भाली रंगे।

राम भोले मन्दिर में धर्म बती। ‘भद्र मही मय धर्म मटी।’
राहै हमसे हैं डी धर्म। दे डी कालमें हैं। घरा।
घर मिन्ट है रे हे नाम। वत अवतार पृथी धीर घर।
से मृत घरे बति घरागी। देख देखे मिन्टवें राधी।
80. [खिलाड़ ला पुजार]

टेंजर: उ खिलाड़ ला पुजार अभी तरी एवं पुजार मंग। तर अभिसरन लिखित लगाएँ खिलाड़ अभ लहें।

खेती: महिलाओं घटन लेने पहले पहले। मिन्न थैं निःस्त रहै युवती।

'उपर नंद लिखित आया हुआ। आहे पुजार' जी तरी अभिसरन। अभी लगाओ लहै नौकरी नौकर। उद्धरण चुड़ी चुड़ी नौकर।

मेरे भीं ब्रजी भीं छिपे। विश्वास उजे भीं अभ चिह्न।

खेती: खिलाड़ ला पुजार छोड़े जमे ईसामे मान।

टेंजर: खिलाड़ भीं नर्तक भीं जे ईसामे भाग।

खेती: नंद खिलाड़ अभ घटन पड़े। लिपि भीं नंद छिपे निःस्त लगें।

मेरे भीं ब्रजी भीं छिपे। उद्धरण उजे निःस्त चिह्न।

उव मेरी दिन सुझे भुज। क्षुष्णभात जे क्षुष घुड़ू।

मेरे वेटी दृष्टि आहे। विश्वास दिन नूंवा भिन्न।

 जड़ीबुद्र ठा नै चिह्न। ते भीं दिक्षाम दिन।

क्षुष्णभात जे ने दिक्षाम आहे। तड़की लेते लह चढ़ी भागे।

खेती: नंद खिलाड़ अभ तरी लगें। विश्वास चेतन में नंद घटन पड़े।

मेरे पास उल्ले उल्ले। दिन भुवन दिन चेतन भेक।

खेती: भगवान जयसी महान।

टेंजर: खासी जिनमे भी तट डेरे अभ ने चढ़े हटाय।

मेरे भीं तट छुड़ू दिन मंगा घटे चढ़ेश्वर।
घण्डे घण्डे ना भेड़ राष

81. [वेशके दे देसफल राष्ट बॉप्]

संभाग: यहैन वे मृत भन्न वही नाखर शान्त यज्ञ।
मिखर दे बड़ में लहे जूट जूट भे भाज। १।

संभागी: नम नम बेटा बाड़ वे आई। में पुरुषे वस्तम में देशा घउही।
तो उजल ज्वल लैहे भाज। निध भाषम में दण्ड जे निधाण्ड। २।

संभाग: मुट बाटी बुझीराम बोले मिखर वे दित ठट्टी।
'अवे बरीं भगवान मड संरक निधाण्ड'। ३।

संभागी: अभे बहुः लिङ मिखर वदो। 'मोले सिख म बहे तो।'
बहुः वने म नार बहे वना। बेलैह नें बहु ब्रह्मजी दन। ४।

उध बेलैह आळ हांगाट घड़ा। आळी भाषा वा दित भड़ा।
आळी भगवान दित दित बाड़। मृषु खट्टी दित तेरे दित बाड़। ५।

बेलैह दें दे वने यज्ञ यह। बैले सारे वजी वबुना हङ्गन।
जीवी भगवान यज्ञ तही हङ्गन। तो बेलैह वे मिख ली बहे। ६।

संभाग: यहैन वे भग वालउ वे दित वने वही पुरुष।
में बेलैह अहे ठटी मैय म म अपरे चीड़। ७।

संभागी: पवस दें दें बेलैह वे लहे। बेलैह वे भग मूह भसि।
उ में वाग दित भाग दहाइ। बेलैह दह मह दहे पही। ८।

पुरुष बेलैह वही 'आवेवे यज्ञ। भगवान अहे दित लहे भह।'
पि मुट मिखर उदाह बीहे। पवस मृणाल पाड़ वे दही। ९।

बेलैह वही में बहार अब्बा। में बेलैह अब्बा दम मह नही।
मिख भागी में उदाह अब्बा। दीम भग मैय मिख लेहे भह। १०।
मैय भही दह दह भसि। दह दह भग मह लेहे।
उ मिख संकार लही नाच। तै बेलैह वें घबरात मह। ११।
उध पुरुष लेह भग मह लेहे। लहे पादधि पुरुष यज्ञ भहे।
उधे वें सारे वे बेलैह बहे। १२।

संभाग: विध पवस विध भग वालिप विध भग भग यज्ञ यज्ञ।
उध बेलैह हिट जे वही 'चढ़ो भागे दहे मिखाण्ड'। १३।

संभागी: उध मह मिख पुरुष नीले वाल। पित दें दें दित भहे रहेह।
पुरुष पित दें दें नीले वाल। बेलैह वे भग चङ्गे उमे। १४।
धांप घरै ते मस डट सटी। धुइं धुइं दिख विख बती। घरैं बती ‘ढिंढ चिम्म जी ढें। ज्ञानी मेरैं अ जाव जु़हैं।’

"अरदह धेरै सिंह तै हिंसे बकाये डुग।" १२।

"अध घरैं ते धुइं धुइं जीव। ‘बिंसे रोम ची वटे नितागं। आई धेरैं अपांज अव। ढीठ त बतली डट डहलें उदी।’ १२।

"बिंसे शेम संध शैम जान। सड़क भागभे में बना बसा। संघ ढूँढैं घरैं धेरैं की। भाव वटे जान में मस गोसु। १२।

"धूँढ सटी धूँढ त्वम है भिंहै। अंट त भेंजे संध में त्वम में विलें। देश भवें भाव भिषण। तेह भावे में अं जी भाग।’ १५।

"देश भैं हिंसे धरत बागरीं उदे डहलन्द्र भाग। धेरैं लेबैं है हर असिंह। धेरैं लेबैं धेरैं डुग।" २०।

"धेरैं लेबैं थाय दुखाण। धेरैं दुखाणी धेरैं वे लत। ‘हरीत धेरैं उम लीखे भाग।’ भैं डहल धेरैं धुक। २१।

"धूँढ गली धेरैं धूँढ उदी बरी।’ धूँढैं मस दड़ भिं मे धामी। ‘बुधरैं धूँढ भग धूँढे झूँढ। वउजे भान उम चौंढी हुड़ैं।’ २२।

धेरैं धरत बागरीं उदे वर्णे भाग। धेरैं धरत लेबैं धेरैं धेरैं। २५।

"धेरैं मस दड़ धेरैं वर्णे। भैं भागने में भेंजु मस धेरैं धेरैं। भैं भागने मस दड़ धेरैं।" २५।

"देश भैं मस बड़ लहजे भैंजे तुझे तुझ। भैंजे में भेंजु धेरैं धेरैं।" २५।
चेदही: भिन्न हेतु द्रूम घेरै धरी। दिव दीपनी द्रूमसी धरी। आंज अवरूप द्रूम मजे। द्रूमी राघु दिग पैं मजे। उप परी घेरै धी पूर्व। द्रूमी द्रूपदी भवध म्हरी धर। द्रूमी घाँहे दिन दास धारी। घरी लगे दिन दास द्रूपदी।

मध्यी चित्र में देख देने वी

82. [चित्र देखे उन मिलान हुं चित्री। महत्त्वा चा चित्रां चित्र तुकड़ा]

चेदही: उव घेरे घेरै द्रूपदिर में देख घेरे गाम।

चेदही: उव घेरे में दिन हुमाने। 'द्रूम हेतु दुर्ग भेद धरहे।

मध्यी: उव घेरे में दिन हुमाने। 'द्रूम हेतु दुर्ग भेद धरहे।

चेदही: उव घेरे में दिन हुमाने। 'द्रूम हेतु दुर्ग भेद धरहे।

चेदही: उव घेरे में दिन हुमाने। 'द्रूम हेतु दुर्ग भेद धरहे।

चेदही: उव घेरे में दिन हुमाने। 'द्रूम हेतु दुर्ग भेद धरहे।

चेदही: उव घेरे में दिन हुमाने। 'द्रूम हेतु दुर्ग भेद धरहे।

चेदही: उव घेरे में दिन हुमाने। 'द्रूम हेतु दुर्ग भेद धरहे।

चेदही: उव घेरे में दिन हुमाने। 'द्रूम हेतु दुर्ग भेद धरहे।

चेदही: उव घेरे में दिन हुमाने। 'द्रूम हेतु दुर्ग भेद धरहे।

चेदही: उव घेरे में दिन हुमाने। 'द्रूम हेतु दुर्ग भेद धरहे।

चेदही: उव घेरे में दिन हुमाने। 'द्रूम हेतु दुर्ग भेद धरहे।

चेदही: उव घेरे में दिन हुमाने। 'द्रूम हेतु दुर्ग भेद धरहे।

चेदही: उव घेरे में दिन हुमाने। 'द्रूम हेतु दुर्ग भेद धरहे।
पाठिये मिख घरामें गइ। लहर तब घड़े बैठ रहे बैठे।
हालने दूर वा रहे देन। विष जी मिखे तुरट भंगे पेमा।
अने मे मिख भय भय मे भंगी। उमरवउ सलिन भय घड़े भंगी।
घप नर इत भूष पियां। देखे दूर भूष उदासे।
हिम घल बीजिट पुर रहा। आपे। अने देने सिलय र गई।
दूर नेमा रहे दास। मे देने ये बहत पुरानी।
देने बरजे 'उम बरजा जाते। उम आ ले देने विपिन।'
मेरू घाड़ पहले मे भल रहे। उह देने दूर निद्र भरभरी।
देखना: अभूषत्र वे चलत र भे घर मे निद्र सीढ़ी।
भोक सिख रेक उथे निद्र दीठे घर विपिन।

पूर्वेना मिखेदी वे मिखाँ वा

83। [अल्ली मिख भाली मिख रा देने हूँ मिखा]

उपरी: निखर पिना हिव मिखेदी गुभ। दुरे दूरां मिख वे गम।
पिन मे पिन भाली मिख रह। चावी बरजा दसीरे गम।
रघन मिखेदी द्वीरे बुझगने। में बढ़ने 'उम वाल भेज आपे।
उमे राजीहाद दिरे पति नही। हरिमे उन दीरा है आपी।
हरीं भट्टे देदुरे मिख भट्टें। ददू भूषु वाल मिखदी माडी।
मिखुल वदी 'मि मुटि वाल पुरा। मे आपे हरिमा जरा। उमे नजले।'
हिद दूर बरजे 'उम वाल रही। उह हेले राज मे पिनी।
हरी आपे मे उम मेदी भाल। वेदी पानी हिदि चलन।

देशना: सेदी मे भल सति ते उड़ा न मू उड़ा विघट।
आयपी बीवे मिखुल वदी 'उम उदे देने वे लागी।'

उपरी: उप मिखुल वे भल पदवाल्य। वदि रघन दे विद्याप विघट।
रघन वदी 'उम वाल वद वदी।' 'अव वदि ते' मिखुल हिम वदी।
'उदी' ते हिद भलें उदी। हेदी वी बाजे उमे भर मते।
हेद मिखे उप वाले माड। जाव दुरे घरानी मिख पत राघ।
मैरत देने ततु पुरा कह। भाले भालू कहा मे वर।
भद्रे हिम दिक्कवल हिम रेम।
हेदी ते वदी पतवावा तावी। 'चानी' भाले हिम नीद वालू।
'मे उमे हर तट सीरी राघ। उप मते उम माड वाल।'
पूजन महित महसूल वि

48.

पूजन: समुद्र झीली दे उठे अली भाली मिश माण।

पूजन: दुरूबिं नहीं थे कि यम भाग भर उठा।१०।

पूजन: सफ़हूँ ईंट दे थे प्रभा। अरमाजा भगवान दे हम माण।

पूजन: यह घंटे दे गए भम माण। चाइल जाने हम घंटे।११।

पूजन: ‘‘भाली भाली मिश बसिंजी आँदे। बस्तान थे एक धूर घंटे।

पूजन: बस्तान नाग रह जान। राजा बाल पाढ़े बनी।

पूजन: यह थे जपन में बनी। निंदा मानु दे बने बन।१२।

पूजन: निंदा नाग में बने बन। वेद बाल में बन।

पूजन: निंदा नाग में बन। वेद बाल में बन।

पूजन: यह थे जपन में बने। बने बने बन।

पूजन: यह थे जपन में बने। बने बने बन।

पूजन: यह थे जपन में बने। बने बने बन।
सतीं संभे वे उठों में बहे। शरण के मिष्ठ दृष्टि ने देखे।
पुणे भरते नींदे बहे। रम घनीते हैं। हैं बहे। २५।
खिड़ नै मिले चुरू तर लेने। करते ‘खरीं! तम भय भरीं।’
पत मृत घनीते खिड़ा मारी। ‘हड़कै त ढेरा’ जे भर आतीं। २६।
भैरव भरते नै ताजं विजोऽसा। तम पत वहली बंदे वी गशीं।
आपे भागी चढ़ चढ़ उठी। चउड़ ऊँच वह मात्रोऽ चढ़ी। २७।
हृदय: ‘खरीं! बीं जीवन में अने मधु वे उठो।
में सभ में भय तात नै ताजं देखे कही आटी।’ २८।
पूरी: में तभ भर अभ मौदीजाँ भापा। महिलावृत मारत था खासी सामाज़।
हृदयी वधी उभ मिन अटी।’ भैं सभ मैं मधु मलहरी। २९।
हृदय: वरी सिम्म पहुँचायि उस मुखवी भरीं शाप।
ने हृदय में अने में भर ती तम मुख मधु मधु। ३०।
पूरी: हुई वध उभे वध विजोऽसा। मधु मुख थे मेंडी उलटड़।
पूरी दच पत हुई गहरी निरऽज़। पुछ तमे हे मेंवा मिलहरी। ३१।

मधुदे वध वे पृथीवा

४५। [मधुदे ची वध वे भीव वा भविजय मारक्षा]

पूरी: हृदय देवी सिंह विशाली। ‘खरीं ख़ुरायै वध हें मधु मधी।
मधु महीर मिष्ठ बैठे मु बाही। में अस्पदों सुने चसी। ९।
मधु महीर हृदय में मधु उवाहे। हृदय पुस मधीरे बैठे पुसे।
पत भत हृदय बीं बीं बैठे। उठी हृदय में भर बाही। २।
मधु मधुदे दिरु मुख गहरे। ‘पीव वधाकी दिरु मिन अपज़ी।
हृदय मुखदे हुई र आता।’ बढ़े देवी ‘धम रज़ में चढ़ा।’ ३।

हृदय: भान खसा जैसे में बैठे बीपे बृही मरवि।
धिं ती भागत भक्त वे बढ़े माहे एटी। ४।

पूरी: ‘सत हृदय में चढ़े तथा वध ह्रुड़री। दे मङ्झे रम वध बहछ महँड़ी।’
पूरी: हृदय देवी सिंह दी वाही। ली नंदी मेंहु महीर ख़ुरायी। ५।
हृदयी वे भत हृदय बीं बीं। भावहान वहली बढ़े भक्त।
घरी हृदय तीं दुःख महँड़े। धिं बैठे दीं वध गहरे। ६।

हृदय: में हृदयहान भत ना हिंते दैहीं उद़े उज़ग़।
नेम सिंहत वे तथ चढ़े में चढ़े चीरी भक्त। ७।
मानी मतीः दे भावने ली

86. [षठौं दश चौहानम्, दुर्भागी यथा दे निघारी यथे दित जवानी देखे]

रेगना: वर्षी पूर्ण जट स्माराम में 'उजे विद्वृ भक्तंतान्।' नितावड़ा जाति ते उजे बैंत न भावने भावे।

रेघनी: वर्षी वर्षी 'जाति ते सस्त वदते।' वर्षी वर्षी 'जाति ते उजे धीरे।' वर्षी वर्षी 'जाति भिग्नल जान विने।' जाने जाने जाने उजे न भिग्नल भावी।

उधार उधार टिकावा धरी। 'भव वे बैंत डाइन जानी।' फिर वे पान भैंत टिकावा धरी। धरत पान बैंत धीरे धीरे।

विकुमे बैंत धरत राजा। धीरे उदे फिर वे पाने धरत।

फिर वहां उदे राजा धरत। 'वर्षी पान धरत जान विने।' निवार निवार में वे नुहे। धरत जाति जाति ते भीड़ भूवे।

प्राहे चर नाटी भल भांगी। चर चर चर जाति चर चार भांगी।

रेगना: ने पाने तह आन घने धरताये ते बैंत नानी।

गानी भूवन में वर्षी वहरं ते भेंवरं वर्षी।

रेघना: ते रानी धरत भल पहरूङे। धीरजे धावार धाम धार्य भागे।

'पर इस वाने रानी नुहे।' 'भव वे धार उजे भेंवे भेंवे।' उदे विने उदे धीरे धीरे।

उदे विने उदे धीरे धीरे।' ते उदे धार उजे भेंवे।

उदे उदे उदे उजे धीरे। धरत जाने धरत जाने।
पूर्णीति पंच पूर्णि

टेलर: में अन घोरे आ मिले थे 'अने दिनों में भट्ट।'
उसकह झेपनाक पे में हुई लखे बहुत।
उस घोरे हुई करे 'उस सिर मनसुं वापस।'
मे उन्हें सर भांटे है उस उन देखुड रापि।》१२।
उस घोरे धीमे उस पाणे। वही मुही उसे मुह दरण।
'हे नेती उठि मान मिलन। कुछ बनाए हुए पेट पान।'
मे उन्हें घटि में बने घटने। भैि उद्वें में मिलि आग।
उस घोरे भी वचन बनाप। 'अन घटिं आ पेटा साथा।'
हृदय झी धुं भडे घापल। भूलभुल चुर दिने आपि।
मिशन मईदक सुने पुकापि। बौदि अपं भुगर रहापि।》१४।

मणि दूषिता महेशसे पठार अधिनया सिद्धु भट्ठुरुि
अन टेलर झी भालै वै नेता वी।

85. [उपरांत देने मेहेशस्वान हर रहस्यी, मृणा ध्वनि अशोक भवे,
रेत मरुभुि, सिम उत्तर वा संभावन भविष्य मी, धकिन्य]}

टेलर: घोरे भठाने सिनि वे उ विद झीसे पुकापि।
'जह आपने मरहि वे उह आपने रहिए रापि।》११।

उपाधी: भालू मू भनें भोलै चल्ने। देवत चौटे संदेह में रहिणि।
उस सब बहट पपते उड़ि। श्रेय हें महेशस्वान ठढ़ि।》२।
हिन में चार मृणाव वे आपि। रंग सं भी वे वे में जहू।
अपूर्ण क्षित वे मृणाव में महेशस्वान में। अन झी झी दृषि उघि भीत।》३।
उस वर एले मिसि घट पड़े। एले हें मिसि वे पड़े पड़े।
मिसि पहलभक वृह नापे बेंढ़। मिसि वे पड़ि थिये ठेंढ़।》४।
मिसि झी धानी टहे मू रहिणि। महाभाष शुलि शुद्ध नेप वरणिं।
नेप भविष्य दिवं, दूने दूत चैन। मिसि भवें वर आपो फैद।》५।

वेंशिया: उस नीघवे तजवरे 'खाली चलूकल भलै।
हें उस मिसि झुक्की हड़ि भवजें टौंजे त ठेव।
भवजें टौंजे त ठेव भव भत सी साप्त मू रहिणि।
उठवले हिंद भाजे वैंसि बिसुल है भवजे बिरिणि।
मिसि झीं झीं भाद पढ़े उखि धलैमे भवजे वैंस।
धलैमे रेंस उह वीजे हड़ वाटे पोदे उदव ठेंढ़।》६।

Page 81 www.sikhbookclub.com
चंचली: धृष्टि दिये मन अर्धसर्प हो। उठौं मिष्टा भूष आत दिनहों।
उठे धर्म वधाने गाजी बिसमर्गी। 'ठठ वह यहै वह हैम उधनी। १।
मिष्टा मू कैला लैंग नी तपी। मलव धैर्य वह देखे गरी।
घुटु जेना उठी विध पहलन। मिष्टा भवने युग भरत हु। १।

देवर: मिष्टा मू हृदें पै तहैं 'पहै वध हु।
उठब तहैं 'देव हिन्दी हैं बनीदें मिष्टा नाह। १।

चंचली: उ विद्र हुवते सिंदने दिख छती है। उठब तहैं 'मिष्टा भते तह थो।
गयू मिंते दिल सख गाय। मूज विनामे दिल घट जाय। १०।
बने देखा दिल बढ़ी भाव। महाटीज्ज के दिम बढी विद्र।
भुंजे उने अश्वम भूल। भागे इच्छा महाने गुरू। ११।
देख दिव देने देनी बड़ी चौड़ी। मेंहू मिष्टा देशे धरी।
अध्यात्म मीम दिव जागा बढ़ी बदली। ये नाजे उठब मू हुभ भरभरी। १२।
भुजे अश्वम मू चाह वहने भूल। महाटीज्ज में ये धरे जापू। १३।
उम्ही चौक काय आते हैम व्रणी। ऐल देखिङ बी मह चौड़ी।
मेट भुजीभर मू चत भाग। गृह चत भक्ती फिंदे यागा। १४।

रूझकर हैदर
चलने देव भूजीभर मेट ईंट, निमै उठा चा सुभाष भविश्य मा।
रेंजे मांजिभारने दे उठब वै मीं जोटे भले विधारिन भाव। १।
जानुं मूहबैं भूजे मी दव बींडा,'उदी मरू' ये हिन्दू सुयिश्य भाव।
मेंहू और उदीं वृद्ध दूर दरा सेवा भावे हेत तत्व उगविश्य भाव। १।

देवर: दिली मूः छू यैं हुँ भुजे तह आदे ने।
झूठू लोहों भरत गई, मह उजे बनीदें जुलन। १।

पूर्वा देशूं। उठव वी दिखाली वी।

४५. [भैसूं का मिर्गा उे मिलते हैं हैं हुआ]
চন্দ্রण: পঞ্চম আসন ঘটনা ভুলির পীরগুলি। একটি সময় পিছিয়ে দেরী।
বিশ্রাম হেলে মুখে স্বপ্ন ঘটনা। তোমরা না করে দাতব্য করায়।
বিশ্রাম হেলে মুখে স্বপ্ন ঘটনা। এখান থেকে মনে হয় বরাবর।
তোমরা না করে দাতব্য করায়। এখান থেকে মনে হয় বরাবর।
বিশ্রাম হেলে মুখে স্বপ্ন ঘটনা।

ষ্টান্ত: পঞ্চম দেরী বয়ে বতন ভগ্নী তীরী পাহিত।

মাধী ঘনীমে বয়ে বিখ্যা ব্যাপ্তি

৪৮. [পঞ্চম দেরী চি ভূস্তী, চি ভূস্তী ভাস্মাভাস]

চন্দ্রণ: পঞ্চম দেরী মূল অভ্যন্ত। মাধী ঘনীমে কঠিনে পাহার।
মূল মূল্যে ঘনীমে পাহার। পিছি মূল্যে ঘনীমে পাহার।
মূল মূল্যে ঘনীমে পাহার। পিছি মূল্যে ঘনীমে পাহার।
মূল মূল্যে ঘনীমে পাহার।

মূল মূল্যে ঘনীমে পাহার।

ষ্টান্ত: পঞ্চম দেরী বয়ে বতন ভগ্নী তীরী পাহিত।

বিশ্রাম হেলে মুখে স্বপ্ন ঘটনা।

দেরী: পঞ্চম দেরী মূল অভ্যন্ত।

বিশ্রাম হেলে মুখে স্বপ্ন ঘটনা।

দেরী: পঞ্চম দেরী মূল অভ্যন্ত।

দেরী: পঞ্চম দেরী মূল অভ্যন্ত।
हैं विद्वान अनन्त पहुंच जाती। दिन रात नैतिक रूप तो नहीं।
हम भद्रता अपना उत्सव उठाते हैं। दिन रात नैतिक रूप तो नहीं।
वहे अवश्य चित्र दिखाते हैं। दिन रात नैतिक रूप तो नहीं।

11। राखी मिर्त वान राखी मिर्त उस से।

12। उस भक्ति मित्र वर्तन उठाने।

13। भक्ति से मन कर तो खुशी?

14। उस अनुभव मित्र वर्तन उठाने।

15। भय अनुभव मित्र वर्तन उठाने।

16। भय अनुभव मित्र वर्तन उठाने।

17। भक्ति से मन कर तो खुशी?

18। उस अनुभव मित्र वर्तन उठाने।

19। भक्ति से मन कर तो खुशी?

20। भय अनुभव मित्र वर्तन उठाने।

21। भक्ति से मन कर तो खुशी?

22। उस अनुभव मित्र वर्तन उठाने।

23। भक्ति से मन कर तो खुशी?

24। भय अनुभव मित्र वर्तन उठाने।

25। उस अनुभव मित्र वर्तन उठाने।
चेतनी: उब उहल वे सिंग भला। 'सपिंग चैट रिता जलिवर'।

चेतन: उब चैट रिता सुवर। वैण गुण्ड मुहल वे महल। 25।

चेतनी: 'पिंग रिता जलिवर'। चेतनी: 'यह हवल लल ललिफल'।

चेतन: 'यह ती वे धृती। सिर्फ भारी भक्तिवन बन्दी।' 22।

उहम रामम में रिपाने बढ़ि। उहम रामम भीतर उहम।
बढ़ी रामम 'उब टिक घर नहीं। यह नील उम रिंड र गाये।' 25।

उब टिक वे में दशा तसा धम। उसे झट चहले पिंके धम।
बन्दी वे दिक वे में धत नगर। दिक में वे में धत पले। 25।

देलग: तौम बने बने भिंतरे वे 'भक्तिबहुभारी भारत।'
भारत भें में छुट' बढ़ि। धरे में धरे बघल। 30।

चेतनी: चलल धीर धृत घटत धृतपल। उतरते वे में भर्डी पल।
धरे घटे में भर्डी उहें। आधम में हंगर वे भिंत गहे। 31।
उती रवान कमली रहे। धम भिंत विसर भें में बघे।
उसे उहल वे सबे महल। धरे कमली वे भिंत भार। 32।
उन धीरी ममल किते धम। विल्ल जह बने भी ताप।
बने देलग भम धिमदमद। देल भजार में धरे महल। 33।

देलग: तौम धीरी भारी सिंह में नहीं वे धरी।
में में मीठ मरमधे मरमधे तिसरी वे धर। 34।

चेतन: देलग देल रिंड देल।

50. [गढ़वेल दिस्त रिंड देल वे पत मदहत वा छटी]

देलग: में में मध्य देल वे दीसे दीसे मरमधे दीसे।
नाड़ि शेष भट धम में भीतर। छटी धम धृत। 9।

चेतनी: वे धरे धीरे दिस्त घरपल। लखें मरमधे मरमधे मरमधे।
उहम दीसे वे भारी मुर्दे। ठीट ठीट ठीट वे पत नुमले। 2।

देलग: धम मध्य अन उप मध्य बैकट धम मध्य भारी।
विल्ल वे धरी मर धरी में वे दीसे धरी मर। 3।

चेतनी: नहीं मध्य दिस्त ठिंडिया। मुर्द धरी मर धरी।
बने दीसे देल वे पत। धरी मर में देलःधर मर। 8।
भगवत तबने में स्त्रीजवर हुई। गृह जाये मु रघुर पहुँचती।
महिलाओं घरने में मतिह दीयमज्जर। सुंदर बने मेरा भक्ति रंजती।प।

मंगल: जुग गाये रति कर मार्ग मानिति अने सूखे भी बुढ़ी।
उस ती लोगे भूलत मरिय मूढ़ दूर देखिए।५।

ंदैवती: घरे मारिय मु लूगे घरफूर। चौह टिकाने सिलाने मुर्थ।
होट्ट कर मु रघुर हुई। भुगसबंध हृदि हृदि घरने।५।

ंदैवत: वास मिंड बेड़े चूंक धरा उनये मीम टिकिए।
भगवत विध मंगल भरुपी दूर उत्तर रश रहे भागिते।८।
हृदी मल बैं पलानी घर में लिजे हुड़ताली।
घरे बच्चे मर पर्ने ‘सुत उतकर वे लिजे घरि’।५।

斡बत्रालीआठ ओर खत्जीवाली वी माधी

५९. िंगलामाना िृ जुड़ती साबू बेदे हे मंगला|

ंदैवत: वुखाना मिंड हिहार मिंड रुड़े टिक भाली मिंड पाम।
उप नेह देखे रुड़े वर बेदे वे अघगम।९।

ंदैवती: ‘अपस्र भाल जुड़ती जुभ। उठ घुड़ वे जुड़ीभाल पाम।
भगवाना में भाववी भालमै विसहै।२।
में दूरें मंगल चूंक घरी। वैं दफिने दफारा-महठम ये सड़ी।
सुख उर उड़े रुड़े दूर उड़े। भूग च धर रित बेदे बनगे।३।
भी मारित की हस्ताक्षर वरी। तम वे दुर्द दति विमल खरी।
वी तम बैं घु बीसी भाल। में वे दमन रेडी हिमान।४।

ंदैवत: पूरु में आये भूले भाव भूले न दूरिताबु घंघर।
वैं वरी रुड़े देखे उड़े। में भावमे वैंम मृति घंघर।५।
-उस मंगल दूरी देखे उड़े वे गुढ़ घंघर।
हंदिडी नेहिडाई मिंड बैं, वैं रुड़े में धिमामानि।’६।

ंदैवती: वे मृत बेदे गौम वीपे। अपस्र ठहरा डिम सिंध सीपे।
‘भज वर धिम उ चलके लेत। भज सुत डिम पिंड हृदी’।७।

ंदैवत: अपस्र ठहरा थिकिए भीर मंगल दसगित।
बिह बुढ़े मर छूट करे और डिम हिंदे बंगाल।८।
महत्त्व वा पूर्णता

पूरा [महत्त्व वा पूर्णता]

चेवरी: जैसे महत्त्व चुडूँ बनी। में भले तौर पर मिट गई।
सुन बल नी विद्रोह करता। उसे लुटो घर दिया कला।
माफ करो। दूर है सबी भाव। भाव ना रखा बते।
धो वाड़ू करो। भाव नी अस्त।

cेवरी: वक्ता में चंदा उतां दे उतां। भली होगी कता।
बिनल कल करो। बली चढ़हिं बिंग वाड़।

cेवरी: भला मुं घटी हरिया। भीम के अभाव चढ़ा।
बताए ‘भाई मे भावल भें।’ भीम भागो | ‘पढ़ दें दुःख ले।’
भाग वाहु दे। भाव ले। भाद्र को जाए।
विड़िक घर दूर भाव सुलग।।
भीम तू घर उच्च भाव भीम! पृथ धरन तो भाग।
भागन नाह तो धरन। भावना।
भाव: भाव मुं अभाव। माफ रहो। वही भी भाव।
हृदय वे लीने घांट। निम्न भाव है हिंदु बते।

cेवरी: देव द्रविषार में मूली ज्यो भला। वज्जागरण भें।
भाव। उररे में मुं रूखी दंडजे में बहाऊ वर ध्यात।

cेवरी: अभिहत घिरन में गृह भवता। भालन में वे घड़े गाड़ा।
कचिं तोड़ दे। घड़े बढ़े। भव। भवण ने भी हो। टिकवाले।
कैसे बढ़े। वे घड़े तुलह। निम्न भाव भाजे। निम्न भाव।
भाव बखोड़ा दुःख भीम संघरण। अभी दूर ‘स्रीम में’ दुवरहु।
भीम सीता भें। भाव लीन भाव। भें। धरण। भीम तेंदु।
आस। भाव। भव। भाव। भाव। भाव। भाव। भाव। भाव।
अभव भाव। का।

cेवरी: दिनात चारसी भवताँ भीहो भिन्न।
वैसा सीता भाजी| भाव बढ़ा| नुमान।
पूरः [सुभा सिंहिमा। इन दो हाँसियों है शुभमंगल]

 éxito: श्री समुद्रिया भन्ने धर्म गरीजो लहरे दुआ में नहीं।

 भवन हेड दर्शन जाने लहरे बेहतर रह कर! १।

 सेवकी: तल निहित धर्म शुभमंगल। उत्तर हाँसिया वह वाची नही।

 तलमण उप धर्म बहे धर्म। समुद्रिया सभा भवन मव धर्म। २।

 धर्म लेना जबे घर निखा। धर्म नव रहती हैं।

 ने बुझे भावे धर्म पाये। धर्म वही में क भावे। ३।

 दर्शने दाले भिले मु भावे। धर्म वही भवन शुभ धर्म।

 रहें भवन वे आप भिले धर्म। धर्म वही में क भावे। ४।

 धर्म शुभ हे ते घर नभ धर्म। भवन भावे हे दर्शन बनने।

 रहें भवन दर्शन में भवन वर्तमान। ५।

 सेवकी: पालिट तिमाह हेड भने भावे घटी उंग।

 दर्शन जुगाड़ उत्तर वे भने घाटा देहे बन पुष। ६।

 सेवकी: मिटट घुसर रहे मिट्ट धर्म।धर्म दर्शन दर्शन जीता भवन मवी।

 कुंठ भगवानी भह भवन भग।धर्म घोषणा मव रंजबुद्र वर्तमान। ७।

 परिशिष्ट उत्तराधिकारी एक उंग।धर्म भिले भावे भवन ठिकानी।

 भवन भिले दिम रंजबुद्र धर्म। धर्म भह भावे धर्म। ८।

 सेवकी: उत्तर नहीं दर्शन नहे भनाप रूप देही।

 वराही घराने घर भवन वर्तमान। ९।

 सेवकी: धर्म राते धर्मी भी भनाल। पांच धर्म वर्तमान मूर्ति उठा।

 भव दर्शने में ए को। ‘भव भव भव वर्तमान आप भिले’। १०।

 सेवकी: धर्म दर्शने मिटट मव भिले भगवान भव।

 भव भावे ने जबे धर्म धर्म भाव। ११।

 सेवकी: राग भवन में धर्म नहीं। उत्तर वे भने पैट निखाने।

 मुर्ति रागी मन मिट्ट उठ। दुआ में धर्म धर्म। १२।
पठाव बेंट में अबस घटाक्यां। भावे सुधा सुधा मृत कूड़े दस्ता। जी में बड़ी दिखणे दिखणे चढ़ाणे। घरे उपन घरे छिड़ कर चढ़ाणे। १७। चित्रेक स्वस्त घड़ ढूँढ़े रघुनिधि। अबैं उतव बन्न मवैः ७ पहैं। सूर बैंसे बी सवे जाते। चेवर इसे बहुत अग्निहथ बृहस्पति। १८।

वेदान्: घरे सिव उघ यो हटी हिंच विलिखक्त ठहरे पाहै। दिख दिख नागा आपतो वीही दिख निधुपड़े। १९।

वेदान्: पाहिरुप हे। पठाव में बेंट। विलिखित वीहे ती हैं सेट। बहर बने विहे बाज़ अपै। घर बने अंत हिंद करवने याहे। २०।

वेदान्: यहै भाव नाहिं त गैह। बे सेट अपै। निमित यहे उदर्दे अवधार। मस्मार भी दहिं नहीं। भाग अवधार भरे। २१।

वेदान्: महे सती तु मही ताह। घिरां मुहां। म घड़िये बाज़। “पत्र रमणी” से मिनिं बढ़ाहे। बीते हूँ ते में मिनी। भाग। २२।

वेदान्: महे सती तु मही ताह। घिरां मुहां। म घड़िये बाज़। “पत्र रमणी” से मिनिं बढ़ाहे। बीते हूँ ते में मिनी। भाग। २३।

वेदान्: नस भुंत हे। बहात भाग। सती भागे भाग भाग। बीते हूँ ते में मिनी। भाग। २४।

महेती कहिंतां का पुरावारा।

पह. [भाव भिंस दे। भुंत हे उधार घड़ हिंद कर हिंदुग।]

वेदान्: भेव रितम भावी भिंस भाग। भेव बैंसे भे मीय गिरखे। उधार भिंस देए। भुंत हे। उधार भिंस हिंदु। भुंत हे उधार बहुमात नहीं।

उधार भेवे भे घड़ हिंदु। भुंत हे हिंदु चरण। भुंत हे उधार बहुमात नहीं।

www.sikhbookclub.com


deveda: kahi boli dey teri daw mih man di thune shiri bhagti.

me muktai vai abedan gum bale yad gurwanti shahi.

deveda: pita pathi tei sab pahate abhagi.

tere ike iti daw bhagte.

dhad deke dite daw bhagte.

tere ke dite daw bhagte.

teke deke dite daw bhagte.

teveda: pao daw bhagte abhagi bhagti.

ma ki zindagi tey daw bhagte.

dhas dhite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.


dhas dite dite daw bhagte.
चैथारी: लेख वालें ‘पूजा चैथ अहदन लिख देके मजे भलाहे माह।’
जित मजे मजे उदयत पहली। विद वाह गाठी में चल रही। 2।
चैथारी: उदय मैंने पहली घट नया नया जी भेंट उठाइं।
‘भला ममे उन भागे अला घरा घरी घरनत्।’ 3।
चैथारी: पालिमागी जी मरन में लिख दी। धरीत पहली भल मेंगन बढ़े।
युक्तिविन बैठी त पहली। घरे हेड घरा भले ने देखी। 8।
ही से पतलीपठ पहली पलटाए। उदय प्रभू बेहद देखर घरे।
पाठों बुधा भविष्यमत घरा। दिल वे मवे त हेड़ उड़ाए। 11।

अय पतलउत वा पूर्णिमा

52. [विदिनिहै कै बंधे ते बंधु॥]

चैथारी: यह मजे नया सिंदूर खबर भुजने मु मपलट हेड़।
इना बीडेहुँ नीले भट्टाभुँ बुड़े उठे। 9।
चैथारी: ‘अय मम सिंदूर मु खबर या। अय सनड़ मपलट बस्ती पूर्ण।’
सिंदूर मजे भव भविष्यमत पड़। त्यज पधार निम हेड़ में बुड़। 2।
मिल निम हड़वाँ वे एड़ हेड़। में खुदा नगीन देहुँ देहुँ ते।
निम विलुकत्ता बै घर घंटी। मवे हड़ती धिँड़ देखी। 3।
पाही हंडी हंडी हंडी बाली बुड़। पाही उपनागी उपनषे दिन वही घात।
हिखप्पे खेतर मिंटे पुड़े। जजपे बजाती मवे भुज भविष्यमते। 8।
उदय हेड़ नन नन बैछे वैछ। तिस्कित हजारे निम भेंट वाला।
मनिवालागे हेड़ भुजने। धिंडी नीले एड़ मह भुजने। 11।
पाड़ें वजन बाले अविलुक। धियार मुहे धिंडा जुटे।
भाट घर धार घुट भविष्यमत। देहुँ हंडी धिंडा देहुँ उठें। 4।

चैथारी: ‘ैं बंधे अविलुकिनी बाली ‘धरत देहुँ नन।’
अवे उन मन हेडुँ कहे अवे हेड़ हेड नन। 1।

चैथारी: मवे अपने अय बूढ़ बड़या। बूढ़ बाली बूढ़ मपलट भविष्यमत।
में बिहुद वर वर दिन उबलुक। भवू। मवे जज देहुँ घराने।’ 8।
में मन वाले वाले बैछे वीर। ‘उन घरे पूर्णी पर हेड़ हेड़े वीर।’
भेंट में दुःख वैछे उन घर भुज।। धरत देहुँ देहुँ विठ पवलट मंडू। 1।
नेंट घूट वट रजनिे मिसंग। तभ उठा भड़ी वट वट घट टिके धार्ति
अ निम वट उम भड़े आई। देव वे देह उभ बाम उद पाले। १०।
पूंछ चढ़े दिल अधूर ह खड़े। दिव घप भड़े वरदृशी चढ़े।
उ जा ने हें जड़ र्मनी घड़े। दिव दिव धरा वरसें चढ़े। ११।
मंट सेवन उठी चढ़े दिखे। ‘निम वट दुख मध दिमै के पाले।
उभ पूभी गत संगी थम बाली। देव देवी घज वीं नूजन भाली’। १२।
देखा: घज स्वर्णे चढ़ दिघ बढ़े बढ़े गो दुख बालक।
दुख दुख दिल घड़ कहते भा मने हड़े हड़ कहते। १३।
देखानी: नम वरदृशी दिवत घज वीं। संग संपी मिर धिम कीण।
‘दिव दिलें ए भा ते भा तिजा। अभ वज लटीपे धिम वे मह:’ १४।
उ वै भी भाग में सब घड़े। दुःख पेंकी उभ भजा उद वाला।
वेदिये मिध सिं हव जू भजा। ते उम दह वट वजने वे भाली। १५।
दही भी भाग घड़ दिल सिं हव गाये। अभ दही पारखों उभ गायने।
उ ती बनपट िज निम व्रज जारी। दहै समाधिवी वा धिम भाली। १६।
अवं पत्र अवं याम माने। दहै दहै नाम धरा भुवन। भाज भाज नाम वर नर धरा।
अवं धीमवे निम लटीपे सम। उ उभ पूर्वीर वा धीम मले। १७।
उ धवलघ गुंड रांटे पाल। वे पत्र वरीजे मुख ठाट।
कौ सं ते तमाटिये हिम धरा। मिन नरिया उ इंजीह उठी। १८।
देखा: ने देखि र पत्र पान तमाटिये दहै धरा उँदे सिंह सिंहारि।
भी हिम गान हड़न दे दहै दिले धरा बाढ़ धरा। १९।
देखानी: उ सम दहने चढ़ घज भाजे। ने अभ र भाजे निद धारी घड़।
उ निद भड़ात निस भे भाजे। ‘विन मीर देव वे खनी हड़ने।’ २०।
उ तमाटिये तीने गे पत्र करे। ने राजी भाज लटीपे रमे बैंक घड़।
विन हंड में हिम मीर हड़ने। हिम मिदी पविशें दिमै र लड़।’ २१।
बैंके बैंक ‘हिम भये मह पुली’। वे बैंक ‘विदीर हिम ने मह अधारी।’
बैंके बैंक ‘हिम भये मेंगेह। भैंक चुड़ावे मह पहँे मले।’ २२।
निम निद भाजे निम मले। निद भाल दुख दुख सिंह भाजे।
अलो मुहे झे पी भाज। दवाल नाम दे धजे मजाभ। २३।
चंदन: धूलवें मैं भीम बर्जें 'उन वरस्त भरि' दर्ज।
असर बरजत बीजे लिये दीर्घ बचने नादु बाँधया। २४।

चंपू: मैं दे चटे सूरजी हेम पहिमाटी। में पान भी हर भिक्ष कालाटी।
एंग सुब सुब में मेरे भवने। एवं भी हरते दो दे दरे। २५।
मैं भी उन मज उत्तारी भवने। दे धी ते नेवों पेड़ भरते।
उने गलकट जानम लड़े दें दै। मैं देवस भरते दे विछरे दे मैंराग। २६।
मैं दलहत उन आदें करी। में दे नहीं दे दै। जीवन मैं उन बजी घड़कट। २७।
उन रंगस उन तराज़ें दर्ज़ी: 'भम भेम बी दे दे नेवे भम बर्ज।
उन बरजे बज भूरे होते। 'तीरंद देव रंग देव रंग भरते। २८।

चंदन: उन बरजे पूड़वाजा धिम हेम उम पजाभ भज पजर्ज।
उम धिम मिस में सिन लड़े में पेड़ू दै। सम लजर्ज। २९।

चंपू: उन सूरज रविकट भूम फूलग। 'भम सिन हेतुभ देवे बजा।
उम गरि दे उम बजा करे। पेड़ू घाड़ उम वे लिख देने। ३०।
उन बरजे में लिख दीज। 'भम हाल दूसर सार बन लीज।
मिशर घड़ दूत जाबे देंश। मैं बर रेडूं दे किये देने। ३१।
पातम जोरें मारी देते जेलत। में मिल भजी लजर्ज देंश। ३२।
पातम मारी देते जेलत। में हर बाजी जेलत। बाजी लजर्ज देते विघड़कट। ३३।
में हर बाजी जेलत। बाजी लजर्ज देते विघड़कट।
उम भीम पहिमाटी लजर्ज बुड़कट।
भानू जनवी बा बजा घड़ केल। ३४।
पह. [भावन मिष्ट दा पेंट अगाड़ी मिनाहटी खूंब क रा मवे]

चेंगा: हँड वे पीए भेड़ि अभे लिखे रिक वे दिव उठवाएँ।
      शानि लिखे वे मह छवजे मी महिनुज़ ड़े दुःखाएँ।

चौथी: उँ महान मिष्ट पेंट नहाएँ। तरार भीम मिष्ट रहनुवात।
      'भमे चंदन वे धीमर रहराम। रिखे च्ये मे मह बहुत हुएँ।'
      उँ मुहसीन भाे मे हुएँ। 'धीमर उभ वे पेंट हड़पणे।
      उभ मे रमाद पेंमी वट ख़ुरे।' रिखे वे भावो रम ख़ुरे।

राम्याकु रूढ दिख घढ़े भुखण। वर्षे देंव दिख भावी आएँ।
      देव रघु निर्द कट सग खीरा। उदाहरे मे मे मह दिख भीली।
52.
      रिख मुम् दे द्वं मिष्ट ख़पणे। दणे मुतल दे द्वं दिखाणे।
      'गाँधि गाँधि' वट मे मी दूरावी। 'हँडे धाक्का सति उमावी।'
53.
      द्वं महान मिष्ट ध्रुम मे वर्षे। 'भिं चंदन चंदन ख़नाने।
      मे हँट्टे रुढ़ी उँ मे भावे उँ दर्शी। महाद हुइ बल मीड़े भावी।
54.
      धीमरे देंवर सट मह भाव। रिख पूरे जीवे ख़पे उँक।
      रिख रेंखे हँड लीरी भुखाएँ। पीभे बटाधे रुढ़े दोष दुःखाएँ।
55.

चेंगा: भाव मि मह धुम धुम दूरे दूरे मिष्ट दूरे खाई।
      नेमे भावाक मे भजे जाए हाए। 48.

40. [भजे दा गाँधा: हँड उके ब्रेंट और मवे]

चौथी: उँ महान मिष्ट भाम हँटार। 'भजे चंदन भावे उँ भावाएँ।
      निद्रा तुम्मे उँ मह खुदँ लाएँ।' भीम हँट मिष्ट धर भावे।
52.
      आये चंदन वटे हँटार। 'भजे चंदन भावे हँट धुपऱ्या।
      उँ मह आये रे दे पाण खाझारी। उँ मह वट मह दिख दिखाणे।
53.
      मेंड़े भजे हँड रुढ़े उँ मे भावे। 'भजे जीवे धुम उँ भजे खाझारी।
54.
      रिख रेंखे नी भाव हँटार। 'भजे धुहार धव भी हेड़े उँ भावारी।
55.

चेंगा: भजे भजे धुम धुम दूरे दूरे दूरे मिष्ट दूरे खाई।
      भजे धुहार भजे भजे भजे मे मह भजे मिष्ट धुहार। 59.
चैतिनी: उह साध ट़वीलट दिया सुधार। 'हिंदु पढ़ देए घा पान भारी।'
मे मृत नभे अकलुक उड़े। वह 'घरे लह दिल कित वड़े।' पह।
टेट टेटी किं 'करो' भलन्द। किं 'इंदु हो' नस न्यायल।
वरे 'भा पढ़े मस्त अध्यात्म।' वह इंदु हो न जिं वड़े क्रोधित।' पह।
वरे 'पूनै उह वस ने भार।' गुड़े घरे नी मही गह।
'वहीं दाद कृपा जतेन सगे। घम झुबने रहैं। जा जी नाना।' पह।
चैतन: किं 'त्रित दूसरट आँख वह लागै ले मद सेव।
पर नुरी नं चिं नं गत मद क्यों मे न्यायित भे।' पह।
चैतनी: आम वटा टिउ उह इंदु चली। मॉदी उहा हिंदु वाल दल भाई।
मॉदी मदिल कत भजर चलिंद।' वह सामायल नं 'टुके' पालित।' पह।
वरी 'भा रहे भाई नौ देन। तटि नरटि नाहै मिना भाई में।' पह।
चैतनी मद मनोहर जेने। तम तिलागे लागित मिना यह।' पह।
चैतन: नॉये पाते सन्त वे ओर पल्ला अटि ठापा।
जब वन मद नभे लठे दूटी परा जिम धागा।' पह।
चैतनी: यह चाइकूर बौम हुआ।' 'जाओ हुए अपने वहे उडऱ्या।
मॉदी हें तैं लजे हार। भेड़ घड़ी उसार घजे पाम घाय।' पह।
चैतन: तापी घड़ी के सिधु उक्ते पुश अटि।
घघत सिधु दिन दीठ में देशे मद निवास।' पह।

c.9. [भैदौ दांये नामे दे भविष्य हृ भए।]
चैतन: उं बैठे सी सिंम बाजे बैठे दल दोस नीज घसार।
'खंगला वन वे भट जुमे भोगर अवगम भार।' पह।
चैतनी: किं टेटी 'पवर वश टेटी।' वह टिया हु उह पाली वर एडि।
'जीवत वे भट रहों घो भारा।' उं उने वह मद लढ़े लगा।' पह।
चैतन: उं बुरीत मनि मद वटी चने मदर मु बीरा।
उष भायी दुरदुरी दर्शि भन दिलिमत भग मुरी।' पह।
चैतनी: भान उडऱ्या वह मद भार जानी! भवजे भैदौ उष में घुडऱ्या।
सिं मै भट दिउ भाई। वरभाग नौ जे भिह सह।' पह।
'वस उडऱ्या लजे घरीं घसार।' 'भवजे बैठजे मद भानी।'
उं त्रित भिन्ने भिन्ने में गान। गानी वसुंद हैं भ्रीम बान।' पह।
वज्रूलीकां लो पूर्ववताः

६२. [वज्रूलीकां लो आश्री विसर्जन सैनु चिरी उदबहनिभा]

रत्नम: आश्री मूल्य पूजन हित नेर विश्रुलीकाः मीम दिइती।

प्रेम में भीरे चीरे वांटे पृथ्वि घरी। १

चैप्टर: उब लेेरे क्लारीकां दुर्भाग्ये। 'उब दी अपो वज्रूली दिइती।

वे अपहरो दाढ़ी आश्री वरी। चार्ती नचैपुरि मन मधु घरी। २।

पैंस दुमी नम स्थर भार। उक देह हित सराह घर।

सै उम हेतल तै मं ठाण। ते उम पुरसरन वे हद मार्ग। ३।

ते असों में चेंडे में उंची रेंक स्थिराह्ते। हिम तम में हुम लुगे ठाणाह्ति।

उम बलरीकां में पहुंच वीमा। ताह बलू लव आश्री लेहां। ४।

रत्नम: क्लारी, भनिन्द, ठानल, तंडे, मूल्य, इंकरल।

वदीर्द, हरिकर, पिलालिसे, घरै शेरे, बल्लॉल। ५।

उद्ध में भीरे चीरे मधु चालु चीरे मा ठाण।

समुद राजा मित्र पैंस उदे वीरे गदार बह। ६।

चैप्टर: नैम डरे बैलु घटी आश्री वरी। धिकर गुप घटू ऊप हेत चीरे।

घटू पृथ्वि वेल भवादूल वरी। 'आहुत मिदं भाग मुलं। ७।

रत्नम: उने अल उसनीमुं लडो मा गिराय घराय।

राहु मिझे मुरारि वत अल धरां घरू पारि। ८।

चैप्टर: हिँड देहरे सी नैम मिझे उसे। भद आपहर दररां वे सागे।

हेतु मार में हुम मरुहाँ। हिँड हिंड हेतु पेप गाँधे। ९।

रत्नम: गधर मिझे, मिझे बेवले, निश तेनी जथाने।

गधार मिझे बैलु मरणे, विन मरणे जुबने पैंस बेन। १०।

चैप्टर: पांछ वे में जे घट सने। 'उम हें मेंत र मधुसुल धने।

उम आर घात ता घा जमें। गौटा चारन में हुम हिंड भागे। ११।

गधार मिझे वे नैम घड़ि। 'उम हें मेंत र मधुसुल धने।

बेनर मिझे वे नैम में पांछ मरे। 'हेतु मार में उने हिंड घाने। १२।

रत्नम: तेनी मिझे तेनी मिझे घारी हिंड दिन दे।

'हिंड हिंड मिझे हिंड मार हडी हिंड भवादू घनार।' १३।

गधार मिझे वे मेंत बांट जमें 'उम हें मेंत र मधुसुल धनें।

उपर एंगे पृथ्वि में हिंड ती बेटे उजां।' १४।
सैलिया: उद्दी सिंध हैं हैं पंजे मिराजे। उद्दी सिंध के पंजे में मिभ संग सजाये। में उद्दी सिंध हैं हैं पंजे मिराजे। पंजे हैं हैं सह हैं हैं जिते हैं हैं।

देनदेन: वेदन सिंध भगवान तुड़ने भगवान सिंध हैं हैं साधन।

सिनह: सिनह सिंध उद्दी भगवान विगाने। सिनह सिंध वेदन-विगाने।

देनदेन: स्वीकारे स्वीकारे स्वीकारे स्वीकारे स्वीकारे स्वीकारे स्वीकारे स्वीकारे।
मिय पहलू रहे मिय साहित। चेत सव ते भवाव मराध।
जन न चिंताव वे चूँगे अधौ। जन सी चिंत वी चचा घड़िये। २८।

देवका: अपि भले हे भूमि ती दिय जेना स्वभ राखि।
अपि भले दिय जान मेरे धान वहि वहि राखि। २४।

देवध: तुघ वेंट हे जेना जाने। ऩन वां धान घंटे घणे।
पहुँच अपि घरी दोई ते भले। उते दुःखी दवीठ उरिं बढ़े। ३०।
उत सबे यानार्थ मेरे सीरी भागि। भेड़ू रहाँ रेपू घइँगाह।
हिलवै धेना विलक्ष बिें। दवीठ तो निम बिे। ३१।

देवका: हिंदु दवीठ हुस्न से हिंदु रेदा सृज।
"हिंदु दवीठ ते त देम उभ ने मे हिर धुराम।" ३२।

देवध: दीमूँ उत से वाघी रेटी। उंगे रोव त कधि बड़ही।
भूमि भूमि भे भिन जी बजा। हिंदी बेही वेहु त घाण। ३३।

भेड़ी रहें नाने बा भूमिता

५३. [भेड़ी दला मुख मैल उगा बेटा खेरै भिलाह।]

देवका: भेड़ी रहें मुख मैल उगा घड़ा मसवाड़।
भेड़ी भिलाह अधिक किन्न मरुं मे मे हिंदु घड़िये। ९।

देवध: भेड़ी रहें जे मुख घड़ा। 'ये वसंधारी जेना घाज।
वसंधार घड़ा दिविष मिश रहडी। अवल दिविन ये मिश घड़ा उड़ी। २।
घंटे वे मिटिया मिष बरी। भेड़ी भाग उछलत ये बरी।
दिम बा दवीठ चाली घाज। 'ये वसंधारी घाज। ३।
घंटे त दिन में घंट विलक्ष। 'ये अहाँव तू घंटा घाज।
हिंदु रेदा रेदा मेरे धियापट। भिन नाने दिय बाँधै घाज। ४।

मरु में घंट वे वहुँ घड़। 'भिन भाग मे मुख घंट मुख भाग।
घंटे वे रुपे ब्लवीठ। 'भिन भाग मे मुख घंट घंट भाग।
मे हिंदु चढ़ै वे घंट घंट घंट। मे हिंदु चढ़ै वे घंट घंट।
दवीठ पहिमाण मैं खेरै। मे हिंदु भवाव मे हिंदु घंट घंट। ५।

देवका: अय घंटे घंट हे अये घंटे भिलाह भाग।
उद घंटे धुरीं हे धुरीं घंट भाग। ६।
84. [बौद्ध की सिंहदी की बदली]

देवगा: हे देवगा वे दिव घड़े हे देव भाटी उज्ज भट्टी।
फिर बब्बे मातिल मिन्न वे नहीं गुहे साफ़ै।

देवध: हे देवध बी दिव उज्ज भट्टी। देवध राही देव टट्टा बाहरी।
उड़ी देवध राही दिखे मेहें। फिर बब्बे मेहें बी देबीं चेंद।

देवधा: देवधा राही वे निरं दिव वे निरं दिव बच्ची।
अंत भंतबर घड़े दिखे नौ पढ़े बढ़े साथ।

देवध: भेसे धरु लल दिव उज्ज भट्टी। धिरं धरु भट्टी साथ भरवामा।
भरवामा ये देबीं दिखे बाहरी। देवधे वर देवधे चेंद।

देवधा: देवधा धरु दिव दिव बहू भट्टी। धिरं धरु बहू भट्टी मेहें गहीं।
"दिव भं देवधे भिखये बेली।"

देवधा: देवधा ये दिव बहू भट्टी। धिरं धरु बहू भट्टी मेहें गहीं।
"दिव भं देवधे भिखये बेली।"

देवध: देवध घड़े वे निरं युनी निरं युनी धरु घड़े नी नीरा।

देवध: उड़ी मुहुळ भेम धिटा। 'अंत भंहीं वर' भी हुआ।
बब्बे महुळ बाहू भट्टी। उड़ी जी वै धरु मेहें।
"दिव दी वै धरु घड़े दिव धिमाली। भामी देसी भिंहीं वटी मेंटी मुहुळ।"
DEVAN: जै मूत तवही तै इश्मे जाति पर बही अपारति।
भम वत बहत मू वत दीने ‘भासव भम पूषारति’।

CHAPTI: देशूरध बै मित गौं ठारते। देशूरध भानुन माघ ठठपे।
दिनी वतम देशूरध किराण। मत वे सत वत देशूरध विहार।

DEVAN: धमीभरत में वत भव बाढ़ी बुधी जाने दिना सहि।
आमशीकड़ ठुक बुढ़ी मुड़िल भिली फिट ठुक सहि।
अधराग मिस नवापुष्प मिस नियित ठठपे सहि।
अत बल घउड़ी दिनी बीज घउड़े बुध सहि।

अध बूढ़ की माधी उड़ी

कृष्ण देव ई स्वरुप बै देश के पिने भाव एक बे माधी पेंढ़े।

DEVAN: उघ बंधे वे रिल अधी बूढ़ स्वयम सहि।
मी भोपे वे सतम वत भो निसयत सतम पारत।

CHAPTI: उघ बंधे से मेही वती। ने बंधे रिल ठाड़ि ठढ़ी।
बंध बूढ़ मे दिसी चले। मूढ़ व ने एँ खे चले।
बंध बंधे ‘ये ते ठड़े त चले। बैमे वत उघ बंधे बाढ़े।
बंध मूढ़ी घन वी बढ़ी। तव कहे उघ ती ठठ पारी।
सिम सिम तवत भुष चल्पार। सिम दिल तिर उबंधी पार।
धुंध चल्पा रखने ठई। अभर नुआवटी पड़ा म ठठ।
धुंड पिने विदुः चढ़पे। बै बेच ‘में तवे त थे।
मे पिने है साँखु ठठारे। ठठ मूढ़ पिने बेचे थे।

DEVAN: ‘बंध बंधि’ तव मूली मिसल पव बाढ़ी में।
उवलभ भव माधी उड़ी सतम हठपने ठेल।

CHAPTI: माधी दारावह हठपने ठड़े। बंधे रिल ठठपू ठढ़ थे।
बे ‘बलभाद बाढ़ी बंधने अधे। तुढ़ी वतभाद ठहराहे मेंथै बढ़े?’।
उघ सिंधु पव हेम सु भारी। भुजव हठ सिंध तवत पवर।
उ घउड़ भवी सिंधु पव बील। उघ बंधे से वती उउसी।

DEVAN: उघ नमे मूप मैल ते मूरथी बीठे बेढ़ा।
‘भेने बात दिनार बनिए दे रिम बीठे बेढ़ा?’।

CHAPTI: सिम मैल उघ बुढ़ मेंत। वती मूरथ हठपने मिर्द़।
उघ बंधे से भेने मिर्द़ी, ‘टिठै हठपने क्या त गामी।'।
उभरी सिखी हिंद वस तली। वह दुःखदि उह दुःख दी तली।
भी अध अथवे धार दुःख। हिंद हिंदे दिन उपन वहैं।
भुझ उभरी वस दिखा दिन। गैंगे बीठा दीर्घ हाट।
उके घरे पनी दुःखदि वहरी। ‘रघूने घरे उम रेखद दिनिये’।
इच्छ रेखद पिने पुख दिखाई। इत स्तव भेंट दिनी।
उज घरे ते बीठ वहले। आठ घरे बै धाम बढ़िये।
घरे बागे अध है घरे भैंडी। घरे दुःखदि नानी नाखं वेंडी।
सा लिख वही बवही भगवान। भाग उदवल बै दरी बालधिये’।

देवगन: घरे अपने बीठ हिंद ‘फिन्हे दिने दिखाई।
है घुरावे उह भैंडी सिख रेखद वी साहिद।’

देवधी: उ बीठ हे मंदे वली। दीर्घि पिने दिम दी थली।
उने बै धाम वें ताजे बुढ़ा। पिनते बुढ़िये अभमयल भू धुअ।
उज घरा तह रेखद हद। नाखे पुखद अभमयल सड़ा।
बेंट बी दिन दिन देह दहदी। बजा मने टुंक विद ना पड़ी।

देवगन: ‘वृँक्त बहदिये दवेगा अपि ध्वान आप।
कुर्टी तसील दिन हमवनो।’ उने दिने बै दी सूथ।
नाखे भैंडी वी टेंद उदी सिख रेखद वें ताज़ा।
सा निचुड़ि उदर मुख मिनस पड़े मिनस वें जन।

देवधी: सिख तेंद भूल उदवल भाग। मिनस पिने दिने दहद भाग।
कुर्टी पिने दे उदवली। बूढ़ं दिन हकका बबजाव़ी। नाखे भूल में बड़ी रुख्ती। ‘रेखद घरा बड़ी’ बै भूल।
कै बै उदर देह बीध। बूढ़े बुढ़िये मुख मिनस।
‘बाहु बाहु’ उद नेके बसाने। बाहु वेंट भू धुअ घड़िये।
भैंड मिनस दी पुख भिटी। मछ दुःखदि दिखा घरे मूर्ती।
बिने बेंट उद वेंट घरा। कै बै उदर हूह घरा; वेंट भूल हद दव मिनस देंडे। बे उदर नाखे बै देंडे।

देवगन: बिने घरे उद वेंट घरे बाहु। वेंट दहदे पुखदि उदर नाखे बै दे मिनस।
साहिद जगे पूलदि उदर नाखे बै दे मिनस। 28।
घरे दिनदि आठि वै भूल बुढ़िये मध मंड बजा।
भाूह धरते दिन सली सिख मिन सुराव वै जन। 29।
चेहरी: उम घर भुज चढ़े जा गया । छूट बेह रौम रूही थीतरी।
देग वीलम उम नी जानी। बैठ ऊपर भले धुमी मा आती। १०।

अध मामी घंटे वो उड़ी

क. [चेहर टपरा दे घंटे मामे टके टुड़ते उठता]

चेहरा: उम घंटे रिल्ल रिल्ल आती ‘अध मामी घंटे मामे मेलात’।
उम उम जवो वे फिजवे ‘अध मामी मा उम उम मेला’ १०।

चेहरी: उम जवो ते मामे कहली। ‘घंटे भीतरी विच उड़ीत?’
भक्त बली में रखो नाती। उम रिल्ल में ते बजा आती। २।
घम बल वे ते जिंदगी। तह से देके दे लॉंग उटाती।
तनी लॉंग उटाती ने जिंदगी। वे घंटे घंटे घंटे घंटे ३।
‘उम’ बकरी ‘उम मामी उड़ीत! टुड़ रूपट वल्लिद वी।
दिव वल्लिद नै उड़ता। दिव रोप भो वल्लिद वी ४।
मे दिव उंट उंट भरी नामी। भक्त घंटे ते घंटा आती।
ना घंटे वे चुप्प तीरी। घंटे बुरीतमा मामे लैरी ५।

चेहरा: घंटे घंटे ‘उम मामी धंटे उम आते धंटे घंटे घंटे घंटे घंटे घंटे घंटे घंटे घंटे घंटे।
भक्त जवो जवो मेल वल वल घंटे घंटे घंटे।’ ६।

चेहरी: केह घंटा रिल्ल घंटे घंटे। ‘हेम केहि में भक्त उड़ी।’
उम उम घंट पे लैरी भक्त। बलपाली रिल्ल भक्त घंट १।
घंटे घंट पे रिल्ल राखे घंटा भक्त। बम राखे है चिंतारूढ़ दिअ।
चत वीरा घंटे* दिअर चुप्प है। दिअर देख भक्ति है वे पहले। २।
घंटे राखे भक्त गुरु देखा। दिअर देख वे मत घंटा वेला।
केहि भक्ति उंट पारी पहले। भक्ति पारी वे भक्त घंटा। ३।
घंटे से घंटे से भंडा वरारा। घंटे मत नहर उड़ता भक्ति।
हिंद में घंटे में भंडा भक्ताजा। मत वल वल उड़ता भक्ताजा। ४।

चेहरा: भंडा भंडा भंडा भंडा भंडा में उंट रहे भंडा परंपरा।
िरे भंडा नज़ारे में ते भक्त रहे रंग रंग रंग। ५।

चेहरी: नज़ारे मत भक्त भंडा भंडा रखे। भंडा भंडा भंडा भंडा भंडा रखे।
पे मत घंटा रखा कहली। वे रखें भक्त घंटे मामः ६।
घंटे रखें घंटे मामे म घंटे। ‘भक्ति भंडा मा उम घंटामे।
घंटे मामे मामे मामे मामे। भक्ति मामे मामे मामे मामे।’ ७।

* रंग है, रंग है।
चैनध दा टैट धूरी

हैय। [हैटरे दे हैंहैरे दे दिस्मीट बचावे दे दिस्मीट बचावे]

देनमा: वृहत धृता दो लैजे सेके मिःसी बेन।

उसमा दिनिंग मेहर ओं सुनिंग सेंगे मैं।

छैपी: अब उसे से हजरे पिकछा। इन्हें उसी हुझा घणां बनाही।

उसमा देने सपे दिहूसी। बॉना टेंड उप घरषी।

धृतु चुजुट अदि शेके घरी। तमां दी दी घरे जून धरी।

छत शेके वे घेता घरी। चेकट रित घरे ऊप घरी।

खैर घरे मधुमेक दिल दिलही। वे घृह दुभःभिः मध पाकमा दिलही।

ईवर ठहे दिल सहे र पाहिं। तीवर भावी रूढे भागी।

अय घरे घरे अदित घरषट मांग वा धूरी

हैय। [हैटरी घरे दे पुढ़े दे घरषट मांग पाम घरे दिस्मीट दहापा बीडी]

देनमा: वृहत मिया घर नृट पती है मध धरमें मैं।

मिया उलब वे ने मूले हेति नृट उप चेंढ।

छैपी: वृहत मिया बघे पैर। सीम उलब दितव धवल वत। भाग जिव दली जौह मानुष।

उलब मल्लौं नान आदे दुह।

वे अभिरं ने हीहे भाग। बॉमी उदार वी उपान।

घरी वे महू घरजे ये देव। मघ भैयाही वहे भेलव।

घरषट माँड़े वे देखत भागी। वरी दहापान उठके घुड़ माँड़े।

भूलभ मगमारी नान नृट सहे। विधिधर्म वे घुड़ सही घटणे।

देनमा: दृवगी ठहरे दी रूढ़िं विलेव से उम दिल नां नाहिं।

भूल मानाप नान दिल दाने ठीक भी दिलपण।

छैपी: वरी वी हिदव गाडी कुमधी। घृत घृतदी घृत घरे भोजी।

देख लीभा देख मांड़ि ठाड़ि। भव दुख-दुखी पुन भवमारी है।

माँड़ि निमित्त ‘जहां घरे घरी’। घर घरणे ‘भवमार मध दिल।’

बॉमी घृत घृत घरजे हैं। भागने घरीही घर दिल भेड़ मैं।

भागने मस्तीही बने भाटी। निमित वी गाउ वी चीन वात भाटी।

घुड़ वे दिल घट हुआ भाग। दिलि घट दिले मांडल ऊ नास।

भागने मस्तीही मांड़ि हुआ। घाटी पहली ये से दान।

घृत महादेव भीत मु नास। भिक नाने त दिलु घट जैप सुहाग।

* अधि: मलाश।
महाद यह घर गहरे घर से। नहीं करे रुज़ छिड़ जी से।
उस जोत ठ लम हस्ताव उत्तरम न। हिंसा वहे भटु रेंदे भटु। ५०।

देवन: ठिंड़ भग घटेे दैम लौट, ठिंड़ भर धर पड़त विलापित।
ठिंड़ भरपाण्ण टूटो दिसेंके, अंग हेंगर तीर्थ सुनापित। ५१।

मेहन: महँद घर्षत सत, भटु मौदिर घर उममू मने।
दमसार मूली हैम रूप, रवाने मु 'मिलाब मूम हली। ५२।

देवन: ठूँडे मर्ग ठूँड़ चुववे नाजनी। हिंसे ठूँड़ हबनाप ठ भटु! वरिष्ठ घर ठूँड भटु मती। हिंस भर सत घर भटु नूँ यूही। ५३।
'से में हैम मिदिं' वरे समापी। भट मेरे रज़ रेट हमदी।
में महिलान हे डूँढ़े पड़प्रू। भट में मौती ते डी सचुँ। ५४।

देवन: ठूँड़े गरे ठूँड़ विचरे। धुर्षिम लास ढी चलने।
ठूँड़े भटा मूर्त हैं ठूँड़े। वरिष्ठ घर ठूँड़ भट भटु। ५५।
हिंस वै गम भज़्व करे। भट मेरे रज़ भट निलापित।
णुँडे हैम भट हबनाप। उत लहँग बुढ़ बड़े र जाप। ५६।

देवन: 'महान पूर्ण इरे' मुहे 'करे उदे तावहित।
उदब हैं भट' आती बहै भटे में भटि नावित। ५७।

देवन: भोमी चारु मूल मूल इरे। ठिंड़ं वर्षां दह भुजवे वरे।
दमसारी ठिंड़ासी वने बुझापित। भें ठिंड़ ठिंड़ वने मागित। ५८।
में जाने ठूँड़े गुम बिटापित। 'भट मेरे वरी फँसे पुलापित।'
पर्ने के आरे मीताह*। पाठ डाँड़े भट मुमहास। ५९।
कमी वै 'से में बर्ज़ घाट। भट मेरे गरे भट पदे घाट।
हरण हसराबी वासे हे बैठे। उने सपारे 'उ' वने मेहन। ६०।
हिंस वजीरी लेरे सतिं। 'भट पुपापित। भट बिगुं भसित।'
वै 'बैंदा के सही नाम। भट कियां हे भटे आहे। ६१।

देवन: 'उ' ऐमाॅमा ठूँड़े ठूँड़े टूटो दिहै भमायं बहै।
उदे बरमापित न ठिंड़ मुहे पवित्र म घर्ज़ा सर्मीत। ६२।
भूषण म्यूदी हबत भिड़ जसी भीम भिटापित।
आपे 'बहैं वरद के उज़ ठूँड़ ठूँड़े धीमे भसित।' ६३।

देवन: ठूँड़े को 'उ' तीह धाराप। हिंस वजीरद हूँ ठूँड़े भटिता।
वै 'उ' वजीरद वै ठूँड़ महां। उने ठूँड़ में भण्डी साड़ी। ६४।

* मेह महास वै।
ईं वजा विश्राम है वज सभें भें। धरी वजा माँगी उठ हरा यें मेरा।
सी पारमार्गी विधान तगाै। मे शिक नावे रिश्तारी ओआै। २५।
देख लिख दे धीत उम रुपी। उम लीलार ते डिंड गाढ़ाै।
उ बतैं वर्ध्मानी ता रितुरी पाँह। रेख बना धीत उम रे रुपी। २६।
धीत बांट दुसीलह तमंगे तेंदै। भागैं। नाती घाँडी बदि उंगै।
तेका दिन ओ उंग में उपै। महानंद बुकृाैं। विधान तंगी। २७।
बेदुं बतैं भरैं मे भेंज भाग। जिन्त बाँचैं मे मैं मूल प्रणाम
विश्राम माँगी घटान दुराै। माँगी दुराै। रीत दूराै। २८।
बतैं पारमार्गी मे रितुरी पाँह। विधान अपाईं। पांडण ताणी।
धीमे बदि बदि वै मैं उम दुर्भाग। धीत वत युँ उंगी समभाग। २५।

ईं। [रविकान मांग है डैंडैं उंग में बने सभार दुराै। बुंसी भागा।
चेद्या। भौमे भौमे पब्बनैं दे भित्रैं। दे भित्रैं। २५।
भागी। धीत बतैं 'उम सिमम बतैं। वर्ध्मान में हर भै में उंगै।
भयाँ उंगैं है बुडौं घाँट। आधु। भित्रैं हैं हंसम मांग। ३९।
उम विधान माता है। में ही धाड। जिन्तैं उरैं मे अभिप्रे है।
आतैं। ठेक अपैं उड़वरे। उ आतैं मे बुडौं निमायरे। ३२।
भेंदिया। वे तैं मे बैं। भें मैं आतैं। बैं हैं।
माँ भेंडेंस हैं। वे रुपी। वनन्द भूमा हैं। वे रुंदी। ३३।
बतैं धीम पैं निवृत लौट पड़ना। वे धीम अपैं। वे तांड हेवरा।
से भिंिे। धीम हैं। मैं उड़ उड़वरे। ३४।
ढेंगा। यैं वति उड़वरे। वैंकै। भाग उर्तरि। मेंंहै। भाग।
आताने। वेंैं हैं आग अभिप्रे डैं। दूं। ३४।
रूपी। उंगे उड़वरे। एह दूं। धीम उंगे। वे तांड मांग।
रुद्र। रुद्र। उंगे रुपी। मैं हुं। थान। धेरा। रुद्र।
पल्ल निवृत रूपाै। धेदा। पल्ल पूहं। वे पल धेदा।
भापै। हुंड घर। बूम। भाग। भापै। रूपाै। ३३।
वनन्द भूमा हैं। भाग। भाग। मे है। भित्रैं। ३४।
रविकान मांग में भाग। रविकान मांग में भाग। ३५।

२। रूपाै।
देवन: दिवदिवस धामधाम वतन व वि सिनं वीती जात।
द्वारा देवन बांधु जात सितार नत सिनं बीती।

दिनान: नई हरकर भी संवध वती। भांति उजाली सिन उसें वती;
भवते वहंश वते वती रंगन। इंद्र धौली उद्विगः रत्न।
दिनान भवते भवते भवते। भवते भवते भवते।

dी भांति भति दिनं वती। भांति पहुँचाते वतं वतं वती;
उत्तरि भति भति भति भिकारि। 'भवते में भति अधि सिनं वती।'

दिनान: में भवते बे के सुर भर जुलते भाषि भान।
भति दी में दिनं वते देव ल विके सिनं वति।

dी भांति भति विपिननाथ 'भव भणैं भवते भवते भिनं।
भति भवते भवते भिनं भिनं बिनं।' भवति भवति भवति भवति।

दिनान: उसंि अभी अहरत वी भाण श्रीवें वे श्रीवें।
दिनं भवति भवति जात भवति भवति।

दिनान: ब्ये ते भव ते पहिले भावी। भव ते तित भव रघुसंि भवही।

दिवदिवस धामधाम वतन व वि सिनं वीती जात।


पुस्तिका द्वितीय भाग पृष्ठ 34

10. [अवचित भाग लिखें] डेवी वर्म है देख कह। वर्महर है अंग बने दिखाई। यहाँ वर्म छोड़ उछल कर उछल है नाक। अब आए नींद है, अब आए नींद है। नींद है, नींद है।

कहाँ है नींद वर्म है नींद वर्म है। वर्म है नींद है नींद है नींद है। नींद है नींद है।

देवहर: वर्महर है नींद है देख कह। वर्महर है नींद है देख कह। नींद है नींद है नींद है। नींद है नींद है।

कहाँ है नींद वर्म है नींद वर्म है। वर्म है नींद है नींद है नींद है। नींद है नींद है।

पुस्तिका द्वितीय भाग पृष्ठ 34
21. [हजुरजीवन दिन तम पदु]

रेतर: भवे घनात परिच में मदु वेदीगी में मान।
हजुरजीवन ह्रिम पेठे दिमवे मुते उद्धत।
रेतर: हजुरजीवन मध उधेद घरजे। पुजात ह्रिम में मदु जवजे-ज
बहु धरे यत स्वंद धरं। भाइ प्रितमं युग तै माती।
घरी मुखर दे टवे चल भाइ। घरम मारित है से पस्तसर।
ह्रिमवे बहु ने रेत दिरवत। दरजे छाँदे धेईं धेर मारव।
रेतर: हजुरजीवन पुरुष आदिका 'उन राजा राजे मधसर।
हर चरव वे भव देश हिम में ठुठ बिचलागी।
रेतर: घरी पहरे नधे विमवे। मधात ह्रिम पुरा साले दड़ुजे।
घर राते ताह जवजे धिकात। राजर भजीवन ह्रिम राते मड़त।
ह्रिम है पुरुष यह यह माली स्थै।
भाद अपार मारित में मधगट सीता दे सो सम।
अधम मारित वे भव वे भागी। ह्रिम मे भजा वी पल हें माली।
हर रातु वे भव दें भागी। ह्रिम भजा भिल अध बने पुराणी।
प्ल नाड़ घाट रही ह्रिम में। ताह नाड़ भल मिही कठी भजी।
भव रातो वही रहते बिलुर। हैत पुजार लहरे वहु द्वे।

अध पुराण खिड़जे

22. [चुगां वे चुगां हरी]

रेतर: भवे घनात हिम भा तरी 'उन भरे भर राज चरा।
सीत देवसरे में नाडे माली दिए भागी।
चेष्टी: मैं अध भवत धीरे धीरे आजी। धीरा लीले जुल दहती।
अध विव हर वे सबो ठे तेज। धीरी भुलव दहले दिलकिन। ॥

पृष्ठीता नामी चौथ दहले वा

23. [केशवराला उन निपुक उ धर। धर निपु उन सरीरीत है भूलम्]

चेष्टी: वूलु हड़ने धीरा मरुजे उ धीरे साद। धीरा उन भुलव ठेले वे सरीर ज़ुलाक मरुजे। ॥

चेष्टी: धातु भक्त धीरा ज़ुल ताही। 'वजघात धुत' धीरा ज़ुकामू। धुत उन निपु उन सरीर। धुत हे सरीर धुत हे सरीर। ॥

चेष्टी: धुत देखे छे धीरे देखे। धुत वर गठे वरा वाह। धातु वर गठे वरा वाह। धुत वर गठे वरा वाह। धुत वर गठे वरा वाह। धुत वर गठे वरा वाह। धुत वर गठे वरा वाह। धुत वर गठे वरां वाह। धुत वर गठे वरां वाह। धुत वर गठे वरां वाह। धुत वर गठे वरां वाह। ॥

चेष्टी: कनानी धातु निपु धातु निपु। धातु निपु धातु निपु। धातु निपु धातु निपु। धातु निपु धातु निपु। ॥

चेष्टी: धीरा ज़ुलाक मरुजे ठेले ज़ुलाक मरुजे। धीरा ज़ुलाक मरुजे ठेले ज़ुलाक मरुजे। ॥

चेष्टी: धीरा ज़ुलाक मरुजे ठेले ज़ुलाक मरुजे। धीरा ज़ुलाक मरुजे ठेले ज़ुलाक मरुजे। ॥

चेष्टी: धीरा ज़ुलाक मरुजे ठेले ज़ुलाक मरुजे। धीरा ज़ुलाक मरुजे ठेले ज़ुलाक मरुजे। ॥

चेष्टी: धीरा ज़ुलाक मरुजे ठेले ज़ुलाक मरुजे। धीरा ज़ुलाक मरुजे ठेले ज़ुलाक मरुजे। ॥

चेष्टी: धीरा ज़ुलाक मरुजे ठेले ज़ुलाक मरुजे। धीरा ज़ुलाक मरुजे ठेले ज़ुलाक मरुजे। ॥

चेष्टी: धीरा ज़ुलाक मरुजे ठेले ज़ुलाक मरुजे। धीरा ज़ुलाक मरुजे ठेले ज़ुलाक मरुजे। ॥

चेष्टी: धीरा ज़ुलाक मरुजे ठेले ज़ुलाक मरुजे। धीरा ज़ुलाक मरुजे ठेले ज़ुलाक मरुजे। ॥
पूर्णिज शेष पूरण

उइं तह बे बीजी पाठी। भिषान भुजितें। भर्जजं सती।ँ अजलवं निम मत ना पढ़ा। भाव लझ कटन टहे भजन।१४।

पेदार: साब भिष भजे बाल भिषी भजे। सती घटने तें।
निषम भानु में भू में इथे तें। भजन।१५।

पूर्णिज भीमभ मत भूल घंटी घाट भज

२८। [खींटे बे भीमभ भां बे इनीं भां हे भजन]

पेदार: पिल निः भुज सतीस्वती मत। में टोंट चढ़ते त अभ भेंगजान।
इन चिता बे बीज। भिष बत भजव। ठड़ उकाजि।२१।
बिंद्र 'अभाणे बजा धिन थती। भाव भाने मब धिन धिन थती।
भिष भें में बे बीज मध। बहां क्लो भे भागे राख।२२।
भलव स्वीड़जे टूट भज। उवरल लुट बत में बें। धर।
उलबल स्वीड़ बे बीजी पुड़े। अभे न टूटाह भें। घटने।२३।
भीमभ मत बे भजवे भां। भाव भाना दिस। बनव नानी गजी।
बहां क्ले में टुबु बुड रुग्दा। भान में मध बें एस टोंडी।२४।

पेदार: इथे उब हुमभ भजन भां। स काव जे ठह बजें राग।
उब टेवर बुम बे बरा भिन वने बर वर्दी।४।

पेदार: मज धिन बीज बे खींटे भां। चले बले। उम बीज बे ठह।
उब दिन में। घंड विंड थपी। भल उलबल हें क्ले मधी।४।
'उम उम ठह बे बीजी। 'उम धिन भां है पैद र थपी।
भीं हें चंद घण भिष वा भज। भन। उलबल में बांध रुद्र।४।
उब हे इथे। चिंदो ठहे। चले बजी। हे बुड़ में।
उलब भिन हजे दे दिन गढ़े। 'भुज विंड भजन भां। नक धर।
भाई मुख। खींटे बी घठ। ढूंढ आपस। बीं। उत्तर बींवे भी। भिष भान।
सच भिन। भत पाती वी बी। खींटे बी। हे उठी।५।
बींट बजै दे 'उम हे काल भें। तीरत भज बलबवे। खींटे।
उब बींट हे में। देंबु निःकर। खां हिंदे हे भें। पारिए।६।
नियत भिन हजे टेवर भज। भाम हे। हे उब एक।
हरी विंट हे। रडह भज। रं टेवर बे। दीदु निःकर।
२९।
यिट नब गाव भिन भुज पाती। भिन हजे एक दिन।
हुंडे धरे हे मज। आ भिन। उब हे वुड़ हे।
चेवल: उतरकर शुभ सिंह धरी नह झिल भत गाड़ी भेड़।
झिल भत भवें दिशा बीरो लग फल पीठ गाड़ी भेड़। ९३।

चेवली: उं हैता रत अधिे घन। रत वाली नह नह घन।
नेत भगिन नह घन भी घन। मूरद घना उपे नह उल। ९४।
सिंह मंजर उते नै मै बल। नह घंटू घेहे कही उसक।
भूम सु भगिन मह उल देहिं। मंजर दिने उ घर जाने वेंड। ९५।
उत ठैंरे रचु शुभे लग। यही सवार भव उतरकर घन।
भवाणे उतर भेड़े वे ठैंले। चुहे थे ठैंले चूहे ठैंले। ९६।
में विन हैें हैें रत भरे। बन लट झिल मिश भत है सरे।
भारी पीठे परे सिंह भाग। शिव बल भेड़े उतर ठिकल। ९७।

चेवल: हुबद हिने सहिर्मि उ उनव तौड़े हांग चवागूंद।
भो घेहे पांह घड़ पानी बल भी मेंवें ठ पाहूंद। ९८।

चेवली: महामहीर वी एके भटी भरी। युद्ध हिमे वी विहार महाधी!
विवाष मगवे भरिहिं वनक। मूल घड़ उ घपे वनक। ९९।
घरे बागे एहु नह भत थाहै। है हे मुस भे भत सिखावे? १००।
बागे सभू चौ भी हैमे भाग। भे भी हिम भिं मह भटूप। १०१।
ने भरि घरे आये चढे चढे। यही भागड भटी मंजर भागजे;
चेद घरे हे पढे भी। यही बूढ़े उच चढे चढे। २५।
पे भरि घरे भटी कुल भटी। गड़ भटी कठी भटी भटी भटी।
लागां भिंधली हिम पांह घने। २२।
वित नासे वित नासे ठाण्डी। घने भीत में स्पष्ट हटितगिरी।
हि तेना घुब घरे हलका। वत भवही ठेट आकी चिनता। २३।
मित्त बाट घने घरे घरे चवागूं। भव हलजे गड़ ठिट हैम भटी।
हिम घिय लीने महामु भाग। भटी मूहे घटीकी उठाव। २४।

चेवल: चुहे घनीके नत घने घरे झिलेले सण्ड।
हैम वेक जम हिम गाड़ी बचि ‘तिमवर्देव झज भटी’ । २५।

चेवली: हिमे घे ठैंले घंटे बले। भवाट महरी हे झिल नाम घने।
उत रकु रत घड़ नकी अशे। भत भे साग घड़ भी भव घने। २६।

चेवल: घेत भेद वे चुहे वे घरे नी घने भाग।
उतव मही घेते वहै घरे वेंले गल। २७।
अध धेरै वे भागी यूँता सिधान रिभजै उर यान।
बेठै उवा धी ठाँच मरे धेरै मलता इंच।१।

चेर्टी: उर धिैल मे विषम क्वुड। आहुत धीरै धिैल उरी।
डूब रैय सर रैय कर्ते छौँै। वासमे भूलगा सिटी वी धीरें।२।
उर मैत्र तृझे धनी मलारी। आप मैंता हिैला पसिनामी।
धुती बाजी यती माहें। 'बने बने वे वै वेंटी में'।३।

देखा: उवा वे पेप दै नै साधे उरउ वेंट १ देखी।
वेंटी वे ठाँच वे उरे भरै सबे मरे ठाँच।४।

चेर्टी: उर उवा ते वन गेल। 'वै महिला वे जती उरउका।
स्वाल करैले तै उमा यान। वरणे तै सिंह भूलवै हाम।५।
ईश री वै ईश भरै मरे। ईश वे तै सिंह तिव उसरे।
से भए मउसे उडैल तांगी। तै बन्दे भरै मरे हामी।६।
उध मैंता है बैमे महल। 'रत मैंता भार्गी उम ने तृझै।
वै छौम वे उम मैंता उमरा। दही पालिकारी कमिश ईश भार्गी।७।
उर भए हुठी टलला। दै भड़ेवा ते माहे। 'उम सपे भारा बी यान। उच्च नेवेल थे वे अहत देख।८।

देखा: दै भए हुठी वर्ग भारी ते नै पालिकारी बेंग।
विज्ञ प्रबन्धु वर्ग भारी ते हेंत दे विज्ञ नेल।९।

चेर्टी: उर दूसर घान मलारी मै राखी। 'भई तै मैंता उम घान नै भारी।
भई मैंता नै उम मैंता घान। दिवस मैं नै मैंता वर्गित!१०।
से तै लिवे उदे मैंता हिममे। टूट नलित टिट मैंता भरै।
उम विश्व वेंटे अपरी है। भैले तै मैंता दै एकी नेल।११।

* भाषण-के मरे मुहें रोै दुःखित।
उभ अभी वकतवशी बने। अधै भी बड़े बड़े लगले।
उस मुंडे हैर बड़वा भाई। 'विख वेदें उभ रहते तथा।' १६।
भाऊ बड़े भजू शिक्षा बैठी। भूल गालू बी जै ला लेवै।
उस ती सील बैठी तेज लगल। ने पदमवी तृणे मचान। ७१।

शेखर: उड़वा बुध मी तावु वा बुज्ज मी अधि तेज सलग।
सिख विहर दुर्गाल उजे भी विहा दिना उँगल। ७२।
वर्धे सिख भूल वधाने। बिख भिनी बी घर उठ।
उन मुवबर वे उस लेबो बढ़े त भवली बाइ। ७३।
मे हुँदे भी बला तवे तो नाहि वे भूल।
तभे मा लगन वै तुलकी लघबर बैल। ७४।

शेखरी: वर्हे तवे 'मे उस सिख रहंजी। मे वेदनी वैपते भावी।
उभ भे उभ वे तृणदे मेल। ले पदमवी उभ अभी खेल। २०।
मे अभ समाख है धुलवै। है जानु बी चुक चरुह।
सिख उभ घबरे मिनहत भे। 'हभ उभ धरू वे बढ़े धुलवै।' २१।
वर्हें उवबर भवल बढ़ाने। उवबर उजे बुह वें त वधाने।
वर्हें मा उवबर चल उगले। वधी बैठे मा नीमाघ धुलाने। २२।

२६. [वर्हें उजे तृणे बाखमै। ए अभ अभ चेतर।]

शेखर: सध वर्हे उवब मिन चुँ चुँ त्रित मैंगे बैठी।
उ तुमकह हिन आभिन हस्निमित्वि मैंगा चैती। १।

शेखरी: 'भजू भरे बवडी तावु। िभि ती उभ वे वे घरानी।
वैले बल वे दे हैर बाजान। िभि मालु हज़ब तट तद बहस।' २।
भाऊ बड़े वे 'विख मे वैले डौट तावु। ले भाऊ बली सैल सलकारै।'
चुबल बैल 'चैल नेट त खधे। उभ वे बालू ती घरान।' ३।
अभ नजाना चैल हे उल। उवब पदमवी बैल त वधान।
अभ चुँक हिदि अभे चेत। तै बैठे मे मा चैल नेल। ४।

शेखर: अभ तेज सल दिनकिनै अभहले दृष्टि चाल।
वो बैठे वै तून के सौति तै वरमादिन। ५।

शेखरी: बैल है उभे सिङ भूल। तून बैठे वे वै हूल।
तै तु वलाकी बैठे घान। मे मा उभे निनाथ 'घान।' ६।
उभ भाऊ हे िभि ती घान। 'बैठे त भवली उभली भावी।
लबा भवल बैठे उस नाहिं। तै बाखमै उभे आल।' ७।
प्राचीन चेव पूर्ण ।

से भादा धामे दिल धर्म सँगे। धामे मीम मंड़े पत लहरीं।
बकर उड़ते वे धामे वे उड़ा। मुल धर भाद पतामे चक्के तेजा। 8।
उठ धामे दिल भाद पूर्ण । चित वर ग्रेडा भमे बुड़ा? ।
वरजे भाद हे 'चकरे हे घरे। पठंते हे अभिर दिनां भेड़े। 9।
उमे घरे हे निल मेब। मह गुलाले मेब से उठा।
'तेवेदी दिल दिल मन्व मिर्जे। हिंद गुल वटही पांडवारी पाणे। 10।
चित मिर्ज दम जजे भ वेड़ी। पूढ़ उमे दिल मु म तेड़ी;
रहा उभर मिर्ज मंड़ल बांटी। मिर्ज ती पैदीं मिर्ज ती बांटी। 11।

देवना: उबे धामे दिल वडी भाद ये अतिरम।
'सूट हे बूटे चितलें दिल धामे तेजा पूर्ण?' । 12।

देवथ: उबे धामे दिल दिलमे वरजे। 'सिह घर भादे हे दिल घरजे।
अब देवे हे देवे उठा। देव बरे रम दे देवीमह। 13।
देवना दम उड़तव धरी। हैदराब दैठे दिल धरी।
'सिह तम चल्हा मीम चढ़े। रम ती उड़तव मिर्ज चढ़े हउछे। 14।

देवना: दैठे हे विभाद रटी रटी पांडवारी दरी।
रटी पांडवारी धर दिल भाद मले पांडवारी। 15।

देवथ: सब भाद मनाव वर सीरा। घजवाल धरा दिल दिल हे बीरा।
भेडी हे दिल देवी भेड़ी! तब आधे मे पतरीत। 16।
दैठे हे दैठे हे दिल हे विहारी! दैठे मले सउ लपे वालास।
मिर्जा वड़े वे मीम दिलकै। भूरे घड़े वह मभाद त भाहे। 17।
'सिह है विभाद फिकरी। मिर्जा मेडी घन फिकरी।
'भेड़े हे पांडवारी राहा। मे तमे उभ चल्हा बांट। 18।
मे अब उपव भू म घड़े चड़ा। दैठे भादती उम अभादी दैठे।
पति मुल धामे लेबी भान। मह मुढे मेघ मु उबे नाव। 19।

देवना: मिर्जा खसमे गंव तुड़े दैठे दैठे दैठे भीत।
दैठे बचन मे वे जमा मीम चढ़ेगे बीव। 20।

देवना: दैठे हे सवर है दैठे कपड़ा दैठे उड़ाए।
'उद बल उड़ा दिले है अब ते धर उड़ाए'। 21।

देवथ: उब धरा उड़ते घर राहा। 'पीदी मे दै तीरिग भुज।
मेंडीमह हे मे मे घड़ा बांट। बजा सहें विभ मेता त बांट। 22।
सी हिंदु मंद बुध मुलहें। निम निम बैंड हुशार नहाई।
बैंड माझ घरी भालरी। बना सरणे भाल मूर्तिगारी।
बदर 'बहरे गेरे' सीम जाहे। निम दिल बै रेंद्रे भीम बरहै।
बजे बै 'भेंड बै' रख रखैं। देव मनाह दिश बरहैं।

दोहरा: वर्चस्व देवत मे लगा गौड अतरदेह गौड!
उसि भाक्षिे जो बजाघे 'जह बाघ रखिे भिंड।'

देवरी: बिमे बैंड 'जह भाक नेगा'। बिमे बैंड 'बैंड पेटे नेगा'।
अभ में अफ्ते बैंड चलहूं। बैंड भाक्षिे बूढ़ बाड़हूं।
बजे बैंड 'बिह आई बजे। दिविनाहु बे साध न बाघैं।
बजे बूढ़ी बाकिे बाजे। बालाम्पुरे दिन भरेस बाजे।

मह लंबे बे मीम दिल्ल्हू। में दिम बेगा धध उत्तर्हू।
मीम मिलाे बे बानी भालरी। उसि में अफ्ते बैंड चलहूं।
बिह बाजी बे धध उत्तरे। दिम बैंड रे भाले उत्तरे।
बजे बील नै दिन बारी। उड़े बाकिे ने लख लाही।
'अभ घरे घट उने रेवत। अभे देव दिम भरे हेंसे।
बज भाले ने उनहु बजाघ। में अभ अम जानी चोखी उने।
में अभ दिम बे माध न बाघैं। दीस रहामे बुझतियाघे बाघैं।'

दोहरा: उस बीले बैंड पुल नले भाक्षिे में बज बाघ।
मिली देख मे तनिं। में बैंडे मा घाट बिधाघ।

देवरी: मुहे बे ने चुड़ उत्राघे। में दिम मिले बज दिल्ल्हू।
दिविनाहु बी बैंड उत्तरी। रुकाम बैंडे दीम अभ दिविनाहु।
तीख पाप बे चुड़ बाघैं। माहा मुंग मीम धधाघे।
भागी पापारे बे हैं तन भाले। ये बे खंडी चौंबे धारे।

दोहरा: मुही देख मे रेवत बी बजी सतियाघी दीह।
बजे बजाघ भिनाहिरे बधी पांचहरी दीह।
संग देव मे में बूढ़े बीह चुड़े देह।
उदिं भिननेही दिंि जूने नहाम पृथि थिंड देह।
देवहरी: धैवे वरजे ‘भ म अपने जान! रथैं भावन मही सजा ऊँठ। भ म अपमे जान मुड़ वेट लीला। रथैं उनमे जानमे वीकार। 48। रथैं है रम वे महबुब में जीला। रभैं है रभ वे दरे बीले। धैवे वरजे ‘भ मुठ पठण। है रथैं वे पड़िए लाभ। 49। बजा रेजा है रम वे धिहाना। रभैं पुंज है रभ महबुबाल रमण। रिन पिल झड़े मुवटी मूड़। है पूवट उवापे सजद मुठ। 50। विन हड़के मते वीहु भाल। उप घड़ा भिंतरे पिट आज। लव नात ले लौट बंद में अभैं बुझ वब चड़े झड़े। 51। ऑ जामा बे मे महे भाम। ‘दा दे भक चिहूट है अभैं।’ तहे देव मिप मठर झड़े। अभैं मे मिप पह जागी रोट। 52। है है है है कलमे वे दे दैदिये: भाल बुट दीम लेिल बुटी। वैरटीरभ दे दी जामा उव आहै। है है जामा भाल झड़े। 53। ऑ जामा बे चिन्ह टूट जिहु। बजे भैं मूब सीमा रट तिहान। निमित मारी अभ झाले झूट। ठेट ठंब व्यड़कीभ बरे। 54। वैरटीरभ निमित पह जागे बैिज। लहरी चउट पिट मे महिंद। मिप ठ मिरुआ वले धिहाना। तहे मुखर म अभैं भान। 55।

देवहरं: उवे जामा वृत क्ष कर एउने गज क्ष क्ष थमा। ‘वेदान ठ वरजे वाध औषे’ दिम वर है अभैं। 56।

देवहरी: उब धैवे हे हे दे दे रिउ ठरो। ‘बजे हे हे उब मिरु हलट नाजे। अभ उब वज हल करे घटें। रहट हड़के है वजनी हमें। 57। रभैं है रम वे मिप मठर झड़े। ठेट रम दिन विन जान में रिह। तहे भी पह जामा झूट पुटे। लिन मिप रम दे दे झूटे। 58। रभैं बिन में हे बनी बाल। भाना पहँचे उव आहै। रभैं हे गूढ बाल में देवरे। 59। रभैं दे वज किमे वी औप। रभ पूरुष बें मिपुल पात। रभ बिन में उव ठेट धड़ा जागे। दिम बंटे तिनु ठणु पात। 60।

22. [धैवे हे हे एउने दे हना गिरी]

देवहरं: धैवे हे हे टाचू वरजे झड़े मे महतम। ‘भले रेत हतें अभ वर हे पाईगट भान। 59।

देवहरी: उब पाकैं मिप मठर लेिल भैं। ठेट देवा हिट अभैं बाल। नूवटम पुंड़े ठंडे बूटा बूटा। भीभूम ठंडे अभैं ठंडे बूटा। 60।
चैतन्य घोष चुम्बन

िांद चेतनी देख नील। दिन आयू ठीकीं श्री चीप।
उसे घटना भर में चाहिए। 'बसा उन्हे गृहस्ता बसाना।' तृतीया।
है वाध उसके धर चुलवे तेह। में बघ उसे बघ वह बघ।
सिप पढ़ते जेसे धरे उठते। पहुँच पढ़ते रहता प्रभाव।
तौ धर प्रभाव में दूसरे बड़े। उसने चूक में चाहु चर्चा।
में भाग ताक पामीनी रैंटी। कानू बदादी वी गृह उसे पैदा।

तैतत: उदचर आ भरे बहु जी ‘सिंध घरजे उने गाने वृद्ध।
बलभाद सैंत जानी उसे भार घरज बनू।७४।

ैंदद: उदचर वे भर उली घरङ्घी। उसे घरील सिपह वे परी।
'भाग उसे गृह आश्रय सिंध। सिंध दे उमे घड ताने लिस।५२।
घरे आ घरज वे उठे। अत बीढ़े प्रभाव में।
वही भूल भूलचत लागे। उस उने प्रकट उठात लागे।५४।

जवा भी मुख मात्र।

भाग घरज घरज आचरी शुद्ध प्रभाव।
बि कह शुद्ध प्रकट उठे भर शुद्ध प्रभाव।९।

ैंदद: सिपह घरे ले सिपाने! दे बहु सिपह भर ठीकते।
अभास घरे घर से भर ठीक सिंध। बागर सिंध वे बड़े वे उमा।४५।

tैतत: बागर सिंध आ घरज सिंध घरे उधर उड़ा।
सुना भाग भरे उठे वे चढ़े तैतती सिंध।४०।

ैंदद: भीये मुठ बागर सिंध वे ने। मग बेठीघर भलीं भरीं।
भाग घर भलीं शुद्ध भलीं धरीं। तैंदद प्रकट हैनिंगिंग दरी।५१।
भाग घर सुदृढ़ अभ घर सुदृढ़ भव। भीये भागीर्धों उसे घरे में भव।
भागीर्धों वे घरे में भव। इस भाग भरे तैतती भरे।
भाग तैतत में भली तैतत। भीये भागीर्धों उसे घरे में भव।
भाग घरजे में बड़ी घरजे। वही आध बेह उदचर बागर राहि।
भाग घरजे में बड़ी घरजे। उदचरे आध बेह बागर राहि।
वही आध घरजे में बड़ी घरजे। उदचरे आध बेह बागर राहि।
सुदृढ़ घरजे उधर बेह बागर राहि।

ैतत: बेह घरजे में बड़ी घरजे। उदचरे आध बेह बागर राहि।
अभाग भाग भी बड़ी उदचरे गृह चढ़ मात।
देवदी: उन दोनों नहीं वाले बनाया। बाहरबाहर लड़कबान अंत घील घुमाया।

विवेक उन दोनों भक्त पत्ती। आम बाहर मंडल विह बढ़ी।

देववस गाने खेल दे पेश। बाहर चलने बह बच बुद्ध।

देवदी: उन दोनों द्वारे पीस करने ‘अभी बाहर रूप निकटी।

बाहर देखने भाग से भाग जाय। बाहर लड़कबान नाखुल बचाया।

“नहीं बचाया भाग निकटी। घर उन्नी जो घर बचाया।”

देवदी: बजने लड़के दूल नौकर बने। फिर चले भाग में एको बाहर।

देववस बजने मंडल उपस्थित।

देवदी: बाहर चलने से बच पाय। बचने बाहर अरे बच नाख।

उन दोनों भाग बाहर। मंडल उन भाग बाहर।

देववस भी माह अंत मंडल नाख।

देवदी: अभ भोजन भी बाहर। बाहर बाहर अरे बाहर।

उन दोनों भाग बाहर। मंडल उन भाग बाहर।

देववस भी माह अंत मंडल नाख।

देवदी: उपर बाहर दिल करने ‘हाल बाहर में वह बचन।

उन दोनों घर बाहर। बाहर देखने बचाया।

मिथ से से घर बाहर में बाहर। बाहर घर बाहर।

देवदी: “बिल नौकर उन दोनों भक्त है। मंडल वर उन दोनों भक्त है।

उन दोनों घर बाहर। बाहर देखने बचाया।

देववस बाहर देखने बाहर। बाहर देखने बाहर।
२५. [इतने ची उठा यथासंग्रही रगध भी वेदो दी बैठे दी चढ़ियाँ]
हेवट: मां वहैं 'भाव' हे धरणे। पीड़ने धरणे सूची धरणे।
अं है तुम भिन बैठे मूढ़। आँसू धरणे बैठने पढ़नें।
अने भेद भिन बनाये देस। मां है भेद भव वल मंश।
भगीत वती 'बेटुले' बेटुले मजाहे। तबै ने हँसव भाव यड़कहाँ।
भलै बैठे हैं यूठी घटित। सह वत हैं त तुजे भवंदरित।
मिनर में थिः उड़े त सह। माणु मंड में तथै मिलिदि पिनाड़ी।
तालाज़ बिलात निष्ठ में पतित। अच तिउँ में बिनाउँ तुरित।
लिफ टबै अं तदे नुढ़ धाँ। नए निष्ठ निष्ठ नै नुढ़ धाँ।
ढेटः: मॉड़े घुड़ विनाड़ि वै अबुख़ाना विनाड़ि धाँ।
बैठे भवाद वे बैठने वर वह वमन वश्नाथा।
हेवट: हलवारीबत द्रौम वैं मनापै। 'निम निम वैते निम जानने।'
घर मनापै वरात गर। 'वमन वराते उम वरी उमलाइ।
घरी घरारीबत उदट भाव। निउड़े निम द्रौम में लजायिं।
पौड़ी वमन वत निउँ भवियिं। अं है वमनसे त उड़ जानिं।
निमुँ वमनसे गर हैं हैं हैं हैं हैं हैं बिनारे।
भैं मिनर निमुँ निमुँ निमुँ वाल्ला।
टवे टवे उने से भी जी केहिं। तिन वन देख उड़ि ह चलेहिं।
मिस्र धिसर देखा नुस उपाधिं दिन वन उवव तेहर ठहर भागिं।१८।

देवाम: मिस्र मे धिसर सेिव धिम लगे श्रीस्वती घराहिं।
उने सुवर विह उम वे मे जीहि उगमिं।१५।

देवन: उवव चने पे बहे स्वरीह। 'अमे तैं धें मिल्स चमचिन।
उन पहसुसी धिम मिलउ वहे। उवव ते अभ उम धिम डे?१६।
मिस्र मे उन वी भी महमे। मिस्र छले अभ उम दीहि भागे।
उन उम देहि अभे गाम। देहे टवे भाहि नूहि थम।१७।
उने घेरे वे घाद्ध लग़। धाभ टवा धीत देह ठुगापा।
'भुगीर धें आह रिहाह चरे भागा।' दिम वन उवव चने धुररण।१८।
वाल राह चने टवे धुररण। घेरे हीरे शाहस़ी लगि।
घेरे बी उम भव धिसर घििि। मधु ते भाहि रहसी गाट्टी।१५।

देवाम: अभ धें भागर बव पहिे दुराद सेली।
शनील हवीक उम वीिहा धिम मब ढी उस्वील।२०।

देवन: भुव मे हवीक घाटोङ भागे। धें धें वे धें घउँे।
रिहाह चरजे 'अभ घेरे भागे। हिम विल मिल्स भाग रेटि पुििे।२१।
घेरे हृिि वली चहुँिी। धुर धें वी रिलिं भागी।
उन ते उवव वे स्वरहि रिहायिे। वमुि घाटेह भागि घोिे ये मतिे।२२।
भतिे रिहाह ते मह यह सहिे। देहात देहूँ ते उनी महादिे।
टीह हवीक वह मह रह सिदे। भागि घाटेह वे मे दिजा चुिे।२३।
बाली भूँह माँिि बहे। ऋषि हवीक घउँ भागि र जाहे।
उमु भल ये भागे भागे। भतिे उनिे घििे लवह़े।२४।

२४. [उवव ते दिमज वे भेळा घरिणा]

देवाम: वह घहुँ देहे वने भही उड़ि बहृह रगि।
वरिे वी भे़िे आ भिे ववुिु मह महगि।१।

देवन: मह भही ये भही मीह भागि। मह मे भजवी भही माह।
तह तह ये मह सवग। मह तह ये टीह दिमज।२।

देवाम: नुह निभाहि मेंब ते मंजे रहस सहि।
भैंिे घेरे नम दिजे घििे भागे महु भागि।३।
дуष्टी: उध सिखाग जै जानी मलवार। भुजी मुखारे उड़े छाप।
बलाम भनित्सै धोड़ देना नाही। इतने वौसँ निम्न धारा घरावे।$^4$
चुँबो तै भैजी बाजी हवाल। जिनी जी लाई मा अथाक उरविदा।
देश बसाखी मै यमास मै पाहै। अधी अधी बारी वाचि ढूँढ़है।$^5$
अघि सिख शिकित वर लगे नीच। पह्डः मैहिना अधार उरविदा।
पहुँ पहुँ मैहिना बुनव भाई। तैवै श्यात अघि शिकाग दूँड़े।$^6$
सिमी अंड़ा वर उड़ने सिखाग। इत रहि मारहै मै तै घां।
देवी बहै ‘मैं में धियि नहाय। तैवै मु उभारे में भुध रहि गइँ।’$^7$

dेवज: दैवी बहै ‘चुँब जीव ने मैं में बीजे बैठ।
देवी बहै ‘मैं नीत जड़ नीसीरा उपेरा मैं।’$^8$

dुष्टी: सं निर्न निर्न मध मित्र से धारी। धरे दे उव में दिवै त सागँ।
चि भालै ‘सात तेज शिकाग। आदिवा अपि मै श्रृंगां उध।’$^9$
बहै ‘पद्म ये दै धीर।’ देवी दे ‘चुँब जोत दै जीर।
चि ची घुड़क दे अभ बारी। तैवै त तेजः उड़न दे तानाँ।’$^{10}$
दिंब रहि शेष मै दिवै नाही। में दिवै भालै भैजी भाली।
हेत सिखाग जै जानी द्वीर। मध भाना रौंदी लालै दै धीरा।$^{11}$
उध धरे दे समाट घाड़े ज। ‘उसी उड़ी उदव उध बिल घाड़े।’
है भूधत दिम मारह मै बारी। दिङै दिम उदव आरक बारी।$^{12}$

dेवज: हवीक मै धरे दे घाड़े ‘उध घाड़े सिखा नमाम।’
में बड़है भानै धीर उध वृत्ति दिम बड़े उध वाम।’$^{13}$

dुष्टी: दिव क्विन धीरे में घाड़े। ‘है अध पीक हवीक घड़ सागँ।’
उध भालै उधि वाचि मलवार। रै रितन यद अध उध भूधत।$^{14}$
रजस्म अध उध धीर फाती। चनाँ बड़ै दिव छड़ै पारी।
सिर भूत माझर चारै में देय। देव देवै भानै भाली बारी।$^{15}$
हेढः नालिगर विडः छाडः देय। देवै छाडः भूघध भूघध झमसै।$^{16}$
बैजी दै भालै उध भाना भान। अध दै धेय।$^{17}$
नै दे है उभारे उध भाना भान। उध दै दिम देव भेषा बापै बारी।
बंधो वाक भान उध लागे बनाल। चानाभ वाल उभारे माक।’$^{18}$

dेवज: दैवी भैजी घड़ बत देसे जब मलवार।
चरे यें ते सिख गूँडे में सीजी आमधिकते।$^{19}$

dुष्टी: दैवी राहूं घड़उ देसे जब मलवार।
बंधो झूझे धीर बनहे घटषतां।
बंध भूधहिन दिगूं बूँडे। दे यें धेय जाभ अध गइँ।$^{20}$
वहीं 'क्यों भगवान सब बिन महसूस करते हैं?'। पूरी बतौर 'अभि सिंहद हैं।'।

कौन आते भगवान में वेंटा बुझाने: अभि चुकवाई देना लखने। २०।
कौन आते आता बाता हेत हेत बिना बिना होते।

अभि दक्षिण दिशा दक्षिण। अभि दक्षिण विद्वान दिखाई। २१।
कसी वह रहना बनी होते। भगवान दस्ता रेती दिखाई।

कसी वह रहना बनी होते। भगवान दस्ता रेती दिखाई।

२२। [दक्षिण हेत देख बनी है उम वर्तमान]

देवता: जुनवर दिशा घड़ देख वह दिन भिन भिन अभि उमान।

देवता: अपने नाम घट वह दिन भिन भिन अभि उमान।

वहीं गुण घटा घटा घटा घटा। मात्रा में वह दिन भिन भिन अभि उमान।

वहीं गुण घटा घटा घटा घटा। मात्रा में वह दिन भिन भिन अभि उमान।

वहीं गुण घटा घटा घटा घटा। मात्रा में वह दिन भिन भिन अभि उमान।

उम में रहा राजा रहा राजा। अभि दक्षिण देख वह दिन भिन भिन अभि उमान।

उम में रहा राजा रहा राजा। अभि दक्षिण देख वह दिन भिन भिन अभि उमान।

उम में रहा राजा रहा राजा। अभि दक्षिण देख वह दिन भिन भिन अभि उमान।

पुरात: ने बतौर अभि पुरात घटा वह घटे में सवेरा सवेरा।

देवता: अभि दक्षिण देख वह दिन भिन भिन अभि उमान।

देवता: अभि दक्षिण देख वह दिन भिन भिन अभि उमान।
प्रभुः भक्ति दर्शन हिंदुजा वर्ती। जैसे प्रभु ज्ञान जिगाज मूं परी।
मैंने इनौं प्रभु आप चढ़ाने। भजिए रोहिनी हृदि दौलार स्नाने।।१३।
जैसे रिखी ती भक्ति इनौं रोक्ती। आपने बदल जैसे हृदि हेड़ वचनी।
भक्ति जिज्ञाम भक्ति ठक्कू लाइ। भजिए दहीछी भजिए ठिनारी।।१४।

dेसर: तजी जी सिख तुमी आपती भिनार भयोत।
हृदि जी एसे मुं हेक तै भेंधु भोड़ि बेहेत।।१५।

dेखरी: उत्साह बचाऊ ते ने वड़ धर्म! मे ३ मां मां मधु दिखाये।
मां मां ना घात मेहा उंगी। मेरे डाड़ी तुम मे ढँक साजी।।१६।
घोटे जी मांडी जी आपी। भिनार जी जी घोटे ड़ुंढ़।।१७।

dेसर: चबूट, तम, जुभाजू, नैट मिंगी, दभा।
पूरी न रिखती लीलिढी भैम धड़ेते वाम।।१८।

dेसर: चर उचवत बोले बीली सत किलकता तटिं रंगिं भेंडिं।
उद लेकर दुःख पा बचाएं ‘रिख जम में रकम भोडिं।’।१।

dेखरारी: गान मिंग दे घर मुखराज। रिख धे बीली मिंग गुरूति पुनःर।
‘वर्जूत नामी दे धेरे धम। बचाएं उभे जी दुःख राम।’।२।
उद वर्जू तुम उभे मे हेल। बच्ये न मां उभे धेरे मे एल।
उनवे उभे जी मिंग आवाग भुखार। जठर ते देहे जिन बैंड बलार्द।।३।
भिन बी भाव रिख नेह धर्मो। हृदि मे बेटी तटिं जमाई।
मे रड़ा जाएं रिख उद चन्द। उभे भजिए हमे मे गाविर रिखाई।।४।
संगे पूर्वे धेरे धम धम। मे रड़ा नामिता बन जीवत अमृत।
मे भजिए देह हेक रिख हृदि। उदवर ते नैंट धैंड उ आपूर्व।।५।

dेसर: तजी धूलनी घट गाँवी हमे गाविर रू मूं भजिए।
उभे ते घड़ू कररिटुर लिहिं परिं वीर भें भजिए।।६।

dेखरी: उद मूत हेक मुखराज जम। 'रिख नारीचार उभे धेरे ते भजी।
जो ना दे हृदि जो ना दे हेक आपी। जभे धेरे ते जा बह धल्लकी।।७।
हेकेनौ हृदि भोडो जीम। उभे दुःख यानौ विखाते वीम।
उभी जठर रिखती आपी।-आप हेक मब तेरे भजी।।८।
हुए ते भरते बन तै हुई। रच तरत ना हेक धेरे धेरे।
सा भजिए बनी आपतम। उभे तेरे धर घड़ूती धम।।९।
वर्तने भगवान "सिख विद्वान अंदह। उह तन्त्रज उह लगत वरदवाद है। उहिं उरव रहिं अगदर भाण। घवे घरु माही उह अंगे महारें।" ९१।

रेखा: उह न करने हड़ तांत्यो झसा घबरी अछ बीग।
पति फे दां र तेहिंकी मध्ये घर जांट बीग। ९२।

देखारी: बढ़ी घड़ी उह मंगा हिसाबन। मोड़ घड़ी अछ हृद तांत्य सड़वे।
पांगे घरे घुड़े हैंखे। भव मु बाणे अछ पूड़ तांत्य हैंखे। ९३।
"टिंट ह उरव उह भाग पील। टिंट है उहमें दला बाघे। उह ही आधार भेंट आयी। मिट रूढ़ी भंवर में घढ़ जाँट।" ९४।
उह ही उरवल मिट मिट रूढ़ी। मिट आयी विष अछ घढ़ नस्ले।
भैरवी ही मिट गुरुआर चीरी। उह ही झूंठ हम मते बीरे। ९५।
उरक्कर दूं दूं भुजधे नस्ली। मीम रवाण तिंट सूता नितारी।
उमे के ही भाग मिट घट भाण। उम ही बढ़े उरवल वे ताज़े। ९६।

रेखा: भैरवी भैरवी घट वन हिंट घट सूंग चूंग बीग।
मे राहु चुगाने दूं घरे घरे घर न उपने चीर। ९७।

बढ़े ने बढ़ी भाग।

५२। [उरव। हे हड़ वने घरे ने हैं ए धैर्य हे अधमार गेहु।]

रेखा: घरा वारु अछ उह उरवल में लुढ़िया।
"अव हिंट भाग पतरीहे।" मलखी घेर ठुड़ बीग। ९१।

देखारी: भैरवी मुहे उरवल वे घट। ठुड़ सेठी घरे घरे मध घाट।
जारी लघी घेरे बलभाद। भुगे साह अछ भवल जारी मार। २।
उमर भट्टल के घड़ी गराहट। "सेठ हमिं हैं दूंग पाघ। भागार विचार सेठ अधा वै हैं। दूंग चिंता भेंट भाग में हैं।" ३।
भैरवे में घरा घुड़ा र पही। घगुड़ घुड़ा भैरवी नें र बैंडी।
मे स्वाज़ड़ दे घाढ़े राम। मे रिया वन लज़े सेंव्हराज। ४।
हिंट उरवल घट सेठी मार्गह। भव सेटल वे घटी भराट; उस मजारत हे भाग ठीवै। "भागे मधी घट घगुड़ पुस्त भाग।" ५।

रेखा: उह मजारत ही बढ़े आरे भहरे "अव हिंट हैं उमाराट।
पति हिंट हिमलिं वृट दरे उह मध सेठी हिंट।" ६।

देखारी: उह पिंक पे रो दिलखाम। "में अच्छ वनचार बूढ़ते भाग।
उमे भैरवी हिंटराज पहाड़। मे दूंग दिलखाम घट घगुड़ वरण।" ७।
मैं अभी बैठा बागानी। हूँ जी विभ मात न भली।
उस विभ मात्र विलिं उठे! भरब सिर पर उठाते बह बोले।
मे भी बोग सुधर वाकिया। तुँहे पत्र भाले मे चर्चा।
मैं वह सिर पर लगाते भरे। दौड़ वर दौड़े विभ बनाये।
मैं पूरे बाल मिलत भल लही। मूड़ वरी, दौड़ हों दौड़े।
भरता उठाता वह भरी पुरी। विभ मात वे उठाव सबवी।

मैं सीता बैठी बुझिति धूल सके त धूले ते पहँ।
बैठी सना मँ भरे भोर भटल हैं नेह।
तुँहे सिर पड़े उठे विभ पर्वेंची धर्ही।
बैठी मे भावन बोले दौड़ उंदन पराभी।

मैं वही हंदी उठाव सब लही। वही बोग हे दूध मँ बाली।
उस उठावा भोज तेले बताये। मिलत रैले उठाव रहा भरी।
तुँहे मूल घूं ने ले एटे। दौड़ वरीह उंदन मिल बोले।
मिलत ते जी पि मँ भल भली। ‘अभ निश्चि हूँ उंदन यही बाली।
तुँहे मरील भरि हे र मौबें। बाल बे भरब मँ मँ भरत बालाये।
चीत भरता बे हूँ जी भाव। अभ मँ बढ़े हूँ जी रही।
भावले जी सिर माया बहे। बैठी बसह वह उठाव बढ़े।
भाव दूते हे हैं बाजी। हिँते मँ मँ उठाव सबवी।

मैं वही मँ पिंडे उ हिँते मे बाजी ठिकाणा दैध।
वीनत त सपे ठी दिमे बमे मँ भो वो थुकिया देख।

मैं वही बैठी मँ मातू बढ़े। छटे त पिंडे भगा भने पड़े।
बैठी बैठूँ मे सदी कसगद। देह त विवरण चीती बर्द।
उस मिलत हर सदी उसवाद। भावले बरी दिमा वह वही जूँ।
वीनत दोल मे हे बहु। तेह दोल मे दवा।
बताव दुसर घरवी लही। दिब दिव कृच्छ कृच्छ पां उबाड।
उबव जी भावे लास उठ। दिब घरव मे घे हूँ जी भावा।
मिल दे मिलत दिमा मँब ने है। उबव सबे अभ लाभिं जी ठट्।
मिल दे मातू बसह पह लेख। उबव छेद बुढ़ पिंडे देख।

उबव दे पिंडे भरर वहे मिलत पिंडे। त वरा।
मिलत भावा हर लाला उबव दे भाव उबाल।
दिब दिवो उबव कृच्छ भावे कृच्छ पिंडे बाले बाल।
भाव भो अभ भी है। देखे, विभ देखे ठहरी रात।
१०३. [बांधी दिनहिता माध्यम भजन]

टेखन: उत्तर तंत्र भगवान नव में घट घटनाहि।
'बत टेरे में भगवान अयश भिन चूथ घटनाहि'।

मेंथा: उद निष्काश तन्त्र पैदी भवानी। अयश भिन में भवन भिनपी।
उद भिन में भवन स्थापि। उद भिन में भवन स्थापि।
इस तंत्र 'चुप माता वह भेंजे। बांधी भवानी में भव दे लेंजे।
इस तंत्र में लक्ष सी तन्त्र। जड़ी भव में जड़ी भव निश्चित।
उद भवन में जड़ी भवानी। उद भिन वह भव भि पी भव निश्चित।
इस तंत्र में भवन स्थापि। उद भवन में भवन स्थापि।

टेखन: तंत्र भव-भव में घटौ घटौ माता वह भेंजे।
अयश भिन में भवन भिन में भवन स्थाप।
भवन हेतु वह भव भिन पी भव निश्चित।

मेंथा: ये वह उत्तर तंत्र भवानी। निष्काश हेतु भव माता।
निष्काश हेतु भव भवानी। भवन हेतु वह भव निश्चित।
देवनं: ‘हूँ भगवान् तैहे भगवान् तैहे ज्ञाता भगवान्।
हर उड़वते उड़ते खड़े गुरू हर लखरू हर॥

७५। 

देवनं: पले भगवान् तैहे भगवान् तैहे ज्ञाता भगवान्।
हर उड़वते उड़ते खड़े गुरू हर लखरू हर॥

७६। 

देवनं: हर हर तैहे ज्ञाता भगवान् तैहे ज्ञाता भगवान्।
हर उड़वते उड़ते खड़े गुरू हर लखरू हर॥

७७। 

देवनं: हर हर तैहे ज्ञाता भगवान् तैहे ज्ञाता भगवान्।
हर उड़वते उड़ते खड़े गुरू हर लखरू हर॥

७८। [किमै शमान शा देव राम्]

देवनं: किम परं भगवान् तैहे ज्ञाता भगवान् तैहे ज्ञाता भगवान्।
हर उड़वते उड़ते खड़े गुरू हर लखरू हर॥

७९। 

देवनं: भगवान् तैहे ज्ञाता भगवान् तैहे ज्ञाता भगवान्।
हर उड़वते उड़ते खड़े गुरू हर लखरू हर॥

८०। 

* पत्रः—वर तैहे ज्ञाता भगवान् तैहे ज्ञाता भगवान्।
ਦੋਨ ਵਾਂ ਬਹਲ ਸੁ ਵਿਚਕ ਲਹਾਣੇ। ਦੁਆਰਾ ਲਹਾਣੇ ਟਾ ਮੀਠ ਬੀ ਪਦੇ। ਟੇਕੀ ਵਾਂ ਆਗ ਦਦੇ ਸੀ ਲਹਾਣੇ। ਟੇਕੀ ਵਾਂ ਆਗ ਦਦੇ ਵਾਲੀ। 

ਅਦਾ ਸਰਗ੍ਰਹ ਵਾਲਾ ਹਨੀਕੀਆ ਭਾਦਰ ਸਰਗ੍ਰਹ ਵਾਲਾ ਹਨੀਕੀਆ। 

ਅਦਾ ਸਰਗ੍ਰਹ ਵਾਲਾ ਹਨੀਕੀਆ। 

ਅਦਾ ਸਰਗ੍ਰਹ ਵਾਲਾ ਹਨੀਕੀਆ। 

ਅਦਾ ਸਰਗ੍ਰਹ ਵਾਲਾ ਹਨੀਕੀਆ। 

ਅਦਾ ਸਰਗ੍ਰਹ ਵਾਲਾ ਹਨੀਕੀਆ। 

ਅਦਾ ਸਰਗ੍ਰਹ ਵਾਲਾ ਹਨੀਕੀਆ।


चेष्टन: इस्ती वे वे धर्म देखने उध में साहु।

अज्ञान तिन तिन धर्म वे चहल। उध धर्म देखने उध में साहु।

अज्ञान तिन राम बने वे चहल। उध धर्म देखने उध में साहु।

चेष्टन: उध धर्म देखने उध में साहु।

चेष्टन: उध धर्म देखने उध में साहु।

चेष्टन: में धर्म देखने उध में साहु।

चेष्टन: धर्म देखने उध में साहु।

चेष्टन: धर्म देखने उध में साहु।

चेष्टन: धर्म देखने उध में साहु।

चेष्टन: धर्म देखने उध में साहु।

चेष्टन: धर्म देखने उध में साहु।
চাপাক: বহুল বন্দু বন্দ দেবি নবার্থ। সূর্যাদ উন্মেষ বহ নে সাগ্রহাদী।
চাপাক বিশেষে উন্মেষ রাটি। তির্ণ দায় উন্মেষ যুক্ত এবং।
চাপাক বন্দু বন্দ দেবি নবার্থ। সূর্যাদ উন্মেষ বহুল বন্দ।
চাপাক বন্দু বন্দ দেবি নবার্থ। সূর্যাদ উন্মেষ বহুল বন্দ।
চাপাক: আর হুম চাপাক বন্দ বহুল বন্দ নবার্থ।
চাপাক।
চাপাক।
চাপাক।
চাপাক।
চাপাক।
চাপাক।
চাপাক।
চাপাক।
চাপাক।

পূর্ণজ সাহিত্যে বেল্ল কর চিঠির জন্য

* [চাপাক বাহী]
केन्द्र: मछुरा मैं देखा। नवी पूर्वां बद अभी उठि।
झूठे नमी तम से मज नहीं गांवा।
बाहि नवाशि मुि पंडिता बाहि वटने अंगव।
वाली मनाशि तैं डाली विि नो मैं तैं बना।
वाली उसे मैं बुझे घडी चेकुड़ा दिम ना।

dेवधि: वसंता मैं निर्म विरि नवाशि। नवी त विलाते इनेये ये नवी भाषी।
में पाशे इन्हे मित्र घुरा। में टूटी इनेये ये नवी या भाषी।

dेवधि: अध बैठे मित्र वटने ‘’टूटे बेझ वट ना।
घाटी मद म लघ ची मिन इनेहे चहड़ि।’’

dेवधि: इने मित्र जिम दी भें लती। इने बहूँ मित्र भाषि लती।
भावी बैठे विि वाली। भावी बैठे दूड़े से में वे भाषी।
उँ ही भें इनेये विि वाली। भावी इनेमे दिने में।
उँ बैठे इने चौहे भाषी। ’’भावे मधीश्वर इने मद चाष।’’
उँ बैठे लते वाली। ’’भावे मधीश्वर इने मद चाष।’’
उँ बैठे लते वाली। ’’भावे मधीश्वर इने मद चाष।’’
मित्र मित्र ने फूल वे पुरे। में भाषी ‘’भाव वें जन्ने।
वे में माता जान विि हि भाषि।’’ वाली मद मद मद नवी।

dेवधि: [वाक्यमधुष भिक्षुं है द्रूप ताम]

dेवधि: मित्र मे मित्र ने बैठे डित चिउ वे खड़ी गाँठ।
‘भाव वात भाष बैठे तैं बली मित्र दिम गांठ।’
 हूँवले वे उठ मूल गाए वे मैं माथ बूढ़ा।
केंद्री दिम भिक्षु मित्र मे हूँवले वे डित भाष।

dेवधि: उँ डित चुद इने ये बैठे। एकता देव चुद घाड़े चुहे गाँठे।
में मुट्ठी अभ यथ बूढ़ा। वाक्यमधुष भिक्षुं भाषि मे विदीश।
दिव टूड़े बैठे घाड़े गाँठे। दिमे दिमे चौहे चाल चुहे।
मूढ़ मूढ़ बैठे पुढ़े त घाड़। तैं हेम इने तुड़े हे घाड़।
उँवस पूजा मे चेप गांठा। दिव टूड़े बैठे डित चाल दाम घाड़े।
में बैठे तीजे मूढ़ बूढ़े वे बैठे। बैठे उँचा इने इने लह घाड़े।
देवी मे इने बैठे दिमे। देव इने रूढ़े धार लांद आदे।
भिक्षु घाड़ इने यथ बली गाँठ। में मद या मे डिती त गाँठ।
छोटा: मे जी घरैै उ मैंैैँ भच्चर दैबै। भज विङे वै मैंै। दैबै तिनै दिसै।

छोटा: उ जी घरैै निवै वा जैै। कर चिनै दैै घरैै ती घैै।

छोटा: उ जी घरैै हसै न भैै। कर चिनै दैै ती घैै।

छोटा: झूठ घरैै भर खुट्टे रहैै। कर चिनै ती घैै।
घटै वो ताउ उभ्र ठाँच नही। बघ भाष्ट्र भाष्ट्र, बघ भीम भाष्ट्र।
से बेड़ी पुदी बिहीं घूड़ में तर्कगीर। रेपुए हँदर दूर बढ़करर। इती।
बेड़ी बिहीं घेरीमे साती भीं। बेड़ी बिहीं घेरीमे घरीमे साती।
बेड़ी बिहीं घेरीमे माैदा। सातेै घेरी मध जाती उमरी। ३२।

पूर्णजा घटैे वे हंसते वे धिघन्दैः ४०। [घटै वैट वनवे सिली ऎलिगना]

देगता: उघ घर्षे मेंट मिष्ट मध भैमे वरजने राखर।
‘अध उघ उत्तरत मिल रेहैै मुर रेहे रुखिकरन्।’ १।

धेवही: मेंपै घाट मिष्टक भंड शरी। रिहैै से भावाजे बाल हिंदरै।
माध मनजे मे घरैै पाना। यो भासु ने भेजीे उर। २।
घरैै चूहरे मे लेरे पेषा। ‘बेड़ी भारी उघ’ दूर वरजने हें।
बखरैंत मामुह दूर रक देंरे। बखरैंत में कट मारे हैरे। ३।

देगता: उघ धिघन्द से मुठ दसी बकी मे घरैै घड़।
घुमी दसी मारी भारी भल मे मे वालवाड़। ४।

ढैर: मामुह मूटदैः। घरघु सुख पाना।
रिखास्स घूघणा। रिथि भेला मामणे। ५।
ढैर घव राखने। दह घरैै फुरैै।
‘घरैै हड़ सजाय। रिथि रेद लजाय।’ ६।

देगता: ढिर धिघन्द मध मध वरजने वे सिकैरे दुमुकर।
‘घरैै मामुह मूट राखे, ढिर मधुर ठाँच रवरर।’ ७।

ढैर: मे मुठ वे रेदै। बकी हूटट यिर।
‘घरैै हिम मिल मलदुै। सरै बुढैै भडै।’ ८।

धेवही: ढीपैै चुड़ीजे चुड़ी भेज। ढी ढी रिमे ढीम मामचरी में।
ढैर वर बेड़ीं रेदै भडैै। ढी वर मध मे घड़ मेंरैै। ९।

देगता: ढेव चुड़ी घिरा घिरा भर्तहर घड़तहर मलगड़ि।
घरैै घरैै घरैै रेदै वे ढै मारी हड़ी मिल घाय। १०।

धेवही: ढेव घरैै वे भाव झारर। रेदै घिरीै उघ झारर।
भेज मेंढ़ल घाड़ि दूर भरतै। रहर घेडैै बाल उधर भुटै। ११।
ढैर उबैैंत सेव सैमीत। ढैर घरैैं रेदै उदयीत।
ढैर उदह छुटै माैदा धारर। ढाल ढिरमे ढिरै बहरर। १२।
वहैं ‘प्रह भट नहैं हुईं।’ रात गईं रहे मृणाल तेंद।
उठ सींत में हिस्सा उठ। ‘हेट कही सच्चा मनही सच्च।’ १३।
सिंध गईं मांग भंव ने उठे। तृण कृत दिया दिया वेदी में।
दिया प्रमाण हृद वे उम नेंदे। दिया दिया हेंदे बिरिया हेंदे। १४।

dangā: उं जी वॉटन भर घेंदे वेदी विश्व लज्जागिरी।


dhāvī: मध जी घबरे महि सचि। घबरे वरलीं ठाँठि मैंगछिः।
दिया दिया दिया सवध घनहे। मस्तु गिते दूर दूर ने नह्रे। १५।
mahār phū ने भाले लगे। सौंदर्य धूँठ मधव रुझने।
‘समें जय भुजड़े वे नाहीं।’ जा सका में वेदी उठठ न पड़ूँ। १६।
सिंध महुँखी सिंध वे भागी। में मनही दिये गहरी।


dhī वह त्यस्वे मूड वह भाग। सौंदर्य उं घरि मनह भल थाह। १७।
mahār phū वहे भवध्रुः। समर उवधर वे आहें ठामः।
‘नानिं नानिं घपके चुंटि पवगाम। पालमे ठिस्थतूं दृढ़ केमी गम।’ १८।
उदव महुँ मह गोः वें। मनह भंजी मिस्क में बढ़ चढ़े।
महाभरो मिस्क र दिम दे उठी। देव भाग पालगोंत चढ़ीं। २०।

dangā: दिजा मूर्च जे दे धे मिस्क उढ़े में भाग भाग।


dhāvī: मधव पहुँ दिया मिस्क नानिं घनह। सेंव देख छुट देरे घां।
मिस्क वह दिन घांग घांग घिमांछ। दिया दुरे में मिस्क उढ़े नागी। २१।


dhī वह त्यस्वे मूड वह भाग। सौंदर्य उं घरि मनह भल थाह। २२।
‘भले बांध उं भर हटा म बड़े।’
मिस्क वहे ‘भला बांध बच टहले।’


dhī वह त्यस्वे मूड वह भाग। सौंदर्य उं घरि मनह भल थाह। २३।
भला मधुर पूर्णाः। भाँख मिस्क दख्त पूर्णाः।


dhī वह त्यस्वे मूड वह भाग। सौंदर्य उं घरि मनह भल थाह। २४।
"भला मधुर पूर्णाः। भाँख मिस्क दख्त पूर्णाः। भला मधुर पूर्णाः।
مضمن: मधुर पूर्णाः। भाँख मिस्क दख्त पूर्णाः। भला मधुर पूर्णाः।


dangā: उं जी सींति निम उं जी मिस्क खीं म हरि निम घरि।


dhāvī: मिस्कम घले मन भले घेरे। भला मिस्क घेरे पूर्ण विचों।
उदव उं भर हिल मधुर घां। मम नामे में देखा घां। २५।
रिमी डांग ले उठे घरे। हरतमीभिन्न घर महं में मैं।
'ठी घरे जलि घरी घरी। भढ़ डह बाछै घरी घरी घरी।' अथं मगरि भय उठते दुखमाति।
सख घरे बढ़े मृत्ते र घरी। घर रुद्र घर में धम घड़ै। दुरुर कहिबे घड़ै। डुरुर कहिबे घड़ै।
घरे बेहने में धरी घरी। 

भैये में भागे में धरी घरी।

रेखा: तिथि घरे नख खुशं मू में घरे धरी।
'सिम मैं ल धिली खजानी में जहि तै हरी घरी।'

संधी: भेषर भगते भय जाने दुखमीभिन्न घड़ै।
'भक्र जाने हरी घर उठते। उठते घरे में भेषर बदलान।' उठते घर उठते भेषर बदलान।
हरतमीभिन्न घरी धरी। 'घरे मृत्ते धरी घरी दिलान।
सख घरे में भेषर धरी। 'मैं ठी हरी घरी दिलान।'

रेखा: मृत्ते में भेषर धरी।
'सिम भे एम धरी अभी धरी।'

संधी: हरतमीभिन्न घरी घरी।
'घरे मृत्ते धरी एम धरी।'

रेखा: विज भरी में धरी धरी।
'सिम भे एम धरी अभी धरी।'

संधी: हरतमीभिन्न घरी घरी।
'घरे मृत्ते धरी एम धरी।'

रेखा: विज भरी में धरी धरी।
'सिम भे एम धरी अभी धरी।'

संधी: हरतमीभिन्न घरी घरी।
'घरे मृत्ते धरी एम धरी।'

रेखा: विज भरी में धरी धरी।
'सिम भे एम धरी अभी धरी।'

संधी: हरतमीभिन्न घरी घरी।
'घरे मृत्ते धरी एम धरी।'

रेखा: विज भरी में धरी धरी।
'सिम भे एम धरी अभी धरी।'

संधी: हरतमीभिन्न घरी घरी।
'घरे मृत्ते धरी एम धरी।'

रेखा: विज भरी में धरी धरी।
'सिम भे एम धरी अभी धरी।'

संधी: हरतमीभिन्न घरी घरी।
'घरे मृत्ते धरी एम धरी।'

रेखा: विज भरी में धरी धरी।
'सिम भे एम धरी अभी धरी।'

संधी: हरतमीभिन्न घरी घरी।
'घरे मृत्ते धरी एम धरी।'

रेखा: विज भरी में धरी धरी।
'सिम भे एम धरी अभी धरी।'

संधी: हरतमीभिन्न घरी घरी।
'घरे मृत्ते धरी एम धरी।'

रेखा: विज भरी में धरी धरी।
'सिम भे एम धरी अभी धरी।'

संधी: हरतमीभिन्न घरी घरी।
'घरे मृत्ते धरी एम धरी।'
शेखदी: नन्नी बली बली में पुटी सारी। भजात बैठने है एको निम्नावर।
वो घर निश्चित है बड़ा बाद। राना घर दे में हिच आदेह।
शिव बली बैठने है भजातर। सिन्ह बली मूण्ड मूण्ड खिलावर।
बूढ़ी बली बली बली। ज्यों तू बली में फुड़ नाहें।
उभाने हिच निम्न घाँठ ला आदी। गुढ़े नीहट दे रेड निम्नावर।
भजात हिम मध चरी भज। तनाव बुढ़ आने बलिये बुढ़ा।
दान सित्य है उसी निम्नावर। भुजे घरे में बूढ़ा बुढ़ा जारी।
तीरार में मरणी को हाले। गुढ़ी बुढ़े घरे है राले।

शेखदा: उदय सिज है से मृदी में उसी सीती अप्ने।
मंडै में भक्तवरे भय ओरी बैठे हिम स्वर।

45. [बघेरे दे सेह बेट फ़सल पुष्करा*]

शेखदा: अंतः बली मू कराता माझ़ी घरे दी घर।
सिन्ह भजाते उने सीहट देले तराजे सिन्ह बघ।

*हिदु है। देशे हैं ही घरे हिच निम्नावर हुमे हिच बेट निम्नावर हुमा देना हिम पुष्करा है। ने हिम पुष्करा ही विश्व जोड़ा निम्नावर दिच नौं ने, हिम वित लेखक ने इस देखे देखे हुमे हिच बेट निम्नावर हिच लिखे दिच लिखे दिच लिखे दिंचे दिंचे दिंचे दिंचे दिंचे दिंचे दिः।

भजा पुष्करा हिम पूरण है:-

शेखदा: मुरे बगाती अस्तित्र। अती बड़ी टे मेंह।
भगे बैठे अते टे मेरे मूण्ड मेरे घरे मूण्ड बटेती।

शेखदी: वो दिंची में हिच देख दे मान। भुजे बढ़े बिक नाहे जुड़ा।
गुढ़े महदै में भप्प महाँ। सीहट देले टूटें टूटें घरौ।
में भग ठूट दे में हिम महां। दिम मिहये रेड़े निम्नावर सर्ग।
हूढ़े सिज ने बजा सिज बेटी। दिमें ही भिन्नमत जोपाट मेंती।
भग दे हुड़ी आदि बिकु बग़ै। बजा सिज भिन्न महां हुड़ी।
हुड़ी टूटें राह अभघे निम्नावर। भज्ञ टूटें है अभें हुड़ी।
उदकर्म निम्न निम्नकाने घरौ। निम्न उदकाने निम्न बेट बिकु।
भजा बेट दे दे दे टोप्प धिल्लावर। बेट बेट है नमे बिल्लावर।

[घबरे दुध युक्ता 123 'उ']
[पंक्ति ९२२ से शुरू तक]

पैंडव: जो कितना अनेक घंटे मैंने देखा है, उसके निपटने वेदः सिद्ध भाव है।
भगवान उन्हें सिद्धांत्व पद्धति घोड़े घोड़े पहुँचाने।

पैंडव: सजी उड़ घंटा घंटा सुनने देम सिद्ध भाव है।
भगवान उन्हें सिद्धांत्व पद्धति घोड़े घोड़े पहुँचाने।

पैंडव: जो कितना अनेक घंटे मैंने देखा है, उस की बात बताओ।
भगवान उन्हें सिद्ध भाव है।

पैंडव: मेरा क्या लिखना है? मेरे साथ है देवी कृष्ण।
भगवान उन्हें सिद्ध भाव है।

पैंडव: जो कितना अनेक घंटे मैंने देखा है, बिना उठने घर जाने घर जाने।
भगवान उन्हें सिद्ध भाव है।

पैंडव: जो कितना अनेक घंटे मैंने देखा है, उस की बात बताओ।
भगवान उन्हें सिद्ध भाव है।

पैंडव: जो कितना अनेक घंटे मैंने देखा है, उस की बात बताओ।
भगवान उन्हें सिद्ध भाव है।

[पंक्ति ९२० से शुरू तक]
[पाण्ड १२२ ली धरी टूट]

देव} 

देवं: वृंदावन्द्विंश्री वन्दे भवुक सन्तें वीरें विन्दें।

[वें मे पूर्व तृष्ण तृष्ण मे पूर्व मे पूर्व मे पूर्व पूर्व पूर्व]

देव} 

देवं: वृंदावन्द्विंश्री वन्दे भवुक सन्तें वीरें विन्दें।

[वें मे पूर्व तृष्ण तृष्ण मे पूर्व मे पूर्व मे पूर्व पूर्व पूर्व]

देव} 

देवं: वृंदावन्द्विंश्री वन्दे भवुक सन्तें वीरें विन्दें।

[वें मे पूर्व तृष्ण तृष्ण मे पूर्व मे पूर्व मे पूर्व पूर्व पूर्व]

देव} 

देवं: वृंदावन्द्विंश्री वन्दे भवुक सन्तें वीरें विन्दें।

[वें मे पूर्व तृष्ण तृष्ण मे पूर्व मे पूर्व मे पूर्व पूर्व पूर्व]

देव} 

देवं: वृंदावन्द्विंश्री वन्दे भवुक सन्तें वीरें विन्दें।

[वें मे पूर्व तृष्ण तृष्ण मे पूर्व मे पूर्व मे पूर्व पूर्व पूर्व]
हठधमीभाग पत्रिकाव दे भादो दा पूर्णिमा

50. [हठधमीभाग दी मंड]

देवां: मे बैठी गाय पाठिकाव दी दौड़े अभी माण! हठधमीभाग भें पाय दीने उत्तर दृष्टि मेंजट बूढ़ा! 9।

देवधी: दरक धा, अचरज सा। जीवं झूठ दे उठावि ठहर। विवाह देने दिन बांध धिकारे। देवे महत्म पाठि दिल्ल अथ। 2।

दूरे दूरे देख दिल माण। अददी माण दे जग दिल धार। 'ददी पंजी की लगि म बूढ़ा। दब्बे सुहार धूम भोगी सीढ़ि। 3।

दिल्ल दिल्ल दी आमाली त बती। ददी भही दी मा माण मैं पही। 4।

देव दुर्भेक्षीहार वरी दी। 'तिल्ले उठिए अभावली तव मने; 5।

भागजे पवज देहेंदे देव। हिम दे उब चढ़ देवजे उदे। देवधमीभाग दे मे दिल्ल आदी। सीढ़ भट्टि मे लदी भेंगादी। 6।

देवां: दिला अधि गृह धराणि दे उबचे पैल अर्धराति।

दूरे आमाल पाठि मे उं घी दी शीत उड़लगढ़। 7।

देवधी: दूरे अदाल देवि धियि हुई। दूरे पंजी दिह तव दे बुढ़ी।

दूरे आरधा दिल दिल पती। मिर्गे धरद्द पंजी घड़ बुढ़ी। 8।

पंजी दूरे मादि दियि पता। सिंह तवभी पैल दरबजे भाग।

पंजी हंडी शीरे सह। भागे साग अभीत फलभाने। 9।

देवें देवुं हुदें कहे। दिम दिम पंजी बुढ़ी बुढ़े।

पंजी धरि 'धरि देऊं जा दरबजे। मादि ध्रुवइद दी भवि गाजे। 10।

भे दरम पुछ मु दियि घटि अधी। 'देवदिल में मु दिल मभ पक्षी।

उदास मिश सिंह दैल पही। सिंह बलाद मे दिम जउल पही। 11।

देवां: मैं दूरे मे दिलमादि माल मु दिंबु बूढ़ि।

हठधमीभाग भोगे भाद दीजे अथेदे धरिद। 12।

भादी के दाघ मद मुजे दीजे दे धरमग।

'सुहे मु अभी भीत दाग' दूरे दिल्ल दी दिमषा। 13।

भागजे मे मैं दूरे देवी मे मुझे हठधमीभाग मादि।

दिंबु माल मिहिदिये हीजे दियि घरातिद। 14।
पाषाणे ला पूर्णा

४१.[व्यवहार दे विंहे पाषाणे ला उठना]

चेंज़ा: माही दे महत पुंडरिक ‘पत्र भी भेँडी मुणांति।
क्रोध मे भवलडि दे विंह उठने पाषाणे ला उठना?’ १।

चेंज़ी: ३ माही मे इं घर नां-क्षीणी तें मे पाषाणे ला उठने।
ध्रुव देशल सिंह पंढी चोरे। मिथ्य भवलड़े मे भिं भिं भुजा घड़ैं। २।
वल्ल मानत विंह भवलड़ी सङ्गें। विंह युग्मस्त विंह घर घड़ैं।
विंहल थेरी भाग चोरणी। भिं भिं उड़वल लाफे विंह घड़ैं। ३।

चेंज़ा: उंड पाषाणे मे उडे निंग घरी घड़ैं। ठंगी।
हंगा घुंघ घुंघ दिले भवल भवल रूप ले मेंगांनी। ४।

चेंज़ी: गुदे क्षीणी नेंदु भेंग। खोने ३ उड़वल दे क्रोध थेरे।
विंह जान्ने मे इंडर भागि। उड़वल लूफ म भागरे ठंगिं। ५।
तरिं उड़वल मे उड़वल दे ठंगी। विंहण घट भभ उड़वल दे ठंगिं।
उंड पाषाणे मे दीि मस्तेह। भाग भवल दे ताती मेंगांनी। ६।

चेंज़ा: गुदे भागी हू घर दे उड़वल वेलं क्वू।
भवल भागे दे उप भरे उंडे म घर मे टँडे। ७।

चेंज़ी: वह भागीभाग लिम वधरे उड़वणे। बैजै घुंघ लूफ मे उड़वणे।
घुंघ भागीभाग चाँदी घड़ैं। दिमंग मे गौरै हैत भगाठी। ८।

नैता क्षीणी भवले भागीभाग ला

५२.[व्यवहार दे भागीभाग की रूपाणी]

चेंज़ा: भागीभाग भवल भवल क्षीणीभाग चढे बले सिंह सिंहा।
असे दूंङे घुंघ दूंङे मे भिं भिं भवल भगावा। १।

चेंज़ी: वह भिं भिं घुंघ दूंङे नेरुने सुरैं। भागी उड़वल नेरुने घट घड़ैं।
बैजै घुंघ मे दिले लेडे ठंगिं। भवल घम मे भाग तवाने। २।
लीला भागीभाग मिं चँदू मस्तेह। तरिं खींची तींदु घड़ैं।
कहै घरी भवले बले। रेतले मंवाः निंगे रे टाईं। ३।
घाती ववमानी नरे त भागे। दूंङे उड़वल दे नेरुने बले।
रेतले भेंखुगम मे वत लये। भेंखा घम भी लिस लये। ४।

*तें दे घट दिच।
उद्गात: उद्गात वे वृष बढ़ा लगे वे गाह बढ़ी भावां।
बमभ कुमार उद्गात वृष बढ़ी बढ़ी बढ़ी बढ़ी।
बी उद्गात है जहाँ बढ़े जहाँ बढ़े जहाँ बढ़े।
मेंटा वी जहाँ जहाँ जहाँ मेंटा उद्गात फिे फिे।

dेहर: उद्गात लिखी लिखी फिर फिर फिर फिर।
कुरा तर्को वृष में हे मे हे मे हे हे।
कुरा हे बूढ़े बूढ़े हे बूढ़े बूढ़े हे हे हे।
कुरा हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे।

dेहरा: उद्गात लिखी लिखी फिर फिर फिर फिर।
कुरा हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे।
कुरा हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे।
कुरा हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे।

dेहरा: उद्गात लिखी लिखी फिर फिर फिर फिर।
कुरा हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे।
कुरा हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे।
कुरा हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे।

dेहरा: उद्गात लिखी लिखी फिर फिर फिर फिर।
कुरा हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे।
कुरा हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे।
कुरा हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे हे।
चदा लंगूट घरे जी बढ़ी। तेह बीरकार तभें हड़ गाड़ी।
बते 'मांजी मान मंगा तुम्हारे'। बते 'सूती तम चढ़री जाहै'। 29।

देवक: ऊह भाली में भज भज भज 'दे बड़े ओहे हूँ उजाँ।
आत्म से रह चित दे बते भज भज दे बड़े ऊहू।' 22।

चेपाह: उ हिभ नजरधर धा नीसनी। उम्रीबी नाभारीधर जे चिनपँडी!
'वैरनीरव में उम भज खाद तरणे। जरे पावपाव में उम बघूँ।' 23।
हिद दे बई अब खाजी हैं सीव। हिदें हिद मिट्टे मालुपुर त ढीव।
सरी गोड उम लवाउ र देवी। भज लवाउ दै मेव त बतेरिया। 24।

देवक: बती मिरनधर है दिम 'अब मे पीत घाप्ली।
मेहे मंगाउ में अभी चित वह देवार बगाड़ी।' 25।

चेपाह: ते बीरकार जें मालमे ची। 'बहु हिभ' अब उम ऊह भजी।
उम उम ऊह में बेटी बृज। ऊपत सेरिया माद मंगाउ भज। 26।

देवक: बैंमे निसीरां सुड़ा सुड़ा से बिंदी भोगी घाप्ली।
बैंमे उम ऊह सुड़ुँ सब उवर बहैगी भोगी। 27।

चेपाह: मग बीरकार पूँ मुं घाप्ली। छुट्टिमोड़ भाटी भाटी जागराउँ।
'मिर्न भजे पै अब उम ऊह घाप्ली। ऊपत में चित तरणे ऊपत।' 28।
टवे टुड़े एंगे उवरत सिवदार। हिद बत एंगे हिद चित उवरत।
उवर सुझती सत्वार बते। हिद उवरत दे मिरन मोरी।' 29।

देवक: उदे बीरकारबा लेब मिट लकत उवरत खाप्ली।
'टबे मू चुड़े उम रिपाई उम चढ़री मांस रिपारिया!' 30।

चेपाह: ऊपत चाटीधर बी चित घाड़। टवे टवैं मे भङ बुड़ि महाद।
हिद लब भजे भोट टैदी बुड़। हिद लकपपल शज बाजे टैडीएल। 31।
'भिआ बीरकार मृ 'देवाजे टडी'। मिरनधर नस शरी महाभज।
'टबे हिदें हिद मिट चित मेव टोरी। उमे धाराल म डूंढै बेटी। 32।

देवक: बैंमैवार मिरन जे घरी मे बिंद रिपा मृ रिपारिया।
बैंमे मू चेडी बेट चित उवर बीरकारबा रिपारिया। 33।

चेपाह: वाटु मिर्न नी चित घाड़ बते। 'पृथिवी रामला की देवी टेके बते।
उम मे बेटी दे मिर्न मेवारिया। देवा भज भज मिट भज उवरत,' 34।
धार भज भज मिट मह मदी बते। मेवे मे टबे एंगे बीते।
सम मेवे िुटी वधमल बही। मे वह सीमा मे चित आही।' 35।
43. [फिरीयां फिरीयां दे पाने दी फिरी उठी]

देवत: मजे वसमन सच अजे चुडूच चुडूच रवात।
धूली मु भांजू अंग पिमा उववरत वानी मठव।

देहत: व्हूई रेवाण उवरत लही। बिड लाभ बीवे अपहे उठी।
मंहि लगत पलोवण। रे लह भैं उँ राम बाजू वाजू।
देहत राम चुर बंधीयात भारी। मुहे सिंह रउ वलमुख बाजू।
सिंह सिंह धांजे टवू नाहे। दिह दिह बंधीयां निभ पले पाहे।
उँ वानी तब मेह भाग गया। उवरत में निङ उँ लहिं भाग।
मुङ गुलामत औंग टिहाई। दिह भाग विहि टिह युर वायवहै।
‘भाण मनुष्य’ उँ मंगात वे चलो। दिह उँ राला भाव बलने।
सिंह वानी ‘तभ बल रक्षात। दिहां घाते लहिं उमली वाल।

देवत: हजे रचमात उभ हँड वठे पातूल भीड़ी महर्यान।
घर डाँजा भिल घड़ि वहे बजाचे धव तमेह।

देहत: बंधीयां बै मजे नाले भार। दिह भैं धांजे ‘मिहरें दी चुहरें उँच।'
‘भाणे बल में घड बलभाद। उभ मरंद नामे झुंझ राख।
पुँडे बल रउ भाग बलभाद। में बेनल बल मालो दिहाई।
उगार है सवा में हरी। नाग नागां दाहर। नाग नागां पान घार।
मिः है वानी ‘उभ में हैं र मंदू। उह भाजी वहे चैं र उँचू।
उभ में सवा मिहराबी भारी। उव मंदू मुंदू पतिखाईं लगी।
जम्ये विपान विह देवर। मिहरी। धडी दलव मे भड भाग लगी।
भडी बंधीयां वे ने माढे वे टेहे। अनी उबाण घरे वे पेहे।

देवत: भाणे भामरपत भेदगम वान वादूसी मां।
‘हेंढ़ लाह भाग सांझ दिह उव घार।’

देहत: देहुं दिह वे माढे वेधे। ‘सिंह मजे घड़ बाज़ू बेंड़ू टेहें।
ने उभ में हैं हारी माली। देहुं दिह घड मांड दवावाश।
वाहु-पुंजम पत जप्पे घार। वाहा वाने मंहि तल दंगूं घार
हे मधुर मू बलूँ साहे। वहे लह वट भवने ठहे।
सिंह पिनी धडी दुवाद घराई। अरे मु भाप उलपानिं वरें।
उँ वाहु हड़े रचमात रही। मे उव भाजे मे चले याती।


दिनादिन दिन दिन, 
होते ही होते ही, 
साहित्य सुविधा में 
साधन अभिनव रहे।

पूजार: पूजार भगवान भक्त सदा सत्सागर। 
पद्मावती वाली धामने में रिमझिम वेदना।

पूजारी: पूजारी वाली हुए दिन बारह। 'तभी वे तथा तथा माता पुजारी। 
दिन बारह रिमझिम रिमझिम रहा।' २१।

मेंठा: मेंठा भी भी घटना निम निम भक्ति भक्ति भक्ति। 
यही सृष्टि सृष्टि राम में रहे रहे रहे। २२।

पूजारी: 'तभी मातुला भक्ति ही नहीं नहीं। तभी उदयित केवल गुजारा।' 
तभी वे भगवान नहीं नहीं नहीं। निम निम निम निम रहे।

पूजार: पूजार भगवान भक्त सदा सत्सागर। 
पद्मावती वाली धामने में रिमझिम वेदना।

मेंठा: मेंठा भी भी घटना निम निम भक्ति भक्ति भक्ति। 
यही सृष्टि सृष्टि राम में रहे रहे रहे। २२।

पूजारी: पूजारी वाली हुए दिन बारह। 'तभी वे तथा तथा माता पुजारी। 
दिन बारह रिमझिम रिमझिम रहा।' २१।

मेंठा: मेंठा भी भी घटना निम निम भक्ति भक्ति भक्ति। 
यही सृष्टि सृष्टि राम में रहे रहे रहे। २२।

पूजार: पूजार भगवान भक्त सदा सत्सागर। 
पद्मावती वाली धामने में रिमझिम वेदना।

मेंठा: मेंठा भी भी घटना निम निम भक्ति भक्ति भक्ति। 
यही सृष्टि सृष्टि राम में रहे रहे रहे। २२।

पूजार: पूजार भगवान भक्त सदा सत्सागर। 
पद्मावती वाली धामने में रिमझिम वेदना।

मेंठा: मेंठा भी भी घटना निम निम भक्ति भक्ति भक्ति। 
यही सृष्टि सृष्टि राम में रहे रहे रहे। २२।
देवगः ददे द दिखी दिखाव* दिख भे भज्जै दछजे द भज्जे। 
देव भजे दिख यह दणार दरब तिव थावै। 30।

देवगः: दप्तरै बीड{े नै नै बीडे। ददे बज बज हडे दछजे। 
दह हड दडे दथीरहं बज्जे। बज भज्जै दछ दह बद्दीर्यै जुँकू। 31।
उडे दछजे दछजे दरब दह भज्जे। भज्जै भज्जै भज्जै दछ भज्जे। 
दह हड दह दह दह जुँकू दह भज्जे। 32।
उडे दप्तरै दछजे दछजे दछजे बीडे। दछजे दछजे दछजे दछजे बीडे। 
उडे दछजे दछजे दछजे जुँकू जुँकू। जुँकू जुँकू जुँकू जुँकू जुँकू। 33।
उडे दप्तरै दछजे दछजे दछजे बीडे। द�जे दछजे दछजे दछजे बीडे। 
उडे दप्तरै दछजे दछजे दछजे बीडे। 34।

44. [भीम भीम दे मैनाउ मिष दा भेस्त]

देवगः: दछजे द भज्जै दे भज्जै दछजे दिख जुँकू। 
दछजे नै दछजे जुँकू दछजे दिख जुँकू। 31।

देवगः: दप्तरै दछजे दछजे बीडे बीडे भज्जै दछजे दछजे दिख जुँकू। 
दछजे दछजे दछजे दछजे बीडे बीडे भज्जै दछजे दछजे दिख जुँकू। 31।

देवगः: भीम भीम भीम भीम भीम भीम भीम भीम भीम। 
दछजे दछजे दछजे जुँकू दछजे दछजे दछजे बीडे। 31।

देवगः: ददे ददे ददे ददे ददे ददे ददे ददे ददे ददे ददे ददे। 
ददे ददे ददे ददे ददे ददे ददे ददे ददे ददे ददे ददे ददे। 31।

* पदार्थ दिख लाई दैदी।
चैती: भवत भवत वर्त किछू सिंध यादी। घाजें बी बाघ गुज् पृथक।
चैती: देव चैती देव मामुज छिये। उदं ठ डंडी मध्ये रुकहि झट्ठी।
चैती: वर भरी में छीते घड्डे। भरी भलसमे चुहा बां। जैसे चाबे यादी धतली।
चैती: सित निधि वर है मासु । तोहे। भग वर उदं खद्दमे छिये।
चैती: इती मासु रद्दे उदं घड। बंथ भरंछे धैयत हत।
चैती: बहसमें वी उदं बढी। घाजे मेंधु निधि है बाघ बढी।
चैती: देव देवी भवत वी बाँसी घाजने ताँदं बढी।
चैती: नान बर्त्तल वी गौली लगाणी। दित वं बड़जे भाली सिंध धाणी।
चैती: बहि भलल में छीते नची। झुटत निधि दित धासमे बढ़े।
चैती: जैस चित्त रद्दू चैती देवी। चैती: भाली नित धार बढ़ी।
चैती: देव वर ताँदू वे गईं देवी। बीति घाण टर्के वे मेंधु।
चैती: सब आभिरथ निधि चिंत चांजे । 'अ व दे तेवट दे गौली।'
चैती: गौली चिंत न धाल की धासु धांनौ बहिजे बढी।
चैती: बहि भलल हे आकांबर लाई बी बढी।
चैती: चैती देवी भवत में निधि खानी दिमे जी उडी।

चैती: पूर्णवा घाजे घड़ाट मिन्न में चुरत मिन्न देवता भे आकांबर वे
चैती: भूपाज वात भे भनत वे दिव्य उदं खद्दे बढ़े हैं।
चैती: देवता दित्ती देव भे धरी वर्त भमा। वर चित्त वे मुड भीली धरी।
चैती: वर रुकम में छिये सुवाद भिलाडि। राती घ Produk दिर गाल मुघददि।

मासी गुजदह लगडा वी गौलिभाडी वी

46. [गुजदह लगडा वे गुजदह मसलदे भविती हूँ वे पुढ़ा ता रक देवता]
चैती: मासी मुठ भाग छिये वी मी बाघ बोल मुड भागला।
उदं खद्दमे में छैती त्व भूले गाल पहुस्त।
प्रथम वेल जून

सन्तीशिव: हैं सिद्ध दिवंग रुक वर्ता युगद वाय में आता।
दुर्गी मंदिर देवल देवल, वर चुड़ैली सीढ़ा।
सुनामी में नाम छिते नाने या निव मृत्यु कुर्ल।
हैं "वनपाल" वर्ते दुने वे "वाली" घड़ियें।
सुनामी नाम दुम दिनादी निव मृत्यु बृज रूद घड़िये।
घड़िये गुरुव नाम हे वार राजस राजी वे पेड़।

उत्तर: अन्त नेहें बगल है राजस है तब दीवे भगवी लाहन।
खुश पुढ़ मेनाद हे देवी भगवी आदार! जाह।

उत्तर: नाइं नमस्के गुढ़ बोधिय निव बैठे। नाह मेनी धरार सोटी बैठी।
मैं नाइं नगर भगवी ठहरी बैठी। राज मेन निव विन विन विन बैठी।
भैरी नायं नाम भगवी बजाये। हैं पुढ़ मेनी नाम जाह जाह।
पुढ़कु ने जादे नाम मांह। खिल पुढ़ भवानव नाम नाम भाग।
हिंदी बुझाए भगवी आम। भैरी पुढ़कु ने हैं बढ भाम।
मीठ भैरो हैं टिट मृत टिट। भगवी नाम हे भक्तिर बैठे।

उत्तर: अन्त भगवी मुलमध्ये भे पेड़ वहे अभिनय।
बनी दुवालकिस महार भिंड रस भगवी जी लेव।
उद मिथ मेनाद नाम बैठी उव तुकु बैरी विन विन विन।
हेम र निविरिल हिम पुढ़" दूरे बैरी बवाह बलक।

उत्तर: पुढ़ी मुख बी भगवी घरी। 'ठाँट दिलिर" नाज़ चीम बैठे बही।
देव हय बक्ष वर्ता भोजन भाग। वल्लभनार सुगार भैरी ठहर।
राज मेन दिव पिलिर बैठी। 'मो सिरी ना भागी अघ सिरिदे में मरी।
हिंदी हैं भैरी दिलन दिलन दिलन। अब तम दिने अघ मिरे जमी।
हेम दिनादी में दिन से पसी। हे विन बवाह भी मेनी।
से गांव देरिद ते देरिद देवा। हे चीम दे मिथ बब वे देव।

उत्तर: हेम दिनादी राज बी, मेनाद भगवी जानादी।
हेम मु मेनाद रज बृज कही वक्ष दिनादी।

उत्तर: भग वार बनु भैरी बती। बुझारी पुढ़ निव रूद जेक है।
देव भवे दिव बशार नाव बताये। वाराम वह निव दिनादी रघु।
में बशार नाव पुढ़ पतने मेनाद। हे षे हैं देरिद दिव वह भी भाग।
भव दिनादी दूरे पतने पतने। जवी मह भी भनत नू जारित।

* हेम भा देव "हैं" बृज बील मेन दिना, देवा दे हे नू भक्ष बा निव दिन,'
""दिनादी हैं शाह के पतले देरिद दिन है। तके बील बह भगवी आदिका है।
हि भगवान वे आतिष्ठि धर्माय। धारिरि हैं विन कह वर्गे महाद।

धारुरसंगन वर्षी जन होती तै बिनै। अवरी वर्षी जय जन कह भगीर। ॥

झाँकृत्वे वे पति रघु वै हसि चुव्वतू गुरू में ग्रीष। ॥

रूपी मंत्री रागाभ गणि वो।

9. [रागाभ गणि वाक विनें महाद।]

धाम वा भोजन। गायन मधु तल मेल।

रेगा: से वे अभि पूकड़ जगि 'चाँद वच मैं गरी रागाभ।'

अंति वे में नापते खिड़किर गति सुकूर। ॥

रेगा: घाँघुमारि सय अभि मूतिर। घुलारि घड़े धीर मलखवे भमें।

'ने महिलाओ वे खसी रहित। मलखवाल हृदम वस्त्र रेहे भें।' ॥

मलखवे नागाभ गणि है भासा। घाँघुमारि में भिलत ठिठुरण।

मे 'वृद्धि मे ठठ घड़े। मानि जीसे 'व्यक्तम' भर्मे वर्तै। ॥

बघाच मानि हे महिलाग बती। पद्मावी तिंबाट करते उठे।

मलखवे जी मलखवाल ठिठुरणी। नूति अभि निम भें। भागी। ॥

वार मानि रूढ़ि धीर वत तिके। अभि वर्ग वत भवे अभि भें।

मान ताप में भवे वाही वते। वाट ओपे भत वत भें। ॥

रेगा: धैर भतीभार महिलाग घड़े, निम पुकड़ रागाभ गणि गणि।

मान वती 'अं दिलकद उ' वहिवै चूर्ति भर गणि! ॥

रेगा: मघ अब्जर निम तेजी भागी। धरवी उच उठि रनी चरगड़ी।

मानि वे मी महिलाग वे निम। मलखवे वर्षे निम भिजे भासिन। ॥

उठि ठिठुर निम भें। मानि लहें। वे दिव घतम निम नागाभ भागी।

मलखवे भमें वे पर्वे तेजी। वध राजे वे उत्तर निम खिलमें। ॥

'वृद्धि तपूर्वी' हृदम वे ताप। निम ठठ अभि दें। खिलमे।

ठिठ चेते घं में भर्म चरम। भिलह ठिठुर उम धीरि वर्ति धाम। ॥

भें मूहे नागाभ गणि करारी। भिल ठठवी वल मलख भिलही।

मूर्ति विष्महविष्म पे भें। मढ़ महाद। धिअभे गायन कुरे वत धागे। ॥

मेलि: उने अती मु गणि, गणि असत बने वते।

मृत्त में हिन्द, निम पैरे मृति विषि लिखे। ॥

20.
माथी गुलाघु लगि वी

45. [गुलाघु लगि वी ही देव्वर से राम, में गुलाघु भक्त राम विवेक]

देवगुरु: हे दे आपधे दुरक जहि "देव दुरा ब्रम ब्रम वे आपध।
        देवेहे हेलिते निद्र वे हेर आई जहि र जहि विव जहि?"] 91.

देवधरी: सहे द्वाराज हेर वे बही। देवधुर वही सह हेर आही।
        उध वही वैहे अहेलियर नाही। ते वी वज्र आपधे प्रजानाई! 91.

देवगुरु: अवध वीहे र गुलाघु लगि दुरा वज्र वी मानी।
        दुरा भोती वे दीवडी पाण दिप्पि!* 91.

देवधरी: तबे दैल वे लें उमाज। तही दुर्धुमिन भें चौंच सिज दहात।
        तही चौंच हेर गुलाघु भजन। भावो में हुई देवी उमाज! 91.
        नाहीं नाहीं माहियर नाही वी भागी। दिव टां दैठा दिनते तही।
        उषी धुरुल दीवे भीहे दहात। देव चतुरस वे गुलाघु चाटी! 91.

* हेरे हेरे दे दे वहे दुरक दैडी दे:-
    अवध वीहे र दुरा दुरा जहि। वहे चक्रवर्ती हे दुरा जहि।
    दुरा ब्रमाई अपहुं गोंड। भय में दे देरी हेर देव! 91.
भगवान भ्राम ते असी। मैं जी दिखण में देखिए। तिया। निजी जीवन गुरु नाम बन जाते। ठीक लेख वे धर्म देने अचानक। मंदु निकलने तिया। गुरु ते मनोज सन्नाटा हो। मैं बन देंगे हिम भुख्म करने के। ठीक लेख जीवन गुरु नाम बन जाते।

रेडियो: हुई भ्राम वे फिर जग करिब चेहरे उभरते।
रेडियो: जै प्रति आगे जग करते वे बीती करते ते 'समय मौल में'।

पौही: 'निभाया पूजा उठाई उठाई दिखे मेंटा।
पौही: श्रीमुं मुझे अपने अपने में रहा टेज़!ए।

पौही: धड़े बही देंगे देंगे वहै। लगे फूले भले धरे भरे भरे।
पौही: ताल करिब रहते पृथ्वी बाहर। गुरु रहित मंदे वे रहे थे। भुजाद। १०।
रेडियो: धरते भ्राम वे भ्राम बाहर।
रेडियो: 'अनाचा घराणा घरा बंदिया। उभरी फूली हेदेंगे मेंटा। ११।
रेडियो: इसी बाहर भ्राम भ्राम बाहर। भ्राम साप भ्राम लिए भरा।
रेडियो: इसी बाहर भ्राम भ्राम बाहर। उभरी फूली हेदेंगे मेंटा। १२।

मधवी समझे भ्राम हो बी।

रेडियो: देश में मैंने मैंने मैंने मैंने मैंने मैं।
रेडियो: धरते भ्राम बाहर।
रेडियो: जै प्रति आगे जग करिब करते। १४।
रेडियो: जै प्रति आगे जग करिब। उभरी फूली हेदेंगे मेंटा।
राज भ्राम ते भ्राम ते बंदिया घरा बंदिया। १५।

* प्रथम स्तंभ उच्च रंग हिंदू भ्राम:-

ताल करिब वे फिर जग करिब उभरते।
निभाया पूजा उठाई दिखे मेंटा।
माण्डिवान ब्राह तम धम्माज़े। ‘हँम पत्र पैंडु भवाल लखाहारों को।’
मुठां मिग तन वे सुभुम्भ पाँग। लेव गुढ़दहल अधि मटाप। 3। ‘हेट हेट’ ब्राह लेव लाहारे। ‘अभरे पुत्र विम दूरवह ब्रह्मारों?’
उध मिग ते मध गाउ समारी। ‘भरने तृत्र दिम बंगे हूहारी।’ 4।
भग पत्र लग्ने पने विन्द गहारे। उभ उ अधकी भवाल सलाहारे।
मिग तिनांसार पलाज पलाजे। उ उ निम राम सुकार बलवाह। 5।
तेवा: हे हे तेंद ब्राह तव तवे घड़ी पुरात।
विस्फ तिसार विन्द भए नदी उदी धण्ड वे तन 6।
सेवारी: पत्र वे हृद मिग बाग पत्र पांग। गितारे तव विन्द दूसर हृद धारी।
सेव बाघ हृद में लुंगा। उवे भास्व वेदी त आगे। 2।
मै हे हे मिग मिडिवान दे तांगे। अष्ठी पत्र मिग ठंड उवी।
उध मिग तें अभी आगे सलाहारे। तम में हुर पिय उड़त पिलाने।
मिग लिज़ में वें वें नस बांगे। मधेव पारी हें हिम्मिये बढ़े। 4।
अधक भेद मिग पत्र वे आगे। दिम वे जी मिग भवाल घट्टारे।
लेव वटे वटे पेंडेउरी। ‘उभ है वने ना भवाल सलाहारी।’ 9।

माण्डी मटीरे मिग्ये वी

900. [मिग्ये भवारी, पत्र मीम भेले दे भजनकिया दे हैं ‘मटीर’ पर दिइए]

tेवा: हे चेतु यूहैं यूसर पत्र विम वटे मटीर लघुजार?
तप उने विचङ हनुमुदे ते हे पिंडी वटी विन्द बाघ? 1।

tेवारी: तंबे हृदव भैलैं हैँ। भैलैं भुधिरू होम घडऩे।
भुधिरे में मुसी घडऩैं नामी। बुध अभभार में तूवा वट उपी। 2।

tेवा: दिग दिग मिडिवान भाँटमें घेंहे भेमी भुधी।
मध दिग्नान अभीरिटिद दिग विन्द मिडिवान भुधी। 3।

hैयकः: ‘सिंघा में हें पूंउत मावा टिंट गाहे।
विम्माा ते पूमारिक मिग्यी अभिध बढऩे।’
जट मध मिग वे घडऩ भी मूह जे वटे;-
‘जे वटे वटे, अबेल नें मध हें जटे।’ 4।
भवधी मेंवार भण्डी मिग अध है वटी।
मिडिवान सेमी जीडी देहे विख भय ठट्टी!’
पुजारी: वह जिन की समझ में वर्तमान ने 'मिथक' बने थे हाल वर्षा ने तिनहीं।

वेंकी: जिनके जिन्दा फ्रिटिय के बंजर। पंजे वेंकी ने वस्त्र विश्राम ने।

वेंकी: वहाँ मैं निजी बिहार ने बनाना। वहाँ मैं निजी बिहार ने बनाना।

मैं मैं निजी बिहार ने बनाना। वहाँ मैं निजी बिहार ने बनाना।

वेंकी: बिन्दु वर्तमान उनके तहल दुरान। जिनके जिन्दा घर हाल दिनों थाम।

वेंकी: बिन्दु वर्तमान उनके तहल दुरान। जिनके जिन्दा घर हाल दिनों थाम।

वेंकी: बिन्दु वर्तमान उनके तहल दुरान। जिनके जिन्दा घर हाल दिनों थाम।

वेंकी: बिन्दु वर्तमान उनके तहल दुरान। जिनके जिन्दा घर हाल दिनों थाम।

वेंकी: बिन्दु वर्तमान उनके तहल दुरान। जिनके जिन्दा घर हाल दिनों थाम।

मैं मैं निजी बिहार ने बनाना। वहाँ मैं निजी बिहार ने बनाना।

मैं मैं निजी बिहार ने बनाना। वहाँ मैं निजी बिहार ने बनाना।

मैं मैं निजी बिहार ने बनाना। वहाँ मैं निजी बिहार ने बनाना।

मैं मैं निजी बिहार ने बनाना। वहाँ मैं निजी बिहार ने बनाना।

मैं मैं निजी बिहार ने बनाना। वहाँ मैं निजी बिहार ने बनाना।

मैं मैं निजी बिहार ने बनाना। वहाँ मैं निजी बिहार ने बनाना।

मैं मैं निजी बिहार ने बनाना। वहाँ मैं निजी बिहार ने बनाना।

मैं मैं निजी बिहार ने बनाना। वहाँ मैं निजी बिहार ने बनाना।

मैं मैं निजी बिहार ने बनाना। वहाँ मैं निजी बिहार ने बनाना।

मैं मैं निजी बिहार ने बनाना। वहाँ मैं निजी बिहार ने बनाना।

मैं मैं निजी बिहार ने बनाना। वहाँ मैं निजी बिहार ने बनाना।

मैं मैं निजी बिहार ने बनाना। वहाँ मैं निजी बिहार ने बनाना।

मैं मैं निजी बिहार ने बनाना। वहाँ मैं निजी बिहार ने बनाना.
मध्ये मंदिर सिर सी, नीला मातीमां भूर बलब मिस्क वी

''नीला मातीमां दे बृजीमां सी भेजो। मन्नावां पुनः धर्ममां''

मंदिर: मंदिर मिस्क दिव्य मिस्क दुःख दूषी भय भूषितां।

मातरी: हृदी बुझाव देगु मां तव। मन्नावां बृजीमां में भूर।

ढेंगर: नाभ में दृश्य भोग भवाव। नृत्य मंदिर में दृश्य भवाव।

ढेंगर: नाभ संवाद महत्र बृज वृजी हृदी भोग।

ढेंगर: मां देव दिल भोग अल्मां। बृजी बांहित के उद्ध देव छेदी।

ढेंगर: बृजी राहि राहि बृजी राहि। दान में दृश्य बृजी राहि।

ढेंगर: साह भक्ति बृजी बृजी राहि। ‘मिस्क संवाद दूषी बृजी’ भेद लूजे हृदी लेगा।
सौंठ: फिर बाहर मनाड गैंडी घड़ी। ये वट वट एक अधा बुधाई।
सिंध सिंध चूस पुट जी रटा। उह बसने में अभा बुधाई।

सूंठ: मे मुठ बाहर में सिध लटी। सिध देंगे हैं वट बनाय।
पत निकले चटकों बड़ते हैं। पठी भालाई लाँच।
अधा बने मे हिरु मारीयत हैं। उह चढ़ उठा।
सिध देंगे मे निकले निजाती बटे बाजे गाड़।

सौंठ: सिल सिंध दैंगे दिखाए बोल। वहे उठा सिध में मुठ लटी।
सिंध देंगे नीलदि सिध दाँग। दैंगे बजे वे उभरे घाय।
सिंध में वुड़ मुठ तह तही। दैंगे दैंग दैंग दोरे अधा।
सिंध देंगे मे दैंग दुख दुख दहे। दैंगे दैंग दैंग दहे।
सिंध सिंधली में दही माहणा। 'वांच सहराजे दह सिंध बुढ़िया।
पृथक इलाका विकस बना। पृथक इलाका दिन वहाँ।
सिंध वह वांच सिंध वह बाण। भजी तैन थे।
सिंध दैंगे मे चटकों बड़ते हैं। चटकों तह निजाती बटे।
सिंध देंगे मे चटकों बड़ते हैं। चटकों तह निजाती बटे।

सूंठ: मां मां अधा मे उठे उठे मुठौरे वहे दिखाए।
सिंध में दैंग दैंग दुख दहे।

सौंठ: मे दैंग दैंग दैंग दैंग। सिंध वह दैंग दैंग दहे।
अधा दैंगे मे हिरु मारीयत हैं। सिंध में सिंधले मे माहौल हैं।
उह देंगे दैंगेद नूड मुठार। अधा भजी वह दुख दहे।
उह देंगे 'चटक पपूल तहे हैं। चटक पपूल में उह मिठ उह पृथक नहीं।'
उह दैंगे मे नूड मुठ हाल। चटक पपूल हाल।
सिंध देंगे मे 'उह माहौल पपूल नहीं। हिरु मैं माहौल नहीं।'
सिंध देंगे मे मा दैंगे दहे। उह माहौल दहे।
दैंगे मे भजी नूड माहौल। दैंगे मे माहौल नहीं।
दैंगे मे माहौल नहीं। किन्तु माहौल नहीं।
दैंगे मे माहौल नहीं। किन्तु माहौल नहीं।
दैंगे मे माहौल नहीं। किन्तु माहौल नहीं।
उद्दित मुठ मस्ते तठे लगे पहले मिस्थ रहणित।

रेंगत: देढी मुठ मस्ते तठे लगे पहले मिस्थ रहणित।

रेंगत: देढी मुठ मस्ते तठे लगे पहले मिस्थ रहणित।

रेंगत: देढी मुठ मस्ते तठे लगे पहले मिस्थ रहणित।

रेंगत: उचित घरीलेख आ वगजे ‘उभ टीकं संउ सूपारी।

रेंगत: उचित घरीलेख आ वगजे ‘उभ टीकं संउ सूपारी।

रेंगत: उचित घरीलेख आ वगजे ‘उभ टीकं संउ सूपारी।

रेंगत: पैन मिस्थ मिल धित बरजे यब बुत बलरत यजज।

रेंगत: देढी दह लड़ी मिस्थ दीवारित। ‘बैठे मिस्थ जब हिंदी दित बाजें।

रेंगत: देढी दह लड़ी मिस्थ दीवारित। ‘बैठे मिस्थ जब हिंदी दित बाजें।

दृढ़हृदय: दृढ़ी मिस्थ भव आरतें उबे ठीवज दते बदहारित।
भग माही तीनो मात्प्रभु वी डौपड़ी

१०२. [दीवार धुली डीवार घाटमू रे चढ़त भाग रे समयमध्य माही]

देवता: हांता सन्याघे रेम वे धर्म जीव विगते।

देवता: धर्म पहिच दिनत मुझे भोज दिने। मे धूप भद्रा चित्रों देखे।

और मैगाव वे नाम हिसा नाह। नौ रीट हिम देखे फटा। २।

देवता: पूर्वन युद्ध समूह 'अभ वर्ता नियने। भूतात भुगढ़ तेंदु नीता। बधिमै। ३।

'भव ठेस तम वे बुढ़ तरी। बुढ़ दिने है तमा मंडी।

देखू रोज 'छुट' दें गाह। ऐतिहय पाहुँद मू पहक। ४।

देवता: भूतात भवत वे देखे। तिथी यह ज्य चतात सहे।

देखू रोज 'भूता बुढ़ 'भूता पहुँच है गाह।' ५।

देवता: अंत वरी हैर 'भूता ये धोर पहुँच वे गाह।'

मिंचत वनने 'उठत गेटी भाड़ गुमाने अंत पहुंचात।' ६।

देवता: मे मृत्यु भाग दिखे वे तला। धुरीरा लोटकल रूप पक्षा।

मैगाव दििम भूतात पाने। वह भुगढ़ भुगढ़ भाग दिनक्षे। ७।

वह वेरा बुढ़ चक्कर मूला। 'भव पाहुँद वहा मैगाव पाने।

लम्य ने जग मैगाव चुके वे पहले। ऊपर माधिमिने भी भी भर। ८।

उत्ते नीमो पवित्र बुढ़ भज चीता। यह दु सारे भव में भोजत।

मे मैगाव मे सारी माह। संस्कार सिंह बने पहक। ९।

वह उम मैगाव 'मिंच! आतो भाद्र! यहे बेटा रहे मंड निकला।

दीवार मूसा उपर चेत। पेटी तम वे लघ बने।' १०।

देवता: बाह नीमो धुरा वह वह जगे 'भूतात भरी माह।

मे वे निवास स चीने बने मंडी दिहणे दिहणे पहक।' ११।

देवता: मै मैगाव डिम भम इतूढ़। टपर बायेंदी बटा मे आचे।

दिने दुर्युर्वषी टुड़े लघ। मिंच मैगाव मंड टिकत वधात। १२।

मे मम गरीजे हैं भाद्र। मिंच मैगाव वे वहे उतर्यात।

दु निंडें भर्तवर तहित करे। मी बुढ़ दु बहाम मोकरा हें। १३।

मम जिवे दिये डूंढ जाइ। वीना बुढ़ दूबरत वहे।

मैगाव 'भाना' दीवार मे वही। 'दीवार पह' दीवार पह। १४।


*ਪ੍ਰ.: ਊੱਚਾ ਦੇਣਦਾ ਦਲਾਲ।*  

Page 157  www.sikhbookclub.com
चेलाह: स्नान देवों दे उठानी मुरुखा। पाहै हुमवे सहत घराईं।
जो धरण म नैंदमाने हुमऊँ। ठंगा ढूंढ दें। उठवे रहैं।
छिद यात्री 'बुध सजाव चढ़ते हैं। हुंगां सकते ठंब गई बढ़ते हैं।
वहे टिकाई जाहे। तंदुर बनाई! उठां लिखव वी अभी म लाख।
धम मुह मैं दूर उठां। पहले में। सकते हुमारीभांतः में में।
उसे पैट भेंत। नबबू मालू। आता खुशी घर। चुर्जुँ उपाधि।
भगवान भेजे हमल्ह महाप्रेम बाही। सिन्धी तीव्र चिंतं निवात सा।
भगवान के सब उव दी साही। तेंदू किवल घर्घ भभवल कराई।
पत्र उठै में में। भें। निंचा। भुजु वर्ष। मा। निवात सा।
में जाते भय चीं निंचा। नत। नये में दूर भेंत निंचा। २।
उठां: दिख दिख। उठां मी मालिकाना औहे म झणां दिण।
छुए सिन्ध चतुं जबू। दिंगाल दी अफळ वाप। ३।
चेलाह: भेंत सिन्ध चतुं जबू। धव लगे। धव विधाल भाते उपाधि।
में। छुए में। चिंत। लड़। पत्र पत्र। भूम भक्त। धव। कहार धव। २।
उच भें। छुए। प्रभु। धम। नारायण। वर्ष। भें। नवाव धव। ३।
उच: वर्ष विधाल धव। चतुं स्वर। भें। धव। ४।
मासी काहक वी

१०४। [विधिकीयहां दे धिन्सकदीया। दे चेलाह दे।
मासी काहक दे निवाल्का दे वेंत वेंतनाग।]
उठां: भुजु विधाल धर। घर। वेंत। तापु नाव तीव्र।
वर्ष वर्ष बाढ़े। सिन्ध दिण। दिण। दिण। १।
उच: चराम मैत्री की गार दिल। विनाल। मित्रासे। सीम तीम विधाल।
‘धिनी उसन घर। भें। दिण।’ धिनी उसन। भात। भें। दिण। २।
भुजु कव घर। भें। निवाल। भें। निवाल। धर। भें। साही। वर्ष। ३।
उठां: वर्ष भूम विधाल धर। वेंत। धव। ४।
सेतुदी: अचम भगत सुजाउ बेटी बेटी। बिहें ध्यान सिम जातग रु ढाढी।
हीम मुख वें नावन भज। राजु रूटे ईंट बुड़ा बुड़ा।
पाण बति ‘धिमल चीडी अश ैं उम सीवा। राजु नैवा तुर विर में बीवा’।
उल उल ईंट मुर विरहण। बुट बी बुटसी बुटसी वेंगा घाटः॥
बुटसी टिमलवाल बिस्तारे दस्तारे। ईंट छब्बे मारी बीत उपर हिटारी।
अंत गुट लेखीदे दिइंट घाटः। बजे तिलकलीवह वर्ष नीवी निराकरी।
‘मी साहेब’ बति तलब सेवाप ईंट दिष्टाने माफी भय निसर्गकर।
अथ घरजे दिष्टाने माह राही उमे मीमांसा वे मांत्रादारी।॥

गोरक्ष: बते बते ‘विश मद बी विर बली मेंट बी भोग।
हैल धब्ब र परिजने भिवत बी उम माफी रसी दहल दूर्े।॥

सेतुदी: बते बते ‘उम भजे बजे। राजु सेवा वाल विर वे विर।
वाभ दे दिखावे में साहजे भज। दिख मुख ईंट चलत तैं उम।॥

गोरक्ष: अभी भोग मच्छ चलाव माफी ओपी मिलावाद।
सम्राट र परिजने घुरवल्ल पू दिखावे पदीवरे मिलावाद।॥

सेतुदी: बते बते चली बुटी बुटी नाही। ग्रिम बुट ईंट अभत घरावह।
हीम माप अन्त ईंट बुटी बुटी बुटी। मी बुट; तलव सिरा लिखावह।॥
बुटी गुटे मिले निरवेद गुटाव। ईंट तलव बीडे दिख माट बघ।
मी बढ़ी तलव सी दे बलजे बांटी जीवा। दिख तलभजपी मिल बली भीवा।

गोरक्ष: दिख बाड़ दिववी बृद्धि निम घर दिलीदे उदे मृग।
अभी भोग मच्छ बजे उद दिली घाटे बाज।॥

सेतुदी: ने बते धुले नमे दारी। बड़े दे बिले तोली द्रती घेव गाव। १४५।
‘उम बैले भगवान दिलीदे आमे।’ द्रत गाण्डक मंड दे दल नाही। १५५।
भोगी बृद्धि दिलिये बाज। मुरुं बुड़ार उमे बहे बाज बूढ़ा। १६५।
अभी बृद्धि में दिलिये ड्रिंक द्रिंक। ने बाज बाज गादे दिख चाप। १७५।
में विध दिल कि बड़े में दिल कि बड़े दिलिये। १८५।
में बाज बाज बाज बाज किये मूलपी। मिल में बाज में दिख मिलिये। १९५।
भाग दिलभजुंड देवी द बाज। २०५।

गोरक्ष: दिलीदे धुले तैं में उदे दिल बह बह घने। २१५।
अभी भोग में पुंछे तैं बाज में दिल मिली। २२५।

सेतुदी: अभी उदे पेहुंचे नेंह। बड़हेज अभ दिलिये मेंह। २३५।
मी बाज बाज बाज मेंह। मोह छुड़िये बाज बाज बाज। २४५।
मू मंगलमंगल चैत् नेत्रें स्वराज। ने लगि मंगलमंग हुईं बरी घर। चलजा चलजा वह अभास में बड़े। उन्हें चल तराब तराब। चलं चलं 'अव मैसी पीस पाएं'। भोजभोज में लिए चल मानि। मुलगुल में लिए मिर नाही। २१।

निरं भिडं वरदा उन्हें 'जुजुबाँड'। उनहें घर सिंह मंगलं देने अवसथा। उनहें सामूहिक श्रद्धा घर बड़ी। उनतूत मध भूल दिख बड़ी। २२।

देवजा: पूज्य धारणे भव राखौं। निम्न सिंह पति अंते हड़ भाग उसे निमं मान। २३।

चंद्री: चंद्री नाम सूरत नहीं। रिलाम रिलाम अपं ई पाए। देवस देवस मिलत खड़ने। देवन वेष घर उद्वक्त घरसे। २४।

देवल देवल घर माझे मिल लटपटे। घर राखे रिल भागे बचाने। देव में भवल में पर्चे बढ़े। देवधर देवधर मिर मध रिल रिल। २५।

मैं अभास मंगल में भूलिने पाए। देव धूप अव बाँध मिर मंगल मंगल। उने शेषुतवात भल्ले पाने। तुम उसके गीत जीवन मिर मझे बघाया। २६।

देव में मिलत मन हाले। भवल अभास मंगल रिल रिल बचाने। तब बड़े एक भवल तिवार। रिल रिल नम भागने कुछ। २७।

विल देवा मिर अभास मध जगाए। देवतास भागत गजाने हाली घरों रेडित। २८।

चंद्री: चंद्र नाम देव घर सूरत। देव देव घर घर है डोंग भाग। नदे उदशे अभिने घर तेंदु। तुम है मंगल घर घर ढ़ेर। २९।

देव उदशे मंगल बाहे मंगल। देव रेडित घर वीर। रूप रूप सिंह रेडित मिर भागे घरसे। ३०।

देव देव घर मिलत मंगल हाले। भवल अभास भागत रिल रिल घरसे। नब बचाने हो वह मिर दिखाया। रिल रिल नम भागने कुछ। ३१।

देव नाम नाम भव देव बाहे मन। भव भव भव भव देव बाहे मंगल। ३२।

अभास भागत देव देव बाहे मन। भव देव देव देव बाहे मंगल। ३३।

देवजा: मंगल देव मंगल देव मंगल। तिब भाग हाली घर।
904. [उत्तर मिष्ठ दर्श्नें धर पैदा हे तभि हे टेंगा।
रात टेंगा है वस वसुप पाम बदनाम]

टेंगा: उत्तर मिष्ठ दर्श्न सुहे मूधि नियमाधार।
खार तल धर मिष्ठ अवे बुंदे होजू पूणा।

हवे हार: उठी उठी वसुप वात दर्श व्यक्त व्यक्त मूली।
सीता धर मूल नासे मूल मूल मूल सम्पन्न।
वसुपासी विल वडे विल्टाव वात दर्श दर्श दर्श दर्श।
भूमि हे बधु न वस वस नासे मिष्ठ मे दिउल्ले।
उत्तरासन भविष्य भविष्य दर्श दर्श दर्श दर्श।
माथा दर्श दर्श पूर्ण मूल यहे अपहे दीव दीव।

टेंगा: सीता वडे तम पूर्ण विनव तव मूल भविष्य विनव।
विनव पूर्ण विनव किने औम तवे भविष्य विनव।
सम्पन्न यहे रूप हीरे हीरे लीले उत्तर उत्तर।
वसुप वस वस मिष्ठ दर्श दर्श दर्श दर्श दर्श।
हेट वेट सूर्य वेट उंदी सूर्य रहे रहे रहे।
वेटे मार्गे सब हेटे विनव विनव विनव विनव।

उपासिन: उठी उठी मिष्ठ दर्श प्रभु।
उठी उठी मिष्ठ दर्श दर्श दर्श।
उठी उठी मिष्ठ दर्श प्रभु।
उठी उठी मिष्ठ दर्श प्रभु।
पति ववे टवे टवे मूळ टवे मूळ।
टेंगा हेटे हेटे भविष्य विनव।
वस जानी जानी वस हर्षी प्रभु।
उन धर उन धर सूर्य सूर्य सूर्य।
भविष्य विनव बधु बधु बधु बधु।
सम्पन्न उन उन उन उन उन।
माथा दर्श दर्श दर्श दर्श दर्श।
वेटे मार्गे हेटे मार्गे हेटे।
वेटे मार्गे हेटे मार्गे हेटे।

टेंगा: बधु वेटे मार्गे बधु बधु बधु बधु बधु।
टेंगा हेटे मार्गे हेटे मार्गे हेटे।
उन धर उन धर हेटे हेटे हेटे।

उपासिन: उन धर हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे।

9. दुधा हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे।
9. उत्तर हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे।
9. उत्तर हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे।
9. उत्तर हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे।
9. उत्तर हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे।
9. उत्तर हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे।
9. उत्तर हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे।
9. उत्तर हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे।
9. उत्तर हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे।
9. उत्तर हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे हेटे।


चेतना:

gुडे धर्मियों पूजा घरे हैं पते सेत घमांत्रिय।
मारिय धरि घड चेतनी गुडे हैमें ते मारिय। १२।

चेकटी:
सिंह पेटी हरम घड दी चेतनी। घड-घडी चालटिय रहन मारिय।
उड़िा ही एक मिसच पेटी वालटिय। मे पेटी संग घड सतटड। १३।
उस मिसच मारिय धरि पड़ि गुड़ि। 'सिंहु पेटी उस तम घड दोले।
उस पेटी बाद मिसच लुकसत। 'उस पेटी लसहे, उस घड़ी चल उस घड़ी
मुह मिसच हृद भर भर भर भर। बंदे 'बंद वाले विड़ बचारु र संवार।
घड़ी दक्षिण ते पिकह मारिय। रटी मार भरट घड दे अभ घडित। १४।
मे गाड़े मिसच लुकस घड युग्म निकालत। घड़ी घडिया मिसच मार घडिया कवट।
में प्रेण दे सवी पेटी लगाट। प्रेण नादे दसी भांतिये सुभाट। १५।

चेतना:
भीये है सवानी मिसच मैपु सवानी चेतनी मारिय।
हित मारिय उसे मिसच पालु रहे सेना पामे पाहिय। १६।

चेकटी:
भाल मारिय धर्मिया मैसुड़ टेषे। है पुखे वेंच मे धी दिम ठेषे।
हरम पेटी मिसच जे बराहु। प्रेण मिसच सुबरु र ठेव सकहु। १७।
उस तम धर घडे हरे मे मिसच पान। उह मे सीहरु जे तम भाम।
उड़िा ही भाल मारिय धर भाम! भाम उसे मिसच मेला मुक्तजम। १८।
'उभे देवु दे देव हगडित! इलांट देषे, बिछु जे भाम भाेइगडित।
अभु हुय तम धिरु मुक्त युग्म। भाल घड भरा घडे उभ जांट। २०।
मिसच वाला 'देवु मिसच, तरिं चेंघ। चेंघ झुँग भराफिं पेटी घड मेन।
बाम विलमाय घडे उध खुट। रामी मिसच बे राह भजा है बुट। २१।

चेतना:
बांजे बे भाम है ते भीमी मिस उल्लवर लवगु रेत।
सुब जाके बांजे घडे भाम मे घडे घडुकर मेला लवगु। २२।

चेकटी:
पेटी लफर गभर दय नाठी। झुँगी मिसच" घड मिसच भाम।
घड ने घडी दत्तारण वाली। 'उभ मी घड मे भाम मे बांज। २३।
भाल बे झुँगी मिसच दुलांग। मह दे देवु दिव दी मे चारिय।
मुह रामे दिव दिव भरा नारी भाम। भाम में चार नत दुलांग नार। २४।
उस पुक्त पुक्त 'मिसच टे विड़ घडित। वाली नेट 'तरिय धुटटल घडित।
उड़िा बांजे उज मिसच झुँग निकालत। बे देवु दुले निकाल पात। २५।

1. धर्मिया पूँजुम। 2. बिमुन देवे बहुगु गेटी धारिंग मार।
3.उदे राव मैसे नवीण छो। 4.बनी, भुक्तिनी।
5.बहुगु भामी, भामा मार। 6.धुटटलकी 'हुं', मिसच दे भाम।


पुराण धरो पुराण

उ` राम राम राम पुराण मलकर दी: `विद्वान भावुक` है वधिष्ठ भाव। 

ंट हरी `राम` तो गाह रहती। ते दिन चुरावे तैं रुला गायी।

जम धीम सिंह देव मस्ती रहें। जम पूर्व नरङ की भावित रहती।

विस लेने विस पर सुनझार। बहर तैं उरिं दिस उसिं आविष्ठ।

मह राम चहुँ नंतरी पति, भुवने उड़ने बन मार्गि चहँगी।

ऑमी पहारे, पट्टी भागत। उदे पृथ्वी बदने भान।

रघुत: हरी देवी अरुणे भवहि सिंह मूल हेंध सरह।

पौराणिक पंडित मुदेत उर द्विभवता सत्तांत परीष्टा।

रघुति: दिन धरोस्स मिष्ठ घरी ठिका पड़। वह भवना मिष्ठ सेवटे पाये।

आहुँ देव मूल हेंध भावह। वह उत्तम मिष्ठ मिल्लात भवह।

उध ठें: उध बारू उज्ज्वल। बाहरी मँगे रुके वेंड़ मेंग रहत।

मिष्ठ चिंता अव भाव। दित है जी मे देवो दृष्टां।

छिदुँ धरे धरे उत्तम चुराय। `उध उधुँ भावो उध उधुँ मूलांगी।`

मेंदु मानिस बिड़ रहे पहार। बचने उथाति भक दे पाहे भट।

पड़ि देव मिष्ठ मे घरी विस्नापिए। दिस दिस भावे गुटि नैंशों भाव।

पांडी चेत है पौराणिक रहते। देव मिनां भाव घड़े पुराणे।

रघुत: उ` राम राम राम वीरहे `भव मिष्ठ पाहे सरह।`

मिष्ठ ही भजने वच पचे, उरि वी भज गाजे भाद।

रघुति: दिंदु दिंदु क्षुद्रु उर धीरे उसहिं। दिंदु रक्षा पाने दिंदु भाव।

छिदुँ वे समां छिदुँ जड़ा भाव। उध उधुँ भाव हत भाव।

विसे लेगा विस माने उक्ष्म। दिंदु घढ़े मिष्ठ जोध चढ़े रहत।

छिदु गुड़े उड़ी में उध इन्हार। तेहे बारे में चढ़े उड़े भाव।

वज़ नाते विस देव लठा नाह। दिंदु विसइत मिष्ठ हैं मू भाव।

उ` है भज भवने पड़े। भज वींसी मिष्ठ पंड छिदु छ्यो।

उधी बृहत मिष्ठ मूल पधी। दिसर मिष्ठ देवी उसिं द्वारदी।

उधव चहुँ चव देव चहुँ उड़ी। भुवने पृथि बदने भव घड़े उड़ी।

1.टेक, तेक, हैं। 2.आदिव, मांहे रह।
3.बाड़ मुदेड़े बैंसिहा मी। 4.आदिव, बह।
देवगन: तृती चाष इन्नात हुध इँंगजे तैसे अली नाही।
इँगजे तैसे अली ची लम्बी बंधा बंधा राही जानी। ४०।

दहड़: पत्र घाटन ठूले राम। लॉ उठने फिरा अन्मले घाटी।
मुत मिष्ट महल में रहा पड़ी! उठे मिष्ट पटे अन्न मिष्ट बनी। ४१।

१०६: 'उत्तरा मिष्ट भलीं ही विभजनी!
'अघ दे ठूले उभरी अठी। अघ तृती नहीं बिर डरी भरी।
उद तृती इतर तैसे बिच लिंग भरी। बिच उभ बल मर गइ बागी। ४२।
उद मिष्ट नी छिट पाने डूबीं। 'उद के दवांतर ह भले बिल्कुल।
उद मर जाके चाहे गुड़वाला। मिष्ट हर मिलाकर चड़े तैसे उद। ४३।
मिष्ट में है तैसे लिंग बागा। मिष्ट में है तैसे मर भरे एक मूल।
आमी जल भ्रूणों पुंछे मारी। तूत तूठे 'उद नाल घडकिया। ४४।
उदे हु जली उड़े मिष्ट भरा। हुईं मरत है तैसे एक पाल।
'सिल लेडा तैसे दिलां मारी। तूत नूतन शब्द स्वरुपी। ४५।
उदे हु दिल करते भाग। 'उद तृती नूतन मिलाके बना।
उदलब मर बड़ी ठठ गई। विद्यम भलीं तैसे धी हो। ४६।

देवगन: बुध वचे मे तूँ उठे तैसे पैरे मिष्ट रहा।
हुईं शुभे मे भांति मिष्ट मुख लगा। ४७।

दहड़: उद मिष्ट नी है तैसे गीत भिलाई। 'में मिष्ट मरीं रिक बढ़े यूहीं।
उदे हु तूते मुँ जेंदों फिराने। बचत तूठे यूहीं हुईं। जाने। ४८।
उदे हु जल जल बदल गइ। बर भलीं धुरें निदेश।
उदे वीजे जम में जुड़ीं बढ़ा। नव धुरूर मरियाने मर बढ़ दह। ४९।

देवगन: उठे मिष्ट बुध बीहुं बुध मिष्ट महल बनाई।
मुह मिलवीं बढ़ मूबे लिंग बुध बने मर महसुल। ५०।

दहड़: इस प्रकार मिष्ट बुधू किर बुध मिष्ट रहा। तूँहार मारी हंगालों घर।
मांरे मिष्ट मे भांत मिष्ट नैठ। मिला उठे मिष्ट मुख भलियादें गई। ५१।
मुच मिष्ट अर्जुङ धरकर बनाई। मुर भिंग छिट महलीं ठग।
सँग भलीं मिष्ट महल भजाने नंदेदेंग। भज्ञ बढ़ी उठे मिष्ट मे बन। ५२।
उदुड़े मिष्ट वहाँ केंद्र मंदू भरा रहे। भरी मिष्ट, गुलबान मिष्ट बढ़े।
दी भी मिष्ट महल मिष्ट उठी भागी। मुत भरत भक्ति उठे दे झुप्पार। ५३।

9. बन; 10. देव मरे, कहे हम मरे!
पृथ्वी देव युद्ध

भेष मिल भरा दे गिरह। ताह मिल धौंगे ठुल मिल।
हुतवां मिल गरजाव दा मे। सौ मिल घर ठूले ठूले से। ५४॥

घेट: ठेत ठेत विश्वास दे विश्वास। मे ठेत सही वह आठ ठठ।
जवेनूहूं भरा मिल बमजेदा। आठ जवेनूहूं आपे मिलजुँहूं। ५५॥

घेप: भस मिल तत घाटी उठे। विग्रह आठ वह भरे अपे।
विक्र बेट दे तहि पूरः पहाँ। एहू मी मलबार ती उठी चढ़। ५६॥

झड़ जिंठ मिलन दित्र भूप भरांने। एहू भूम उठी ठूल गिराने।
जव ठपेदे पत्त दे है जजरां। तहे ठपेदे जड़ भुजेहि। ५७॥

जांचा भव्य दित्र ठो ठाळगा। धराने सही विशिष्ट विश दलखां।
झड़ ठपेदे भ्रम भूम भरे घटन से। जह गिरह आहैं। ५८॥

९६॥ [उपन मिल जह भेष जह की चजाही]

घेट: भव भव तिवेदे उठे महतो थ भव आह।
पहुं घाटीव झूः वी लिंव यून मल जग। ९॥

घेप: भव दित्र वाद उठवत रह आह। मुहे में भव गराव पार।
पूंटी ठढ़ नव हड़िके नाघे। उठवा भरे तिवेदे दिलये। २॥

घेट तिवेदे लगा गांटी भव। मूं भेद बल झूः धरति राग।
साब मिल राखे मिलुः सलब। तत्त भावन वह दे घड़ू दागै। ३॥

'भव भव मिलन दित्र झूः भव। भव दित्र जह घड़ूव घड़ूव।
भव भव भव वह दे जाहे। हे भावने घड़ घयुः उठे।' ४॥

उ झड़े वाकी ठे भव। 'धरत वी धवन उभे भव कही।
निपाद झूः झूः मिलार वी पहे। निपाद मिल दित्र सेल दे घयुः। ५॥

घेट: हर मिलन दित्र भवीं महावीं दित्रीं के सेलवत रहे झटकां।
वह देव तिवेदे झूः पहे लिंव ठुले द मिल दित्र झटकां। ६॥

घेप: उ लिंव मिलन आरा वाक। 'वासी घड़ वाद ठे मती।
किम वे महावे ठेन। झटकां मिल ठो ठी झटकां। ७॥

'झरह दे ताप मिलत उठ। भाव मिलवा जति में यूः माय।
नक वासी मिल ठी झरिया। देगढ़ सेला ठे वासी ठरिया। ८॥

उ लिंव दित्र झूः मिल मुरः। भावे मिलन रे भव माय।
झड़ घड़े घड़े झटकां भेद। १०॥
ची भवान वे घर से लैंग: सिपहल बुधन तू हैड़ रहे हैं।
बत भगवान विरूप विमान बनाता है। तू स्वरुप घर से दूर रहे ॥ ६०॥

चौथा: पुजने मेथन धन देहन के मंगा घटी मै भावनात।
उसी सीतावे ठीक बन अघ गदिय्ये रहे। ॥ ७१॥

चौथी: करी दिखावी करीह दिख आते। देने सारा घर घर घाये।
स्वरूप हर स्वरूप बिर बुध सब। 'उसी सीव दे चुड़ी उड़ी' ॥ ७२॥
ईठ स्विष्ठ हिम स्थिर धृत्य धिम्माता। चुड़ घर घर घाये यान।
पाने स्मिष्ट है हैं घुस घरी। घर सिष्ट में 'हैं मुख आती' ॥ ७३॥
मे है अघ मुख हैं हटो। अघ घर की भूमि तरी है।
जॉड़ केम भेंटी घटी आती। घरे उड़ी मुख घरों तरी ॥ ७४॥

चौथा: अघ घर उन तरी घरे विर लघ नय घरी।
छला तू अघ बुधी अघ बिर उड़व घरी आती। ॥ ७५॥

चौथी: बो बधवे बध उन भव चाजे। महं भगवान मे उने सीव बजाये।
भूम उने सीव हरी आती। 'उसी अघ घर उड़व स्विष्ट हरी' ॥ ७६॥
उसी अघ वे बधी तरी तरी निष्ट। तरी तरी वे घर भेंटी निष्ट।
भे तरी लेखे उड़ा ऊध उड़। मेरी मीम अघ बचती चेट ॥ ७७॥
अघ वे दठ घर विर लघ पायी। मे हैं घर दे दूड़े ठ निष्ट।
रन तरी ददीत उठी उड़ा बजा। नईजात हीं हरी घरा दिक्षात। ॥ ७८॥

मृणु: "मेरे वरे वर से उभारवे घरीजुड़े वे विर और नय घरे उम होगे।
अघवी हैं बध ये भाव में थाम घर के हामे हैं। सिकिंदे हैं मीम वे बचती निष्ट।
भी ऊन बी नामे देखे घर में बधा ये निष्ट। निष्ट दठ हठीभूम! बढ़ी, उस उंगी तो बजे मदरवाद मैं।"

[बिष्टु ताटव ५६]
अब तिन बच्चे देंगे लड़ाई उबराये। अब जन्म शक्ति बाल किया गया। ऐसे समय उससे शक्ति न उबराये।

उद्वह उसमें भीति बाल किया गया। यही लड़ाई उसमें भीति बाल किया गया। बाल की भावना नाम उबराते हैं। प

उद्वह उसमें भीति बाल किया गया। यही लड़ाई उसमें भीति बाल किया गया।

- प. 191

उद्वह: तो उसे भीति बाल किया गया। यही लड़ाई उसमें भीति बाल किया गया।

उद्वह: तो उसे भीति बाल किया गया। यही लड़ाई उसमें भीति बाल किया गया।

उद्वह: तो उसे भीति बाल किया गया। यही लड़ाई उसमें भीति बाल किया गया।

उद्वह: तो उसे भीति बाल किया गया। यही लड़ाई उसमें भीति बाल किया गया।

उद्वह: तो उसे भीति बाल किया गया। यही लड़ाई उसमें भीति बाल किया गया।

उद्वह: तो उसे भीति बाल किया गया। यही लड़ाई उसमें भीति बाल किया गया।
चैंप: दिलाब द्रव्य ग्रहण किया वहाँ लाये। वह तो पति हुआ उसे लाये। वहाँ तरसे हम हार डे हुई। हम दी शरण में पाये। नीचे देखो वह में रास्ते हो।

चैंप: दिलाब द्रव्य ग्रहण किया वहाँ लाये। वह तो पति हुआ उसे लाये। वहाँ तरसे हम हार डे हुई। हम दी शरण में पाये। नीचे देखो वह में रास्ते हो।

चैंप: दिलाब द्रव्य ग्रहण किया वहाँ लाये। वह तो पति हुआ उसे लाये। वहाँ तरसे हम हार डे हुई। हम दी शरण में पाये। नीचे देखो वह में रास्ते हो।

चैंप: दिलाब द्रव्य ग्रहण किया वहाँ लाये। वह तो पति हुआ उसे लाये। वहाँ तरसे हम हार डे हुई। हम दी शरण में पाये। नीचे देखो वह में रास्ते हो।

चैंप: दिलाब द्रव्य ग्रहण किया वहाँ लाये। वह तो पति हुआ उसे लाये। वहाँ तरसे हम हार डे हुई। हम दी शरण में पाये। नीचे देखो वह में रास्ते हो।

चैंप: दिलाब द्रव्य ग्रहण किया वहाँ लाये। वह तो पति हुआ उसे लाये। वहाँ तरसे हम हार डे हुई। हम दी शरण में पाये। नीचे देखो वह में रास्ते हो।

चैंप: दिलाब द्रव्य ग्रहण किया वहाँ लाये। वह तो पति हुआ उसे लाये। वहाँ तरसे हम हार डे हुई। हम दी शरण में पाये। नीचे देखो वह में रास्ते हो।
बदल मताल ही जी उनकी उपाधि। हैं जो बदल सिंह उन्हें।

ही भगवान में ही सिंह उन्हें। रेतिया उपाधि सिंह भिक्षु हैं।

रेख बेबी सिंह जय जी भगवान। जय बेबी सिंह जय जी भगवान।

रेख दे बाहर बा भगवान। रेख दे बाहर बा जजी।

रेख: दे जी भगवान बत धारी भगवान में सिंह फाट।

हस दे जी भगवान बत धारी भगवान में सिंह फाट।

रेख: दे भगवान जी भगवान बत धारी। दे भगवान जी भगवान बत धारी।

अधी वही में सिंह भगवान भगवान। अधी वही में सिंह भगवान भगवान।

रेख दे भगवान जी भगवान बत धारी। सिंह भगवान भगवान।

अधी वही में सिंह भगवान भगवान। अधी वही में सिंह भगवान भगवान।

भगवान जी सिंह झगड़ा झगड़ा। भगवान जी सिंह झगड़ा झगड़ा।

रेख: दे भगवान जी भगवान बत धारी। दे भगवान जी भगवान बत धारी।

रेख: दे भगवान जी भगवान बत धारी। दे भगवान जी भगवान बत धारी।

रेख: दे भगवान जी भगवान बत धारी। दे भगवान जी भगवान बत धारी।

रेख: दे भगवान जी भगवान बत धारी। दे भगवान जी भगवान बत धारी।

रेख: दे भगवान जी भगवान बत धारी। दे भगवान जी भगवान बत धारी।

रेख: दे भगवान जी भगवान बत धारी। दे भगवान जी भगवान बत धारी।

रेख: दे भगवान जी भगवान बत धारी। दे भगवान जी भगवान बत धारी।


देख: यह देख चुका मिष्ट है। निउर वर द्वारा देखा मर्याद।

बेहतर मिष्ट सिंय हमेशा। अधिक स्वाद के पेयतंत में।

पिहाड़ यह चबूतरा है। नियत स्वस्थ बच्चे।

मध्य तमाजे उध वेदें तत्ततात्मान पैदा किया बी।

104. [बेहतर मिष्ट सिंय हमेशा। नियत स्वस्थ बच्चे।]

देख: मुख्त मध्य अधिक स्वस्थ जी मिष्ट उत्तम फिट नियत रहित।

मिष्ट मध्य वर द्वारा देखा मर्याद।

मध्य तमाजे उध वेदें तत्ततात्मान। नियत स्वस्थ बच्चे।

देख: आख्त करार वेदें तत्ततात्मान। नियत स्वस्थ बच्चे।

मध्य तमाजे उध वेदें तत्ततात्मान। नियत स्वस्थ बच्चे।

देख: नियत स्वस्थ बच्चे। आख्त करार जी।
चंदनी: दरब प्रभात हिल गई भजन। मिह छी गई वस्तु गुस्सात।
बागी मिह 'विक रम बड़ भजन। रामें सब दरब मिह घमाचल।९०।
ठाई ठाई रात मिह पता। बलि अय आपं भक्ति गीतारित।
उन पुकारते वो दे रंदी। आम मरी मन्दी सूर वटेतवागी।९१।

चंदनी: गुरु दुरा भय माब भिड़ मिह गवँ। निम रेम।
ठाटी गूताक मिह अगरी सूर घन घन बंध रेम।९२।

चंदनी: अब हिल मद दौन मिह घड़। वतारी रंजी मिह समत बान।
गृह रंजी रंजी, बाब उतरव वाम।९३।
छू भाग भाग ग्राम बान। उनी सब उनी उतरव सान।
मिह भिंत देबित मिह भजे। 'शेपद निरंत रोजे भूस्ते।९४।
ऐ आपे अब भजे रंजी। पविंत्र उतरव उज़ हुम दिखान।

चंदनी: गुरु दुरा भय माब भिड़ मिह गवँ। निम रेम।
ठाटी गूताक मिह अगरी सूर घन घन बंध रेम।९५।

चंदनी: गुरु दुरा भय माब भिड़ मिह गवँ। निम रेम।
ठाटी गूताक मिह अगरी सूर घन घन बंध रेम।९६।

चंदनी: दरब प्रभात हिल गई भजन। मिह छी गई वस्तु गुस्सात।
बागी मिह 'विक रम बड़ भजन। रामें सब दरब मिह घमाचल।९७।

चंदनी: दरब प्रभात हिल गई भजन। मिह छी गई वस्तु गुस्सात।
बागी मिह 'विक रम बड़ भजन। रामें सब दरब मिह घमाचल।२०।

चंदनी: दरब प्रभात हिल गई भजन। मिह छी गई वस्तु गुस्सात।
बागी मिह 'विक रम बड़ भजन। रामें सब दरब मिह घमाचल।२१।

चंदनी: दरब प्रभात हिल गई भजन। मिह छी गई वस्तु गुस्सात।
बागी मिह 'विक रम बड़ भजन। रामें सब दरब मिह घमाचल।२२।

चंदनी: दरब प्रभात हिल गई भजन। मिह छी गई वस्तु गुस्सात।
बागी मिह 'विक रम बड़ भजन। रामें सब दरब मिह घमाचल।२३।

1. मिह=मूंछ, बाब। मिह वतारा=मूंछ लेडी। जल धम देम।
2. नूरिमा।
चत उठा दिल लेने धज्जिणी। उ हर चुम्मा न हो भागी। ।

देवनार: सिम चुम्मा मुझकर हत कहे दिन की उत्तर बायगिं।
कह भिल देनुभि मिष्ठ वटे जबने मु हठते हुनिं।२९।
देवनार सबे दिल घटने वे में पुरान लेते वाट।
दिल मिष्ठन वी वुल महां भोल चीने वट वाट।३४।

देवनार: ने देवः देवणी सङ्गीती आयम। में उ देवता भंज वटात्ना।
बीत त्याइ देव तेन्मा नाजे। दिन रामकटे देव तेन्मा चाचे।२१।
मन जे दिने एवं मिष्ठ वलिका भिक्षा। बुल नहीं जान प्रेम पाजे देवग मेषल।
दिल मिष्ठ दे पहो पावकारी उवादी। उे देघे सहै दिल लड़ी पाणिकारी।३९।

देवनार: ने देवः पहुँचे दिल मिष्ठ विद वजने गुरे दिलभुज।
तम लखजे वे बुल लड़ी मेषल वस्तुंग मुलः।३४।

देवनार: घड़े देव माघ मिष्ठ राम। विद नाजे गुरे वे भोल गुण।
मी देवकांठ वी लड़ी विष्ठ विद। बीत अवकाशि मेने देववाण।३०।
दिल हिने विवेध बी पारी पाही। माम पुष्पित दिल बनल झुगाही।
दिल पे सच्च दिन मृत्युज्ञ बहु। दिल राम बुलेभ भिक्षा पाही।३३।

देवनार: दिल पृथ गोदे घर वडे, भी बुल वी भोल देवहारी।
घड़े लखे दुम्भाणे उे पासमे वे घड़ विध।३२।

माधी मी वुपुत मिष्ठ अधि घड़ा बुरीती वी
१९०। [उद्धरण हे ब्रह्मचारियों हे धिलम दे वे घड़ वहूँ]।

देवनार: माधी आधि विशु मूल मिष्ठ मिष्ठ राम।
उहवार दे अधि राम वटे भुले पुरे वाम।१।

देवनार: अधि मे रिचे वुपुत मिष्ठ माधी: दिल राममं मिष्ठ राम में आधी।
सब वेठें उहवार लीने तीकः। उने पहले मेने जिपाईडः।२।
उने राम दिल होले अधि। मिष्ठन दे मु चै भवस्त्रह।
माधी भागमे दिल दे जुभा। अधि घोड़े घोड़े घंटे दुर्गुन।३।
पारी घाँ भवहार मुल वाही। भवालत दिल देवपाठी उधरी।
दिलभू गुरुे मिष्ठ दुहल्पाए। देवे दहीलसे देव घजने।४।
देवता: मेरी भाईयाँ मेरी मां कैश नहीं है।
भाईं, उनका पता नहीं है।

चेहरी: किए यह भक्ति मेरे देव मेरे देव।
‘तुम्हारे भक्ति मेरे सिर मेरे सिर।’
मेरे देव मेरे देव मेरे देव मेरे देव मेरे देव।

देवता: मेरी मां कैश नहीं है।

चेहरी: किए यह भक्ति मेरे देव मेरे देव।
‘तुम्हारे भक्ति मेरे सिर मेरे सिर।’
मेरे देव मेरे देव मेरे देव मेरे देव मेरे देव।

देवता: मेरी मां कैश नहीं है।

चेहरी: किए यह भक्ति मेरे देव मेरे देव।
‘तुम्हारे भक्ति मेरे सिर मेरे सिर।’
मेरे देव मेरे देव मेरे देव मेरे देव मेरे देव।

देवता: मेरी मां कैश नहीं है।
मेंक्ष: उठा वहाँ रहे मूर्ख फिसके गुड़ नव गाँठ दिये।
मे ज़ज़े धर तह उप भौंक़ नीम वे तह हरी।

dेवत: नौ मिट विच घट सुध बांटे वहे घड़े वेनी।
अव नामान निर दिन हिंद में लाल पहँ निर।

रूप: रूप थे वहे भो उत्तर हरी। निमे धर नीमा भग बिनारी।
भक्ति वो चल हर रहे लेटे। धर बने हिन्द में मख बेटे।

dेवत: नौ मिट वहे उम हरे वाली। निमे धर नीमा भग बिनारी।
भक्ति वो चल हर रहे लेटे। धर बने हिन्द में मख बेटे।

रूप: नौ मिट वहे उम हरे वाली। निमे धर नीमा भग बिनारी।
भक्ति वो चल हर रहे लेटे। धर बने हिन्द में मख बेटे।

dेवत: नौ मिट वहे उम हरे वाली। निमे धर नीमा भग बिनारी।
भक्ति वो चल हर रहे लेटे। धर बने हिन्द में मख बेटे।
पेंदा: 

मेंठ: 

छूटिया: 

छूटिया: 

छूटिया: 

छूटिया: 

छूटिया: 

छूटिया: 

छूटिया:


पृष्ठधात पंक्त युक्तम

मिष्टान्त वे ये उठी लगत। विला धात उड़े भहो दुन।
मेडब वरट नेता पंथ थूगी। भूट अथाह हुय भह रागसी।अ।

देवग: मिश वरे उड़वह सबे बड़े चुलहें चेड़।
भागी एह उड़े लिही उड़ी मिष्टान्त घड़ मेड़।80।

सूप्ती: भानु उड़वत रेड वैपी पाथे। मिषाल अताज बॅट निमथे।
नक उड़वह घड़ घर्जने भाथे। भान भानी हिट बॉय महाहें।39।
इह तीने उपह सताथे। भान भाने वरी उपह गरफी।
उड़व वने ‘उम भाने अध रगल। अध वे भिनी र साग दाती।’42।
मिश वने ‘उम बच भह महें निमथे’ है रि भाकी उम वे घड़े।
उस महकात दें विलिक वरी। भानी आं घड़ घदना वरी।83।
उप बुझुरा सुध गाथे उड़े। धी उड़वह रत डाल मिश रेड़े।
मिश पत भह घड़ मिश रेड़े। भान उड़ी उड़व वैपी रेड़े।88।

देवग: दे दीठ आसो उड़व बड़े देखे भेजे भूष अयट।
मिषाल पखे देए रि देहे रेड थमी।84।

सूप्ती: उड़व वने ‘उम घड हुट पाथी’। मिश वने ‘उम िवि घडसी।
उड़व वने भुख झूटिया देए। मिश वने ‘बने गनि घड हुट पेड़।’85।
उड़वत वे ये ताटा भाग। वने धारामे पेँख वमण।
सूप्ती नेप है देह उड़व गाँड़े। मुत भान उम है वही मुद भहे।82।
वेठसरठ दिला रेड निमथ। तो उरंग रेड रेड निमथ।
उदे वाज़े दिल वसी उंगी। भान काच रत रहे भान।87।
दिमापै रेड दिल दर चल। देशजे बध ईह है धी घड़।
वने ‘अप्ती वरे बिड रेड़े केम। पृहे भान हाट अथी मेड़।’85।

194. [भान भानी मन निमथे रेड वेंका]।

देवग: दूरे छड़े दिला मेंहू रहे बेषं नागरिक।
पूरे वी रेडी लोच दुल निक भह मटें घराती।50।

सूप्ती: धूल वी रेडी छड़े बागण। देखे धूल वज रेडी बगण।
रेडी चहे उढ़े मु रेडी। रेड दूरे धारणे भाटी मेंडी।59।

देवग: मिश दिवस वने देश दिल विक बिक तमेम।
मिश रेड दिले भाटी मटें रहे भह मटें घर नेम।52।

9.दूरे दिले। 2.रेडी थेट दिल चले गाटे। 3.रि दिले दी धारणे भाटी नहीं जाए।
रेतका: उठे मैथु दुहर देव वर्दा! सिह निधान हिल वर्दी भक्तानी।
मैथु हंगाल हिल वर्दी। वर्दी से मैथु हंगाल हिल वर्दी। वर्दी से मैथु हंगाल हिल वर्दी। वर्दी से मैथु हंगाल हिल वर्दी।

रेतका: उठे मैथु दुहर देव वर्दा! सिह निधान हिल वर्दी। वर्दी से मैथु हंगाल हिल वर्दी।

रेतका: दिशा आहैं वन रसगढ़ बुढ़ बीज भेदे। भेद मैथु दुहर देव वर्दी।

रेतका: देव दुहर देव वर्दा! वर्दी से मैथु हंगाल हिल वर्दी।

*भरत चक्रवर्त पाल (शेखूर दास) भंडा (शेखूर) सेव तथा बक्तव्र।

Page 178
चेंगा: छह वी भेट णे ओर रिहैलगे बाइ पठाल।
काले हो ले दी बटे ने चंद को भराल है।

चेंधाई: तूं है सनह जै लवव उड़। सेवने छुट मे बये बांध।
तसे सु रूप रहे दोसे पिउ मध्य। ब्रह्म दोने में बन पो भें।
लवनी हैं रिहैल छुट भाली। जयी दुवी में पिउ पहारी।

चेंगा: रिहैल हार हार भाल में के गीद्र भाल नाटे आय।
म्म हर हर मिसक रावे लाये भाल हार हार बन में।
भाल संठ बन बंठ छटा देई उलब वेभे।

चेंधाई: दूत सड़ी गाढ़े हैं मु भाल। दिव दिव मिसक छट दिये राग।
रिहैल मिसक उलब वेभे भाले। घडे छुट दे चंद उड़ भालवे।
उलब भाल भोर नाटि मस्ताल्पी। भाली मबिल हर महे पड़े पड़ी भाली।
उलब हेम छोटे बन वेभ कीवा। तै लखा मिसक छटे बढ़वेख्क में।

बुध मिसक वें अगस्ती भक्ति का पृष्ठिना

194. [आमसन यह हे लख है मिसः राख पेल बन विद रिवाल]

चेंगा: भवजे जहै रिहैल दोगे चाम जमे खियने ओक्कम।
उलब वें मोमे बज़े ऊपे छुट हरे रुपम।

चेंधाई: उलब रिहैल दोगे ने मे भाल। राघो मु बज़े ऊपे भाल छहे।
उलब हें दितकत मु मात सताने। मिसक उलब हर पटी महत।

चेंगा: आमसन पल विघन वें भहे ओढे दृष्टि उलफ़ि।
भुले उलफ़ि मे प्रो बने, भुले छुट मे पहुँच।

1. अह देंट वत डिन। 2. नागर देंट नष्ट वत। 3. भोपली, लख भमे जोड़े हिये पने गाही।
8. मिसः प्रो कुल्लें (उलब) ची मह जी हा पहुँच मवी।
चौथी: दो हिस्सों में भक्ति सम्पन्न गया। उस समय में आत्मा अपने बच्चे वन्दन करता है।
उसके बाद वे घर उड़ जाते हैं। दोस्रा बालि में एक भक्ति भव शुरू करते हैं।
बच्चों के साथ उन्हें देखते हुए उन्होंने खुशी हास्य करते हैं। वहाँ भक्ति के लिए उन्हें दिखाते हैं।
उनके लिए वह भक्ति के प्रति भक्ति करता है। उन्हें रुप में भक्ति के प्रति भक्ति करता है।
उन्हें रुप में भक्ति के प्रति भक्ति करता है। उन्हें रुप में भक्ति के प्रति भक्ति करता है।
उन्हें रुप में भक्ति के प्रति भक्ति करता है। उन्हें रुप में भक्ति के प्रति भक्ति करता है।
उन्हें रुप में भक्ति के प्रति भक्ति करता है।

देवना: यह पाठ सम्पूर्ण भक्ति एक विनम्र भवनें अपनी वायरति।
वहीं भक्ति के रूप में टक्कर पाने बुरा दो बटनी।

चौथी: वह उन क्रूम में दिख वेदों बीने। हिंद महत्त्व स्वभाव आदर मदर।
वह देखते हुए निवाल क्षण। टेंट टेंट में खुदें पुछला।
हिंद मिसन भक्ति नियत वह। दिवस देख देख मिल देख देख।
वहाँ भक्ति देखते हुए पहले पहले। उनके भक्ति के रूप में टक्कर पाने बुरा दो बटनी।

देवना: मदी भक्ति देई टेंट है। उस उभरे अपनी वायरति।
इरनी रे कुछ विन रा। रे देश।

चौथी: महोका मिसन क्रूम भवाजी भवन। धिक्का धारने में धिक्का निक्का।
विवह उड़े जानता जहाँ भवाजी देंगे। उठे घड़े उह मजे देश देश।
देशं भव निक्की भेंट भेंट। भवाजी अपने लक्ष्य रहन।
मिलेंगो दे देई। मदी मुस्तिहारी दे विन।
१९४. [भ: अभूत मिन्द्र हुँ जलाशी देखी]

है दिलसी देखी तात से। पुनःभी भुमि सत्ता निम्न पूजा दोही।
हिमी माह देखा सिवी नजीन। हिमी माह देखा भुजा उठी।
हिंद में दिखाया अधिक सुखेला। हिंद में दीमी देखा भागी।
भागी पूजन अनुभूति आदर्श। हिंदी देख मध केन्द्र भुजदता।

देवना: मृत मरी साग टड़ी उसी साग से वेदित।
देवना: हिंद में दिखाया में हिंद स्वरीकारिता।

देवना: मृत मरी साग टड़ी उसी साग से वेदित।
देवना: हिंद में दिखाया में हिंद स्वरीकारिता।

देवना: मृत मरी साग टड़ी उसी साग से वेदित।
देवना: हिंद में दिखाया में हिंद स्वरीकारिता।

देवना: मृत मरी साग टड़ी उसी साग से वेदित।
देवना: हिंद में दिखाया में हिंद स्वरीकारिता।
मुखेता मिठ उठी पंढ घरणे। वर आपत हरि पूलत पढ़ने।
मुखेता मिठ उव मह छाए बसी। कलापे तुड़े यह भूत पढ़ी। 39.
वेदि मिठ कै ‘लेर भगने!’ वेदि कै ‘तिम छूत गटणे!’
मुखेता मिठ उत अपने रहिये। ‘पर बजा वरे उर गाथ भविये?’

देवता: मुखेता मिठ ते उर वरे भसमे में उप नैस।
‘ताली धर वे नहजा वरे जेहू उसर है उदेर’। 33.

ैषपति: मेँड़ पाली हे भूत हटी। पड़ोपती ते नित बड़े रविलटी।
‘उसर भेजने उनमी फिर में। भरे हेजे भेज है लेई’। 34.

देवता: तरह ने भडाई ही उरु बढ़णे लटी ढरनुटी।
बरपे सकाई मिठ वे ‘तू दिखाई है मिटेपाटी’। 35.

ैषपति: तरहतै मिठ अनाज वटी! ‘भडाई दिखाई वर चैं लटी।
उनवे मिटेपट चरर पड़ोपती। तरह वे सरण दिला मेंड़ भूती। 36.
उस दरबर पड़ोपती रहा। नां हठ वे नां भवाले धरी
से मिटेपट मिठ वटी घटु। तेजा माही तट भड़ी माह। 37:
एक हिमपटे है पटल हुमरिदह। मिटेपट चरर त पाली निम्न।
पड़ोपती हड़ दिख जै हैं दिखाई। माहपटे मिठ भूत घटाई। 38.

देवता: उन पड़ोपती मिटेपट रही भूत देखे तेज करी।
मिट निट घटी समरे भर उद उट उद उद उट घरागी। 39.

ैषपति: हिमी आउं मरा मिठ निचाई वटी। ‘भर वे हूँ दिखाई लटी।
एक भड़ी बच लटी पड़ोपती। धरर हड़ घरणे वर ढूँढौं भड़ी। 40.
धरर उतरवूँ वे नैमी में। कहुँ भवाले वे नैमे लेह।
विमन मिठ वे पर जी देटो। तरह वटां विम वे बस रहे। 41.
तूफान मिठ जे तरह भवाल। तेज रूट वे परे हुम्रकट।
एक इसी देवा वी महबूबे वेटे। नैम माही नर माह मिटेपटै। 42.
नरह बरे वे करने उदेज़रै। वैहे तेज हरि मिठ ‘दिखाई।’
एक वट कराई हैं भूत देखे। भविये मान भर मिठ वे हुने। 43.

देवता: उन मिठ दिव अपने पबुंट घडी वट खट।
‘टरल भवाल उदृरु भिये सहरी माह किया।’ 44.

1.भव भरे, जह भूमल वर लट, अपना निचाई चुरा। 2.पू अपने जागे देन टहल। 3.मही माही मे निम्न तेजरा हरि भविये। 4.वरे भविये जागे वे हिया।
ऐ呼和ः सिन पृथ्व इसे पूछे बेठी। दिखा लाव धार दीम दात रहें।

अरमान भजन नैध नहीं तिरहु वारदे। दोहा जीव ज्ञान में रहित बरह। 84।

टरठ वंच दित भजन धुआ। धार भजन नैध नहीं तिरह।

ऐहै बुध जीव ज्ञान में रहित। तज़ लोक भजन धुआ। 85।

'पृथ्वी' जीव ज्ञान में रहित। यह लोक भजन धुआ।

बिन जीव ज्ञान में रहित। दूसरे लोक भजन धुआ।

साना देवी से जीव ज्ञान में रहित। तज़ लोक भजन धुआ। 86।

ऐहै बुध जीव ज्ञान में रहित। तज़ लोक भजन धुआ।

श्रीराम तिरहू वारदे बेठी। धार भजन नैध नहीं तिरह।

९३। [किन बुध भजन नैध नहीं तिरहु वारदे]

ऐहै बुध भजन नैध नहीं तिरह।

उदव धार भजन धुआ। तज़ लोक भजन धुआ। 9।

ऐहै बुध भजन नैध नहीं तिरह।

उदव धार भजन धुआ। 2।

धार भजन धुआ। तज़ लोक भजन धुआ।

ऐहै बुध भजन धुआ। 3।

ऐहै बुध भजन धुआ। 4।

ऐहै बुध भजन धुआ। 5।

ऐहै बुध भजन धुआ। 6।

ऐहै बुध भजन धुआ। 7।

ऐहै बुध भजन धुआ। 8।

ऐहै बुध भजन धुआ। 9।

ऐहै बुध भजन धुआ। 10।

ऐहै बुध भजन धुआ।
ਚੇਤਨ: ਤਤਕ ਮੀਚ ਦਿਤਗ ਸਾਂਗਤੀ ਚੇਵੇਂ। ਉਹ ਪਛਮ ਘਟੀ ਭੁਰੀ ਤਮੇਲੀ। 
ਤਕੈ ਤਕਸ ਬਚੇ ਸੀਮਾ ਮੀਚ ਬਣਾ। ਅਗਲੁੜ਼ਾ ਬੰਦ ਤੇ ਛੁੱਤੀ ਬਣਾ। ੧੨। 
ਦਿਤਗ ਵਾਂ ਉੱਤੇੜੀ ਮੀਚ ਪੁਸਤਾ। ਦਿਖਤੀ ਹਿੱਸਾ ਮੱਧ ਸੰਖਤਿ ਕਰਨ। 
ਦਿਤਗ ਹਿੱਸਾ ਮੱਧ ਉੱਤਰਤ ਕਰਨੀ। ਉਹੈ ਤਕਸ ਜੈਕੀ ਦਾ ਬਾਹਾ। ੧੩। 

dੇਵਤਨ: ਤਤਕ ਦਿਤਗ ਮੀਚ ਆ ਮੇ ਛੇ ਬਚੇ ਹੰਨਾ। 
ਮੀਚਨੀ, ਸਾਂਚਿਤਕੀ ਮੇ ਮੀਚ ਦਾ ਦਾਹੀ ਕੁਰਾਂ। ੧੪। 

dੇਵਤਨ: ਭਾਰਤ ਮੀਚ ਮਿਲਣਾ ਵਿਚਕ ਕੀੜਾ। ਜਵਾਨ ਵਾਂਤ ਮੀਚ ਮੋ ਬ੍ਰੀਂ। 
ਭਾਗਮਾਂ ਮੀਚ ਗੁਰੂਸਾਂ ਦੁਆਰਾ ਲੀਤੀ ਗਾਲੀ। ਨਾਨੀ ਸੀਪਰੀ ਸ਼ਿਮਲਕ ਹੰਨਾ। ੧੫। 

dੇਵਤਨ: ਨੇ ਨੇ ਮਿਚ ਮੀਚ ਬਗੀਟ ਟਲੀ ਨੇ ਹਿੱਲ ਪੁੱਛੇ ਅਭਾ ਕਹਿ। 
ਮੋਟੀ ਮਾਨਨੀ ਲਿਂਤ ਨ੍ਹਾ ਹਿੱਲ ਲਾਗੀ ਉਕੜੀ। ੧੬। 

dੇਵਤਨ: ਨੇ ਪਛਮ ਵੇ ਟੁੰਟੀ ਆਹੈ ਵੀਡਿ। ਚਾਰਕ ਹਿੱਸਾ ਵਾਂ ਅੱਧ ਸਰਦੀ। 
ਚਾਰਕ ਕੁਜਗ ਮੇ ਵਾਂਤ ਵੇਚੇ। ਪਹੇ ਭਾਰਕ ਸਿਖ ਵਾਂ ਮੇਲੀ। ੧੭। 
ਵਿਵਾਦ ਮਿਲਤਾ ਹੇ ਵਟੇਂਹ ਅਲੱਖ। ਵਧੀ ਮੀਚ ਤਕ ਮਿਲਤੇ ਯਮ। 
ਵਧੀਅਲ ਸਰਤਾਲ ਪੁੱਛੇ ਗਤਧੀ। ਵਧੀ ਚਾਲ ਪੁੱਛਮ ਹੋਇਆ। ੧੮। 
ਵਧੀ ਕੁਰੀ ਪੀਠ ਪੁਰਾਣ ਵਹਾਂ। 
ਵਧੀ ਸਰੋਤ ਪਛਮ ਮੱਧਾ। ਵਧੀ ਕਹੀ ਵਾਂ ਗਰਾ ਮਾਘ! ੧੯। 
ਘਰੁ ਐਲ ਵੇ ਜਾਰਨ ਤੇਤ। ਹਿੱਲ ਵਾਂ ਜਹਾਂ ਏਕ ਦੀ ਹੀ ਹੀ ਜਾ। 
ਉਨੀ ਹਿੱਲ ਮੈਂ ਸੀਜ ਵੀ ਹੋਣ। 'ਵੀਡੀ ਸਤਾਵਾ ਵਹਾਣੀ ਮੈਂ ਮਿਚ ਟੀਕ ਮੱਘਾਂ।' 

dੇਵਤਨ: ਦੌਮੀ ਦਿਤ ਮੇਕ ਪਹਾੜ ਤੇ ਅਭਾ ਨ੍ਹਾ ਪੁੜੀ। 
ਚੀੜੀ ਮੱਘਾਂ ਰੇਕਰਦ ਦਿਖਾ ਹਿੱਲਾਂ ਮੀਚ ਸੂਚਾ। ੨੦। 

dੇਵਤਨ: ਕਦੀ ਹਰੀ ਮੀਚ ਸਰਵ ਪੁਸਤਾ। ਕੌਰੀ ਮੱਘਾਂ ਅਪ ਵਹਾਣੀ। 
ਦੇਨਗੇ ਦੇਦੇਨ ਵਾਂਹ ਸੁਚਾਂ। ਕਦੀ ਮੱਘਾਂ ਮੇ ਘਟੋ ਮੀਚ ਵਹਾਂ। ੨੧। 
ਸ਼ਿਕਾ ਦੀ ਮੇ ਤਕਸ ਕਹਿ। ਮੀਚ ਰੱਖਾ ਸੋ ਭਰਾ ਦੇਨੀ। 
ਦੁਕਾਨ ਵਰਤ ਮੀਚ ਮੱਘਾਂ ਵਾਂਤ। 'ਜਾਰੀ ਗਹਾ ਅਭ ਮੇ ਭਰਾ ਅਭ ਜਾਰੀ। ੨੨। 
ਸ਼ਿਕਾ ਦੀ ਮੇ ਦੇਦੇਨ ਦੇਦੇਨ ਸਕਾਹਾ। ਅਦਹ ਅਦਹ ਬਾਨਥਾਂ ਵਹਾਂ। 
ਅਪ ਦਕਸ ਵਾਂ ਪੁੱਛੇ ਸਕਾਹਾ ਹਿਜਾ। ਵੀਡੀ ਸਿਰਜਦ ਅਪ ਹਾਨ ਹਿਜਾ। ੨੩। 
ਸ਼ਿਕਾ ਦੇਦੇਨ ਨਾਵੇ ਘਟਦੀ। ਦੇ ਦੇ ਦੜਾਤ ਦੇਦੇਨ ਬੁੱਢਣ ਦੀ। 
ਸ਼ਿਕਾ ਦੇਦੇਨ ਮੇ ਤਕਸ ਕਹਿ। ਪਹਾੜ ਮੱਘਾਂ ਵੇ ਜਾਹ ਅਭ ਜਾਤੀ। ੨੪। 

dੇਵਤਨ: ਪੁੰਨ ਜਾਹ ਵਹਾਂ ਤਕ ਦੇਦੇਨ ਮੀਚ ਹੋਣ ਘਟਦੀ। 
ਪੁੰਨ ਦੇਦੇਨ ਮੇ ਨਾਹੀ ਅਭਾ ਪੁੜੀ ਦੇ ਸਕਾਹਾ। ੨੫।
केनदी: पूजन महीन भे निजगढ़ इज़िज़े। देवी दीप दीप वाम भुजामे।

चौथे वाम परम दीप भीभुजामे। रहे दीप दूरी तत्त्व धरनी। 23

सीं सरजन रस्ता चढ़ भामी। उटरत दूरे वे भाट नात भामी।

लेंगे दीप उम्मे रमा। दिन झूट बेटे धरे वे धरा। 24

वास्ते करनें धीर दीप दीप रहाग। उटे उतभ मे भेंचे रहाग।
अभी तीयी नादान घराग। ने तूते उदम दीप मे देंगी गाराग। 25

लेंगा: ने ले दूंगे पूजन जगत रस्ताघ वृद्धिद दीप वी नाद।

लेंगा दीप भे गोड बेटे मेरी मुने अभ घाड़। 30

केनदी: हमारे वे भुजागढ़ रमा। दूके चम्कणे हरों भुजा।

उठी बाढ़ रस्ता हाघे जमील। हरमारे वे बल यमी यत। 31

उठी उभारता ना वही जमाड। रूप दूरे दूरे नात धर।

पैंसे मे से तू दूरे नबलेग। मे रूप भव्य वर वर वर देह। 32

उठी बाढ़ दीप दूरे दि बांग। धिनारे नोड भे नांद भी नाड।

रूप भव भे तिकमे भागुद विपहली। घुड़ धराग दिदिह दीप भिङल। वामी।

रूप दूरे चे जय और पहले। भागुद बेद दे राम भरामे।

रूप वामी दिम धीरी द दिसं। जय धरामे पुरे दूरे पुरान। 38

लेंगा: देव रीतम रीत रस्ताघ वे भग मे भागिढ है।

अभ दीपावल बेद वीडी मे दिन दीरी द देंग। 39

केनदी: बउजे तिथाप बित गेलज कनत। मधु दूंग पटे भीम भाजाग।

नाट नाट ना भूजे नाटे। दादी दूरे मे भउजाये देंग। 40

वहार कर्मर उठी वृद्ध महाभक। अध भव भूजी उदम लिखे न साही।

उठे मिथावत दे तिथाप उदम। भेंटी भागत दर दजाग। 41

बहु दीप भुज धीरी पहले। दिताङ्त दूने दिक्की मेरी भुजामे।

उठी धराग दीप तल नाजुके है। नाजुके दूरे भग भूज कियाग। 38

भूजी बाँध दे दिन दिक्की घी। देंगा दे बेद बलभ बीड।

उदेंगा दे बेद बलभ बीड। से तबाद मे बैंगे लेंग हिसाग।

साधी नामा दीप वी

919 [नामा दीप अचारुबिजीधे दी भुजाजी कियाग]

लेंगा: साधी नामा दीप वी भाग मे दिने मुराग।

भागुद धार धराम मुने बुझे दे बेद प्रहभाग। 91

1.ेठ 2.महाराज 3.वेंसी वी
पुष्चित पंच बुधगाम

चैत्री: अवश्यकताही तिव वें खट घटिए। सजन वस्तुत कभ मध्य नाही।
शून्य वें दिव वातक रहस्य। युक्तेम मिष्ठ वें दी वस्तु रहस्य।
जंगल मिष्ठ वें श्रीम वें रहस्य। बाधा युक्तेम में महत्व पर्यंत।
में भव नाले घटने मध्य भी तहत। युक्ते रेखेत्र संग भव में पराग।
शून्य मिष्ठत वी घटिए में। धर्मो अनामी अंकत आर्य।
गुरुसारी दिम खंड घटने: शून्य मिष्ठत दृष्ट श्री वें नेक।
नेक तुहार जाने गाढ़। मिष्ठ में खुट नाले नाले। यानै नेप श्री में नेक।

में नेप श्री में नेक।

चैत्री: आध मुरुने दह घड़ी वगै न रम्येय कृष्ण।
रेख ह्य खंड नेकः वें दी लिंट वें श्रीम वें रेखः।

चैत्री: मन विध मंगल त्वै तेह। नें गोमें श्रीम वै त में।
तुहार मिथम वें नै उंगिर। वें श्रीं दी से भावद महत।
वें में नै गुरुसार। शून्य नै दह दी वगै वें।
साँ धामको खंड। तेह वें मध्य रेह नेक जागै।
मुख धामको स्वस्विक नाही। किंतू दी उत्तम भविष्य वन्ते।
वीर रेख ह्य श्रीम श्री। शून्य प्रेम घड़ मंट घूरदित।
भवद गुरुसारी प्रेम निम घड़ बजें। उदा तुहार विन मट दुद वें भवें।
बूढ़ मिष्ठ रुटे घड़ घुटडित। वीर नेक श्रीम रूवा में घड़ि।

में नेप श्री में नेक।

चैत्री: भवद की श्रीम दृष्ट धूम लीली घंघरम।
उदा जल धूमें नेकः दे घंघर भविष्य।

में नेप श्री में नेक।

चैत्री: निवास भियत मंगल सूमा मिष्ठ भविष्य।
वन्ते बेंड्र खंड घटने जुराढ़।
वव टेट श्रीम चंद चंदन। अधमत घल खंड घटने जुराढ़।
देख़ देख देख में जो जो।
में रेख ह्य श्रीम वें।
रेख ह्य श्रीम दृष्ट यान राम।
यान जो में श्रीम श्री राम।
वव टेट दे रेख ह्य।

में नेप श्री में नेक।

चैत्री: तुरं मिष्ठ मध्य दिली मध्य दृष्ट भविष्य।
बूढ़ मुखदी स्वस्विक नाले टरस घड़।

9.पुढ़ अध नते। 2.तैल मै युक्ता न।
3.सूमा मिष्ठ दी भव। 4.अर मच्चे देख।

Page 186 www.sikhbookclub.com


194. [अमरस थी दी बांटें मौनस थी है बैठता]

देवता: बैठते जी मे दिखत मे उजे अमरस बड़ी वरार सादी।
दूसरी नींद मे घडी अमरस बड़ी घडी।

देवधर: अमरस घड़ी दे घड़ी प्रथम मे घड़ी घड़ी प्रथम।
दूसरा बहु घड़ी घड़ी आकाश। इन मूर्ति बे बन उतारिया।
एक आसमे उठे बत हुए। बनिया बन एक निंद लूट।
उत्सव बैठ नृत्य बन भांत। मौनस जी ड़ब विठ बत प्रथम।

मांधी तृत्य वृद्ध मिस्र वृद्धी वी।

195. (प्रथम ने है सैतान। दूसरे ने अमरस मिस्र हे अभिलेश हवां)

देवता: बैठते जी धेर नींद नारे भांत मांधी मांधी।
वेदु विठ वेदु विठ बैठे बने भांत मांधी।

देवधर: बैठ नृत्य तथ्य वृद्धी। एक जी भांत भुजाया भूजाया।
बिंदु दिनेम दिनेम दान दान. विंदु बाँधके बाँधके विंदु।
विंदु दिनेम दिनेम दान दान दान। भूजाया भूजाया भूजाया।
विंदु तृत्य तृत्य बन भांत। मौनस जी बन भांत।
उ एक जी नृत्य मिस्र मांधी मांधी। उ एक जी नृत्य मिस्र मांधी मांधी।

देवता: विंदु उद तृत्य भांत मांधी बन भांत मांधी।
कानी हृद ने है चूम बूसे मे भन भन बन भन।
कृत सेतु सुभक्रम सम दी तृत्य तृत्य मांधी मांधी।
उ एक जी नृत्य मिस्र मांधी मांधी। उ एक जी नृत्य मिस्र मांधी मांधी।

देवधर: दिन मांधी तृत्य भांत मांधी वी।
मांधी हृद विंदु तृत्य भांत। उ एक जी नृत्य मिस्र मांधी मांधी।
हृद विंदु तृत्य भांत। उ एक जी नृत्य मिस्र मांधी मांधी।
हृद विंदु तृत्य भांत। उ एक जी नृत्य मिस्र मांधी मांधी।
हृद विंदु तृत्य भांत। उ एक जी नृत्य मिस्र मांधी मांधी।
हृद विंदु तृत्य भांत। उ एक जी नृत्य मिस्र मांधी मांधी।
भव्य धक्खन पूजन मदरी भैरी

929. [वहाँ भेरी: अभिनम मदरी दिवं भजन करने वाले मन बीड़ा।]

देवक: मध्य शुक्र गुरूदेव दी भिम भिंभ भिलम सदृष्टि सूक्त।

वृद्ध धर्म करो धरो लोक जी तकाते वत वर दुःख।

मेरे अभिनम देवेन सुध धुररी आपेन बढ़ी।

भिम दिन छाटिये चढ़ते लैमें ठटरिये छटी।

प्रभक: चढ़े चढ़े मन धेरे धेरा चढ़े। भव्य धक्खन दिवं भजन वाले।

भि कह यह दश धर्म पुरं बल्ली। 'भूलें मसकव वेदी धर्म लोक।'

छठ मिष्ठा रिंग घेलदू जये। 'भमे मसकव धुरी ने भंगित।

छठ धार नियु मालिकापरे। लट पल वरित उदल दिवाई।

बहुं बहूं 'अंध जी पढ़े झड़ी।' बहुं बहूं 'हेम भूले तैं केली।'

ऋषिव बहुं 'नव उद वजा चले।' चूरां भव्य भड़े धूले।

ऋषिव मीम मिष्ठा मे बेदी सत्ता। भज रिंगह धल मेंडू पालव।

ऋषिव महेंद्रे देंगे वन। भूले भावु दीने नील मान।

देवक: मी महिकाण वे वचन वर भिंभ चढ़े ती हड़े पानी।

छठ चढ़े चढ़े धार नयी नम भेंठ वेदी बे भंगित।

बहुं त्यस्त धार दिन दिवं अंगित धन वत दुःख।

पुछ रिंग मे न कहें पहरी मालिक भंगित छुट।

प्रभकी: भिंभ निंभ उतन धने व धूले। छठें सबसे से धने भंगित भंग।

उतन लखने वने भिंभ भज। लखे निपुंशते वे नेदर छठा।

बहुं भेंठ मणियं भे उजी चीन। बहुं त्यस्त धार चूंग धेंठ वीन।

पुछ धन दिवं दिवं छुट भावनी। छठे छठे धव धवी भिमिती।

छठ चढ़े सेही दचन छठी। चढ़े सहज गेरु चढ़े सहनी।

भध देंगे मिष्ठा दिवं ती वार। दें ठीकी देंगे फूंके भाग।

छठ भलहे दिवं देंगे देंगे। लिड भजव दिवं नसने जल।

बलवं धक्खने मे डेंगे डेंगे। मेरे अभिनम दिवं दिवं चेंगे।

देवक: मेरे भारदेव दिवं दिवं उज धने धने विभाव।

भलहे टवड़े वे तत्ति लिये निम्ने नान।

प्रभकी: धवत्व भलहोंक भव मूठ पहिय। भज धने वे चढ़े दचन।

छठे छठे छठे महर होंगे। चूतू धने धने भज भावी नेंगे।
'अभ्य घनजे पूजा मिश्री नाम। वल मेहे भग्ना तम पाति।
अनं भस रुव गलियौं नै। वह लोह भग्ना भर घोटन।' १५।
वांदर नै।'अभ भरौं पाति। भलिर भिन त्वरूयौं नै।
अधी घनजे पूजा भोइ। वल मेहे भग्ना बघें।' १६।
वहु घनजे नै।'बहु भरौं पूजा भोइ। भग्ना भर बघें।
भग्ना भर बघें। भग्ना भर बघें।' १७।
उँह भर मेहे बघें। भग्ना भर बघें। भग्ना भर बघें।
बहु भर मेहे बघें। भग्ना भर बघें। भग्ना भर बघें।' १८।
पाति: वल मेहे भग्ना बघें। भग्ना भर बघें। भग्ना भर बघें।
उँह भर मेहे बघें। भग्ना भर बघें। भग्ना भर बघें।' १९।


माधौ घनजे मिथ सी बी

१२२. [माधौ घनजे मिथ सी बी]

पातित: अधिरूँ उविि में विे मुह एंग कगि पीढ़।
भगनी मिथ सी ताक मिथी भगं मगी की लां। १।
पातेटी: माधौ मिथ वे मैं इंग भग्न। भगनी मगी धे यंजे भग।
गढी धे भगं मैं यंजे धे भग। मगर मिथी में सिंघ वे सुंदे। २।
बजगी मुहम्मद जानिय मिथाई। मित्र सुबहवाल भर भग सुदी।
सुबह मित्र सुबहवाल में नविर उठा। दिन वल ब्रह्म मू मासमुह बृह। ३।
इस मित्र सुबहवाल वह मुहुः मृदे। उंहे तंतव भगाव भग।
मिथी वे में मिथी डड़िवाई। मिथी वृह दिन मित्र सुबहवाल। ४।
भीम बीमे दिन जागृम हलाई। उप ब्रह्म वल जिन डड़िवाई।
बज मिथी धर भगा भगा। भग मिथी धर भगा। ५।
पाति: माधौ देस दिन मिथी वे मिलि मिथा।
'अभ्यउमा चणिया नाम भगा भगा।' ६।


"मेरे बैठे हैं, दिखाया देंगे यह नाम, जो हैं। उसे देखने अच्छा है। उसे लें। तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं। उसे तुम्हारे हैं।
चैठ: उसकी बैठे से मेरा लाखा। उनका है वह टवा चुभा।
एस वसाल ब्रूपा ठहरापता। टवा लाद दिल स्वेच्छा चरणा। 20।
मामा लाख जाने ‘भभ भभ हिँद जाने। सम दिल्ला मेरा अब भभ जाने।’
मडी धक्का सिदे हिँदपने। भाई अभुमा स्वेच्छा ठहरे। 21।
उद दिखाप फल हुई यही। ‘मन माउ हिँद वहें स्वेच्छा।’
उद रहाने हैं उसु चुभने। दिखाप लेख बैठे बैठपने। 22।
उद लेख बैठे पां बैठे बैठने। ‘भभ जीवन सटी हेतु ठहरे।’
पिठ हूँद केला हिंद न हिँदपने। भेंत हृदें है लुभाना। 23।
बुधुद ने वेंटू ऊंटी ठहरी। जिन वाल राजे लेख मालिक।
जेठ उद मालिक बि हाफ। जेठ मवँ गैव धन हंटा ठहरि। 24।
देवर: हैं मैं सव नहीं भूंक बना उद गैली।
मम भडी मिफ सा पुनः वहल अवल टड़ी बेटी। 25।
चैठ: निजिग अवल जै कधी ठहरी। घरा भला जै मेरे भूतमाल।
माहि रेडि मेरा माजिव रेडि। वेंदु हिँदबुदु वाह मुख रेडि। 26।
मिसिड हैं हूंदी सब भारी। उ निजिग हूँद भूस निजिग।
‘भजबे मान्ड हैं मैं भडी। मल्लबुद हिँदू ते उह वाह भडी।’ 27।
आक अपले सांठ मू बटे। वह हृदें विहू हिंद ती हृदें。
हित हेंदेवी वे ह्ये मू बटे। बैठवात मू हेंदें बटे। 28।
माहें बस जिने ‘पिठ आपने मेंटी। भडी मिव निम वेंटी मेंटी।’
मम भडी मिफ मत में बाजी। बडी मिफ हूंदाना मध मिवजी। 29।
देवर: तैमे पूरे तड़ी बने उदवल आभास नह।
ऐशी हैंगी की बने पूरिये मम ते मू। भश। 30।
मिफ मू स्वेच्छा वाह पस भस वी आभास वेंदु।
वेंदु पूरे पेंट बवड़ ती आभास वेंदु भे मेंट। 31।
चैठ: जै अभुमा स्वेच्छा आपने। हूँदान मिफ ने बेंटी हूँदा बटे।
ऐशी हैंगी में दड़ खेरे। वह आपने निजिग पां बटूं। 32।
उदे मिफ मत मेरे रसंघँ। मेरे द्वीस भडी मिफ राखँ।
यौने हेंदे मां हैं बाज़े। चेत उदे। उटी भने उपे। 33।
मेंटी हिंदाप वै आपू। दसाप वभीमा। सी हंटा।
दसाप बाज़े ‘भभ पैमें कटूं।’ भडी मिफ बहाने ‘सभय सुनूं।’ 34।
गुरुवार की भेंट दिये आते। भती सिख में जहूँ उठायें।
‘अब ये टेके भार में मांजी। टेके र में टेके र में बचांगी!’ अब।
वचने ‘रेह’ तै अभी आजगा। घर भर में चढ़े गुंडागर।
में बैठे बैठे अभ बैठे बैठाए। किसी बैठे बैठे बैठाए अभाज। अब।
‘अब पैसे र भाई वह बह ताही। रै सार जहाँ माँझी भाली।
जहाँ घें भा अंजु दिखाई दें।’ रै के पैसे भाल घाटे।

तेंदु: भती सिख में जहूँ संभा जूनी घाट रैंटे दें।
‘सिखुँ घर न जिम टङे बैंते नकं न बैंते।’ अब।

तेंदु: रघुस्र महं घाट वूंग भाज। रैरुष मुल संभा में घुलाज।
वजनी भूल लड़े हज़ूरुपट। पृथकं अंकं वे पांम घरगट।
घाट बचने ‘रेह भुलभाल। उत्ते देहैं उभी नाट।
सिखात लकी यह निश्चय र हराने। बहू निश्चय वह निश्चय में गाने।
उज वजनी हे फिस वी राते। फिसे भूलके हे हउदर रहे।
‘बैठे बैठे बैठे मिंश महं बताहे। निम बत बजिज़ूल भाजू दिखाहे।
वेलि मैं देहूँ भूल चेलीं। देहूँ भूल भी भाग वैलीं घेली।

तेंदु: देहूँ भूल दिखाहे रै उहे जिमजे में हार।
बाल सिखवे राँगी भिटे, मैं दूं दूं दिम धार।

तेंदु: उध रघुस्र संभा हे में हृदान जग।
बैठे बैठे अभ बैठे बैठाए।
‘बैठे बैठे अभ बैठे बैठाए।’
निमज्ज मिंश उत्ते दिखाह। निमज्ज बचि वे पिंछ घरगट।
लैंगस बैठे उध जन घरगट।
‘घरां टेकां वनें हराए।’
उधरी महं मिंश देहूँ में वाहीं। ‘अम बैठे बैठे वे सार तही।
में बैठे बैठे दिखा सिंह घरगट।’ किसीं किसीं हुईं हृदान घरगट।
पति से देहूँ दिशुँ राते वाताहे। हिम अभ दीवं बैठे इश्र घरगट।
हिम देहूँ देहूँ हिम देहूँ घरगट।
हिम देहूँ में घींटी हिम घरगट।
छे निमज्ज देहूँ में हृदान घरगट।
हिम देहूँ देहूँ हिम देहूँ घरगट।
हिम देहूँ देहूँ हिम देहूँ घरगट।
दिम देहूँ देहूँ हिम देहूँ घरगट।

तेंदु: मैं सिख पैठी वटी हे चीं उठन चुपकी
किम देहूँ पैठां वटैं हिम दिते युलामे चीं वटांगी।

9. दिंगी।
पंडत: उथ टिक टिक जन मंजर उभाग। दिस चरित्र डिम बह नाजे मामा।

वों दिम मृतेड़ तेह कर देव। नसल मंजर एवतीत उत्प।

टिक पायली वें निम जगण्य। डिम वें भेषा विठ्ठ क्रमणे।

देव पहल पूर्व दिशमे देव। भगवान नाम ती दिस उठे।

पु देवगत निच भजन दिखाती। भग भली निम गीत धुरल्ली।

निम नी मधुकर बढ़े गढ़े। दुष्ट वह धीर रेड़ कीर मढ़े।

विशेष जड़ वें निम नी यात्रे। भग में मधुर विशेष धुरल्ले।

पाल सम्पत्ति भुवें देखेते। 'रत विधु नभी सम रत विधु भले' पुजा।

देखा: भवल मंजर वें सीम वह मृदुल मंजर है उड़।

उठव विचय उठ वें उसे धीर में धीर घड़व।

"बहिव निम भवल तेह ना भला देव भै। भहलेदु ती ते पारिनी बृत्त भवलहिँ।"

देखा: भवल भवल निम ना उत्प बरें तेंग निम मंजर।

भली निम धर नंतर मंजर बड़े धर मुंदर, बंद।

रुखी निम तें टेंटें वें भग मुखी देव दिखाने।

मेरी टेंट रिखी लां वधी निम भली निम अभिनवान्।

अलसी: सीम उथे उथ यह तेव्र वधी। वधी निम सीम निम माष मृदु।

ते ते भवल सगड़ में बढ़े। नै सै भवल निम भल ठहरे।

माष निम सीम बी ते। मरु निम बढ़े वें उजे मरी।

उजे मधुरत में मधुर। मधुरसाधन दिवंत दियीदाहन।

भली निम वें मधुर वीड़। मरी मधुर में चुढ़ाव।

उड़ निम मृदु मरी वीड़ी। धिव उठवें वधी मे 'पीठी। पुजा।

रेर हवड़ वें डेट वें दुरुः

123. [अष्टी भली निम री निमभा। डेट री सुधारी।]

विश्व: निम सत में निम धुरी उबारत में डेट भुजे।

निमी की निमभारी वधीत कठोरी भली निम नी।

सगड़ में चेतन चुले यह अत्यंत देव टहुँ में।

निमत में वट्ठण दुले भै। भली बढ़े मंजर नी।

निम, में पुष्कर उठे तुलन में रोम अठे।

विश्वरी भी दुलत में वें भवले साँचे भें।

1. मंग 2. मै: 1244
भगवान राघवेन राघव

गुरु सिख वर्गैं भरे वर्तनी पति वर्तैं नें।
भरी सिख इंठ ढेर ये गाङ भय तैय सी।

१।

वेड़ण: भरी सिख भरत मंडिर मंधत सूच मुख भवत।
वेठ शवम् लकें में उठज समिट रिमार।

२।

वेड़ण: भरी सिख वे मश में हदे सिख वे भोज।
अवे उठ वदृढ़ैबेठ वेठ शवम् लकें।

३।

भक्ति ठान वट वी

१२४. [परहु मान रा रंग ये हिंदी ची छद्म]

वेड़ण: मौंदे मै परहुगे बाल घटूस घटाध।
ईड़ घट खुस सिखत रहे पारी घड़े घड़ा।
भरी सिख नव भागवत बंड बंड इमे वटाध।
अवे सिख वे ने भहे वे मह मरे सीमाव।

२।

वेधी: वर्न चढ़ वर्न डांसी भीगे। वर्न उठ वर्न हुवी बटवे।
वर्न भगत वे मिठ भूलती बटे। वर्न उठे वर्न भामत मु मुंटे।
सोंग टोंग सर्दुस सरे भग। वेठ लहे मे भहे उमड़ा।
पांड़ पांड़ वर्न पवन घटाध। मश उड़त वे मीम छोड़दाध।
विम में देश विमे टेड़ वटाध। भोंग बंड विमे बल बंडहाध।
भवत राज़े मे न टव डे। वर्न विच खब हड़े र डे।

३।

वेड़ण: सिखत वे छुड़ अदतवैं छिंट भवते उदवउ डांड।
सोई वलती भाम रिठु भटू वटह वटाध।

४।

वेधी: भनै धरामे घड़ सुध दपे। घड़ बुट मे मेठ मु बढ़े।
मैंूं मैं मूंढ़े इटी चढ़। हूड़ अदतल्ल मरीं दशधार।
उने भवहत मैं बिड दवट धड़ी। दही पूछ दी धेबव उड़ी।
बजे मू, देह भूली घन। भवे तविं दिम हुई तव सुड़।
भवन मरी उठ वूडी बढ़ी। भग मरी भवमे वी भढी।
उने घटाध घड़ वट लड़। भवे लढ़ भट नये भुइवत।
भव वे दे इट तव गड़े। घड़ाहट ठारत भवे अटे।

५।

९। समग्र=मंडी, भोंग मंडी। २। वृद्धे हिंद।
पृष्ठित धन्य पुत्रम

देवज: उह देवज धनिभ उही धन दिनी भुजनह माउ।
उदवल उददे भूरत दे देकने भगवन मार्ग।१९१।

देवधा: सन भंड साकिन महें छैदेन। धन वहन हस्त धद धनी भल।
उदवल उददे भूरत दे देकने भगवन मार्ग।१९२।
भद्र मनह में धन तअं ताय। धलो मिन वहन हस्त धद धनी।
धदस्त देने से आहै। मन परम भिन भाई उध।१९३।

देवज: उही धनीह छठि लनो येंजी भर्ति मर्याद।
धपहल भे धातन दे देकने धिनिभ भर्यां।१९४।

देवधा: से रिसरिव दस उद देवज। धल सिपहर हिन दहें पुरा।
धातन धलो धस्ती हरी। धिरही धस्ती मु भाली हरी।१९५।
धातन धस्ती धस्ती महें पुरा। कु परिण धिन भाय दे धस्ती।
धिरही धस्ती 'धम धानु भाये। उदवल में धन उध धपह।१९६।
धेत हर्द वृंदी पिन दे भाये। धेत हर्द से ध्ये धाय।
धिरही धस्ती 'धम महो मु भाय। धे मंत्रयात जें धबत अधम।
धम हर्द दे धिर्वृंदी भिनारी। धिरवाल धिर्वृंदी हे धम वाली।१९७।
धिर धस्त हे धताई। धस्त वहार धिर्वृंदी धिलो हरी नाजे।
धेत हर्द से धाय धिर्वृंदी। धेहि धस्ती महें पुरा।१९८।
धिर्वृंदी धताई दे धुप धाय। माहे धनरु धिलो भिनाली।
धर्मीरु मधे धेहि उज। धर्मी धताई लेंटू हें।२०।
उदवल धताई हमत धताई। अधम अधम जो नाथ लाही।
धही महो मु धम धहें। धुप धहें से मह भालह।२१।

देवज: सिपहर में धक्कर मू धुप धिरही नही हर।
धह सिपहर में डिल वरी 'धरू मिनहत घाहम।२२।
धुप धिलो सब दे वरी मिनहत भक्त मलारी।
'धरू मिनहत' मह वरी धिरु धृतमा वन मिन रहग।२३।

देवधा: धिनिभ छठि वरी हे धली। धल धपहे हे धली हली।
धुपे धे धे में डिल में माहे। धलीरु मलारी धुप धीरे धपहे।२४।
उदवल धृतमू मलारी हे वरी। मुरिल्ला मुरिल्ला में तटू उद्धे धह।
धिर धीरा का पुर्यादत हारे। धहे वरी वरी घड़ दे घड़े।२५।

१ वेदांतम, उपदेस। २ उपदेस उपदेस।
पूर्वस्तु येव पूर्वम

है और जो भेंज में भाग।

उदय अल्लाह साधक

मैं पढ़ता हूँ। भर्ती राम। उठा पहान।

जलन के बाद घरी अभिनंदन। घरी बहीन। चुप्चुप अभिनंदन। २२।

होटल: उदय मैं भिड़ा दे उठाते लगे वे झटपट।

भर्ती राम। वह भर्ती दिखाई दे सीता घरी में। २५।

है गीता और भागते दिखाई में भिड़ा दे झटपट।

उदय वहाँ सबकी दुकान भरते पहान। २५।

घरी देखी वह पति अत एक घर भरते पहान।

उदय पूर्ण हूँ। नम निद्रा पूर्ण घरी में। ३०।

होटल: भर्ती राम। भर्ती दिखाई दे परिवार।

मैं साधले उदय सम्राट। हिंदू घर वहै। उठा नाच। ३१।

अभी टेबल वे धड़ी पक्की। घराने बिंदी! व गर्म हंसी! ३२।

घरी देखी चाहै। वह पति घर चलती। ३२।

घरी देखी निद्रा में। उठा चलते। मैं होती। भर्ती भरते घर चलन।

घरी मुश्क लाते दिखाई वटाते। साधक मु अभिनंदन। ३३।

होटल: भर्ती राम। भर्ती दिखाई दे घरी मुरख। दिखाई दी।

नित दिखाने वी वही में है गाज। रुपच मित्र। ३४।

नित दिखाने वी में। दिखाई दी वरी मुरख।

घरी देखी निद्रा में। वह घर चलन। ३५।

होटल: घरी देखी निद्रा में। वह घर चलन। नित देखी दिखाई दी। घरी देखी दिखाई दी। ३५।

वास्तव में देखा देखा देखा! वह घर चलन। भर्ती देखी घरी दिखाई। ३५।

चाकू देखा निद्रा। २। पति घर में दिखाई दी। ३। उदय।
चैप्टर: पढ़ने लगन ते धर आधि। ‘उम बेस हैंतस्र घटनि। सिद लुट वाणे उभारे उग। भवन हैंमे बी दुःख रने मृति’। 3। उस वालि हे श्वेत धारी। ‘भवन हैंमे हे तन्ति हिमाली। जही नेंहे बे उल्लखे भांगे। छद्यो धेरै हे दिगु दिगाङि।’ 8। कुछ घटना बे मार था नह। उस दुःख लेरे हे मुख भभन। तंत्र रह दिल हर हरी पारी। मज़ले बहने है भवनाल हिमाली। 4। छद्यो धेने हे धीमे राज। छही घट ने वहवे बंग। वेद वेदि उँच में में लह। भले दे हे है मुख र गह।’ 8।

चैप्टर: नौ बाहर एक भवन वे चीर भनुक वें बाध। उस भवन रूस बव बाए वेदि घट ने विउटे गार।’ 2। छह घटना बाल पढ़ने ‘दिल हैंत भवन विह भवी? वे दिल भवने हे देशे हे दिल देशि उषीत।’ 8। उस वाल्ले हे में दव वहने ‘त्रास तरफ वें धुराम’। वलघड़ ही घर वरी नम भ नामी धर।’ 8।

चैप्टर: भिल दिल तरफ बाहूँ भाली। भिल भिल दिल में बडी धुरामी। भिल भिल सीती वया मा माह। भिल महि वा में बडी धुरा। 10। पढ़ पढ़र भवन भव मुह लह। में वें तेक उस तह लेन। वेद वेदिनड़ भिल भिल देने। भिल वह लह महाने लल। 11। उस घटना मुह भीम दिलने। ‘अर्हते वीहे अभ उम घने। में अब साधे सही हारी। दिलवे माहिय अभ घनारी’। 12।

चैप्टर: मैं नें में दिहभाज हे तरफ बाहे बन्ने बन्ने। बन्ने बन्ने हैं दासी मिहाह दिल माह। 93।

चैप्टर: भवन भवन में भव जाने। दिल वे वहने में बडी वहने। में मुहरे में देश पुष। मुह पुष लह में मिह बाहर घरे वर्ष। 94।

माध्य भाषा रघुबध वरी 128। [परहमे दा पॉट पॉट हैली]

चैप्टर: नौ घटना वाघन जाने मुहे हूँ घाट हैल। बाहर भवने अभाजे देश में मिहाह जग र चीर। 96।

1. गाढ़ रहण वे मेहाउ दाः मिख।
2. उजवन।
पृष्ठ: पृष्ठ 198
चैत्य: श्रीम् गुरु रितीन्धर मिलिकर। दाईं रित करो धरण।
"श्रीम् गुरु रित करोऽद। दाईं रित करो धरण।"
श्रीम् गुरु रित करो धरण:
"श्रीम् गुरु रित करोऽद। दाईं रित करो धरण।"

राधा: तन हरि गोभि बाजे विपुल मृत्ति हुमायण।
"श्रीम् गुरु रित करो धरण: दाईं रित करो धरण।"
श्रीम् गुरु रित करो धरण:
"श्रीम् गुरु रित करोऽद। दाईं रित करो धरण।"

रघुनाथ: चीने नार दुर्गिन हृदा उत्ति मिश्र वे माम।
"श्रीम् गुरु रित करोऽद। दाईं रित करो धरण।"
श्रीम् गुरु रित करो धरण:
"श्रीम् गुरु रित करोऽद। दाईं रित करो धरण।"

राधा: वधा लिंग लिंग लिंग सार। विशेष मिलिकर भए।
"श्रीम् गुरु रित करो धरण: दाईं रित करो धरण।"
श्रीम् गुरु रित करो धरण:
"श्रीम् गुरु रित करोऽद। दाईं रित करो धरण।"

रघुनाथ: मरिया लगित धनू रूपे गह तमिल कर।
"श्रीम् गुरु रित करो धरण। दाईं रित करो धरण।"
श्रीम् गुरु रित करो धरण:
"श्रीम् गुरु रित करोऽद। दाईं रित करो धरण।"

भगवत धिम्म हें के दिवांगेरी दंडुः वी मामी।
"श्रीम् गुरु रित करो धरण। दाईं रित करो धरण।"
श्रीम् गुरु रित करो धरण:
"श्रीम् गुरु रित करोऽद। दाईं रित करो धरण।"

* दंडुः रित करो धरण। दाईं रित करो धरण।
चैत्री: 'से मिलत वे बुझे खलरे! मे दिय अभी तत्ता गुर्रे। आपे मिल घउने तटी। है जी अभी सिब खुशारी।मै से मिलत वे माव वहें। भुजझउट मे तेहर लेहरै। से मिलत वे देहे ठन। भुजझउट वहें दिन लग।' १।

देहरा: हैमी हैमी पृथ वा ती ठेप डुगरी। वटीरह वे मिलेगारी है ती तिहे पुजही॥

चैत्री: उव मिलत वे लेव घउने। वटीरह अफहे डेच डुगरै। वटीरह देरहे अपे भात। मिलत वे वाजे कैस उठान। मिलत भात स्वराज उवै। अरभ मू पहें स्वरूप मुख। मिल भुजझउट पह नजे घैठ। मिल जी उंद मे वाजे दूं बेल। २। लकद भांद बुढ़ी चुर हक घैठ। दूसर उनी उवै उत्कर वहें। ऊंच मूर उवै उवै चुर आहें। उम गुण वी पृथ उठानें। ३। गुण बेलन वे दूरात रहें। विहारे गुण उत्कर चेत। उव मिलत वे उमे उत्कर। मिलत उठाने बेलने रहें। ४। बेठे छातिल तेहर तुंबे। बेठे धुरस पतरह टुंबे। बहे देह मिहे मे अहे चुढ़ी। घमन देह मजे घटेद घुड़ी। ५।

देहरा: पश्चिमि उभाने दिवज वे मे ताकत पतरह चुड़ी।

बहे मे भ्रमण वह ठट चुड़ी चुड़ी। ६।

चैत्री: मे मूर अम मिल उंद आहे। भउप मिल दिक घउत अफहे। 'डेट दूल वभ घउ मुहारें। वाण बरह उतवर हेडे अपे?' ७। मिल बरजे 'वहं धुर वं घउ। मिल उतवर हे ती बाह। मवेव बूढ़ी भव घउत नहै। बींड मूर दे बेल पुढाह। ८। घउ बेल बाही नहै। अ बाही भल मे ठ माहै। मतेह भुजझउट वी उठी घउ। उतास्त घते ठ माहे मिल घउ। ९।

देहरा: बींड डॉड़ उतव घउ भिन्नात गुरुत्वाद। गौर भद्र मे सीतारी दुरे उतवर वे मरहर। १०।

भिन्नात्री वे तीहे माना उन्ने लाह। बहे विहारकी जीत मेंट पाही घड़े उतव। ११।
चेहरी: भुजाग मिष्ठ सुख ठौरा धाम। रत दल विष्ठ ठीका आकाश। तुझे मिष्ठ १२८ मैह वे रही। भीम ठ उंगे उड़ उड़े १२८। बघा मिष्ठ ठाने मद २० तारा वसु। बघा मिष्ठा पुत्रांतर ढेरे सुब्र। उन्हे उन मिष्ठ मस्तक पठाने। बघा जै २० तारा में में बाहर्ष? उन्हे मैँ मद ठूले बने। भागें रज्ज बघा मद ठूले बने। ठूले मिष्ठ वे निघास। ठूले मिष्ठ वे महीना परदी। बघा भस्म भरी मिष्ठ उठी। २०। देवाग पृथ मद रौठी उठानी। मिष्ठ महीना बटू मन में ठंकी। ते मिष्ठ २१ में ठूले मैन मही। भाग पल्ला मिष्ठ तपाई। २१। ते मिष्ठ २२ में ठूले शहर ठूले। रुट बटू ठूले रथवाल भाग। नप उन में भें बनाई। अवाक अवाक में मीम महान। आप ते २३ में ठूले मिष्ठ। बापे ठूले बल ठूले मिष्ठ। २२।

पेदना: जत मुह भूल मी मिष्ठ ठूले मत बल मिष्ठ ढन्ड।
उष भल अवाक बठल ठूले भिड़ पांडे भवल रिमांच। २३।

मेदना: भाजी तेंधे रस मूंग मिष्ठ दिपास वे।
भुजाग मिष्ठ वे रस मे जाने २४ में मिष्ठ कल। २४।

चेहरी: ठूले बत मिष्ठ ती हड़े पराज। चड़ा हेतै मिष्ठ भागा भरी।
"अह मेरे नसक उदवल उड़ीं सब ढूँढ़े में धकसे भागी। २५।
ते बत मैम ठानो बाह अन्ध। प्यछ नसक पैड़ भवल भस्म।
उदवल लहते भलाने हठे। पिंछ तिम नसकी पिंछ पिंछ बजे। २५।

पेदना: हताने वे बजा उदवले जे पदः ठूले यह।
सव उप मिष्ठ वे हटे महाने हठे ठ ठानं। २५।

चेहरी: वृत बुथ बत मिष्ठ ठूले भागी। भूपुत निगा दिवर ठ पड़े।
बली में बड़ "बड़ नसक बहरी। ठेरे उदवले ठूले बढ़हरी। २५।

पेदना: मिष्ठ बठे "अह मिष्ठ पृथी बृही मिराज़। घड़ घड़हर।
बृहों मीने वे मिष्ठ बठे ठूले नसक पृथी भस्मं। २५।

चेहरी: नती मिराज़ मिष्ठ मिराज़। मिष्ठ दुर्गुरी में बाहर भागी।
बली ठूले बत ठूल बरा। मिष्ठ बठे मीनें मिष्ठ भस्म। २५।

1. मेदना। 2. घम। 3. मिष्ठे मिष्ठ ठूले ठ।

952 www.sikhbookclub.com
चंदन: भिक्ख चार्चित जानिए उम्मेड अति उधारित।
वर घर के वर हों कहीं विद जीवित रहीं।
चंदन: धन लगाए हम हारे जागी। बिहर नदिया में रहा।
मेरे मरणों दम नहीं ताजा। जिसे महत्त्व देना असा।
चंदन: वे हुए वे संग के विलुप्त न लिखि वेट।
वृद्ध मे सृष्टि मा हुवे हुउं उठि यिनं जेठ।
चंदन: ठंडी ठंडी टूटी थिये लगे। ठंडे घरहे उना हुए।
सन्तान भिन्न उलटत सुवेट। अिम वर ठूली टेट बेटी।
कहे वे अटटे वे अटटे मिजुटी। अशत लिङ्गें वर पच्छाठी।
बिंद घरा बिंद घरा पह। अन्य टेडिंग गउ ठूली थिे।
मिकार वे उठि जना जाने रह। मिकार मिजुटी टेट बेटे।
मृतुंग अपिे वस मुहते। टूटि वर चीते किमट अफ्तने।
चंदन: ठंडे मिस ऊदि ना घमने नाहिं बिनटेग।
केंद्र भिक्खी नित ठूली भीमे वे दिनमेंग।
चंदन: मे वे दिम मीम दुकाने। सत वर घरें तळळा टालने।
उठे न गोड़ हुवे हुउं हुउं। ठूले मिसन मे रहे हुउं।
उठे ने में रहे अलि जाती। हिंद बंदुल चम्बु वर्ती महली।
हेत मु थोड़े ठूले जाने फिट। दिम चिथ बड़ी भीम मी बोल।
चंदन: विसूब भेज वर देश बाबा। मिकार सृष्टि मा सुंड बिंद रहे।
वी हिलते बिखे चन्दह रही। ठंडे अति मिजुट वर ठूली बाबी।
विंड उठे दिम किरा टूटी हुम। को घटु ताहत केत भें।
असुभागे पेटिंगे अनि। तीर उपये हिये उठिे।
चंदन: गर्दी धारी ग्यजान हे उे ने मिस नादे ठूल।
भवजे मृठ उदारव ने राने टूटी दिमुग।
चंदन: मै वे वर मिकार भल रह। तूमसूल भल वर टूट मौल।
मेरे वे मू रुढ़े बतता। ज्येस मर् डिल वरी ध्वार।
'अभे बुढ़े जसत भेंगादे। टूट टूट वर डिल वे वटपाने।'
राख उभ ममे दींजे हिंसी। वरी ठूली ओम है हिंसी।
तव ठूला ते वे मृठ राणे। 'मिकार ममा भल उदारव।'

1 चंदन सी।
2 मेरे वे दुरूले जस भीमे वे नाही ने लाईटे मह।
चेवट: दरीजे मू भक्त धुराड़िये "पैसा डूंगे वटेट।"
भाई भावके निर मिखा भाल मू तम वे डेट। 40।

चेवटी: तैय तै उम वे मध मिखा ह। उमती ती उम तल राल ह।
मिखा वे केम उम जीवा। उम वले-मिखा उम तित ती जीवा। 41।
ताल तैय मिख तम घरडे। दम ताला ती भटी मुरार।
ताल मिख नं ठाला भटी। ताल बड़ा तम चील त वटी। 42।

चेवट: मेहें धुराड़िये मिख वे रम यम भे घुम।
उनी दिमि रुहाड़िये मे पही पले दिलंभ। 43।

चेवटी: मीत उलट दिलारती बैसे बटते। "भउस मिख टेक इला उलट।"
भीं वेट समिन घुम। "ओभुआलट वे डे वेट उलट। 44।
भीं सुवालंग भटी नागीं। मार बसी तम अधार बढी।
रघुस मंजुर घने घुरये। माल चीते हीं सुरित। 45।
"उमहे यिख वट उलट त बटै। मिख तालिल वे उम तरि बटो।" 46।

चेवट: हेम सारी यिख वेटियर मंजुर वट जसगे।
तंगा सुिला जेंदे मे सरे मेंटु हराड़िये। 47।

चेवटी: तह चील वे हेम सारद। दिमाह औमे बी हुइद।
"उमही सार हुड़ी तांगी। यिख भउस मिख सार जसगे। 48।
भउस मिख वे बींके उपर। घरे त मे ने बइ सुवाल।
उत देख़ के उम वे बटी। "भउस मिख भउ उपर घर। 49।
सार भुआल टपल भटी। तम वे भाले उपर उटी।
हूटारित के हिन्द मे बटते। सार जसगे दूसु जिम, उनी ही सी।" 50।
उद हें उवाज गृह चीर। ‘सजाँगी’ टेस न दीये श्रद्धां ।

| उव अपने ‘लठ सीट लगी। धरे उतरां न मिस्क पुटी कवर’। |
| वाल बै दिना उठ नाजे। दिस बैले मीम दिखने। |
| ‘में उव बैल गृहि दिखाव। धरे उठ देखने खाली।’ |
| रैव: हजारो भवानी गाल वे बिच घरों भिलै ठ चांड। |
| मन्नी मिउ तिम युद्ध वे रकमानि वहन खाली।’ |
| रैव: उद हें हे भैम दीवान। ‘वाल बैल मीम भवानी माण। |
| वै उत्तर नहान मैं भरी। में में विद भागु उसी।’ |
| रैव: उद हें वैये यादे पीहे वैय तफाव। |
| पैंब शुभ दिम मीम दिसे थे कहे वाली खट।’ |
| मवा पुंजू भव जानना, चुआन, में मिस्क लकड़। |
| मियले चुपचाई टीट में खेल बाये दिच मान।’ |
| रैव: उद हें हे पृथ बैले सेवक वे महवगि। |
| ‘उम वाति मिय वे हे ठठ में वग्व हें भवावाव।’ |
| रैव: हें हे बते ‘मर! उम ठठ मरी। दिम वाल बैल वे वैयें चरों। |
| में उम वाल भव उम मरी। उम बदर ठिंसा निा में भरी।’ |
| -सांबी पुंजू ठठ बैल भर। भैल बैल दिम उसी भरे। |
| में टीटें बेव हें चुआन। उम बद नाटि गाँड़ में भरे।’ |
| दिम वाल वे दीने लुवें। पाहे उम दिम नीट मू टेट। |
| दिम बा ठिंसा मान राम नाय। दिम वाल बैल भव उसी।’ |
| रैव: हिमबे पुंजू उठ बैले ‘उम ठठ ववी मू रागिन। |
| में में भैल मीम वे बिच बैल ठथ दिखाव।’ |
| रैव: उद हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें। |
| उद हें नैत भुमे वत गुढ़। बैले भवानी उद दिना हे पृथ।’ |

---

1. में हिम (चंदे) है नीरिया गढ़ (ए पुड़ वह) उं लेखने हे भविष्य गां।
2. पैंबे दर हे। सतवे वैव, इत घट जी। रैवे रैव। 3. टला बनवे।

www.sikhbookclub.com
राग: उस भुजान दे ता करने सेवक वे सु घुसिये।
"हेते घराप्य अब उमी भेंजे वे सु उगाये।"

रेडी: उस हित सेवक वेला वीथा। उस सुत सब हेता वीथा।
है बहु विश घोर घय। राज उपजाव गड़ रेंट पह।
हेते रेंट हैत। राज रेंट पह।
उस उगाब वतले बाबी। भवान अतें ठाँ बाबी।
उपजाव सब भुजान बाबी। जह दे नेंट भवान के झो।
हेते हेंट दीं पह। भाना उस हेंट पह।
भवान अभे जनी राजी। हेते दीप अब उम नाइ।
राज उम जह में ठाँ नियाती? किम उम जनी धर उरानी?
उस उगात नियाती हे झय। नेंट बैशंज घुट घय दे घये।
भवान उजय मु जमी बाबी। जह दे जी नेंट भवान ठाँ।
भव ठाँ निम उस बाबी। भानो ठाँ दूर भव दे ठाँ।
उपजाव रेंट हे में ठाँ भें। भवे झरत हेंटे बे।
भव बाबी में घड़ा बाबी। ढी उम बी बाब बाब।

राग: उस उगान बाबी में बाबी बाबा भुजान बाबी प्रहेत।
हेंट चुहेते पामरा करे चुइए बेंटे बेंटे।
में भान भाने "अब भवाने मेंब ठा वान।"
भवान अभे भानी हेंट रह कह कह वान।

रेडी: हेंट ढी बाबी उस लाफा। में लाफ दुमब सिट नियात।
उस हित रेंट हे में बाबी। हैउर भवान दुमब सिटेंट नाइ।
भवान सिमी में हेंट भाजी। हित बाब उस सब भामी बाबी।
भाना उस ठाँ करे बेंटे बेंटे। झरते उम निम रेंट हेंटे बेंटे।

रेडी: दींट बैशंज में रहे दींट रूट के रूट।
हिंदे पाने हेंट उपजाव में नाही। रुप में निर रुप का।
भव बैशंज दे अभे बेंट रहे सिटेंट।
रेडी बाबना हिंदे बाबने भवा बाबने मिन बाब।

रेडी: जह उम बाब भिन दी भाजी। भान बाब दुमबी भान बाबी।
जह भी हिंदे बाबने। भव बैशंज दे बाबने।
माध्य घंटा भीतर भऽतरी। धिम वन मद्य भव भवादिः। 124. [घंटा भीतर का पूरे गा!]

घंटा: माध्य घंटा भीतर भऽतरी भव भवादिः।
धिम वन मद्य भव भवादिः। 1!

घंटा: माध्य घंटा भीतर भऽतरी भव भवादिः।
धिम वन मद्य भव भवादिः। 2!

घंटा: माध्य घंटा भीतर भऽतरी भव भवादिः।
धिम वन मद्य भव भवादिः। 3!

घंटा: माध्य घंटा भीतर भऽतरी भव भवादिः।
धिम वन मद्य भव भवादिः। 4!
पुरीय अंग वालेए

‘चर्ग घाप जात सीखूट बनजे।’
धरी में घाप जात बनजे। ‘जाटा खेली बन्हु मग बनजे।’

प्रेक्षक: सम न चीम गी बहु उत्तर रते खगति।
पुनर्जो बनजे ‘वेंही बेहन जात चालित वृध ढुबगति।’

खेलधी: घासमे मंगर न हुए लीला बनाई। घासमे मंगर न भलट रे झाड़।
घासमे मंगर न तेंगा भराई। घासमे मंगर नेला भागाई।’

प्रेक्षक: घासु मिल हे ये मुठी बनजे उमां जी बलंदित।
मदु बिन्हु रे ईज लगाने जली घेरी मिल मेठ।

खेलधी: मिल सिंद्र जत हिमष हारी। ‘भीम लोगे हिन्हान जान लींगाथारी।
मिल लगाने बलाबा लेता। घास दे नहाई घासमे मेठ।’
अध बीतन बिन्ह लेंगा भरापतंगे। उत्तर भित दे हुई हरापतिंगे।
हित घासमे बी बलाबा लेता। पालनगी राजा अनहे मेठ।’

प्रेक्षक: नागी भराने देंगा तीसरे घेरे उबहे लीले घराइत।
हराम देंगे पे़स घने गाजा यागने ठंग।

खेलधी: घैठ मिल उठी नागा थागाई। पूरों मिल तूनाएटे बने भागी।
रेंगभाल देंगा तीसरे भरागत। बचन लघुग तिन युगे साग।

प्रेक्षक: पंजी हिमष दी गुरु हिमष मे मुह घराया सह नागत।
घरू हेम सिंदु जात रे बंदु रे देंगा ठंगात।

खेलधी: ‘विहार हिमष मे मिल घेंगा। उज टैं मेट, हिल रुप बहरेंगा।
बचन रागा तोड़े हे गोम रागा घेंगा। अध बारा धरा है दे भागी मिल बेंगा।’

प्रेक्षक: घाट घापत घरात बी घारे घारी मु भैर।
बबूरूगा रा बी हिमाली घासमे घर उठ टंग।

खेलधी: पहले मुह घरी हेम बनापट। ने मिलिह दिबा घरी भागत।
घड़ा माघ दिवे बे डिना घराई। पूरे घड़े घड़े रे घड़े घराई।
हेम डेंगा भ्लाध भागे में। सहवाने चीठ धुत हुई ढुबगति।
हिमष हेंगे मिल उठा निखान। दिबा दिवा मेटा नाह दिलाम।
पूरे उज देंगा दिवा ढऱा। बिहे बनाए मिल हिंसत ढऱा।
उज उत्तर घेरे घरापतंगे। ‘घर रू भागे मिल बने थे घरे।’
देंगे हे गोम रागा भरापतंगे। में घासमे बी बहु हरापतंगे।
मिल में घर घर सह घाने। उम दे बनान भाग उवाहै।
देवता: तभ में भक्ति रक्ष करे पारे उभरे ने हृद्यविद्य।
तभ रंगनत मृ उव लगे तभ मेंँ गोरे सवें यह। २०।

dेघदी: देखे मेंँ बजा तभ उभे मेंँ। बजा बजा तिहुत देखा चुप बजे।
दिन उदव बजे स्वल भते मान्य। तभ उभे बजने बजने तिहुत घड़े।
मिश बजे तभ उभ बजा नष्ट। वहे बजने भरी मृ बेंड।
तभ उभ में भर ममूड़ मेंँ। मेंँ चीत भिज्झें मेंँ। २२।

dेवता: तभ भक्त मेंँ पार उभे तभ बजने रह भरत तभ भीढ़।
देखे वरी विभ मेंँ सवें यहे उरों ना लीह। २३।

dेघदी: देखे मिराम उव ममूड़ कहाँ। उव मिराम मेंँ उदव रह भभे।
मेंँ चीत उव मिराम तलादी। उदव भा मेंँ गोरे वहे दिखाई। २४।
उदव मिश वे चीत चढ़ाव। मिराम रिता मिश र बघी।
मिश ची उदव ममूड़ तलादी। मिश मेंँ देख दिखाई दस पाहे। २५।
भाँत म मु उदव उदव ममूड़ तलादी। भाँत उदः नव मली घनहे।
उदव ते विभ मनी दिखे। जला ममूड़ उद चुप्पे भभे। २६।
माँली वेंद वहे सताव मिश। देखें देखट वह रंगी हिरा।
उदव जी रंगा वह वह भभे। भाँत भेंट चित देखट बने। २७।

dेवता: मिश दुःहे उव वित भाँत देखे उव रित नाथि पठाइ।
उदव मे उव ममूड़ भर मिश मध्य भनी देहे र उदः। २८।

dेघदी: मिश भरे शिऱ मनी तिहुत पिलाई। देखे र उदव चित ममूड़ चिताई।
देखे मेंँ देख दोस मलाम। भर मध्य रित मनी तिहुत पिलाई। २९।

dेवता: तभ भक्त ममूड़ द्वारे उभे मिश भाँत रहाई।
उदः दोस उव गद मेंँ उध मिश वहूँ वरागि। ३०।

dेघदी: जीत सौमी मिश पेन मिटहे। उदव मे वोँ भांति रिट्टहे।
मिश भरे विभ मने जीत। देखे जीत र भने मती। ३१।
उदः दोस उदव रहाई। मिश मेंँ देख उदः।
देखट मिश चित मध्य नष्ट। मेंँ देखे मेंँ मेंँ। ३२।

dेवता: पोँछे चट घराने उले उले भांति लान।
मेंँ देखे चट घर वे दीवे घुटे उदः। ३३।

dेघदी: देखे उदव मे भांति भांति। मिश नर नन हले उल।
देखे उदव गद वही पिलाई। ३४।
उसने मेरे साथ लगाये थे। मेरे साथ अभी तो है।
में भी मेरे ऊपर है। मेरे ऊपर है। भी मेरे ऊपर है। भी मेरे ऊपर है।

चेतन: मीरा रूह तेज टेज। मीरा रूह तेज उठे।
भाव उठ वहन वह। भाव उठ वह। भाव उठ वह।

चेतन: अब उन में भी मेरे सिंह विद विद मनवान।
मिहल सीतारा भ्रम भी। भ्रम सीतारा भ्रम।

चेतन: उद कुंभ में उद कुंभ। उद कुंभ में उद कुंभ ।
भ्रम मिहल महीनी भर भर। भ्रम मिहल महीनी भर भर।

उदाहरण: 

उद भाव में भाव है। भाव भाव है। भाव भाव है। भाव भाव है।
महीने कहते है गहरे। महीने कहते है गहरे।

उदाहरण: 

उद भाव में भाव है। भाव भाव है। भाव भाव है।

उदाहरण: 

उद भाव में भाव है। भाव भाव है। भाव भाव है।

उदाहरण: 

उद भाव में भाव है। भाव भाव है। भाव भाव है।

उदाहरण: 

उद भाव में भाव है। भाव भाव है। भाव भाव है।
चेहरा: भां चिन्ता डूब दूब वर्त वर्त मैं नृत्य नृत्य वजन लगाता।

चेहरा: सिपा तेज़ लैट चौं नलियारी। उघ बसी धरण में बन आठ।

चेहरा: सिपा तेज़ लैट चौं नलियारी। उघ बसी धरण में बन आठ।

चेहरा: सिपा तेज़ लैट चौं नलियारी। उघ बसी धरण में बन आठ।

चेहरा: सिपा तेज़ लैट चौं नलियारी। उघ बसी धरण में बन आठ।
दो संख्याओं में हिस्सा आया। बीती वे भूल सरीटे बनाली।
जो मिस्ट्री उठने स्पष्ट आया। खुश चढ़ रही मर्म जलाई।
21: जेन नीह वे देव रहे। नाम लगाने दिन भेंडल लगाने।
में ना फंसने बूढ़ी गिरना। हिंदू क्षत्रिय पढ़े बीघे अर्ह।
22: रिट बैठी मिस्ट्री डराते आया। बड़ियों जन्म रहे मैं पपड़ी।
देश बेहदों टकलियों ऊपर। यमी ठंडा वह भवन में।
23: लेखा: अपनी ऊपर डीवर बैठे दिन बने पढ़े बे जेन।
नाजे नाजे बढ़ाउ तो मिस्ट्री भूष वीधि किया रम।
24: 
लेखा: बैठा दीप नाम उठी धत। अब से मिस्ट्री भय जाली उठा।
उठ देख विल दल्ले देंगी। में धूप नाजे उठद विल भेंडल।
25: नाम लगाने मिस्ट्री लग भागी। भूल यदी वे तै उठदगी।
हीन में रजे तुप्पे लगात। सती लेखा में ढांढा फलाण।
26: भाग मिस्ट्री दे झेल भागी। फली गल भय लग दिए भेंडल।
27: शुद्ध मिस्ट्री डीव बने दीनाहर। देव भव मदाले में जीवों बाधी।
28: मध मदुर वी दर्जा भागे। वाय पाली देव मदुर मधारे।
29: ऊपर यदी वे मे से लर्द लजाहे। ऊपर भागने छालाँ भागे।
28: 
लेखा: नहीं मुख ऊपरल घो से पढ़े पेरें मिस्ट्री नाम।
पता दे मास्कार चाहे वे तलौ मारमे भाग।
30: 
लेखा: तब में लेखे मिस्ट्री शुभ चढ़हे। दीवर भव मद थे तुम्हे लड़हे।
31: अपने वेश घरड़ी देखा। भाग उधारे घृष्टो भेंडा।
32: मध मिस्ट्री वी दिन अवधा बढ़। तूत वे मिस्ट्री लड़हों; नीचे मोड़े नाम बढ़े दिखाहे। दीदार बालके में भागाक छाहे।
33: लर्द दीदार दिन भूष है। भरीहौल वे मारने लगा देखे।
34: प्रजामात घाट भाग हुई। जुड़ी घाट दिवस दिखा।
35: अपने मिस्ट्री वी गप्पी भागे। आमार लगाने घर नह छिने।
36: बेद दिखाहे घर उपर गुजारे। बड़ी जाने मिस्ट्री चढ़ाव जारा।
37: 
लेखा: मध भाग हट देह मान दे घाटी भूष रहिग।
भव बेहद मिस्ट्री दिन तथे सत्का मुक्त ले उठा।

1. पैंछे दिव; 2. पैंछे दिव; 3. पैंछे दिव;
माधि टेंट मध्य मिष्ण वी

२३०. [माधि मध्य मिष्ण वा रवित नीकमे रामन देव जी]

टेंट: अकीभद्र मट कटोद भग पहरे होली वे गाधि।
कहें विक्रमक वर्त्त वे हैं क्दें गाज साधि।
हिंदनी हैं हटोत वे आहि घर्घर विलकरिण।
‘वर्त मिष्ण’ बोलिए हिंदे ‘भग वे टेंट स्वागि’।

मेघः: बेंगे धरे अं धरे सुभाष। मव मट से घरंघं घरंघ।
टेंट मिष्ण, मैं ताल वाली। इस मृगार घी घंटे घंटी।
पैंकी दह दह नामी चांदिये। बेंगा घर घर घंटागामुळे।
भीं घर निकसे चुने थाने। मंगा बमती पुड़ा निकासें।

मेघः: बेंगे बेंग नागरिक धू धू मिष्ण भग पहे।
उसशकल मिष्ण वर्ते हैं मिष्ण भग पहे।

मेघः: मिष्ण बहु मे दल्ला बिलकुल। बिलकुल मध्य मिष्ण ते बढ़े बढ़े।
उस निशाने वे लक्ष्य आरंभिक। मिष्ण मिष्ण वे दल्ला बिलकुल।
हिंद निष्ण इसने निष्ण भाग। ‘भग तैं अधी मट वे घम।
उभ अपरभाव मिष्ण मिष्णारी। भग टेंट उभ आहि लकर्गि।

टेंट: नाश देव उभ बह बहे दरे स्तिपाने पान।
सुंदर वगने मिष्ण उभ नीही नाशभ वालन।
अब ते उम में घबू उमी अग्नि बने लाल उ Australian. 
कृपया सुनिए मैंने उम के के सिंह सुनाती माफ। ४।
मिर्ग साध चीरेक उम सती खियए मब राह।
हृदः उ गले मिर्ग पटने 'उम उम सलत मिर्ग माफ। १०।

मेधत: उम सुनाती उम हिंदु उ गल। राघ वृद्ध हम घरी हुई हो।
हिंदु हे आते थम उसँ। जिन उठता हुज्जा हम उसँ। ११।
हिंदु गतार मिर्ग अभ भहँगी। 'उम हज़ा सज़ा मि वृद्ध हज़ा।
हरी बदली साहसिक हुज्जा हो। िय वृद्ध हम घरी हो ते आते। १२।
उज़ा वाली िहती उम हरी। वृद्ध भमाव आते घर खड़े।
अनो पहले लासे लासे व्यूह। 'उम हे झरैं वृद्ध मेहङ। १३।
भू महसिण्ह हे उम हृदपाण। षड़ पद्धत हम भी सों हज़ा।
हिंदु धूढ़ उे जे वह जगत। वृद्ध हे भी हंस िवीण गाँह। १४।

देवत: तिलमे नेत मौनीतः साँख िड़ते तहें विवाह।
है 'उम सन्तो धनसे तुह मौनीतः ते दे भाग। १५।
मूंढ़ धुढ़ इतव आ तदें उदबङ्गे कीह व्याह।
से उम मे िहेद भन्द ूँ हे शरी दिये लासे। १६।

मेधत: िहती बदली उलट माफ। भाग वे उम मे िहेद उग।
िहती गले उ गली अवहदे। उम समिच उम वृद्ध महँगे। १७।
है ने उम समिच दयवने। बरते लिये उम उम नीना उगे।
कुंतुभा वी म महीनँ रहे। 'उम मे उष्ण सुभाष र बढ़े। १८।
मे शत मर्द्धे आ भयो भरै। भाग धुढ़ इतव देख़ चढ़ा।
मे िहेद हछन्द लूह दय तौँ। भाग धुढ़ इतव देख़ चढ़ा। १९।
पद्धत स्नेह सिम भोला बाधकङ। िहती उलट उम वें तरी भागँ?
पिंड़ा देख भे पिंड़ा मिर्ग रह। भाग धुढ़ने िहेद देख़ उभागः। २०।

देवत: 'िहेद सिम दिलमाजे नहीं दे चुजुद मिर्ग बने भेम।
उन िलकर भागे उनँजे चाही धैर्य तपभे उम मे मु। २१।

मेधत: उम नृण निम्ब घाउ इतव। राघ घाउ घर भय भागे भैरवी।
िहेद वी इतव षड़ मे भभी। िहेद वी षड़ मे िहेद वट भैरवी। २२।
िहेद धा भयो धैर्य माफ। उम समिच माफ़ा घाउ भागँ।
िहेद धैर्य िहेद धैर्य मिर्ग नाले 'जग दिलमाजे उे घर भाग़ सज़े। २३।
उम उे िहेद उलट दरी महीन। िह हेज़ के बाणे िहेद झूँझ।
िहेद भेम भेम िहेद िड़ते देख़ उमे। माफ़ हे मैं िहेद िलमाजे। २४।


dheer chalai reet bhal veeam aam. dhaad vare raah mein vee aam.
dharam sakhi dhaad saale uthatari. dhaa vaad raah vade vicharali' 34.

reeta: muhul chhul mila dhaad vade 'abhi madan pata jadh.
un marni aam de saa raah mukh uchchh rabad nukkad' 35.

sheeteri: aate vaad dhaad vade prasad! abhi teelde dhaad vardh patet.
dhaad hirda aam muke vich vadaa. dhaad vade mein ikh ume patet.
36

reeta: bhut teh ram adi shubhram bhag. dhaad marni raat puja dhaad pahale. sheeteri deh swaam einik path deh pahale.
37

sheeteri: varej swaam mila 'beeru hu ganga. 'hu phare dhaad abh maaire samaa gatha'. sheeteri deh swaam dinu dhaad pahale.
38

sheeteri: mukh mila chhul mila mohan: abh pava swaam tiled. 'ab aam de saa mukh ram mukh' 39

reeta: bhut bhag vish bhag vade ukhane.
40

sheeteri: sheeteri deh swaam mila dhaad patha.
41

reeta: dheeroj dhwar vade vade saal vade ghar visharta.
42
चैथंकी: चैथंकी झंझं झं करता। चैथंकी आधम मे झंझं झं करता।
सिि बनाने 'इस पटक मेंिि। अब कल्ल केि झंझं झं करता।।80।
पटक करने 'मेिे किविे भें। चलते तरी झंझं झं करता।
चैथंकी उगल मे उग तरी।।81।
हमी वापस 'बल निकालिे लगते। कौिि आनिे बल निकालिे;
चैथंकी भाग में चुबु घरता।।82।
सिि मथूर हर चैथंकी दीिे। कहलत दुिेत चैथंकी दीिे।
सिि दुिेत असिेित पत भागी।।83।

चैथंकी: चैथंकी झंझं झं करते बदिे झंझं झं करता।
बातम केिे मेंिि मेिे भागी चैथंकी।84।

चैथंकी: उगल मेिे बल लगते। झंझं झं करते बल लगते।
चैथंकी उगल मेिे बल लगते। झंझं झं करते बल लगते।85।
भेंज मेिे बदिे कहलत भागी।
भेंज मेिे बदिे कहलत भागी।86।

चैथंकी: नििि मेंिे बल झंझं झं करते।
झंझं झं करते मिे सििे पत भागी।87।

चैथंकी: उग मेंिि बदिे मेिे भागी। नििि उग मेंिि मेंिि झंझं झं करती।
झंझं झं करती बदिे पत पििे। झंझं झं करती बदिे पत पििे।88।
झंझं झं करती मेिे भागी। झंझं झं करती मेिे भागी।
झंझं झं करती मेिे भागी।89।

चैथंकी: पड़े पुिाल मेिे बदिे बेिे मुिि मेिि।
निि झंझं झं करते मेिे झंझं झं करते।50।

चैथंकी: पड़े पुिाल मेंिि झंझं झं करते मेिे झंझं झं करते।
निि झंझं झं करते मेिे झंझं झं करते।51।

चैथंकी: निि मेंिि सििे मेिे झंझं झं करते।
सिि मेंिि सििे मेिे झंझं झं करते।52।

चैथंकी: निि मेंिि सििे मेिे झंझं झं करते।
सिि मेंिि सििे मेिे झंझं झं करते।53।

चैथंकी: भड़िि मेिे झंझं झं करते।
सिि मेंिि सििे मेिे झंझं झं करते।54।
Montserrat: ठेंड पर वह से ले लिया वह से लाख वर्ग वह वे पात।
उसे बाच्चे में ब्रह्म नाम वह से लाख धनी भक्तिमान।

झूठी: झूठे नेत्र दह दह। मजबूर मिश्र वे हिट लघु सहे।
मजबूर मिश्र वे रहे रहे। वर्ग वे बह नेत्रता आँधे। पह।

टेंडा: मायी मुद्रा मिश्र दी मही मु जही सिकूरत।
उठ मिश्र भेत रही रही मली मुँह किया लख। पह।

मायी मुद्रा मिश्र दी टेंड उठी

१३२। [मायी मुद्रा मिश्र हे चामो हीं तै सर्वसा्]

टेंडा: हित हित हित मिश्र तर यहे मायी ट्रहरर लखी।
अती पहे वे लखे लिया भवानं भवानं वर्ग लखी। क।

झूठी: मायी उव कुजरीर लहाँड। मन्दहु वेद उव लखे लखी।
उत्र वी इस तर जली भावी। लिया वेद मु चडु मिश्र ली। म।
हित चडु मिश्र लिया 'बवीदे हीं। वच यत्र मिश्र वेद वे हीं ली।
मिनाम मेंत नूठं भावं। नूथ खसर उव यत्र मिलान भाविर्म।
मिनाम मेंत मु रामे भाव। माय माये मिश्र रिते रह।
सुत वरी भे वरे घरले। पहे मिनाम वरे राजु रहे। क।

टेंडा: उव चामो हे नाइरुर मिश्र अव हाँदू हल।
उलं घाँघ्य रिम भवानं हने रही वर्गमह। थ।

झूठी: वही दिनर मह बढ़ी मु भावी। हित भवानी दह जव भवानी।
भव रने तर मिनाम भव रन। रजवे चिंथ मं मिनाम भव। थ।
उव मिश्र चढ़े अवतार हैं। चिंथ मं अव वी ली ली।
उव मिनाम महु मायी भवानी। रेत रहे वर्ग रवा रवा। थ।
हित मिनाम दिह हाँ मन हु। नूली हाँदू चिंथ ठरी।
उव दह लाही चढ़े मु हाँ। अपने बढ़े प्रयास पहुंची। थ।
मानें लिया भव हाँदू हाँ। पठे वर्ग बढ़े। घे उव।
उव मिनाम मह बढ़ी पढ़। 'भव मिना दहे अवरे दह। क।
उव मुद्रा मिश्र दहे उवर। भवानी दहे पूरात संग।
लिया वे बढ़े बढ़े अधवे। मह अवरे हेत लख। थ।
पढ़ वरे 'वरे मह भवी भवी पढ़ी। अत दिवस वा नूली दही।
बढ़े मु दहे मह गथ गथ। बहुत चिंथ मेंदत माता। १७।
मासी मुख सिख ती दी घण्टती वी रेद उड़ी

१३२. [मासी मुख सिख हें हिंद सिहार सिहार बनान बनान]

देखना: मासी मुख सिख ती दी घण्टती वी रेद उड़ी।

देखना: ती घण्ट ती दी रेद उड़ी।

देखना: ती घण्ट ती दी रेद उड़ी।

देखना: ती घण्ट ती दी रेद उड़ी।

देखना: ती घण्ट ती दी रेद उड़ी।

* ज्ञ: ती घण्ट ती दी रेद उड़ी।
पंडग: नन्हे उठे, सुभाषी वही उबलाई रिहाई।
मैं नन्हे मुझे मिष्ठ बड़े बच्चे उठ गए।
मैंने मिष्ठ उठ गए, कहकर 'बाबा हुर्रीं उठ जाओ।'
दूध के में धीर धीर भी मनोजान के नेह।।१९।

मंधारा: उसे धीरे धीरे बड़ी भलाई। 'बाबा हुर्रीं उठ जाओ।'
पत्ते मैं धीरे धीरे नहीं पड़े। बेटा मैं बड़े बच्चे मंधारा।।२२।

पंडग: उसबतू मिष्ठ छु商铺 धीरी वही उठ गए।
मैंने पत्ते में धीर धीर भी मनोजान के नेह।।९३।

मंधारा: महां दोहरे रिहाई अपने उसके। तह भीतर बड़े बच्चे घड़ाई।
इन बच्चे अभिनव धीरे। उस उसबतू है भरसंख भीरी।
पत्ते में धीर धीर भलाई। तै धीर धीर भलाई मंधारा।।१८।
जैसे मैं मिष्ठ अभिनव धीरे। पत्ते में मुझे मुझे गूँजा मंधारा।
मिष्ठ रिवाज बटू भरसंख भीरी। उसबतू भरसंख मंधारा।।९४।
'बाबा हुर्रीं उठ जाओ।' तै 'बाबा हुर्रीं उठ जाओ।'
उसबतू भरसंख मंधारा।।२०।

मंधारा: भूत धीरे तै मे कम चने धीर धीर वसी।
जैसे मैं नीरी रिहाई पही पही सुभाषी।।१८।

मंधारा: धीरे धीरे धीरे तह दुर्भागी। मिष्ठ तै अभिनव भलाई।
पत्ते में धीरे धीरे मेरे रे मेला। धीर धीर रिहाई नी देरी धीर।।९५।

समस्त भलाई वही बेटा बी।

१३३। [भलाई वही बेटा वही मिष्ठ घर उठवां सा रूपा...]

दूधकीर्ति: पाँछ मिष्ठ घर उठवां तरीवार भली ठिकान।
उस के मिष्ठ उठ गए, तरीवार भली ठिकान।
दूध के में धीर धीर भलाई। में धीर धीर भलाई में।
भलाई डाल जाओ, तब भुकाम में भलाई।
'बेशक भलाई वहीं बेशक' तरीवार ठिकाने धीर धीर।।९१।

मंधारा: रबल विष्ठ मदर भली रही। मिष्ठ उठ घरवाली उठी।
उस के मिष्ठ हुईं उठ घर आए। बेशक भलाई वहीं बेशक।।२।
चेतना: उठने बढ़ लिया मुझे वे घर भूलग मे बेट।
दिया हां सिम्ब बढ़ आवा हिये सितिझ येरे है।

cेल्फी: नाके उठने ठेक नियाम। वे हैं बनने नूतन नियाम किया।
बढ़ते रंगो महलत ही। बनना बढ़ उठे घर भूलग ही।
उठा माहि दिया पदानुम ले। तत्त्व वे दिये सही पूजण।
घड़ा इतिहास निवासार यही। चड़े अवैध बढ़ रहे रहे।
जे मुक्त छुड़े ते सभा मु राम। उठा उठके वे गाये निवास।
सह बढ़ लें हेर मन निवास। ना पढ़े रुपड़ा बढ़ विचार।

cेल्फी: सिम्ब बढ़े ठेक वे हां मैं वे गाया।
‘हिये बेलकोर वे हुई तह भर बैरे मन’।

cेल्फी: समाजम उज जे हुआ। ‘हिया पृथि नाशे ठिक वे गाये।
सह उठके उज हुआ जाता निवास। वीसे छा उत्के भागे।

cेल्फी: उठा नीमे वी वे अने में उंगे रेहू तः बढ़े।
घड़े उक्ताटी बढ़ निमे भारमें निम गायें।

cेल्फी: उठे उठके महान देस बढ़े। छुड़े दी ठेके सिम्ब भूल।
बढ़े सिम्ब हे मुठे पड़े। बढ़े सिम्ब हे चाहे पड़े।
बढ़े सिम्ब नाम निवास निवास। सवाजी महानदर वे बुधादर।
बढ़े वे छुड़े तेहे पड़े। तीहे धेंगा उज हुआ गुड़ा वे बढे।

cेल्फी: ठेक सिम्ब नीते चुप उठके सुभाष।
बन उठके वे जे वे नटः बढ़े चुपे है।

cेल्फी: पारले चेत बूढ़वह बढ़ी। दिया पाहे भर अवध बढ़ी।
हिया ठेके बे हे महानद। भावे सिम्ब दिया परिक वे चेत।
सिम्ब वी वाही भव दृष्ट्व बढ़ुड़ी। उठके वटे घर भाव वी दृष्ट्व।

चेतना: मे उठके पारले लड़े वे सिम्ब वे चीटे भाव।
मेरू खड़े तड़े वी भावे बढ़े र भावे भाव ।

चेल्फी: नेव सिम्ब नीता वा बढ़ सट। मह उठके मेंडू उठा बढ़े।
गेंड उबे त भावित मेंडू। उंबे भावे दिये तवे र बरी।
घड़ा सिम्ब में उठके बढ़े। दिये में नेव सिम्ब वट भावित; नेव सिम्ब निम गेंड बढ़े। छुड़े हुड़ैँ भाव मु भाव।
मेरी भी मात्र इकट्ठा धात। मिंग दैड़े उम्र बन भर्तर।
पीछे दिखे हैं जीती वाले। भले भई परिवारी पाहे।९८।
रेकहत: मेरे सैनाध मे वे तांदे भिड़े मुहे फूल भन्द।
अदाल उड़ेगे मैं मौला वह भल भर्तर मान।९४।
रेकहत: लिखे बिबंद भड गली मे लाड। मन मिलत वे जोड़ी भर्तर।
ईंट बर रागे सवव अब भर्तर। गाहक कल्ले नहीं अने उठाने।२०।
रेकहत: भाँड़े देखे पिन्न मिल वे दिखे हेंग ने दार।
सैंडी पेंच मानेत निम भुजी रटी चुका।२१।
भाँड़ आदे मे भजे एन निमल ताज बीह।
उसे उठाव बियर लुक नाटे पिल मिलत लड़े हीन।२२।
रेकहत: मिलत वे उग माती उड़ी। बैठे मिल अब और भटक अली।
भये मिल मृ मर्बन मह उड़े। पूरी बेड़ से दुकाने दैड़े।२३।
उड़े खजमे सूबेन्दर। उड़ी कल्ले अब चटारी।
देव भते के सम भों आने। तौं तौं उंगे मृ मुक्त घरहै।२४।
मे वैले वे खेल उठें। टूटर वे महगी आने।
जैसे तैं भाँड़ कल्ला वाले। पूर कल्ट मण खेलर चले।२५।

माथी मी खजमे वे विश्वास वी उड़ी

१३८. [भराँ अंद सना]

रेकहत: दिमी बैंट मिल जूह वे मरत। सैंडी मिल ठिक लेन्दवि तथ।
वेले वेले दीवरे दर दैड़े। सुडी भर्तर मिल भर दैड़े।९१।
बूट पसे मिल वेद हर में। रहंत सुवे विं गढ़ी में।
घमउद वे वज मिल र गहँ। पचे ताड़े बे वेदे सह।२१।
रेकहत: उड़त सरणं बेदा वे ऊँच वाप मिल भर्तरं।
रेकहत: माथी मी दूर मिलत वी ने बेदे प्रेम भाँड़।
भाँड़ भाँड़ भाँड़ भाँड़ मी दूरं दूरं वे राह।९१।

माथी मेित घध्बध्वज थोइर वी उड़ी

१३४. [हरिय रिर मिल घड़े उड़व दूरवं ने बेद दैड़े भर्त! सपीं!]

रेकहत: माथी मी दूर मिलत वी ने बेदे प्रेम भाँड़।
भाँड़ भाँड़ भांड़ भाँड़ मी दूरं दूरं वे राह।
चैति: भीतर वेंट छ मारे गुण। उने सिंध हँस निश्चित रह।
झूठ तोड़ भामरे अपने। पूजें मनाइ छिल घड़ लुभ पाई। 2.
भजन अभी िपनी िसुक लैहैं। अर्जु िन किंड यार भािंग।
वै आसमन वै सिन्ध वार ईच। वैं पासले लेंग छिल ठीक। 3.
भाव तैहे भी लड़ लेिहैं। िपे तमे बड़ घड़ भािंग।
हिम पुष्क डे िजे मंद चढ़ािने। चटीधर भुज़ि हिंग रहिे भािहैं। 4.
पूजें छोट भािं रहैं आिें। िीतान घड़ िव बड़ दिव लहिें।
गुढ़े छोट बधमािनि िें। ऐंठ घड़ििि छिल छिल िंगिे। 5.

dेघन: नाॅ तेंत ििकवे उठिे दिव चुहू भैं हिधपनिे।
मिन्हर लीिे बधि दिमे दिमे दिमे ऐँधूि समापिे। 6.

dेघन: िपे िड़िे प्रतित सई भे बन। प्रति भे ििहिे भूत दिव भािहैं।
हेिि सिंध पानि वेंग भेंए सिि भािहैं। छिमे दुखिनिे ए भाि बनिे। 7.
सिमे सिंध पानि भे जस तेिे जी्ने। छिमे धबिहे भाि तांिें िलूिे।
तेंिे तेंिे सिंध इििी िेंगिे। एम िीछ जल भे देंिे मेंिी। 8.
भाि शेष िप िज़गिे मेंिी। देंिे ििहिे िे ििा गुलब िेंगिे।
िेिे सिंध जल वे िप िैिे नाँि। निन्हे जलििि सिंध धुरीि सिंध।
तेंिे ियो भुि घड़ पाइिे छाँिे। 9.

dेघन: दिमी िंश िसिंध क्यूं वे धव्यजनक पूढ भािि।
समसम ते उठिे अरे सा बनिे मु उवर िििि। 10.

dेघन: मुिि हैं उवरठ बड़ भािहै। चेि धुर िव घड़ सीि हिधिपिे।
सिंध िलुिे छिल सई वे िीि। उिि ििि िलुिे सिंध वे िीि। 11.
संप िसिंध वे धुरू िैिे। िंध िसिंध तेंिे िेंगिे। िपे िीस िसिंध िैिे भािि।
तेंिे उवरठ िलुिे समापिे। 12.
ििे ििंशि िलुिे उवरठ उवरठ पाइँिे। िलुिे पूढ़िि सिंध भािि अिे।
ििे उवरठ भेंए दुख घड़ििे घिे। रििि पुछँिे वे उज़िि गो आिे। 13.
सिंध देंिे सिंध देंिे भािि वे भािि। तीि पुछँिे वे देंिे छिल घड़िे।
उवरठ वे में जस रो आिे। उि उवरठ रों में भेंए भूतिे। 14.

edेघन: 'भाि िेष्कवर िलुिे घड़ घड़ िलुिे सिि फूिि घड़।
पूढ़े ताल सि नयेंिमि िेंगिे लेंग घड़ घड़ घड़ भािि। 15.


c̰h̰ə̱ṉi: मद धरम भव भंडर नेती। घरु घरमणी भेदम तोली।
पुनः पत्र उठि बने पहळे। गीतः गीते ये बने भावे।१५।
उध रिंच मिश्रत घर हूँ नद जाने। पूर्णः केवल शरद हुं।
उड़े छिपे ने हुं ते पान। ये पंढर भव वेदजे लाही।१२।
हिंद उत्तरते ये पे सुित भारी। 'हस सेवल घर रैंजे पुराणी।'
वि माहिति हिंद हैं बहु यद्यः। अहि लेख वि वि कदापी।१४।
भावि सेवल हिंद वि बहु बदलाबी। वामीः हे पृष्ठ रैंजे लापी।
सब पृष्ठ उध उत्तर साही। रसियः छद में नट जी पानी।१५।

c̰b̰h̰a̱t: बही ठाेंगर भादरे ओँसे वाहे वाहे।
उः हे लाह गुह बहु हें। बुध भेदे नह।२०।

ch̰h̰i: उध उत्तरत भव भेदे बही। घर हूि तस भेद अष्टि छापी।
अदाल घर रैंजे बनाघे माही। हिंद मिश्रते ये पटि बुढाही।२९।
हिंद मिश्रत बीर नद मु अवि। गीतिः मिष्टी में भुजी ठें।
हिंद मिकट नद मु पुड़े घर जानी। उः हे माह नाह जी बुज़ी।२२।
सेवल पृष्ठे रैंजे वि लाही। 'हस भरी भादरे मिश्र भारी।'
हिंद वि हृि हरूः रैंजे लिव ताहे। लेख छदते भ्रमर ओँसे लाही।२१।
घुरावत भावा हें हों देखना। भूि सिवी हें। भर निभाय।
छिप मिल बीमी ठिम में अख मूली। तरतु मिश्र में छिप रही नाही।२४।

b̰h̰a̱t: भूि से घर में हूि भादरे उः हें। नट में भुजी भारी।
पृष्ठु तृथर वालाम वि नट हिंदी पौकारी उंड़ि।२५।

साक्षात् मुखेता मिश्र सेवल वी उंडी।

१४८। [राष्ट्र मुखेता मिश्र बे हेम ये मधुर दी गिरवानी बे बमत]
चेतना: भक्ति धर्म स्मरण हेतु न कृप्या उठाए पात।

चेपूर्ति: भक्ति धर्म स्मरण हेतु न कृप्या उठाए पात।
भूमभाल हैं लेन हैं घरी भावे सती।

राह रा ता ती उढ़ा ता ता के परा उबी। २१।

रैपटी: लछां बढ़ीं 'मध मिर्ध मुखेना! घराण हूँ धुँ वे चड़चड़ ढेख।

तेन धुँ वे नग धुँ तां। दूं बढ़, भुष वे निकल वाह। २२।

तेन वहाँ उड़ भावें घास। निकालते पुढ़ुँ बड़ी मोहरे।

जा भीड़ मैं नमे उठी। दूं ली पुढ़ुँ में वाह वाह में। २३।

पुढ़ुँ उड़ ती जड़ तै पैं। किन्तु पुढ़ुँ वे हैं हंगरै।

मुखेना निक घट भूल में बजी। २४।

भूम मे उमा ठूल म भाजा। घटे त पेट उमे भाजा।

भूम मुरद भावे ले जार्नेमे। तापल माने ताव हिंस अँगे। २५।

धान फिरती भी पुढ़ुँ उड़। जा मिर हबहैं घुड़ी ची।

को परान उड़ भाव दी सँदिग्दे। घर खड़ा मैं एक भाजा। २६।

विलु नीमत में गध्र बझापी। भवरे मध विदै ठठ साधी।

मिर्ध हम म घुड़ रही। मीम रीख तिन मा पकड़ते। २७।

जान पुढ़ुँ नह जापा। मैं ठेड़ी की केट बढ़ते।

भूम वाचा गा वखल ताड़ी। २८।

भूम हैं अंद मध घुड़ बती। राहार हिंस उध भूमे भावी।

'जुल पुढ़ट मधर! भूमे। मे पुढ़ुँ ठेड़ी ठहै त सैमे। २९।

पांढे सुधे म मेट बढ़ें। उठफिर भाव हिंस राजे बढ़ें।

सुपी रेन नग घाट घाट की। धुँ नाह वे गूँ गा बी। ३०।

रेन लंढ घट लोग घट। रेन स्तों वे नुटें मूख। ३१।

रेन टेन घट दिम वृधा। राज राज बढ़ दिए। रेन 'रेन जिज उड़ म जेटें।

रेन बढ़ वे 'पर वे मारिस। ठुठात लें भाव जांवी पैं। ३२।

१.उरोड़कर=घरी। २. लील हिंस वन रेन।

३. घराणू-मिर्ध मिर्ध मधी वे तै अंद। ४. भूम हिंस भावे घठ वे भूम।

www.sikhbookclub.com
भूमि दंग चल गई न गई। मिले निकले हिरे ढली।
वाह तरह हित चुराती पद्में। झुंझ जाती वी मत चढ़ाई। 38।

twww.sikhbookclub.com

twww.sikhbookclub.com

रेगा: देन दंग में चौंक गए, उठाने में भी भर दिखाई।
उध धातु जे धो उध यहूँ बड़ी। उठाने यहाँ भी रहे घरी। 39।
धृष्टी: उध दंग में भर जलात। 'भव वह गया-बंद रहा है।'
मुखेश सिंह भूल गए जानी। 'भईखाँ बराबर उम्र है। जनी।
पैठ पैठ उध पैठ त हे सठी। उठाने यहाँ भी रहे घरी। 40।
मुखेश सिंह वे में मिल आये। लिखे वप ते पूड़ सिखाने। 41।
उध ठहरा है तीन भेजाने। बड़ा हिटाने विद भक्त निम पाने।
उध बड़ा तीन देख में आनें। देवी दिखामा उठै प्रकाशित। 42।
'भव जन तन जने ते घरे। रातं राम धर रीठ धरस्ते।'
भमभर दिखा ने बड़े। ठहरा भेजा ने। दिखा बढ़े। 43।
कित घात वे घटुर। जन। भमभर निद ठहर वर्गाना।
बड़ा मंगल बड़ा भेज में देखा। 'बलां रीठ' जे लीर वर्गान।
'बुजवट घरे घट दंग दिखाई।' मुखेश सिंह ते जे मुठ पान। 44।

twww.sikhbookclub.com

twww.sikhbookclub.com

रेगा: मुखेश सिंह भव वह घर ठहर पाने पिँड़।
ठहरा घराना सिखानेहरू चीत आरे उध पूड़। 45।
धृष्टी: मुखेश सिंह बड़े 'भूल! ही बड़े?' बाध बड़ी 'धर मठणे त बाधे।'
मुखेश सिंह भूल है जाने देने। 'बकबजा घरे' उठाने सिंह ठहर। 46।
हेद मिस्ट वे जठ नीख भरी। 'देवें भव में भम घराने।
देवें तम्रे व्याप बड़े। ता बढ़ विवृला ठहर बड़े। 47।

twww.sikhbookclub.com

twww.sikhbookclub.com

रेगा: देने भमभर पजान पठ वेद सिखी भुलालग।
मुखेश सिंह निरंत हेदिन हि जाने मु देरिउल। 48।
धृष्टी: मुखेश सिंह जने भमभर देख। भमभर देख सिखी लेख।
उध दिल बहती घरों दिखाई। चढ़ दर्जने देने दिख घरी। 49।
'भव भव भव में बाध घर दिखाई। भेद जने भमभर में दिख विवरण।
मुखेश सिंह वह बाध पान धर। भिन जाने उध में देख। 50।
टेलिका: उस रुख ते देखिं भैम भजत मिघाल। 'पन रन भज नींभ मुखत मिघा। पन जगत भज सरे।' ५०।

उस रुख ते देखिं भैम भजत मिघाल। 'भजन सरे भज मुखत मिघा। पन जगत भज सरे।' ५१।

उस रुख भज नींभ भजत मिघाल। भजत मिघा भजन सरे। ५२।

उस रुख भज नींभ भजत मिघाल। 'भजन सरे भज मुखत मिघा। पन जगत भज सरे।' ५३।

उस रुख भज नींभ भजत मिघाल। 'भजन सरे भज मुखत मिघा। पन जगत भज सरे।' ५४।

उस रुख भज नींभ भजत मिघाल। 'भजन सरे भज मुखत मिघा। पन जगत भज सरे।' ५५।

उस रुख भज नींभ भजत मिघाल। 'भजन सरे भज मुखत मिघा। पन जगत भज सरे।' ५६।

उस रुख भज नींभ भजत मिघाल। 'भजन सरे भज मुखत मिघा। पन जगत भज सरे।' ५७।

उस रुख भज नींभ भजत मिघाल। 'भजन सरे भज मुखत मिघा। पन जगत भज सरे।' ५८।

उस रुख भज नींभ भजत मिघाल। 'भजन सरे भज मुखत मिघा। पन जगत भज सरे।' ५९।

उस रुख भज नींभ भजत मिघाल। 'भजन सरे भज मुखत मिघा। पन जगत भज सरे।' ६०।

उस रुख भज नींभ भजत मिघाल। 'भजन सरे भज मुखत मिघा। पन जगत भज सरे।' ६१।

उस रुख भज नींभ भजत मिघाल। 'भजन सरे भज मुखत मिघा। पन जगत भज सरे।' ६२।
मधी वाली उगूँ सिंह उजवंती घरेली मणीक जी

13. [मधी उगूँ सिंह जी मितेंगी]

देवता: मधी उगूँ सिंह जी भूं पिछा भक्ति करूँ।
भक्ति विपन्न है उदसी भेंती सिंह उदशम। १।
भौत मे भक्ति के बरे से मुँहूँ नुमां।
उदसी भक्ति माते मधी दिखे उगूँ सिंह रहे। २।

देवदत्त: दुर्घट मनु नञ्च तेसे भक्ति। भक्ति दुनो वचन युगां जे भक्ति।
भक्ति दुनो वचन रूढ़ि हृदय अधिक। ३।

देवता: भृज भक्ति वें भक्ति भक्ति तिम बनाने दें।
भक्ति दुनो भक्ति अधिक भक्ति दें। ४।

देवदत्त: भुगत चुकाने से चुका चुका। मे जी मे हे संघे उतरे।
भक्ति वाक्य वें तिम विभाग। उदसी चढ़ी मे सिंह वर्ण। ५।
हरिदत्त स्वर्ग में विभाग वें उदि।
भक्ति दुनो भक्ति अधिक भक्ति दें। ६।

देवता: सिंह भक्ति उव वें विधिः तिम भक्ति भक्ति।
भक्ति दुनो भक्ति अधिक भक्ति दें। ७।

देवदत्त: उव ज्ञान निर्देशकीये से अभक्ति मैं भक्ति दुनो भक्ति आधी।
भक्ति बीमे सिंह तत्ता भक्ति। सिंह द्वारिक भीमे दीन भक्ति। ८।
भक्ति भक्ति दुनो भक्ति ज्ञान भक्ति। भक्ति दुनो भक्ति ज्ञान भक्ति। ९।
सिंह भक्ति रोम बाने है।
भक्ति दुनो भक्ति ज्ञान भक्ति। १०।

देवता: भक्ति रोम बाने आवश्यक है।
सिंह भक्ति रोम बाने आवश्यक है।
"सिंह भक्ति रोम बाने आवश्यक है।"

1. वेदी 2. भक्ति हे।
टेक्ह: मुख रुधार मित्र श्रेष्ठ वज्र "वक्तार क्षेत्र उरे जाति।
बह उरे भद्र तत्व रघु भवे श्रीदुर्गादिर।" 95।
उर रुधार धूरू में बढ़के "मे उरे रेख सिरिदिर।"
ने मित्र वे उरे तवुर उरे रेख अधि।" 96।

रूपाद: तवुर बढ़ार मित्र श्रीदुर्गादिर। "पुरुष श्रीदुर्ग श्रीद भवे भवी।"
उरु प्रस्लित वज्र पेदि बढ़। मन श्रीदुर्ग लिह उरु बढ़। 97।
उरु उपाम वह वज्र धरनी। घरु मित्र वे पथ पुरुष।
ते दुर्गे दुर्गे दुर्गे भवे भवी। थीम बुट है ववे भवी। 98।
अथ भवी तवुर तवुर श्रीदुर्गादिर। मेरे प्रस्लित अथ तवुर श्रीदुर्गादिर।
नवे घरे मे मित्र रहें। दुर्गे प्रस्लित अथ तवुर श्रीदुर्गादिर। 99।
उरु नरक तरु भवे पुज़े बढ़। देव मीमक भीम तब भाव।
सकर संग एव तिम नदी ववे बढ़। 100।
सीम रक्षा तिम नदी नदी। बहुत नदी ववे बढ़।
सात रुधार वे ट्रंका भवे। तवुर पिमत वे नाथ तब बढ़। 101।

रूपाद: यव उरु रुधार प्रस्ल वज्र ववे उरुतर अथ धरनी।
मितर वह दुर्गे दुर्गा प्रस्लित वे पथ पुरुष। 102।

रूपाद: अथ रुधार वह रुधार मित्र रघु। भीम वह दुर्ग उरु बढ़।
मित्र प्रस्लित वे दुर्ग भवे भवी। दुर्गे प्रस्लित वह रुधार वह। 103।
जो रुधार वह रुधार श्रीदुर्गादिर। मेरे प्रस्लित अथ तवुर श्रीदुर्गादिर।
पिम भवे प्रस्लित वह रुधार श्रीदुर्गादिर। घरु लिह रुधार श्रीदुर्गादिर। 104।
पिम भवे प्रस्लित वह रुधार श्रीदुर्गादिर। रेख तवुर वह रुधार श्रीदुर्गादिर।
सीम तवुर भवे बढ़। 105।

रूपाद: रुधार बढ़के तवुर बढ़ार वे भवुष भवी दुर्ग उरु।
तें दुर्गे दुर्गा मित्र दुर्ग बढ़। 106।

रूपाद: अथ रुधार घरु प्रस्लित नये। भवुष भवी दुर्ग नये। भवुष भवी दुर्ग नये।
भीम वह दुर्ग भवे भवी। दुर्गे प्रस्लित वह रुधार वह। 107।
रुधार दुर्गादिर दुर्ग भवे। उरु रुधार वह रुधार श्रीदुर्गादिर। रुधार बढ़के निद वह ववे बढ़। 108।
रेख भवे प्रस्लित बढ़। रूपाद रेखे मूर्तिवे भवे।
भवुष भवी दुर्ग भवे। भवुष भवी दुर्ग भवे। भवुष भवी दुर्ग भवे। 109।
भवुष भवी दुर्ग बढ़। 110।

Page 228 www.sikhbookclub.com
नेवन: यदी झटके गुरु सिखी निद्र सम भग्ने चेत।
'उपरू भिन्न हटानीं ठीकरी एसिंस न ठींस।' नौ।

वेधी: उंग भिन्न ले भगु भुजन। उपरू भिन्न ले भगु समान।
'भग अरुधरानि ले है ते हैं भगु। वग नाहें।' हेतु शुभान। नौ।
मिन्न हर्षत ते घड घडम। जबु जुरहके जे में जुरने बझम।
मिन भरले जे जमले जे भगष। उपरू भिन्न मरू उठल जटाने। नौ।
'भगु ग भगु ठठल दले। भगु सर भगु दू रहां।' मिन ठठल जाने जाने।
मिन ठठल जाने मिन जाने। धुं घुं गुं खुं भग भगाने। नौ।
पंव धपाल्थ धान उठी। निम अभी गात वहल गाह।
निम में पेहले जाने मर्ज। निम में हर्ज। निम भरले जे विन्ह नथ मान। नौ।

नेवन: पंव जाने जे जमले जे जाने जाने।
'भिंस में हजु मर नें मिन उवल जाने।' नौ।

वेधी: में मिनाहार ली भज दे जान। में मिन है धाल जान दिष्ठा।
'निम ठठल हजू ठठल रगादिं। हेतु ठठल जाने आन निमाइंग।' नौ।
'में हजु दिखाए जाने हैं के देशी। मीम भीं हेर जिंदे दे मेंहीं।'
निम उजव रिपु भज दे जाने। निम भई भज मीम हुजजा। नौ।
मी मराभ भी भजन। जे जाने जाने! भी भजन मीम सरख।
'भजनम भजन माने जाने। मी मराभ भज मान जाने। नौ।
'उिनोसिं है मी मीनाहार। निम न द्या धाज जाने निम जान।
उजव जाने मान हर्ज जाने। नौ।'

नेवन: मी मी मजगज भिंस रहे जान मरघज धरघज विवाद।
आन सरंगें ठींस मर जान मे उजव। नौ।

वेधी: निम मिनाहार जानिम जान। जान बीजे जान मरघज धरघज।
जान बीजे जान निम मिनाहार। नौ।
'भिंस में हजू हजू ठठल देशी। निम बीजे जाने बिवादी।' नौ।
'भिंस गुरमे निम मान। मी मी मर जान मान। नौ।
'भिंस सरंगें ठींस हजू मर जान। 'विम मराभ मीम सरख ठुंक।' नौ।

नेवन: उपरू भिन्न रूढ़ ले निनाहार मर मराभ।
मे हर्ज के निम भिंस हेर जाने सरखग। नौ।
मिन ठठल जाने मिनाहार ठींस मीम सरख।
मे मिन हजू हजू हेर जाने मीम जान।' नौ।
चैपटी: उम मंगाण मह अरवाल बारी। 'बेन लड़ा जात गाथे सिंधी।
वेल एक्ट राव तत्तत अरवाल। वर चिता भो रेथे मुसलमान।४५।
बिमे दमु वी दुःस्क पुत्र ठहर। उनी भवितापी हुईं बेन्जी।
सिंह सिंह मह गाथा था। भव मे मरा मुसलमान जा।४६।
अवाल पुत्र भर थो साग़ि। भें रेथे अर लहान दूरग़ि।
बोले बेन्जी दुःस्क म अरवाल। मुसलमान बी लो मग़ि।४५।
उम उत्तर सिंह हुईं उठ। 'अरवाल तासि बात अधे दसे।
सो भें भें विद बाधा मग़ि। हुईं बेन्जी दे हुईं जी धार।४३।

माध्य हनुम बी उदी

२१५। [वास्तन दे हुईं दिग्गृह ती बारह]

रेतजे: भिन्न ब्रमोहर वे सिंधी भग सिंह रा घर सीठ।
रिम मंडवुइ घर घर दे ने धर्मेल्ली बीठ।१।

चैपटी: मुँह में उम मह जारी बिलाले। भवे अरवाल जात एके बने।
वहाल वचे भव पह जायं प्रथा। जात एके बने सिंधी वे बचत।२।
सर मी राफ़ हाने अरवाल। सिंह वीरे जात जाव निसर्ज।
सिंह में वह दुःस्क वती। जात दड़ ईश्वर पाये भवी।३।
मुँह पिंड निसर्ज निर्माण वीरे। ईश्वर ने ची दस घाटक ही।
पह देते निसर्ज भविता विचार। ईश्वर ने भग घाटक हल पथ।४।

रेतजे: भग सिंह वह दस कहें ने वे सिंधुव भवित।
मंडवुइ वे धर्मदश के पाछी दृश्य वे मग़ि।५।

चैपटी: उसतै चापी चापी जेहं वी उपे। उसं भव जात राफ़ लघे।
रेत बरक ईश्वर देव दल कहे। दृष्टि देव देव देव वे उपे।६।
ईश्वर ने बह दृष्टि वाल। भव मे सिंधी बेन्जी हुईं।
ईश्वर ने दृष्टि बेन्जी बेन्जी। जात दस ईश्वर ने तह स्थाने।
दृष्टि देव ने दृष्टि बेन्जी। धर्म धर ते उदी मिन्हाय।७।

रेतजे: ईश्वर भिन्न मंडवुइ। मुँह भाली दस कहे।
दृष्टि देव बुद्ध ईश्वर भिन्न ईश्वर ने जयी बन्हवे।८।

1. प.:-वास्तन हो भग भवित दासी।
2. ईश्वर आँ डे हुईं खेल मी।
चेष्टा: दानी देन, दान भाव मं जान। भीत गर, यहू शिष्य भद्राँ।
बीज गंध है चाहे गाही। दृढ़ निर्णय साजिंद्र तहसी धारी।
दृढ़ पवित्रता खट्टी पठां। तभि निर्वासित मातृ में बाह।
मांदू भूत गृह चैन वां उठाँ। किसी उखड़ उठे में घड़ा।
तुंहे वेलूँ लतखर लम्बा। मूंगे बीचे मंदी घम।
में परंपरां र तुट दे कबौ। यहू तुट मुक्त थत घरी सगाई।
भाव धैर्य उष अने तेवने। पुतान हुजे दौड़ घड़ै।
भीत तेष हृदं वेष निरुषे। नामिमां मातृ सृष्टि उदंघ भट्टे।

dेवना: दे अग बुधे मद दरे 'उै बती त अक्षी घड़ा।
पिरां प्यारदर पुकारिए मृत्यु र मांंजे मदू।'।९८।

dेवनी: अक्षी बती दौड़ घरी मातृष। हसि बैठि दी रने मातृष।
भीम जी बराबट दे मर मध। उबरभ बती सजलेमी अहं।१।

dेवजी: भीमें बुझे भावभी धृतु गाढ़ी घराणी।
वां द घावी भक्तमामी हृदी घटैछ।
अयामधु भावें पुजामा अने उठामे।
भीमें बुझे भावभी धृत घरे मृ भये।
भीमें बुझे भावभी मब दूल वरानी।
नीलह भानम मब भुजी मार्ग भिलमें बची।
बे ठंडने बे घर तराजे बे भावी ठेणी।
विल भूजे विश उत घरे हीं मब तूट घरी।।९२।
उक्तने है बैं बति भूजे 'छ्रिं 'धेरि पल्लि धिल्लिए।
बधेंने भावे पुत उैं धूरम वां ठंडवां।
भूत व्यापार मुख अखेर दौड़ी दी देवा भवे।
ैंबे मां उैं हाँ टसी से भारी धिल्लिए।१८।
भरों सारी भिक्ष बूढ़ उं टेढ़ा ववे।
ने माहें बत घद वराज है बैंबि बेति उवाज।
तै मब सारी नर गृह म स वां धरवाहे।
दिः हैं महारों दैं, बाजी, बे छीं भवे।१६।
पे मुह टेढ़ा तू उवाज है हें हर्ष पिड़मा।
बार पूजने विभाल्यदर बे रहू अभास पड़ा।
बार पिरण छीं जीतिए बत बत बलक घटा।
भीम खिरे उतर वे ठवी मृही घटा।२०।

1. प्र.:अनविते । 2. प्र.:धरहे । 3. प्र.: धरे । 4. प्र.: चरवहे।
ਦੇਵਗੜਾ: ਨਹੀਂ ਮੀ ਮਿਲਦਾਂ ਉਪ ਵਰਤਾ ਹੀਰਤ ਵੇਡਾ ਵੇਡਾ।
ਦੋਹਨ ਹੌਠ ਵਿਖ ਵਹ ਨਾਲੇ ਹੀਰਤ ਚੋਠਾ ਚੋਠੀ। 21।

ਦੇਵਥਿੰਗ: ਦੇ ਮਿਲਦਾਂ ਮਤ ਨਹੀਂ ਮਨੀ। ਦੂਸਰੀ ਜਾ ਅਚਮੇ ਭਾਰਵ ਭਾਰਵ।
ਮਿਲਡਾਂ ਰੱਖ ਮੈਂ ਮੁਲ ਪ੍ਰੋਬ। ਮੈਂ ਹਾਂ। ਦੇਵਥਿੰਗ ਵੇਡਾ ਬਾਜ਼ੀ। 22।
ਸੁਧੀ ਮਿਲਦਾਂ ਸੁਧਾ ਦੀ ਨਾਲੀ। ਮਿਲਦਾਂ ਚੋਠ ਦੀ ਨਾਲੀ।
ਨਾਲੀ ਹੌਠ ਵਚਾ ਬਚਾ ਬਚਾ ਹੌਠ ਵਚਾ। 23।
ਸੁਧਾ ਨਹੀਂ ਉਹ ਪੁਲਕ ਭਾਰਵ। ਸੁਧਾ ਨਹੀਂ ਉਹ ਪੁਲਕ ਭਾਰਵ।
ਸੁਧਾ ਨਹੀਂ ਉਹ ਪੁਲਕ ਭਾਰਵ। ਸੁਧਾ ਨਹੀਂ ਉਹ ਪੁਲਕ ਭਾਰਵ। 24।

ਦੇਵਗੜਾ: ਵੇਡਾ ਪ੍ਰਸਤਾਈ ਭਾਵ ਉਸ ਤੇ ਪੁਹ ਅਭਿਨ ਰੇਡ।
ਵਹੀ ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਵਚਾ ਵੇ ਘ਩ ਅਭਿਨ ਰੇਡ ਹੈਡ। 25।
ਸੁਧਾ ਦੀ ਹੌਠ ਰੱਖ ਦੀ ਦੋਸਤ ਵਧਾ ਹੌਠ ਮੌਜੇ।
ਬਨਾ ਪ੍ਰਸਤਾਈ ਵਚਾ ਵੇ ਘ਩ ਉਸ ਜੁਗ ਵਹੈ। 26।

ਦੇਵਥਿੰਗ: ਉਸ ਪ੍ਰਸਤਾਈ ਜੀਵ ਬਸ। ਉਸ ਨੇ ਵਰਤਾਮਾਨ ਅਭ ਭਾਰਵ ਭਾਰਵ।
ਭਾਰਵ ਸਟੀ ਪਸ ਜੀ ਥਾ ਮੁਲਾਖਾ। ਉਸ ਨੇ ਅਭਿਨ ਰੇਡ ਭਾਰਵ। 27।

ਪੇਥੀ: ਮੇ ਪ੍ਰਸਤਾਈ ਜੀ ਵੇ ਬੀ ਵਿਚਾ ਜੀ ਥਾ ਮੁਲਾਖਾ।
ਵਹੀ ਦੇਵਥਿੰਗ ਹੌਠ ਦੀ ਵਚਾ ਹੌਠ ਮੌਜੇ। 28।

ਪੇਥੀ: ਮੇ ਪ੍ਰਸਤਾਈ ਜੀ ਵੇ ਬੀ ਵਿਚਾ ਜੀ ਥਾ ਮੁਲਾਖਾ।
ਵਹੀ ਦੇਵਥਿੰਗ ਹੌਠ ਦੀ ਵਚਾ ਹੌਠ ਮੌਜੇ। 29।

ਦੇਵਗੜਾ: ਉਸ ਦੀ ਦੋਹਨ ਦੀ ਵਚਾ ਵਰਤਾ ਹਾਲ ਨਹੀਂ।
ਉਸ ਨੇ ਅਭ ਭਾਰਵ ਭਾਰਵ ਵੇ ਦੀ ਨ੆ਲ। 30।

ਮੇਥਾ: ਉਸ ਨੇ ਘ਩ ਵਚਾ ਵਰਤਾ ਘ਩ ਨੇ ਘ਩ ਭਾਰਵ।
ਵਹੀ ਦੇਵਥਿੰਗ ਨੇ ਘ਩ ਘ਩ ਵਚਾ ਵੇ ਸਕੀ। 31।

ਦੇਵਥਿੰਗ: ਉਸ ਦੀ ਦੋਹਨ ਦੀ ਵਚਾ ਵਰਤਾ ਹਾਲ ਨਹੀਂ।
ਵਹੀ ਦੇਵਥਿੰਗ ਨੇ ਘ਩ ਵਚਾ ਵਰਤਾ ਘ਩ ਨੇ ਘ਩ ਭਾਰਵ।
ਵਹੀ ਦੇਵਥਿੰਗ ਨੇ ਘ਩ ਵਚਾ ਵਰਤਾ ਘ਩ ਨੇ ਘ਩ ਭਾਰਵ। 32।

ਪੇਥੀ: ਮੇ ਕਾਲ ਬਿਨੀ ਵਰਤਾ ਭਾਰਵ।
ਵਹੀ ਦੇਵਥਿੰਗ ਨੇ ਘ਩ ਵਚਾ ਵਰਤਾ ਘ਩ ਨੇ ਘ਩ ਭਾਰਵ। 33।

ਪੇਥੀ: ਮੇ ਕਾਲ ਬਿਨੀ ਵਰਤਾ ਭਾਰਵ।
ਵਹੀ ਦੇਵਥਿੰਗ ਨੇ ਘ਩ ਵਚਾ ਵਰਤਾ ਘ਩ ਨੇ ਘ਩ ਭਾਰਵ। 34।
पार 8.4

मे तम में लट बैठ ठ मीन। हिम चत भाग चढ़े टीम।

ए सुत टैंडर धुं धुं उत। हैमे हृद टैंड नछ।

टैंडर: हिम छिक सुरभि मत रहै भत भैं बालाई भी।

मज्जिय खुदू तेज़ हिम दिम टैंडर दिय मीठत। 84।

टैंडर: अभ टैंडर वागप गच पजने। बेह बवी बल तप उठने।

घ चढ़े बाल घर गए। 89।

टैंडर: दिह धार्म भिग ठ तहै। महिम दिन फिराम तेज़।

उपद धार्म में भिग जाने। मध महिम ले पुजार है।

टैंडर: दिह धार्म भिग ठ तहै। टैंडर घाँ व भाग बजने।

टैंडर: हैन शेष बाल आ भुवन। 80।

‘भूष करे भाग रहे भूष। घठब घठे मुखे ठुमर।

इद व वाराम मुँ तेज़। तही सुना भिग भाग में। 89।

टैंडर: सीताए दुह भाग मब मुँहे अंत घाट।

घाड़ भूष हाल में में वेदे बीते अभिने। 82।

टैंडर: ते दे घनार तै अभ उजी। उंगे आम तीरत रही।

विज भगते मब रिलाप्त। भूतें टैंडर बीते उबार। 83।

टैंडर: हीम बै दे रिद बेके धुरान। भवल रात व घड़े मुसाब।

तहे देहे करु भे अभिने। टैंडर वै करु घड़े उबार। 89।

टैंडर: हैन वेदे बी अभी घाड़। घड़े बीह तवि है वेदे वार।

भागे घडे चढ़न ठ मुँहे। हैटे वेदे घडे बीह पुरे। 84।

मध महिम लेकर-

टैंडर: हैन देहे लट वे में घड़े वे बाह।

भूजे बाल में चढ़े वे बाह। 85।

टैंडर: वे सुर बेडे भाग बजने। अभिने चेत धरी कूदा भां।

चिक उड़ग दिन भाग्य के तम। 89।

टैंडर: उब टैंडर धरु गच भत घाट उने विभ।

घाट भे टैंडर दिह है दिन दिने बाल घाट। 85।
मध्ये महजत वे पूर्णता वी

२३४. [घमण्ड हूँ प्रमाणी बुधु नी रे पिन्दी]

संपूर्णता: *हिंदुमदार है भीतर पुनः। वहें माहू दें हाथ परिवर्तित। में तेह के वघ नीजने नाचित। वहें धीतर कितने अध मनात।

विन्दु भीतर दिल दिल में उरण। मह भीतर वी पीटी है रे रीत।

पुष्प में पुष्प रेह रे त उल्ल। नेहु अल्लहु मंडु उर नाचान।

विन्दु अह भु मधुभाग। धूल रेहे लड़े दिल में सान।

पुष्प वी मंडु रेहे वर्ते। खेत धुलभाग तैंहें राखे।

वर्तभाग में हे वह भुआ। मह धुलभाग दे वह भुआ।

उह है पुष्पबी भुआ भूलभाग। हे हूल वर्ती मु मानी वर्ती।

रेखा: हे उल्ले उम धीतर लकी है पुष्पबी भूलभाग।

पुष्पबी धूलभाग है पुरी को भालो नेतर दे रेखे।

संपूर्णता: उव रेखा मह घंटा एली। 'भम हे हे हूल वर्त रुण ते।

धूलभाग है हे उम भरे। उम दी पुष्पबी हूल वी चरे।

उम भोगु दी पुष्प वर्त वचगित। भवाणु मत्ती भरे रहे वचगित।

भरे भरे भु मधु वर्तभाग। उव पुिंदित वे वर्तभाग चरि।

उव पुिंदित वे खम वर्त्र नेहु। 'हूल वर्ता मत्ती रेखा रहे।

मत्ती चरे उभार नमुल। रेखा नमुल मधु वर्तभाग।

मनुष्य उभारे मत्ती धुलभाग। नेहु रहे नेव रहे बच्चे।

अध उम हूलबी रेखे। वर्त मह है रे पुिंदित।

रेखा: उव रेखा पैं वस्तिवे 'धितर खिरू रेखा धुलभाग।

उव वर्त बरे रेखा उभे भरे हूल पिताल।

संपूर्णत: उव घमण्ड पैं वस्तिवे 'धितर खिरू रेखा धुलभाग।

उव वर्त बरे भरे हूल पिताल।

* दशीत वर्तित है
मेनठ: आँगो देसड शिष्ट वाघात चुकरे से चंदिये ।
बिहू भाव वसवानि भृज दे मचल रुपूरिशति ।

मधव: “धुतमाल धम्माहा वीरा रीति विषय विषय ।
अथे बृज र देवी विषय सध वीर भर्माल ज्ञानितिः।”

(अमा म: 9-360)

सेपह: भृजो देसड वा सुमान । भुजन अभावी अस्पत भृज ।
वाज़न वे रक्त भले जूनप। मेनठ पूरे पे दिये वे लम ।
विह रवमीत मिणेन वी बरी। उघ शूरगी वाज देमी उबी।
देसड वा उघ वघात घुच्चर । गृह दम वे गृह दुभागणे ।
भृजन भृजन दिना दिना घुच्चर । दिना दिना दिना दिना घुच्चर ।
विनेन दे दरभ वल दव । में रत्न दारे वि चरित वल ।
सेपह: भृज देसड वा सुमान । भुजन अभावी अस्पत भृज ।
वाज़न वे रक्त भले जूनप। मेनठ रक्त वे लम ।
बिहू भाव वसवानि भृज दे मचल रुपूरिशति ।

मेनठ: नाइं भृजन वे उघ विषय सुमान देवी बायी ।
भृज चाहै शिलदन चाहै उघ वाढ भर्माल विनशति ।

सेपह: उघ देसड वे मारी हृभरप । उघ देसड वा वार भी वाषा ।
तम सागर गाँव ऋषभ म भर्माल । दूर भृजन भर्माल दिना वाली घाटी ।
सेपह: उघ देसड वा मारी हृभरप । उघ देसड वा वार भी वाषा ।
तम सागर गाँव ऋषभ म भर्माल । दूर भृजन भर्माल दिना वाली घाटी ।
दै जी मानि राधार ते बुध। ज्योतिर दिल बहु दिखते बुधः।
उध ज्योति भामाति भजानी। दलवाद संतान धाम मू भालही। 20।
राधा ते ज्योति दुर लंके। शेत पीत गी चिन्नक बसे।
बुध राधार राज्य लंके। साह दुर्गे पै जी मब लंके। 21।
भीति भीति मह दूम भालह। देखो उध देखे महान।
उध दिल अथ चेहे भजान। ‘भाली साह मंद लंके तै महान।’ 25।

देवता: तीव्र राष्ट्र र वादारी हिंडसंघ सिर गावतेह।
छुर्वथे जाने सिर पहे है हिंड भागो तै देखे। 30।

देवधरी: उध राधार चि ऊठा घडारी। ‘संज्ञाति भानो पत्र उध गुरु।’
छुर उध वहेरेह लीत बनारी। छुर्वथे जाने रहित जाबूरी। 31।
उध संज्ञाति माति भास्त विदिर। ‘उध उध पत्र दुमे विदिर विदिर।
उध दुमे बहु देहे लाह। हिंड तेज़ि बन पैहे जाबूरी। 32।
उध वहेरेह लीत जाबूर। राज्य मागे उध दिल अरे।
उध वहेरेह जाबूर। उध वहेरेह जाबूर। उध वहेरेह जाबूर।
उध वहेरेह जाबूर। उध वहेरेह जाबूर। उध वहेरेह उध वहेरेह जाबूर। 33।

देवता: मां जी मातिरथ वष तेहे अभ गुरु दश भालह।
कल्य भीति भजानार। साहे जहे घर भजानार। 35।
बलगाहा जू जू सिसे में जहे दिखाने भालह।
बलगाहा में बलित जै में देखे कुछ बलित। 36।

देवधरी: बलगाहा दृष्टि नाचे भालह। अथ दिखाने तै वहेरेह पत्रारी।
बलगाहा जो धाम दुम। भुजानी मंद चेत वहेरेह। 37।
बलगाहा में सकार दिखाने। सकार देखे वहेरेह मंदार।
साही बने से नेहे पुत्रार। बलगाहा जू पुत्र फलित। 38।
बलगाहा उध देखे चहे। कल्य बी हरी बाहे वहे।
बलगाहा देखे देखे बांध। उध भिन्ने वहे बांधे जी मंद। 39।
मेहा बने उथ भिन्न है भालह। विदिर उध जी बलित है भालह।
भिन्न बलित देखे बलगाहा! कुछ दुर्गृह जै में देखे मंद। 40।

देवता: बलित भजानार वष जै धाम मू मंदारेह भालह।
बलित वहेरे तै देखे कुछ भुजानी देखे पुत्रार। 41।
उन घड़ियों के साथ अहमद ने मैं निउएर भगवान।
ये मैं साज़ीद सज जात मब उम नही धराति। ४२।

उंथी: उन निउएर ने साज़ीद भगवान। 'अहमद की यह मेरे मुंगुतुरा। घड़िया साज़ीद में ब्रह्म भए भए। अब में हिम बा भगवान।' ४३।

ब्रह्मुल भए ने हिम सज़ा। हो मेरे मक्खू वटवट।
अब हिम पृथ्वी में भाँदा कूल भए। हो मेरे महबूब सज़ा। ४४।

घटे यथायथ विज लिख लिख घरें। मेरे घर अमेर लिख तांती नहीं।
उन घड़ियों भागा दे वह नहीं। वास्त अर्थाते मुंगुतुरा भागा। ४५।
'अन्य मे उन वरणा धरा। धरुब मेरे से भागा भागा।
मैं सज़ा हम विनु मुंग वटक। हो मेरे आर गीत अय्री। ४६।

उंथी: हो मैं सज़ा में सज़ा हो भागा भागा।
अन्य निउएर ने फेरैँ ने मेरे महबूब भागा। ४६।

उंथी: है भागा भागा भागा भागा भागा भागा।
भागा भागा 'अन्य विनु मुंगुतुरा। मैं से मक्खू भागा भागा।' ४७।

उंथी: हरे हरे घड़ियाँ बातें हरे हरे घड़ियाँ। अहमद भगवान जी हृदंद हार्द।
मैं बातें हरे हरे घड़ियाँ बातें हरे हरे घड़ियाँ। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
वरणा भागा दे भागा भागा भागा भागा भागा भागा। वरणा भागा दे भागा भागा।
ऐतराज: मृत कष्ट वृहिम वती 'मे धिरिविव सिद्ध वनविव
धिरिविव उनवु दुकालिन े सीतो तिरे स्वरुपे'। ५२।
ऐंपरी: दुयिम मुहिव ये वहर इरिवे। 'भया भाम भाम रिरे दुवाँ दुवाँ दुवे'।
मे भया औि धे बरे दुवाँ। 'वर इरे रितां बरी घरिवे'। ५४।
पुष शीर वत भाम वत दुवे। तिति धे दिव रिकि थाने।
मुहिव वे वधु सालिम। नवं धे रितां धे नवं नवरी। ५५।
मैंने धिरिविव है उह नही। नमुन ननवां व दहि अभवाऴ।
नवं धिरिविव दिघ घात जाने। बंधे दिखावे वे बिर अभवे। ५६।
अब अभिनाम नहीं तर घात। वहर धिरिविव वतजे बरी घात।
जाय धात रता तर ननवार। मे सीह आपे भाचो उठिये। ५७।
ऐतराज: वृहिम वषाठ वत ऋठने घडे अभें वक।
मिन्नार अभिनाम मे वकी है आमे बरी दिभाव। ५८।
ऐंपरी: नाहि घात हे भेंधी वकी। है भाम दिरिव इमली बाली।
है उरुजे भेंधते बालक। ना रुजें धे दिरे रनरा धाम। ५९।
उरुज वे देरे भे। ने तां धुरे धिरिविव नही।
मैंने गन धात युबाठ पुलिजे। उदव दुवां वी धुरे दिखावे। ६०।
उदव रतावे वे इहा हृदै। पहुँच वरीग्रंह पनविश्व युबाठ।
उघाद घाट मे गाँव ताजे ताज। ६१।
ऐतराज: दिति भे धात हे दिकिये इहा रतव भाति।
ढवान दुरे दुरान वे दिच मैंने दालिव भाति। ६२।
मैंने मु ती ली ली भान भे घात भान उदं बाल।
बेसवी धत वे मेंवा तिहेल बिनविल सैवे धजान। ६३।
ऐंपरी: मिन्नार व्री युबाठ बिभारी। भेंध माम घडे इहा चाढी।
वही माति वही बेहतरी। दिंयि मिंयि माम गमर दिन। ६४।
ऐतराज: वस्थ भेंधत वे उव बेंडत धनावु। मेंउव।
आें बिजु हुहे हे वानवेल धत भावते। ६५।
ऐंपरी: दिशामित वे यी विरिव। मृत्यु भूवानी मेंवा सिखावी।
ढवाने वे इहां खेंद बिघाव। दंडक रतवी माय डूहामे। ६६।
भूवो वे इहां लोन रतल। बिनविल घात बी ठाट।
घात वे उवा मेंवा लवं। दित घात वे भेंध है आपे। ६७।

१. वस्थ दिवै। २. भात वत वै। ३. महीनां महीमाँ।

Page 238 www.sikhbookclub.com
धिन्तल वर दृष्टि देख दिखाने। तेह घाना दिन भूला दिखाने।
धिन्तल ईरा हुई दिखाने। लेखाज लीला में घड़ियों रखा। २२।
उत्तर धिन्तल तरी भगवान। हुईं मदनी आफनी तीन।
सप्तति धिन्तल करने वहें। लालू बुझे लालू सच्चे भरे। २३।
भूले भिखार उठत अभ भड़ा। नुमा। भगवान भें घट घड़ा।
पीढ़ि मरे उठत परे जात। उठवे पते पीछे पीछे उठवे। २४।
उठवे पते सा घड़त घड़त। आफे भगवान किशोर।
धिन्तल ही घड़त घड़त। ‘ब्रम्ह भगवान आफे भगवान।’ २५।
घड़त बड़ी ‘मैं कहूँ पादरी।’ तिर उठवे में मुखे घड़ी।
उठवे धिन्तल होंगे सच्चे। ‘तिर पादरी तड़ी उभे।’ २६।
तिर पादरी रुकवे बेही। जातीं त जा और हैं बेही। २७।

मेलार्ड़: रुकवे देखि टे टेरे, तम भण्डर बढ़ तांति अघ।
‘इम वी जे आदिये सटि भम धिकि दिके दिखाहिये।’ २८।

केपूरी: भिखारे आफे मेला हूँ आफे। है भाज भुजी हुईं दिखाने।
तिर उठवे उभ उसे रखी। घड़त है तांती। भगवान। २९।
भूलू हैं ही भाजकर। हुईं पुष्पवर्ण देखि में वरे।
घड़त हुए उम घड़त बरे। नुमा उभे। भू कू ये। ३०।
इसे निर्मण घड़त भूलिया। में भाम है देहे घाजिया।
घड़त भाम टूट उघ जयी। नहूँ देह हव ले टूट ले जायी। ३१।
पती जमी दिम देने भर्ती। लाहू वरत भर घड़ा वहड़गिट।
‘घण्टे बड़ी वी आफी घड़ा।’ तिरू धीर उठे जड़ी भाण। ३२।

तेहरार: पते भूलू जे उठ लाहू भाणी उठ उ जय।
जात चब्बिशबार मयास रहें। भीम जे उम दिखाना। ३३।

केपूरी: घड़त कहूँ घड़त दें। घड़त उभे में घड़त भें।
‘पुष्पवर्ण धिन्तल ही दिखाने।’ भूलू जह रिहूँ उघ। ३४।
अभ में भाम भें वित वट। अभ विन भाणी मदने वरे।
वें भजे सभार मदन। तिरी धिन्तल भाणी घड़गिट। ३५।
विर भेंट भेंट विन घड़। पते नाकी जमी भाणी जय।
ौमी भूमी में जरे। जय जिये जय मोम में उठे। ३६।

* प्र: -शिवार = देहरा, राज।
पंजिल उद्घ पृष्ठम

रेतन: उद्घ घायल है भग दुले यही घटना भर यात्रा।

धिरावत भी तथाकथा चढ़े रहस्य रह यात्रा। ५२।

रेयल: उद्घ घायल वे में घुंट आफसी। ‘पढ़िए सत्ति भग धक सत्ति।

मध्य भाग मिति घटना यात्रा। घटना घिर वे पुलके यात्रा। ५३।

उद्घ घुंट रेंदु उद्घ युस्फान। 'उठें मुझ पीता भग हमारा।

पूर्व में रही में डरे यात्रा। वर भवाला वे लगैं यात्रा। ५४।

है रेंदु उद्घ उद्घ उदिते मात्रा। हृदय सत्ति अन्तः रहे यात्रा।

मेरे उद्घ समतो वे सम। पुरोव वे उभारी आया। ५५।

रेतन: धूम ने घायल नखले বতি মেঁষি দিয়া অযত।

মাইঠাত মুখে বধ করে হंংতি মধ সত্তি লাগ। ৫৬।

रेयल: हित घायल पूरे घायल मुलायम। 'उठें बढ़ ठें विचित्र हँगाय।

उद्घ भाग धर्म बोधाक वे भाव। उद्घ धर्माक वे भाव अर्जी। ५७।

उद्घ महे ठें भग धर्म बोधाक। ने उठें मे उद्री मानाक।

उद्घ उभारा वे बढ़े जाता। उठें भेंट ठें पानाक। ५८।

उद्घ महे ठें बढ़े बनभां। पृथु धर्म ठें उद्री उनभां।

उद्री धिरावत दियुवाहाक। उठें भेंट ठें भाव मानाक। ५९।

रेतन: उठें भाव भत में वनजे रेंदु उद्घ रथाय।

अघ नाष मे वीरनाथ अघली सम बढ़े। ६०।

रेयल: में माईळूल मूत बले विश्वास। बैठा वैसे भंजा थिने उदवास।

बलजे ‘समतो भग पाठि दे इंद्री।’ घायल उद्घ ठें वैसी थेंदी। ६१।

माईळूल अट इंद्री पाठि। थिने रहे ठें बैठी भवाली।

‘बैठा अट भूंतर बैठी भाव। माईळूल इंद्री माता। ६२।

इंद्री ठिठी वहूं भेंट ठें उठी। हित उठें मे उन दे ठें।

बैठा भूंतर अट मे मैं ठें। माईळूल ठें मध उठी। ६३।

रेतन: बैठा घरल मध ठेंग ठेंग पत्र वे घड़खी वीर।

निन्म जग्घन्द ठेंग वार ठेंग मिति ठेंग ठेंग मीठ। ६४।

मेंतर: मध घरल बलजे ठेंग ‘बैठा घरल मध ठेंग ठेंग।

बैठि मे भेंट वैठि ‘हित भवाली ठेंदिंगो।’ ६५।

रेतन: उद्घ माईळूल हे मे बलजे ‘भग घायल मुखःराय।

हित पूर्व सम गहरोड़ा उद्घ हे ठें ठें उठे।’ ६६।
भ्रू: भुज मंडित वे घाड़ घाड़ ने डांवर।
‘देवे सैंडे गुड डांदे नी आध।’
सैंडे सैंडे गुड़ भने’ सिंह छटाक है।
देवे सैंडे सैंडे अभाव गढ़ घटना है।

dेवग: उज मंडित घाड़ घाड़ दे देवे सैंडे नी।
भ्रूः लिंभाड़ बे-बसा तर त मार्ग लेटै।

हैर: भुज लिंभाड़ जीत नी भस्मुः चीड़।
खेड़ न सही दिइँगे लिंभ संस है जहाँ रही।
भ्रूः लिंभाड़ ने बृज बहै निहिे उठह।
मैं भल भवाल इज़ भरी चंडी उठहे।

रघव: उज मंडित घाड़ घाड़ दे देवे सैंडे नी।
बनेरी गाम भ्रो मिल दे हिंद नीटि गुड़ा।

रघव: उज मंडित घाड़ घाड़ दे देवे सैंडे नी।
‘भभी बुड़ भिंस उम मिल उठहे? भभू उम नवे भवीड़ी रहे। भभू बुड़ भिंस उम उज चलह।’
हिंद रघव बड़ी निंदा नी। उम भवाल ने मिल ने भीट।
उम ने घरी नमि धारी। भभू देवे भिंस उमटि रहिह।

रघव: मैं उम भभू भव भव दे देवे सैंडे नी।
‘भिंस बसा ने हृदये अन्त भुरी बनें।’

रघव: भिंस बसा बस नी भुरी बनें। भीत भुरी बनें तर बहा।
घरते हे मु भिंसहुँ बने। भिंसहुँ हे हिंद अभिष्ठ मने।
हीरें हे बुड़ भवीड़ी रही। भभू दे बुड़ भवीड़ी नी।
हीरें मार्ग बने सहारी। मृदा बनी भिंस जने भभी।
हीरें मु भव भबा में होटी चुकी। मृदा घरी सिंह घरी।
इंसे हृदये मु भव भवाल। बने हिंद बड़ी भुरीभवाल।
हीरें हृदये मु भव भवाल। बने हिंद बड़ी भुरीभवाल।

रघव: हृदये सैंडे घाड़ घाड़ दे देवे सैंडे नी।
भ्रूः मैं चार बने रहे जो मुरु मिल उठह।

रघव: मैं और्जिहं भिंस बसा बहारी। ‘भिंस भुरी बनें तर बुड़ी भभी।
‘भिंस मिल रही चटरी जमाली। मैं मंडित नी भवाल घरी।’
 abrej

940. [भ्रमित तिमिह जी भाेंज रेंज]

रेंजः उधू सिङ जे दिम भवीमिह जी भद्देगित।
इे योधी भिङ दिङ जे मे भव वहे पुतागित।१।
हिंत उधू सिङ जे उधे पुट सटेङत रंगित।
योधी त्रांगित सिङ जे अधितकीहल सतवर रंगित।२।

रेंजः हिंत सिङ भद्देगित मह उप संदे। 'सिङई भव भिङ जी रंदे।
सिङ भद्देगित मे बहे अन्तम। 'सिङई मह भिङ बही भाग।'३।
अविहार बहुके सटेङत सहित। योधी बहे चीन भागित! वर्धी विक्षा उधि हिंडित रंदित। मह महाद भा सतवर विनित।।४।
सिङ भिङ जे उधे मुह रहित। सिङ भिङ जे उधे महाद भाग।
सिङ भिङ मह महाद भा भाग। 'अल्ट जे सिङ भव भिङ जी रंदे।
मह महाद भा सतवर विनित। उधे उधे सिङ भव भिङ जी रंदे।

रेंजः सिङ जे भव मे के हे उधू सिङ जे भव जे झंटर।
सिङ जे भव भद्देगित ते भव के झंटर अंदे।२।

मध्य भवध सिङ जी

941. [भ्रमित भवध सिङ]

रेंजः महै मध्य भवध भुमी भवध सिङ जी सेट! 
हैई जहे उधे भवध जे सिङिजे झंटरे मेंति।१।
देवधरी: घरउ तेह धीर भुजाह रडी। भगव भिंड वे पवनत लडी।
मेंट कै घट मिलह मध्य। सह धडड घट अहैं त उँचा। २।
भगव भिंड तै पुह दुःख मध्य। सह महह उड़ि उड़ि घटे।
सह एरिंध धीर धिंध रेवछात। भगव लडल वे उड़ दिभान। ३।
मिलह राहुकर उड़ घटां। उड़ि रुखसफ निढ धडड भिंड।
भिंड तैं दुःख धेकड़ मांडी। धीर उड़ किंव अबिंड भंडां। ४।
भेड़ किंवे भिंड भे अहैं राघ। भेड़ किंड धेकड़ से घट मध्य।
धूँड़ उड़ किंड धेकड़ किंड मांड। भगव भिंड उड़ ये मुठ पाछे। ५।

dेवधरी: ‘उड़ भिंड ती उड़ नावे अधिकवाल मध्य लगाए।
भी लगाए उड़ भिंड उड़ भिंड भंडां।’

dेवधरी: लोक निधि नित बजुर राघव। निधिंध दुमां धीर घट पता।
धेड़ में बजुर भीम निधिंध। उड़ भिंड ने नित निधि निढ घट। २।
धेड़ में भेड़ नित भाविंध घट। महह भेड़ में नित उड़ुकर घट।
भिंड येकड़ से सूप्त भाँड़े। भिंड येकड़ ने उड़ भिंड नम लगाए। ३।

dेवधरी: भगव भंड वे भीम घट, महह भंड वे उड़िंध।
पदह रिढे, भिंडी रिढे, नित उड़ भीम लगा भाँड़िंध। ४।

dेवधरी: येकड़ येकड़ उड़ भेड़ किंड भिंड अड़ी। भेड़ किंड नित भेड़ किंड घटां।
पदह रिढ किंड भिंड निधिंध सहिंध। चढ़ु भेड़ घटां: पदह रिढ किंड। १०।
मुखां किंड संगव मुठ ठांध। चढ़ु वे चढ़ मिल सह नामे अबिंध।
येकड़ येकड़ है निढ भिंड रह राघ। भीम भी मध्य वृद्ध दिंध किंड। ९।

dेवधरी: भभिंड वभाउ भिंड बाँध बजुर में नित घटां।
विनज तम येकड़ वे निढा घड़े रूपां बजवाली नाथी। १२।

dेवधरी: येकड़ किंड किंड में भभिंड निधिंध। भिंड किंड में भंडां भभिंडी
बाँध येकड़ मरा नित घटां। येकड़ येकड़ किंड वभाउ भिंडी। १३।
नित उड़ुकर वभाउ येकड़ गायडीर। भभिंदी भंडां वे विहिंडी निधिंध।
नित नानान मिल सह तेड़े। उड़ुकर नित निढ वभाउ घटें। १४।
मिल भी भी भे जे निढ किंड किंड। ‘उड़ किंड में भंडां घटां।
भभि मंदा वे उड़े गायड। भभि मंदा भिंड उमिंध रेकृ।’ १५।

dेवधरी: मिलह म अंठ पुड़ि बनजे: ‘उड़ उड़े भभिंड भी सम।
भभि म भिंड सहेज वे उड़ किंड वे पाँछ।’ १६।
माध्य उन्तः सिंध वे बूढ़े नले।

142. [बजार उन्तः सिंध नी रे मेरी एका]

देवरी: उन्तः सिंध नतः हिंद वातः बभादी। मुखः वेन्द्र भा भो भिड़ गर्डी।
उन्तः सिंध नतः बुधजन। इसः खितिरहर भा भिड़ लिपण।
शान्तिपुरी नी धाट घाटी। अवार अवार बिंदु बुध महरी।
मुःख नतः बिंदु मेन्द्र बये। वाद भेंडrams नतः लूह लयाें।

देवरी: उन्तः सिंध नी उषः बढ़जे 'सूरे मह घाट नतः।
उम भुमसे र दिवालिबिर उम भिंदु देनट भाग्य।

देवरी: मे उम उभाई श्रद्धा बिघाहैं। द्रू उम वे उम गेमे बये।
भे मे से दत्त सवट जी बये! द्रू जी उभाई गाजा बये।
उभाई देवे मे दिन सिद्ध। मे उम अभे सेटु भाइ।
अपहर उल पेट वधः वे पूजी। देनट भेनः वे उपाल उभाई। प।
बछ दैवी वजः बांटें सिद्ध? उम वे उम भिंदु देनट मतित?'
नतः भोजः वे बूढ़े बढ़जे। भुव वे पेटा घरः बिन्थः बये।
देवता: हिंद कहते हैं कि तब यह नहीं होगा। अब तब तक नहीं होगा।

देवता: हिंद कहते हैं कि तब यह नहीं होगा। अब तब तक नहीं होगा।

देवता: हिंद कहते हैं कि तब यह नहीं होगा। अब तब तक नहीं होगा।

देवता: हिंद कहते हैं कि तब यह नहीं होगा। अब तब तक नहीं होगा।
देव निमाने श्री वते। "पहला हित ची हा वते"।
ठाने मे पुरूष सुध महाम। माता नींजे उठू मिह रुप। ॥२॥
भक्त मे दिवाले भाज। दिने वती ची तवीचत माघ।
दीष ते मती तवी वती। माझे हरष राने देवतिह। ॥२॥

देवजा: तक्षां धून भुजी वती भुजावट दही समात।
दिवाली दिवाल सही भी धुजीभक्त भुजावट ॥२॥

देवति: देव ने दिवाले भी उभ देव स्वरूप देव।
"उद न बुध देवे" देव ने देव ने देव वती वती। ॥२॥

देवजा: दीष वती दिवाल स्वरूप देवे पुष्प देवे निमाने दीष वती वती।
"उद न बुध देवे" देव ने देव ने देव वती वती। ॥२॥

देवति: वर भमी उभी युढी बोध। वरे वाल पते वते वते वते जेवे वते।
"उद न बुध देवे" देव ने देव। ॥२॥

देवजा: भव निऱवट घर निकट अभ उज घर उज।
दिवाली दी देववर भै ते वह उभी वत। ॥३॥
माधि ठुम्रा वे उमड़ीरे सात रंग तर हो भल्ल नी।

१४३. [ठुम्रा त्र भिन्न ब्यंग एका]

देववर: चुम्ह त्र ठुम्रा ठुम्रा वे उमड़े तु मु में ब्यंग भिन्न नी।

पैर है जिनबहँ भी तो है। हारे मही ऐके चूहे चूहे।

लेखी: सब बुन बुन बुन चूहे चूहे। सब चूहे चूहे चूहे।

जिन चिन्ह तो ठुम्रा उठ गुरुए।

ठुम्रा त्र भिन्न ब्यंग एका नी।

हारे मही ऐके चूहे चूहे। सब बुन बुन ब्यंग एका नी।

हारे मही ऐके चूहे चूहे। सब बुन बुन ब्यंग एका नी।

ठुम्रा त्र भिन्न ब्यंग एका नी।

लेखी: सब बुन बुन बुन चूहे चूहे। सब चूहे चूहे चूहे।

हारे मही ऐके चूहे चूहे। सब बुन बुन ब्यंग एका नी।

जिन चिन्ह तो ठुम्रा उठ गुरुए।

ठुम्रा त्र भिन्न ब्यंग एका नी।

हारे मही ऐके चूहे चूहे। सब बुन बुन ब्यंग एका नी।

हारे मही ऐके चूहे चूहे। सब बुन बुन ब्यंग एका नी।

लेखी: सब बुन बुन बुन चूहे चूहे। सब चूहे चूहे चूहे।

हारे मही ऐके चूहे चूहे। सब बुन बुन ब्यंग एका नी।

हारे मही ऐके चूहे चूहे। सब बुन बुन ब्यंग एका नी।

लेखी: सब बुन बुन बुन चूहे चूहे। सब चूहे चूहे चूहे।

हारे मही ऐके चूहे चूहे। सब बुन बुन ब्यंग एका नी।

हारे मही ऐके चूहे चूहे। सब बुन बुन ब्यंग एका नी।
उस सिख ने बना धरोहर।। तुझी मीम पत बिले दिलाए।।
उस सिख सिख नाम साथी मेरी।। हूँ उस उस सिख मैं घर गई।।
'बस तुम्हारे सिख उनके लिए है।। बस तुम मेरी बाति हुई है।।
मेरे दिन मे मुझे है उस।। तुझी है उस देव मे जग है।।'

चैतन्यः
उस तुम्हारे मह ना निहि भुजि रथ त मारे।।
उस सिख ने मेरे मधे नही।।
भाग आइ ने मेरे मधे नही।।
तुझी मेरे मधे। ॥२१॥

चैतिकः
मुख सिख मदीर ते मेंरे लड़े।। डिख डिख तुम्हारे साथी ये मारे।।
मुख सिख मदीर धूम देखे धूम।। तुम्हारे आइ अंधे मामा। ॥२२॥
उस तुम्हारे जी मेरा साथी।। 'बस हे रे हे भग धरण से मारूँ।।
मुख सिख धूम* पाम युक्ताजा।। तुझे भर्ते हरी मृत्यु। ॥२३॥
उस मदीर मे मेरे साथी।। भीत विंधवत बजे विभक्ती।।
भीत विंधवत आइ धमा।। देव मदीर जहै धूम राम। ॥२४॥
बस हे रे धम रे मे मूर्तूर्त नही।। भागे रे बाहे पाले मनी।।
मुख सिख उप मीम विलाजा।। 'सेह मदल त साग विसन्ता।।
मुख सिख पाम रे मेरा।। सरूँ हूँ सेह रे मेरे सराज।।
भाग हम पत वहत वह है लाज।। तुहे भाग मे भीड़ी रहा।।
ıc

चैतन्यः
मुख सिख पाम जी ते बागे हृदे त बाही धात।।
तुम्हारे उनरे लहरे लागे मुख सिख पता उठा। ॥२५॥

चैतिकः
मुख सिख शीर्ष पत आदिः।। 'तुम्हारे बागे दिख बाहरः नाह।।
तुम्हारे बागे मेरे मधे बाहर।। धवले मेरा भाग देंग भाग। ॥२६॥
भाग धाता उस मुझे लागे।। मे उन्हे मे बजत बीपणे।।
देव सिख जे मे मेरे सहित स्वय।। तुजे तुजे उम माम गावे। ॥२७॥
मे उम माम जे बाहे लाटी।। उम माम दाहे धम में सहित।।
भाग मदीर पत हुदे विसन्त।। तुझे मेरे पत विहार भाग।।

चैतन्यः
तुम्हारे बाही मे मेरा मह।। मुख सिख ते सांपूं।।
अमाजे उस सिख बाही दुर्भागिता भूता कराड़ि। ॥२८॥

चैतिकः
मेरे सिख उम ये मिष वेह आहे।। उमाजे मधे की भक्ति घठले।।
मिष अरुण धम पाने हृदे न पतल।। उम पारे मि धूम मे जगल। ॥२९॥
सिख वेना संवाद दाही दाही।। मालाम दूर रे चहरापित बाही।।
मिष धम उमाजे रहि घमाहार।। अत वे मेरा धूम मे सांपूं। ॥३०॥

* अथ मुख सिख सी बैठ मह, पिले पुर्मा आ प्रवा है।
देवन: उरू मिदू बे मूथ दुहू बाग मे। बे तें भे मे।

देवन: उरू मिदू बे मूथ दुहू बाग मे। बे तें भे मे।

देव: 'स्म नह रथयो मे मह भो। ते मह भो मे मह उँचे।
तेंड़ी धार्मिक मह दव। धार्मिक दिले जे वेले हिलाए।
देव: 'उरू मिदू बे मूथ दुहू बाग मे। बे तें भे मे।

देवन: 'उरू मिदू बे मूथ दुहू बाग मे। बे तें भे मे।

देवन: 'उरू मिदू बे मूथ दुहू बाग मे। बे तें भे मे।

देव: 'उरू मिदू बे मूथ दुहू बाग मे। बे तें भे मे।
सैम्यारी: महाग बच्चने दिनार रखाला। अभी तें मैं भूमित्रा सिंह क्षत्रिय।
भूमित्रा सिंह तू मुझसे पढ़ सकते। मुझ सिंह तू रुद्र आदि रही।
दिन खड़े उठे सिंह घड़ा। 'भगवान मात था मिल खड़ा।'
'पैदल थे को सिंह' दिखावे। 'शिक्षण रुद्र खड़ा हूँ' पिछवाले। 85.
'पैदल भगवान थूँ, पैदल हूँ बढ़ी। सिंही उठी भूमि में देश बढ़ा।
उम्री भोज पृथक विल बढ़ी। नेतृत्व सीम में मिल थे थे।' 88।

देवरा: भूमित्रा सिंह उठ में बढ़ी भूमि में बढ़ी रुद्र बढ़ती।
रुद्र मुं सिंहजय किन चक्कर में भुजुद भाग दुखाने 84।
उमे सिंह मुं जो बढ़े 'भगवान ग्रीं खड़े बागी।
कात बढ़ी रुद्र बढ़ते वे दे अपने दरिद्रे बढ़ते' 50।

सैम्यारी: वेदांत का 'वत्ता' नाम जिन्दा। उम वेदांत विवाह वत भगवान।
वेदांत का 'उम अर्थ घटाये।' वेदांत का 'उम जीवन बहसे।' 91।
से देव प्रभाव उम महत निदर्शित। मंत्र महत्री मिटाव बनाये।
उत्रा सिंह उन पवित्र नामादेश। नामा उदयान में देव प्रभावित। 92।
रुद्र महत अपने वत बढ़ते। वंद अस्तान त हिंसा बढ़ावे।
उत्रा सिंह बिस्म नामा दिवान। स्वयं महत उठ चटाये पत्र।' 93।

देवरा: दिन सिंहजय मुं जो बढ़ी 'भुजु उठा सिंह जने पत्र।
कहे मंत्री हूँ मुं महत भूमि में भूमि में भाग।' 94।

सैम्यारी: उं प्रसंग वह ईश्वर भगवान। 'उत्रा सिंह' बढ़े 'पैदल ऊँट काव्य।'
उत्रा सिंह वह ईश्वर उत्सव उत्सृष्ट। संते ईश्वर मुं भोजे पत्र। 95।
उत्रा सिंह हूँ मुं रुद्र मुं पेट। पौराणिक देखे उपह हंदा मंत्र।
मंत्र महत जी भेजे देश। पौराणिक हूँ मुं भोजे मंत्र। 96।
हूँ मुं जी देवे में तंत्र मंत्र। मंत्री संते हूँ मुं भोजे पेट।
मंत्र मुं खड़े वह चुं मंत्र। 'दिवे देश हूँ हूँ देश हूँ' 102।
भूमित्रा सिंह उठ महत दिखाते। 'मंत्री मंत्र उम सिंह धिंताते।
रुद्र भवत में बढ़ बमल खड़ी। मंत्री उबव खड़े रुद्र बढ़ खड़ी।' 97।

देवरा: भूमित्रा सिंह दिन सिंह वहीं 'वत्ता' नाम बढ़े बढ़े बढ़े।
लगे मंत्र दिखाये वहाँ उं रहो रहो घड़े पेट। 98।

सैम्यारी: उं घड़े भगवान भजा द्वीप। भजा वहाँ मुं भोज भगवान।
उत्रा सिंह हूँ मुं महत दिखाते। उत्रा सिंह हूँ मुं महत दिखाते।
वादु वादक में वादक मुल अथवा। उन्हें सिंध रंगण आते अथवा।
रात्र काठा गला पूक संग आता। उन वादक में फिर में दीया। १९।
साथ पोशाक तुर लड़ी उदीव। वादक में बांध हड़ लगे अभीत।
बाढ़े पान में बाढ बढ़े। गाटु वादक में देख हठ गेड़। २०।
वादु वादक में वादक मुल। बाढ़ गड़े न गड़े अथवा उठ।
में वाद सिंध में देख। बढ़ तुरी। चौक सात अवसर भर।
चौक सात अवसर भर। वादक में नौ हसे में हो। २१।
केदर: भणै वेध घर भेढ में देखे तुरा। प्रकट।
भणै में घर वादक में देखे नौ। प्रकट। २२।
शेखर: लैमी वादक में मरद आए। चौक सात है वाद घर।
अपरे बाढ अथवा घर 'सिंध आए। में वाद सात दिखे घर। २२।
निम हड़ तुर लट की में देख हड़। वादक में बाढ़ हड़।
लो बाढ में पूढ़ आए। हड़ वादक में बाढ़ मुल। २२।
देख वाद सात है में हो। बढ़। वादक में देख हठ गेड़।
उसे वादक में घर बिच। बाढ़ ने वाढ भर। में हो। २२।
केदर: पुतिया न घर भर थे भेढ भाग दे गहरावत माय।
भरे थे बे घर है देख हठे अपरे गह। २०।
शेखर: नन घर हड़त घर है बल। चौक सात अवसर भर।
हर शून्य पूढ़ बाढ घर। ठहर बाढ में नौ हसे में हो। २२।
आँचल नौ हसे में हो। नौ हसे में हो। २२।
उसे वादक में घर बिच। बाढ़ ने वाढ भर। में हो। २२।
केदर: दिम हड़ भी बाढ़ भीव दे खगे भाग दे आय।
दिलाल घर हट हटे घर दे भिले भूषा सिंध। २५।
ਦੋਵੇ ਸਾਹਿਤ ਵਧਾਇਆ ਵਨੇ ਭੂਮਿਕਾ। ਤਾਲ ਵੇ ਘਟਠ ਵਧਾ ਉਨੇ ਸੇਵਾ। ਧੀ ਮਿਸ਼ ਉਥ ਮਿਸ਼ਾਵ ਦੁੱਠਤੇ। ਦਿਸਾ ਵੇ ਟੀ ਅਤਰਾਮ ਵਧਾਕਾਂ। 24।
 ਉੱਟੁ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਮੁੱਖ ਭਾਵ। ਤੱਢਾਂ ਲਹਿਰੇ ਮਿਸ਼ ਵੇ ਗਾਰ।
 ਦੁੱਠੀ ਦਾਪਾਸ਼ ਤੱਢਾਂ ਮੁੱਖ ਟੇਟੀ। ਹਿਸਤ ਵੇਈ ਉੱਟੁ ਮਿਸ਼ਾ ਭਾਵੀ ਮੇਟੀ। 22।
 ਉੱਟੁ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਲੱਖਾ ਪਾਈ। ਉਥ ਤੱਢਾਂ ਵੇ ਮੁੱਖ ਦੁਰਗਾਂ।
 ਉੱਟੁ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਲੱਖਾ ਹਾਸਾ। ਵਨੇ ਉਰ ਵਬਾਲ ਦੀਆਂ ਵਨੇ। 28।
 ਤਾਲ ਘਟਠ ਪਾਤ ਅੇ ਹੀਡੀ। ਉੱਟੁ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਉੱਥ ਵਹਲੀ ਹੀਡੀ।
 ਮੁੱਖਾ ਮਿਸ਼ ਵਹਲ ਵਿਕਰਮ ਵਨੇ। ਉੱਥੇ ਘਟਠ ਹੀ ਮਗ ਪਹ ਪਹੀ। 24।

ਦੋਵੇਂ: ਮੁੱਖਾ ਮਿਸ਼ ਵਧਾਇਆ ਵਧਾ ਵੇ ਪੁਰਾਣੇ ਉਰ ਖਚਤੇ।
 ਦਿਸਾ ਵੇ ਉੱਟੁ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਸੀ ਵਰੀ ਵਨੇ ਸੇਵਾ। 80।

ਦੋਵੇਂ: ਮੁੱਖਾ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਮਿਸ਼ਾ ਮੁੱਖ ਹੀਡੀ। ਭਾਵ ਵਧਾਇਆ ਮੁੱਖ ਵਧਾਇਆ ਵਧਾਇਆ।
 ਦਿਸਾ ਵੇ ਉੱਟੁ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਵਧਾਇਆ ਵਧਾਇਆ। 81।
 ਦਿਸਾ ਵੇ ਉੱਟੁ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਅਨਾਜਾ ਹੀਡੀ। ਦਿਸਾ ਵੇ ਉੱਟੁ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਅਨਾਜਾ ਹੀਡੀ।
 ਦਿਸਾ ਵੇ ਉੱਟੁ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਅਨਾਜਾ ਹੀਡੀ। 82।
 ਦਿਸਾ ਵੇ ਉੱਟੁ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਅਨਾਜਾ ਹੀਡੀ। 83।
 ਦਿਸਾ ਵੇ ਉੱਟੁ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਅਨਾਜਾ ਹੀਡੀ। 84।

ਦੋਵੇਂ: ਮੁੱਖਾ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਸੀ ਵਰੀ ਮੁੱਖ ਵਧਾਇਆ ਵੇ ਪੁਰਾਣੇ。
 ਦਿਸਾ ਵੇ ਉੱਟੁ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਸੀ ਵਰੀ ਅਤਰਾਮ। 85।

ਦੋਵੇਂ: ਵਰੀ ਪਹਾਮ ਵਧਾਇਆ ਮੁੱਖ ਹੀਡੀ। ਭਾਵ ਵਧਾਇਆ ਪੁਰਾਣ ਵਧਾਇਆ।
 ਦਿਸਾ ਵੇ ਉੱਟੁ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਸੀ ਵਰੀ ਵਧਾਇਆ। 86।
 ਦਿਸਾ ਵੇ ਉੱਟੁ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਸੀ ਵਰੀ ਅਤਰਾਮ। 87।
 ਦਿਸਾ ਵੇ ਉੱਟੁ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਸੀ ਵਰੀ ਅਤਰਾਮ।
 ਦਿਸਾ ਵੇ ਉੱਟੁ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਸੀ ਵਰੀ ਅਤਰਾਮ। 88।
 ਦਿਸਾ ਵੇ ਉੱਟੁ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਸੀ ਵਰੀ ਅਤਰਾਮ। 89।

ਦੋਵੇਂ: ਉੱਟੁ ਮਿਸ਼ ਵੇੜ ਸੀ ਵਰੀ ਅਤਰਾਮ। 90।
रूपतिक: नन्न तथ्य उँच हटे घर रख पनें। वर जरूयि उह नम तवापें।
उँह अंवर्त ने वर जरूयि ईवार्ति।।

अनि तब यह तब नन्न यह नी।
रोग तथ वस ऊँच रख लो।
वर तब तब अब वस तब लो।
भगवान ने सुन सी भिटें।।

भग्न ठाकुर ने चर चर चर।
सीध भगन दिन मनि झड़े।
से मसंजि हालव चली।
सों वैसें से काठ उठी।।

वेद माधव तथ्य वी

४४४। [तथ्य दी भंड के सुखेस मिश साहित दा सिवा]

रेबार: तथ्य तहे घमट लहे विम घरे बचविबि आफि।
‘आधि विनिध माधव मिशि में उम लही ततुगि’।।

रेबार: सुखेस मिश वे तथ्य घमट। वत भावत डिम धम घमट।
‘भग तब उन माधव घल।’ भजानिकम उम आख विगि।।
भज मने में उज्जे अभी। नै भज सहा मित धत मरी।
भज वैसें में धम भिट जाने। उम विधा दे मुख मह उज्जे।।
भैं में सुर उम हेट त अहै। भज उमवी मध में मह।
मिशि पह में भलवी चली। अभी वचली नपु धारी।।
में उम दीम तै ईठुर। मिशि में दौद धतै त घर।
नुँव विद्व कर में वह झेरी। उंवे देम सजाउ तिं वेदः।।

रेबार: विम तथ्य नैघर चले भवह।
हेष तालाम देव दह भो धत लहे लहे मंडः।।

रेबार: सुखेस मिश ऊँह भह विचारने। तवह भहमे चरिवह मृठने।
‘वते चुपुड़े मृठ भजुर्जत। भजो तवमाउस भग लह भानल।।
मेंै धते भल लही तथ्य। वीर चुपुड़े मिश वे उर।
सुखेस मिश वे नारह घर। ‘तथ्य भीठो दिन इतै उडः।।
दिन बत मिश वह दह टेर ह सही। उड़ दउड़ तवमाउस लहिन।
‘मिशि सुखेस आने दिन मेशट। बेद भीठें ने दूहत भंडाँ।।

रेबार: तैदी तालाम तबवढ़े ती हेटे बुटां।
मणी मै से नित दिने उदैैे चीते हवाडः।।
दिनम भज तीउ अब भालय में नियम।
दउड़ दउड़ ती भज नामे तां तवह आनह।।
मथ्ये: माँधी सिह ढाये गिंग परवाह। तृण पूज उत्से हिन्दु हँकहे ठगाले।
ि ले ते लाह अकाल ठग। ‘सुध तृंडूर’ सेवन्न चहाणे।
ि हिन्दू मे बिलु ठग शंकरी। मिर्गी वह गूढ प्रेम वापसी।
हाँ उत्स मिश वे पृथ चढ़े। यहे मिर्ग नष भल उम्र ठगे।
ि सहारु वे घर चिंदा ठगी। ‘प्रांमाण्य’ दह उह अब ठग।
ि सह धरम में ढुंढ ठगी। दुसर वल तीसी वे ठगी।
ि पुरुष रिष्ठेरें माह। भट्टे उववइ घमजेन र थमज।
ि जग उत्स मिश ठग नम सीह। भाग मूही ठलाल मुहसेन ठग।
ि पुण्या: तीस धरममे ऐलेवी वह ठगी उववल भी कस।
ि पुण्या सिह मुहसेन मिश बीहे मिर्गी बाण।
ि पुण्या: सिह उम मिश सी
ि पुण्या: सिह मन घर मे घर दिवक। ‘सजादे उववली चिथ पूजे दिवक।’
ि सहड मिर्ग में दिवक बती। चिथ दिवक देव घिन पती।
ि पुण्या: सिह घर वालत पती। घर धुमि घर मे धेरी बती।
ि पुण्या: तार मसीम मे ठगी। उदौलत पैस पते घरी।
ि पुण्या: तार मसीम मे ठगी। इक भिंड में तूहा तूहा माही।
ि पुण्या: ऐलेवी मसीम मे ठगी। भाग मसीम में बीहे बती।
ि पुण्या: तार मसीम मे ठगी। राहढ घर में दिवक दिवक।
ि पुण्या: सिह मन घर मे घर दिवक। तार मसीम में ठग।
ि पुण्या: तार मसीम मे ठगी। उदौलत पैस पते घरी।
ि पुण्या: तार मसीम मे ठगी। राहढ घर में दिवक दिवक।
ि पुण्या: सिह मन घर मे घर दिवक। तार मसीम में ठग।
ि पुण्या: तार मसीम मे ठगी। राहढ घर में दिवक दिवक।
ि पुण्या: सिह मन घर मे घर दिवक।
उत्त मिष्ठ वे वृंदमी घरणे। मसीह निए दसी घरणे।
भार जीवित मिष्ठ मूढ़ नैं चान। उन्हें उत्त मिष्ठ इतिहासमेत। भारी मिष्ठ वे मृत्यु वर्ण।
अनिश्चित मिष्ठ वे मिर्दार। मसीह निए दसी घरणे। १०१
धरार शायद मिष्ठ ईंगा गादन। मसीह घरणे मूढ़ नैं चान।
देव मूढ़ मृत्यु वर्ण। मसीह निए दसी घरणे। १०२
भारी मिष्ठ वे वृंदमी घरणे। मसीह निए दसी घरणे।
पूर्ण पृथ्वी मूढ़ मृत्यु वर्ण। मसीह निए दसी घरणे। १०३
उत्त मिष्ठ वे मसीह मृत्यु वर्ण। मसीह निए दसी घरणे।
पूर्ण पृथ्वी मूढ़ मृत्यु वर्ण। मसीह निए दसी घरणे। १०४
उत्त मिष्ठ वे मसीह मृत्यु वर्ण। मसीह निए दसी घरणे।
पूर्ण पृथ्वी मूढ़ मृत्यु वर्ण। मसीह निए दसी घरणे। १०५

उत्त मिष्ठ वे मसीह मृत्यु वर्ण। मसीह निए दसी घरणे।
पूर्ण पृथ्वी मूढ़ मृत्यु वर्ण। मसीह निए दसी घरणे। १०६

गढ़ी लांड भाग वी चढ़ी

gadhie leelane bange uva saapu piuncha khe tencya
ye bhaved bhavaba nath

denva: bha bhang bha bhati bhaved uva saman uva saman
saar khandu amrata uve saman

saapri: ane bhang bhang bhang bhang bhang bhang
mee bhang bhang bhang bhang bhang bhang
bhang bhang bhang bhang bhang bhang
saar khandu amrata uve saman
saar khandu amrata uve saman

Tencya: lene bhang bhang bhang bhang bhang bhang


**Chapter:** भूत पंच भिंग नृत्य मु जगवाई। तुझे भे विह अतो नियते।

बलव धर्मार्थी अभम नामे! भागे द्रव में मूह बिनाए।

'बलव नाम भ माछ ही नजी। तुझे देवे हम मारी बोलते।

बेदी मिष्ट बारत में घटे। पेट धधार्ज बड़हत में तहे।

बेदी घड़ा सवारी कहते हुए। ऊँच नाही उनी घां खड़े।

घड़ी रित नाही तहे तील। लुधे गधारे अभन सही।

उदव हैं में चढ़ रह दुवें। भाग भूक्त उद दिल दुर्वें।

मिष्ट तील में ढळ ढळ उड़े। ऊँच बद्रुतल मृत्य नह।

**Verse:** भूत उसे वडे म घट लुधे घर उन तील सहवाह।

नछ भिंग लुधे उसे ठट घां वजे मिष्ट वट नह।

**Chapter:** पहे फिंग हूटे मिष्ट वजळ। ऊँच तहे भूत वेंत तह।

भुई मिष्ट से रेंट घड़ि। ने सबी उसे घड़े हुझाह।

हैं दूलह सहां नह। सैमी ठेव दूलह घड़ि।

वेदी बड़ी 'भिंग हूढ़ भिंग भें। बुध बड़े 'भिंग हूढ़ भिंग भें।

छधे भे विन हुवह तह। ऊँच बद्रू वेंट घां त राम।

दिन बड़े 'नश महे उड़ी। लांडे भड़े बृंजे मती।

जय भर भर उसे न घड़े नह। ने उन विन घड़े भिंग नह।

उल ती घड़ी मिष्ट ठटाहारी। 'वेत दूलह वे रौंहु घड़ी।

छड़ी घड़े नउ रांड हां। सैमी घारे अभम न महे।

उद नह मिष्ट रटव भड़ी उड़े निमाज़। 'मूँझे ऊँचह यड़े भर।

मुूँझे मिष्ट जट ठटाहारी। मिष्ट नवे हुढ़ बृंजे पाही।

ैमी उर मिष्ट रैढ़ चहे। ऊँच दूलह दूलह वे मना तहे।

**Verse:** मिष्ट नृत्य तेंदु देख वे रहे हैं में नाह।

उदव मु घंद मंशट कहां जमां अभम मर्दी।

**Chapter:** ऊँच मिष्ट भें रुदे खड़े दुव। दुवा वहे म मनावत घेल।

झुँझ ती रुदे अजाह। दीव पहे भूमी मिष्ट वे हैं उदव उड़ी धार।

**Verse:** हिउ वृंद भूमी मिष्ट बसे हैं उदव उध धार।

इधू मारी गात वल कहा भापी भगत धार।

देवे मध्य नहे वल दुवे वे मेंट।
वेल्ही: उनवह हैं हित घटकी आवें। वेल्ही मिश मू उठे खुब सवहैं।
उनवह हैं हित घटकी आवें। वेल्ही मिश मू उठे खुब सवहैं।
उनवह हैं हित घटकी आवें। वेल्ही मिश मू उठे खुब सवहैं।
उनवह हैं हित घटकी आवें। वेल्ही मिश मू उठे खुब सवहैं।
उनवह हैं हित घटकी आवें। वेल्ही मिश मू उठे खुब सवहैं।
उनवह हैं हित घटकी आवें। वेल्ही मिश मू उठे खुब सवहैं।
उनवह हैं हित घटकी आवें।

वेल्ही: मिश मू घटकी आवें वेल घटकी आवें।
बहु भुह घटकी आवें बहु भुह घटकी आवें।

वेल्ही: हिम सांव मिश घटकी आवें।
बहु भुह घटकी आवें बहु भुह घटकी आवें।

वेल्ही: तेई मिश घटकी आवें।
बहु भुह घटकी आवें बहु भुह घटकी आवें।

वेल्ही: क्रोड़ मिश घटकी आवें।
बहु भुह घटकी आवें बहु भुह घटकी आवें।

वेल्ही: ग्रुश मिश घटकी आवें।
बहु भुह घटकी आवें बहु भुह घटकी आवें।

वेल्ही: खुब मिश घटकी आवें।
बहु भुह घटकी आवें बहु भुह घटकी आवें।

* है, है।
देव नंतर नाम भवनी नरहै। अनंत नंतर बंधके नाँदे भानै है। निपट अत देखि नेनी लांटी। हिसें हञ्जनी भानौं दली। 32। 

हिसें नंतर नांदे वेढ़ी डीव। तुलना बहैं महान मगजी। निचे मिस्टल आ भेंडा लापन। सामान वें से रिख फलदान। 38। 

देवन्द्र: 'मिस्ट्र्र भू घरें निकले वे दुरे मीठ वे दूसरे।' 

देवन्द्र: 'निचें निचें उठा दूसर घरदान।' 

देवन्द्र: 'माना उम्मी घूढ़ भू लौं।' घूढ़ उम्मी उवर उंग्री। 40। 

देवन्द्र: 'भोले भज उर खेली चाँदे। मानव उभरे वहीं चढ़ते हैं।' 

देवन्द्र: 'मिस्ट घरे घरे सिले वे बांधी। उम्मी वहूं दिखाईं नाँद। 89। 

देवन्द्र: 'बुधवार आपला हेमें हरिकी। भूलवाल उम घर तै साध।' 

देवन्द्र: 'उम नहूं नाम पिले घर।' 

देवन्द्र: 'उम वे वनव हूँ सब है अपने।' 

देवन्द्र: 'मीम पूछे उम नंतर घरले। उम्मी वाहन भानु घरले।' 43। 

देवन्द्र: 'मैंने धौकी रख भजी धाम करे घर तेंद।' 

देवन्द्र: 'उम उम नंते भजी उम मरांने तमर भावें।' 44। 

देवन्द्र: 'सब में उब उम घरे घरले। उम वे भजीं वर धीरघराज। उम घरा नाम भानै घरले। भानी मिस्ट भज हर है नांद। 45। 

देवन्द्र: 'स्तुत बूढ़ भजी निचे निकले। घरें घरं निचे निकले उर। 46। 

देवन्द्र: 'वड वडे निचे दिख भानै।' 

देवन्द्र: 'उम मिस्ट भानु मरु घर।' 

देवन्द्र: 'चढ़ चढ़ निचे बढ़ियी नांदे मे लोही घाने छूँ।' 

देवन्द्र: 'स्तुत दिस्कू भज देव भज।' 

देवन्द्र: 'हिसें में हिसें दुरे हिसें प्रभु भज।' 

देवन्द्र: 'भवनी भवनी भजी निचे मिस्ट घर भान।' 49।
माफी भूनून घर वहुँ दिव वें ॥

185. [हरु भूनून घर वहुँ दिव]

देवता: घर वहुँ दिव वें घरूँ दिव राम (सु) दिव राम (सु) दिव राम (सु) दिव राम (सु) दिव राम (सु)

धार्मिक: समाज संघर्ष भाव मा लिये। समाज संघर्ष भाव मा लिये। समाज संघर्ष भाव मा लिये।

देवता: जाहे घर अधिक मृती हिंदा तरह दसी घर उंह।

धार्मिक: भजा पवनाजा पूजा वें। 'भजा मिल चढ़ हिंदी भजी।' भजा चढ़ हिंदी भज।

देवता: भज भवन दसी दूनसे पूजा माँ बीह।

धार्मिक: भजा पवनाजा पूजा वें। भजा मिल चढ़ हिंदी भज।

देवता: पवने पवने सिंध में से तैं चढ़ भवन भज।

धार्मिक: माफी भूनून घर वहुँ दिव भज।

देवता: नव देवल भूमी मुरु भजी। तैं बात मह सदाव वात।

धार्मिक: पवन देवल भूमी मुरु भजी। तैं बात मह सदाव वात।

1. भजा दुश्म भज यह देव भज। 2. भजा दुश्म भज।
हैं न हैं वह वे धुर करता। जिसके वे मंग भले भला। 
लीली भिंदा भला दिव उध। 
मूंत मिल दिव खड़ा पड़ा।

देवन: निकेर भी उठी मंड सो आपने घरिणु मंड। 
उठी मिल तासनाद मिल उपड़ी रामवास में फस।

देवधरी: अंद रंग सुन भाले सती। 
सिंह मंड अज यात्र धिंधारे। 
मंड भिंड भाले तार बड़े टेंट। उध नाहु दह दिशु देंग।
अंद छेह तथा दह रामवास आपे। दही वव मधुर मधु वल पसे। 
समाघर वे दहेद लीण नाव। 
भीम वधी भी मुख भला। १२। 
वर्जे खूब 'अन' माह मंसु भला। आई ओप वध मुख पाड़ी।

दिशु भिंड वली बिंड मधु मंड। उध नाहु दह देंग। 
भीम मंड वे भव वल। उध वीणा है उपड़ी बाढ़।
मंड नाहु दह दिवेद वल॥ १५॥

देवन: गूह सेम ठांडे उडे 'हिरी घाट न भला। 
भिंडा से अंद मंडदुर वाय वली भल भले। २०।

देवधरी: उस वटकी दिल दिली त भली। दीवे भुवन मिल मुखु अजानती। 
मेव लीण मंग घुलध। 'कहें वे वेई कुंभ वे जांटी। २९। 
में गूह राम मुहे भव भा। हाँ तांडी वले पंग। 
रंगव बी वेई पके न फली। नील नीति वेई वण विहारी। २२। 
में गूह वे वेई वल। भुवनभल दोम वले पंग। 
सपिडां के राम उठटी। ओं भाट वे राम नापे। २३।

देवन: गूह वे वागने घाट वले वेई पुणे जाम। 
में वे गूह बार दिम में भले तंदू दिम गाम। २४।

देवधरी: भीम दुरुव्वू ऊँचा राजा। 
उध नाने भवे भला। उध घामवे दुंड घमाह। २६। 
उध नाना उध में दुरुव्व। जाम वे राम जाम नापे। 
किशोर घान उध भीम पश्चिम। 'उधमा में न दिखा में हाले॥ २८। 
भंडार घान भले वे उपड़ी। लीण देवी लेब संग। 
बसु भाट उध भव मु उजव। 
ओं दुरुव्वे दिखाये का कहा। २०। 
किशोर ओं न दिम मंड दुंड। तांडव मलम मल कहा। 
'ने दिखों में वे वेई मिलध। विद्वत भाट पवेनी ठारी। २८। 
भीम घान रघु दुंड देंग। नमं भाट दो ने न्योदे। 
ओं में वे से उजे त वले। भव दिमस घाट सजा चो। २५।
देखते: आपने से दीवार पे रेटर सूप बांटी।

देखिए सूप नम गोंजे पहे लग्न प्रत साग।

देखिये: आप ठहरी वेद ठहरी निपटनी। आपने तत्काल मे मेंजे चावल।
के लाएं पिंपले मे भोजन भरती। हेज हेजवर भरे उठात जी। 29।

देखिये: नम नम बेला निपट। नम नम हर हर भरते मझाल।
वो ये भावना मे भरत र चले। 30।

देखते: ने भांवे वे बुड़े वे बुड़े उठे घर जा रहा।

देखिये: सिम सिम बेला झुकवा उड़ी। सिम निम सिम बिघल पह जारी।
भार छुट्टा सिम छिपा पड़ी। में जारी है खेड़ा उड़ी। 31।

देखते: ने भांवे में भरत उड़ी। भार भार होत छिपा है।
भार में भार उड़ी। बुड़े बुड़े वे बुड़े उड़ी।

देखते: ने भांवे वे मे भरे बचे बचे मु बम।
भरे बुड़े मज मुजजा है भीड़े घरने दिख उठा। 32।

देखिये: अभिन्न भावना में हुई उदा। बनने भव्य चकु चकु रत उड़ी।
उड़ा भार भार निपट मु छुड़। उड़ा भार निपट धीर रहा। 33।

देखते: ने भांवे मु जम सजव बुड़े भुला मज बाहेर मेंसे बीना स्टार।
"छिप देख में मसबूत सिम देख में दिख बसभ भरे बाग।" 34।

देखिये: सिम सिम सिम निपट बुड़े बुड़े बुड़े छिपा।
"भरे बुड़े में भांवे निपट। बुड़े बुड़े में भरत उड़ा।" 35।

देखिये: सबसे सबसे सबसे भांवे निपट।
"सबसे ने डेट बचे मु बचे।" 36।

देखिये: सिम सिम दिख भरे बाग।
"वर भर में भरे भरे बाग।" 37।

देखते: ने भूले ने भूले घुमाया। भूले ने भूले घुमाया।
"बम भर बम भर घुमाया।" 38।

देखिये: ने बुड़े बुड़े बुड़े बुड़े बुड़े बुड़े बुड़े बुड़े बुड़े बुड़े बुड़े।
"बुड़े बुड़े बुड़े बुड़े बुड़े।" 39।

देखिये: मनला मे धु घाट मनला।
"सबसे बचे ने डेट बचे मु बचे।" 40।

देखिये: सिम सिम दिख भरे बाग।
"वर भर में भरे भरे बाग।" 41।

देखिये: सिम सिम दिख बुड़े बुड़े बुड़े छिपा।
"बुड़े बुड़े में भांवे निपट।" 42।

देखिये: सिम सिम दिख बुड़े बुड़े बुड़े बुड़े बुड़े बुड़े बुड़े बुड़े बुड़े बुड़े।
"बुड़े बुड़े बुड़े बुड़े।" 43।

9. बम भर में भरे भरे बाग।
10. बम भर में भरे भरे बाग।
देवता: तरहा भजन ले वही भली मुरठ में लॉग।

देवता जाओ भागो मैं लॉग सोचिआ।

छेढ़ी: उधरी निमित्त दे जला वाजे दस्ति। प्रियम देता दुरव नीड़ि धारि।

उधरी िश्राष्टि में िन्दा थी। बिघ उभार हैस में भली।

अखंि उभार हैस वी अहिरी। उधर पेन्ट वी आती वारी॥

विशिष्ट पदे वीौि तव धरा। दिशि मेनूळ लखी पाल॥

किमे पदे वीौि मिपाँि। हैस भासल हिम नवी दरि।

उधरी नेौि निस्तार ाँते दति। मव दे पढ़ा दुरव म नाग।

भुि मधु वव बत वतै सखरि। तवर उधर में बढ़ घमधे।

उधर िश्राष्टि देह हैस धरा। अखंि उधरी वाले मौख॥

हैस उचि नैि उध त नाहे। भुिभार तवर वहें घमधः।

हैस हैस हेितिन िन्द भान। धिम धिय िन्द घाव बति घाव॥

उधरी िश्राष्टि बिगढ़ बुझाये। बिघर हैि उचि खान घाये॥

िौँ बाणूँ उचि हुव सराहे। मव पमे पुल उच चलाहे॥

उधर िश्राष्टि दे घातु मुजध। धारे हृ बढ़ देव त भला।

हैसे श्रीि िन्द भारी उते। इदें हैला िन्द फिकधे॥

देवता: बिले इतिव मु इल देिे बिले पाह इल भान।

अरेि अरेि सात में िन्द मू आतो सति।

छेढ़ी: उधर िश्राष्टि देिे भलि उद्ध िं। िन्द हृटि दाते ताही परू।

पन पन मिप भुमः महे महे। धारे हैस दुरव वी भाखे।

हैस इले िन्द जलरा भिले। बढ़ू भाग बढ़ू पैन जूँ ले।

हैलि मिपल बढ़ तवरि भिले। बत युजकी ििंट वव चले॥

किशि रावू बढ़ू पाहै तवरि। वा में मिप त मो भाली।

भाल मूल घाटू बुझे ठेिे। नुि िश्राष्टि मिप तवरि में।

भाल भाल टूट में सछरी। जीि भवे दिल भिले त ववरी।

भाले दस को समभाल उत में। धरा हैस मू तवरि भले में।

विति दाते बढ़े बढ़े भाके। ििंट यामुल उत पूँह मू माधे।

भारा चाहा तवरि बजा पाहे। भारी जी उपि देख त भाखे॥

देवता: अधि में भुमधी भाली में मू इल।

हृटि भान दूरूँ भिली जल उधे मधारे इल॥
चैरपटि: उस सिन्हाल के था धर सच नाम। तिरुस्तादित वे वेद्य उज्जवल।
कहते हैं नाटक पहली रूप। ‘वमतिन मिट बहु तमिल डेंगु प। हिटू वे परम उदवर उज्जवल। उज्जवल पिठा हिम वी वाचन।
हटों नाटक जतार उदवर बखरी। उन्होंने संगा घट बढ़े हुकसर। 50।
सिन्ह वेदे में दे दम वजय। मेंजे वेदे बबै अंधी।
बच्चे उसे उज्जवल मु माहे। बरकड़ी वेदे वी डीविड डिर गरे। 59।

dेवति: सिन्हाल सहस्रे संदि वे सी गस डीविड आदि।
वेडही सिन्ह डीविड डह से बही त मिन्नत जाप। 62।

चैरपटि: हेड़ वनगुली मिन्ह मु उदे। खोल घनेली घट पुड़ती न्दरे।
मिन्ह महरी ‘उम रस बदरे।’ वाली मिन्ह ना डिच में उदे। 63।
उब मिन्ह उदव भी चीहे भाव। वाली दहराइ उदवर डह।
उदव उदवर में चीहे भाव। मिन्हाल उड चपटे बड़ी चान। 68।

dेवति: पथेव बढ़े जुड़ डिच मिन्ह डने में नागित।
बीते दुश औं बढ़ बन टह तह मु डिच पहुँचित। 64।

चैरपटि: मिन्ह उदे भटाल उदवर। इम इम में हेड़ शल्कित।
बनी धुं पज़े सपने धराए। बढ़े भरे वे मामूल लघु। 67।

dेवति: माओ धराट पराले दों डिच चुटिक।
दून धराट मु आं वगे रिभ मिन्ह मैना आदि। 69।

चैरपटि: हेड़ धुमो डिच मिन्ह उदवर। उदव हैं में मेना भजत।
पुड़ी सिन्ही पुड़ी उदवर। भाविय घट में वे सानि घट। 68।
पिता हट टह में खीं। भाविय मिन्ह उदव वे भी।
उटी भराल मिन्ह बारिय उठ। मी मु हेड़ निली महान। 69।
टहें स्थू मु पहे बरी। उठे गढिय में लहे स्थी।
बढ़ी मिन्ह में मामूल भाव। उदव मु भूसीभा वग धुंचित। 70।

dेवति: हेड़ डिच घट तहं चहे उध मैन्नूल रहा।
उबजे उवरि सनाले डिच डेंगु मिन्ह नियम। 71।

चैरपटि: सानि घटे दिच्नाराजित बिखरते। अगल सराहरे मु लघर भते।
पुंछे हेडिये जव वृत्त हेड। शैक्ष पेन बनाजर पसून। 72।
चुन नें में वामूल भते। चुन चुड चहल बी महुँ पुड़ते।
छाने धुम्न मी वैल लगाह। उड़ाउ मिन्ह उड़त वे आड़े। 73।
हेहार: बच्चे छिन्न वह भक्तो 'चौनूँ नाच निम्पाहै तरा। जाने थले गम सेहं आयें गमणै हुँ।' २४।

हेवली: तरा मिथं बोले चलते हुँ। खडी तांबा भू कटी चलत। मुख्यो तांबा सपा तीन हुँ। अभिन्ने धेरै धड़ आस्र्यै। २५।

जब निम्न चृणि दास मूँ बने। भा कर्ने लोकें दिन डीत भाखे। नातकरण मिथं बोले जाँहै धेरी। भिन्न धेरै धड़ हुँ। बोले देही। २६।

उरकि पालने आयें सिखाव। 'जब मित आपै छिन्न लड़ा भुजा! दौड़ें दिवं धुँ भई टृजामे। भई ऊँच संगा है नम संगै।' ्२७।

हेहार: उगरि सिकिने भक्तो 'अपै देखा मेट। मे मै भून तै अणिरि सिकाव महमध डीत।' २८।

हेवली: मिथं भू वन भबै न मुनू। माता भले में लेभिनक धुँ। तै दासे ऊँच धेर मिर्नाल। चलैं भक्तिमूँ किट धुँ रखै। २९।

हेवली: गलक वरे से भक्तो में बैल में मही भल। छनै दिन भू वन चल चुँदे भक्तो में मंद त चला। ३०।

हेवली: में दृष दल धुँक वे धेर। सौंद सव भाग वे चले। में दृष हर। मिथं मिनाल। तै दासे धांसै मिथं डीत। ३१।

भावादी मात्र हिटा धेरै। आपै उपर में नव। भक्ति चलैं ऊँच नहै टूट। भूने मिनाली परे कुबुंड। ३२।

हेहार: उं मिथ्य है सेम वह रिब छने भक्तो मात। छिन्न आपट थुँदैं रहे छिन्न दिने देत छिन्न। ३३।

हेवली: उं मिथ्य हिट बीडी छिन्न। उंदे छिन्न चुरू वे छोड़। छनै धुँक बसूल में यापट। यहै भवी सव रीते यापट। ३४।

मिथं मिनाल छने भू छिन्न डाना। दिम धिय धिन्नी मिथं धुनाल। वजट बद्वीठ भवण बाखवी। प्रेम वछाल में उरहाली। ३५।

हेहार: ठहर छिन्न धन यह। वहत वह वह किंह मिथं में। 

साढी छनैं धिय दां धरे अने छिने गिने गें। ्३६।

हेवली: उं धुँक तीं भये वह में। भक्ति वीं मिथं में। 

मिथं उरके मातृएं हुं। धरे धुँखो। हिये अपै। ३७।

* दूसरी विक्षेण है
वैद भृ मिहर घज घजाही। छिने मू दिखा मिहर हुजाही।
नें रहने सड़े छिनाह। छेड़े छि वे छड़े मू छड़ी।
भें उदरन सड़े छिन लात। रसजाही बच वां मिह दब छाह।
अभर निहरे दिक वार धुरपद। छेड़े छिन दिक वार धुरपद।
कहार घनी बात हिज नही। दिखे उदर खिर लपट द सजी।
हृद वी नाब द भूने। दिखे दिक खिर लपट द सजी।
बढ़ी भी घड़ उन गाजे गाजे। छिने हिज हिजे हुजे रसजाही।

रेखा: अबासे वड़े दिखे बड़े दिखे भागान उबाह।
बें दिव मू वट मू बले नाग उई नाग! ६२।

चुक्क़ी: विखर घड़ वी बें चब चबाह। भली भी निस घड़ आहे।
पत बदह वड़ मू पली मही। दिव मू चले यहे मू पी।
वही दिक वे बुधे मिन। भागाद दिक लिं छः दिख।
भादां माहे दें दें माह मही। पाट मो उदह उवाल हड़प।

रेखा: भागाद भवादे दें मह गाटी भान दुप वृध।
उमे में दें मे वि ते दें में ते तुप।

चुक्क़ी: तेहल उवाल पाहे नें। भटे मिहर अकड़ उंड।
मिहर दिवहें धें घर मरप।
अकड़ दिवहें धें घर मरप।
उब रीचे मह ठब मही हिजने। भूखे टुट व बनाही पाहे।
छाड़े मिहरे वे भिज दें। बने तुपे भिज हिज हुदी।

रेखा: भागाद भवादे दें मह गाटी भान दुप वृध।
उमे में दें मे वि ते दें में ते तुप।

चुक्क़ी: तेहल उवाल पाहे नें। भटे मिहर अकड़ उंड।
मिहर दिवहें धें घर मरप।
अकड़ दिवहें धें घर मरप।
उब रीचे मह ठब मही हिजने। भूखे टुट व बनाही पाहे।
छाड़े मिहरे वे भिज दें। बने तुपे भिज हिज हुदी।

रेखा: मूंग मिन उम ज मही मन में हवे वृध वह नज़ही।
भवे माहा आहिए में छिने बढ़े त पाहे। १०२।

1. प्र.- दिखाके। 2. प्र.- व्हाके।
उसपर हम भगवान ने चुला। ‘ईश्वर सदा निश्चि, नदी में माते’।
उसके दर्शन में बती ‘मुझे देख तो आई।’ हरे हृदय में वे भूप लगाई। 103।
हरे हृदय में भी भक्ति सपना। उसे उठान तो उठान राह।
सुप उत्साह में बुद्ध घधे। वची पूजा बच अभिवधि घड़े। 104।
वे बुद्धे पैलट माते। हित आलाम दें मह नारं घड़े।
उसे उठान तो लगा। भगवान भागे भिन्न पुढ़े। 105।
उसपर हम भगवान ने बती दिने पैलट,
सुपहिये वा बोला लगाने रही टंगा निम उठा। 106।
उसपर: द्वार टैंग टेर दितम बदी। पहुंच त भक्ति भग वी भग बठी।
खिली टैंग तेरे मिले खेंध। अगो भरो तं चुराईं हें। 107।
उसे सुप भगवान ने भुज। वची भुजे वची ते वार भुज़ा।
उसी में भक्ति ती की अनुभागा। उठ भग उप ते धारण में अन्न। 108।
अत तें हिद भगवान ते ब्रह्म। उसी मुझे भक्ति भरता।
उसे मुझे भग भक्ति घड़ा। विक्क धारण विक्क दितम भागा। 109।
उसे उप भक्ति भग भक्ति। ‘भग उप दुबार ख भाग भक्ति।
उसे घरुडे उस ते भट ढँढे। जब उसे बुढ़े बढ़े। 110।
अत उस दिते उसे भक्ति उप भाग।
उसे दुबार भक्ति गहरा। दात से हैं होत विक्क: भार में हैं देख विक्क।
उसे दें दें दें हिद भक्ति उप भाग। 111।
उन भक्ति भग भक्ति घड़ा। वर्दी पते में हैं होत विक्क।
उसे दें दें दें हिद भक्ति उप भाग। 112।
विक्क भक्ति भग भक्ति घड़ा। उसे उस भक्ति घड़ा।
उसे उस भक्ति घड़ा। 113।
उसे उस भक्ति घड़ा। हिद भक्ति उप भाग। 114।
उसे उस भक्ति घड़ा। उसे उस भक्ति घड़ा। 115।
उसे उस भक्ति घड़ा। हिद भक्ति उप भाग। 116।
उद सूर: सिंध यात्री संगत। 'आहे त्यहँ मनो मिस्र चाहिए जाहिए।

उद: मनो मिस्र यात्री संगत। 'आहे त्यहँ मनो मिस्र चाहिए जाहिए।

उद: मनो मिस्र यात्री संगत। 'आहे त्यहँ मनो मिस्र चाहिए जाहिए।

उद: मनो मिस्र यात्री संगत। 'आहे त्यहँ मनो मिस्र चाहिए जाहिए।

उद: मनो मिस्र यात्री संगत। 'आहे त्यहँ मनो मिस्र चाहिए जाहिए।

उद: मनो मिस्र यात्री संगत। 'आहे त्यहँ मनो मिस्र चाहिए जाहिए।

उद: मनो मिस्र यात्री संगत। 'आहे त्यहँ मनो मिस्र चाहिए जाहिए।

उद: मनो मिस्र यात्री संगत। 'आहे त्यहँ मनो मिस्र चाहिए जाहिए।

उद: मनो मिस्र यात्री संगत। 'आहे त्यहँ मनो मिस्र चाहिए जाहिए।

उद: मनो मिस्र यात्री संगत। 'आहे त्यहँ मनो मिस्र चाहिए जाहिए।

उद: मनो मिस्र यात्री संगत। 'आहे त्यहँ मनो मिस्र चाहिए जाहिए।

उद: मनो मिस्र यात्री संगत। 'आहे त्यहँ मनो मिस्र चाहिए जाहिए।

उद: मनो मिस्र यात्री संगत। 'आहे त्यहँ मनो मिस्र चाहिए जाहिए।

उद: मनो मिस्र यात्री संगत। 'आहे त्यहँ मनो मिस्र चाहिए जाहिए।

उद: मनो मिस्र यात्री संगत। 'आहे त्यहँ मनो मिस्र चाहिए जाहिए।

उद: मनो मिस्र यात्री संगत। 'आहे त्यहँ मनो मिस्र चाहिए जाहिए।
ਸੂਪ ਮਿਹਲ ਖੱਡੇ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਘਰਾ ਹੋਣ ਮੇਂ ਸੰਨਿਹ ਹਨ।
ਜਰੁ ਵੱਡੇ ਬਹੁ ਅੱਠ ਮੇਂੀ ਸਿਨਾ। ਉਹਨਾ ਦੇ ਦੋਜ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਹੋਏ। 1938
ਸੰਹਨ ਬਹੁ ਮੁਦਾ ਮੈਹ ਸੁਹਨਾ। ਉਹਹ ਹੋਣ ਉੱਤੇ ਹੋਏ। ਉਹਨਾ ਡੰਸ ਦੇ ਹੋਏ।
ਸੰਹਨ ਨੇ ਉੱਤੇ ਦੋ ਵਿੱਠਿਆ। ਫਿਰ ਹੋਣ ਪੈਦਾ। 1939
ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਮੁਦਾ ਮੁਰਾਦ। ਉਹਨਾ ਮਿਹਲ ਦੇ ਸੰਘ ਮੈਹ।
ਉਹਨਾ ਖੁੱਲਣ ਮੀਹ ਮਿਹ ਪੈ। ਮੋਹੁੰ ਹੋਣ ਹੈ ਮੁਰਾਦ ਮਾਹਨ। 1938
ਉਹੇ ਮਿਹਲ ਮੁਰਾਦ ਭਰਾ। ਹੋਣ ਖ਼ਦਮੀ ਮੁਰਾਦ ਨਾਲ ਨਾਲ ਪ੍ਰ।
ਖ਼ਦਾ ਮੁਰਾਦ ਹੋਣ ਉਹਨਾ। 1938

ਰੇਠਨਾ: ਹੋਣ ਹੋਣ ਸਵ ਮੀਹ ਕੈ ਕੈ ਕੈ ਕੈ ਕੈ ਹੌਰ ਪਹਾ।
ਰੇਠਨਾ: ਹੋਣ ਹੋਣ ਭਾਰ ਅਲੇਮ ਹੋਣ ਉਹਨਾ ਭੀਖਾ। 1940

ਰੇਠਨਾ: ਉਹ ਉਹਨਾ ਹੋਣ ਭਾਰ ਭੀਖਾ। ਮੁਰਾਦ ਹੋਣ ਕਰਾ ਬਹੁ ਭੀਖਾ।
ਰੇਠਨਾ: ਹੋਣ ਹੋਣ ਕਰਨ ਰੂਪ ਮੈਹ। 1941
ਰੇਠਨਾ: ਉਹ ਹੋਣ ਰੂਪ ਰੂਪ ਮੈਹ। ਆਈ ਮੈਹ ਹੋਣ ਖ਼ਦਮੀ।
ਰੇਠਨਾ: ਮੈਹ ਖ਼ਦਮੀ ਕਰਨ ਕਰਨ ਕਰਨ ਕਰਨ ਕਰਨ ਕਰਨ। 1942

ਰੇਠਸਿ: ਮੁਰਾਦ ਮੀਹ ਉਹ ਮੀਹ ਬਹੁ। ਸੀਲ ਭਾਣ ਮੁਦ ਭਾਣ ਭਾਣ ਭਾਣ।
ਰੇਠਸਿ: ਉਹ ਮੈਹ ਹੋਣ ਭਾਣ ਭਾਣ। 1943
ਰੇਠਸਿ: ਉਹ ਮੈਹ ਹੋਣ ਭਾਣ ਭਾਣ। 1944

ਰੇਠਨਾ: ਉਹ ਮੀਹ ਰੋਜ਼ਾ ਕਰਨ ਕਰਨ ਕਰਨ ਕਰਨ ਕਰਨ।
ਰੇਠਨਾ: ਉਹ ਮੈਹ ਹੋਣ ਭਾਣ ਭਾਣ। 1945

ਰੇਠਸਿ: ਹੋਣ ਮੀਹ ਸੀ ਹੋਣ ਸੀ ਹੋਣ। ਸ਼ੁਧ ਸ਼ੁਧ ਸ਼ੁਧ ਦੇ ਕੈ ਕੈ।
ਰੇਠਸਿ: ਹੋਣ ਹੋਣ ਸੀ ਹੋਣ ਸੀ ਹੋਣ। 1946

1. ਹੋਣ ਹੋਣ ਕਹਨ। 2. ਪਦਾ- ਕਹਨ।
विहार मिस्थि वे घेतट उज्र। उघ भरने वे दरझे ठहर।
उ दिन धिङ विदार चरण। 'वासी देख नमूने वे भागी।'
भी धिङ उघ लखे वार। धिङ धिङ वे हुँकू रुले।
इन्हें धिङ वे त्रिकृ रुले। धिङ धिङ वे वाली झूठी चरण।
मरण बढ़े। धिङ धिङ रुका। 1.50।

रेम्पस: ये नागें वे मिस्थि पाहि मे दिरिय। लिङ्गस पाह।
भंडी उजो देब मे नाही न हैं। धारी है। 1.51।

पेंड: वार न बाहि घड़े भागी। नह वल उदी उदी सिधहर।
उघ मिस्थि वे लखे पाने। पैठी विंड़े घडे तिंग मस्ते। 1.52।

रेम्पस: एक्ष कोटर वे उदर घेडे बिंडर टिंडर।
डिम्बे बिंडर नाहिं। भल वले मिस्थि चरण रुका। 1.53।

पेंड: हिम वियि मिस्थ हुँके चरण। रहे मिस्थ भागि मे भागी।
हेड़ हेड़े नाहिं। तुड़ चरण। हिम बत भुंगे मेंगल नाहिं। 1.54।
उ वैजे वे टूंग जाव। हुँके। मिस्थ बत हुँकू वाम।
मुख मिस्थ उड़ि टेंग धुले। मैंद मिस्थिये हेड़ लज्जे। 1.55।
उसु भागी टेंग यली बताले। ये मैंने मिस्थ महिमा बताले।
हित बालीवात बाहि विभागे। मत्सी भी ढी बुंगे मस्ते। 1.56।
हिंद मिस्थ भूलि वल मादु बताले। उड़ने ब्यंगे भूक हैं ब्यंगे।
हिम उम मुही धिङ वे बाव। मुँह मिस्थ हिम लज्जे मस्त। 1.57।

भें भूमिता

1.51. [पुजारी जानियां दीम विभागियां हिम मिस्थ भूक मस्त।]

पेंड: अघ ये देही घड़ देही। उड़ने मे मादु बज्जे कर्म।
बने में मे दिन मिस्थ भागे। दिनहं। होंगे। उड़ भाग चन्दो। 1.
चरे हिंदे वे दारे मिस्थि वे हेड़े। भणे उड़े हूके वे एंगे।
हूके टूंड जानि मे उड़ बज्जे। हूके भूल्ले बज्जे रेड़ी भागे। 2.
हूके हेड़े देम दिह हूके ठही। में हिंद मिस्थ वे वरद बज्जे।
भणे वाली दारे दरे भूल्ले। भणे उड़े मे विह बज्जे। 3.

* हिंद मिस्थि हिम दिन हिंद भिंड देव देव मादु वे मिस्थ उम मस्त वे:-
देव उड़ मे मे मैं दार बज्जे।


Page 271

www.sikhbookclub.com
अंत पूर्वत

944. [पूर्वत से पता चलता है कि मेरे पति की मिसाल से लिखती है]

देवधनी: अब मुझे दिल बचाना भी चाहू। मिलने निकल आपकी की चिंता वाला।
कैद ने भगवान देश चुने में माफ़ी। वहाँ भारी हड़कू भूख गये।
अब मैं परजीव हड़कू में माफ़ी। वही बज्राठ में उठे उठे।
छाँदे में नज़र घोड़ीबानी दिखाई। देव उंबरी वाला टूट उठवे।
अन्य निकल गए ने माफ़ी। रहने वाले रहो। वही ने मैंने दिखा।
घरे मिल किड़ शिखा बेचा। उठवे न हुईं। वे बचकर आए।

देवधना: मूंग सिख बाढ़ से गाँव उठाने रोता था श्री।
दिन था वड़ा से गाँव की स्थान बचत खींचा।

देवधनी: बच्चे मद ने 'भेदे ! नाम स्नायु'। बेच्चे मद 'सिख मद उठे भाग'।
बेच्चे मद 'सिख मद उठे भाग'। दिन में घड़े हे मड़े माफ़ी।
बेच्चे मद 'स्नायु भाग'। दिन में उठे उठे हाथ।
बेच्चे मद 'शिख रहे बचे। टूट रहे में भूमे जाते।
में रहने वालों में अभि मुखी। बचाव रहीं कह बिहारी बाली।
ने भूमि दिखा वे भेदि मुखी। उठत्स शिख ने मूंग दिखाया।

देवधना: महक ठपर में उठे उठाने उठाने मिथुन ठप।
पूर्वत से दड़ कर उठाने मिथुन ठप।

भाषी स्वरूप अर मगर निकेतन मित्र कंठी थी

950. [आजमगढ़ मधु से भराह, एकैम मिलने दे चला]

देवधना: मधु ठपात ठपर में चलते सिखने मिथुन वे उठ भाग।
बि हुं 'भाविलिङ्ग में वड़ा हा' रिली उठत मधु।
भेदू मधु निकेतन मित्र भाली घरवाणी टैटी।
जैसे मिथुन वे बाल वे घड़ पापीर यथा घड़ा।
उठवे उठवे उठवे उठवे उठवे उठवे उठवे उठवे।
भाग बजरे में घड़ मुखी, सिखने लक्ष्मी भागी।

9. सुख बची, विभाग! 2. भाग बची उमाव।
3. जाग देख मैं उमाव। 4. लालच, तेजस! 5.
हेमें: उसे सदृश होता देखा। 'सरल भी चढ़ू चढ़ाए! 
सरल रीति मुझे न छोड़। उघड़ रही नज़र मे साधन।' ५।

लेखक: न हैं मैं सही यहाँ साधा स्वर्ग। 
उस पानी वहुँ यहहै 'जो यहाँ वही तभी हारिए?' १।

हेमें: उसे पानी भीमी वली। 'सरल जी दिग्दर्शन नगर वाली। 
उवह उसे बुंद नदा रह रहने। वह भीमी वली मा मदने। १।

लेखक: सभ भीमी वली चीन तेंदु भय मुहम मूले भाग। 
उवह दी धारी ठाठवि मूल समे श्रेष्ठ दुलभ १।

हेमें: उस वली ते जो दुकाने। 'दिग्दर्शन दिग्दर्शन करारी। 
भिन्न खैरी मे दीमा टूकाने। उद्रज मू जिमी भागी लीगाने। १०।

सभ वली ते जो दीमा वली। वली ठाठव नसी ठाठ। 
वाले बच्चे चलिले मारी। में गुंडे टूके लगाकर लगा। ११।

लेखक: दढ़न मैं चड़े ने हैड़े हैड़ेहृद गायत। 
रसात मारत ते भगी ते भागे भागाव मारत। १३।

हेमें: उस मारे हैम बेगे बेगे। हैम देख वर्छे वे हैम। 
मे हैम दिल निरूप वे बध। भागी सरूप उस हैड़े हैड़े। १४।

लखू चलाह मे भिन्न थाने। मू रसात जी ठाठवे भिन्नन। 
जी जिय उस सुन्दर भागी। जो भावन म जिय्य भिन्नादी। १५।

दसीव वड़ तीर मुहम भागी। मू सपंती भागे मिथ कर। 
मू मना भर भर दें भागी। निमीतं भूष मे दहे भागानी। १६।

भिन्नादी मिले मारे सही उरवानी। मू नेह ते चढ़ लड़ी पलवी। 
पत्र भरे ते मे सुख पहने। देवे निमीतं डिबी भागी वलज़े। १७।

लेखक: निमीतं हों न भागी भागी भागे भागे भागे। 
उवह भागी मी हिल असी मिल घाटी हो मुट। १८।

हेमें: निमीतं उस बृज मे चढ़। आतमक मारे बढ़ी मे मटी। 
बलवे डिलही घड़ी चलाही। भुपे हमह भी भीरू धानी। १५।
देवी: है उसी उस दिन वी वीरी वधकी बुझ।
पहले भीतर तो ताने लाए स्वर्गीय भूष। २२।

देवी: उस लघु अंदल में लिख; उस ती साथ था धर्म है हरिया।
अग्नि धर्म तवा देंग तुम पुरे। धीर हजरे ठिक भें भूले। २३।
बड़ा मंड तुम नाम सिंह। उस धर्म तवे रिहें दिया रिहें।
सिर मन सिंह ठिक रूप से रख। दिमने मड़ी मुहर्द उठे। २४।

देवी: 'अपहर ती सक़बेल सिंह उ हम छहे जितेमा।
मण्डली तीर्थ भज उ, कठ हो छोटे नेम। २५।

देवी: है तौं टिकिंग धीर पिंड मरे। ते हो वी सम एकदा अधरें।
भाई भैमी भें दर्शी। ठिक मिश्रभ मजे भैमी बाढ़ी। २६।
पीछा थाने सैम चपेले। ठिठे नाची हिंद माहे भुगणे।
गाँव वे ठम है बढ़त उठणे। पेड़ी बीं आ घुट झुगणे। २७।
मह ती दी प्रभु वहर चढ़िंग। मिठाया भवें में रखे लिपण।
सिम्ह ते हम मीम उगाप। और हवर ते मीम भुगाप। २८।

देवी: भैमी बेग भल बूढ़ी। साथ घर घर घर घर।
भैमी बीं ती छुइंग में ठिक ता दी मनाम। २९।
उदर मिथ पर निम मुही तिम जरी रती रिचिक।
अरवलं म जरे साह रिचुरी रग। ३०।

मध्यी तम ठंग। वी

१५५. [तम ठंग तू हर्षा ते धीर पत अहिला वेंला एं उभर।]

देवी: उव पत्वे मुह जन्म 'हिंद प्रभु भवं ठ मारी।
सबसी पैठल रिंग तासे' तीबी मिन्हर मलाम। १।

देवी: उव उवे मिथ धंघ घटायं। अइंहे ठहरे हमारे डरी।
ढंठि वहे 'टिके विलुप गलं।' ढंठि वहे 'उवी ती एल।' २।

१. उवः ते दी हिंद हिम्बर ते।
२. ठंग। ३. १५०५ वि.]


Page 274

www.sikhbookclub.com
टेलफ़ा: बते घड़ा न है उदे दिनित मणि चबाती। भेली भेली मिठ सहै दित भेल बराबर। २४।

टेलफ़ा: सुभां सउतने सतहे रह थाम। भेली मु भवः दित वा समा। ने लबजे बिह बतन मृ थपरे। छुट्टे बटने वे मे ने जम रपरे। २४। नव ईंट दित देही घढ़ी। दिम बत देही रप बराबर। ब्दाते छा दे दिह में रस पुरापर। बाती घड़ी अंडा नावत वरापर। २०। अथे उदे अंध युवाँ। उस भानु विम हुदू हिमाले। उस निक्षत वट विय पिञ्जारी। विदल भागये लजे बराबर। २१। मिठा थें मैं उन्हे देहां छावै। मकर देहे वे देह पुट परने। भेल रजसध भाव सौं रह। २२।

टेलफ़ा: वरघ बड़ी सज इवत वे लजे भागन आपू। भीत भेळुँ ते विशिक रीरिंशा चढ़ि। २३।

टेलफ़ा: दिवह देंग भल मतीक ताल। भनीत भाव वे मुखियें। उने भावी बड़ी चढ़परे। उध वाहे घट माम रिमारे। २४। उदवर उद वट धावे घरणा। देही सुहंसे मधुमध परवणा। उसे बालमे बाउ दिखानी। 'उदवर घड़ी अह मे बगी। २५। उसे मकर भे उदवर भने। हित दे भुलौमे सनाउ अपने। चीत भालाब वे जाव दे नूँ। छूट ममतू उड़ रेहा मूल। २६।

टेलफ़ा: उध रम मिठा दिभिम मैं उड़ ताड़ जीध हुराप्र। उदवर भाव मु मत जादे ने गगले तालं धड़ आपू। २७।

टेलफ़ा: वत वें मिठ में भेल भेल यही। भेल झिनह दित बहते यही। छिंधां भाव सां दूबां झाकां। घौत धावे यही भेल यही। २८। नव उच्चखी मिठ नामित यहै। मिठा बुङ्खारे उदवर अंध भने। मिप देव मे नमी झाकी। देह मिघ वें घड़ बहर दुर्बाहती। २५।

टेलफ़ा: छुट्टे बटने वें मिप उध रुफ़ख वड़त थें। उदवर दुधाब अह वे सर सभी में हिठ। ३०।

टेलफ़ा: उध उदवर हे माता सवाही। मिठा दुर्बाही वही भवः घड़ी। भय बड़ी घड़ मिप घड़ि। तुहत माता भची छूटे जले। ३१।

9. मातिके सदहे समाव दिभं। उध बृहस्पति उषे समाव।


चतुर्दश पंख पृष्ठ

हम वै भगवान् जैनै सिद्ध कर्म। पत्रहरू जाने मूब गाम बने उंटी। चुनिन्दा सीता उठिन उदय बनाई। सिद्ध घाँट भेंड है भांगी। निश्चय घाँट मे घाँट हिन्दी। तेंदुए पाला बुढ़ा तरिका। जल वे भादू घाँट है पुंछ। भव में मात्र गृहा अनुष्ठान।

परते देहुँ विकल वहा या। मात्र हो भाल भाल भाल।

उदंत वे मिल मी मृत। दे दे सात धर है भाल। उदंत हूँ भी जो झेंझे बंधे। 38।

चेतुङ्ग: वह देवकु पिता पहे जाने पक्षे भाल।

युढ़े मुरीहरागी वे मे पे वीरी धुकत। 35।

चेदरी: देह महत्रिे मेलेहा भाले। तीम मिठुर दे दिक्के उ भेंडे। मझ भेंड हूँ पक्षे बंधे। हीँड दुमारे दुवुड़े विपदे। 36।

चेतुङ्ग: दिम दिम दिम नृत पूरा घांट मे उदंत लहराइ वैक।

मिल हूँ उदंत दे नवी, दिव भे दिव भेंडे अर्भी रौप्य। 37।

मिल मु मत मूवरी दही सिमे रन्हाल तीन।

श्याये घोरे ने दिना युढ़े भाल हूँ चुकू दे दिव दे उदंत। 38।

चेदरी: सिंह सिंह सिंह सिंह मूले सिंह भे। भौति सिंह सिंह उदंत हूँ देह।

मे वेंदूँ मिल हूँ देहे दिवे। एौं दौँ पीछे उड़ते पहे। 39।

वैदिक भेंडी नृतवहे नाबा। हूँ कैड़े हिसाब उभ राघ।

मे दिलते जा वह दौड़े नाबा। नाब चृताव वजन निखारे भाल 40।

चेतुङ्ग: देह भे उदंत भा वह उदंत लहरी जाग तीर।

घृणा दूमार अपनी घरी झड़जे त गले बीड़। 41।

चेदरी: मे दे मिल देह जैन नाबी। तापु मिंगे है डी भाली।

मिल देह उ नाब उठहे। मिल हूँ देहे भादू आपे हेते। 42।

‘भवे भवन में देहे करमा’। मिल हूँ भौ जो दिचालम।

‘भवे हे भे भे भगवीः रेंड़! सीता घेता वें देह हेतूँ।’ 43।

चेतुङ्ग: नबे भाल मे मे भवी उदंत देहे मिल दिल भाल।

हूँ कैड़े भाल मे बड़े ‘दिव भेंड निम्न्हु राधी’। 44।

1. पाःः अेंठ।
2. भौ वै वि बालुङ्गे सिद्ध हिंदे सिद्ध उदंत छो ढे मेलां।

पिंड भम आरिङ्गा मे मेलाव वि तम हेंदी ए भेंडा पांडी बेडी मी।

उद उदंत छो मेला हिंद हिंद है सिद्ध हैं सिद्ध हैं ढेर वी उड़ी।

3. भौ निम्न्हु आ दै।

1. दूसरे सिन्ह में सिन्ह दिन है। तिन्ह सिन्ह दिन वे नरठो।
2. दूसरे सिन्ह में सिन्ह दिन है। तिन्ह सिन्ह दिन वे नरठो।
माघी बंदना भग्न नी दी घटनाति

१५२. [बंदना भग्न ने मिसां दी वचन रख भग्न तर्कन हैं। माघी]

पैन्डना: विहज बंदना माघी रुहे मिसां बंदना भग्न तर्क।
भशिष्ट भग्न दिनांख पत मिसां ने तर उठ।

पैपाट्ठि: मांग भाग्ने स्वतंत्रता माघी। विहज भग्न छिद्रानुवा उत्तर भागै।
नित्य भग्न सुसन भद्र मुहैं भवसम। हंदु हन्स दसे भाग्ने धम। २।
कै भद्र भग्न भग्न मिकल पर्व। दहे दारियात भुस दे वेदि: छिद्रानुवा विकाल है मिसां मिधेह। शिवरात्रि रुपें नेवः है डिशेह। ३।
भश बुप्पें उम्माधरिता ख्यात्सै। उ मुखे भीढ़े मह बतकिलेह।
चथे मिकल ‘उम बाहु नी भाग। माघी छिद्रानुवा हर लहाडः धम’। ४।
उधे भाग्ने धसे नहुक पहलिया। ‘उम सुकु घीम भग वालिया।
घीम भवसमें मिसां अभियान। उम वस बहें घीम बढ़े घेह’। ५।

पैन्डना: भों उठवाहः हैम समां, भांड़े महे बलाहिये।
भश धैये वे मे बतकिल माघी किरणे उठाहि। ६।

पैपाट्ठि: माघी छिद्रानुवा समा भौंगे वे गेजे। हुटे बुटे वे मह छंदो बेदिजे।
मे भीत भौंगे हे तिजे कुलाहि। बंदना भग्न वे भाग भिकाहि। ७।

पैन्डना: नौग भजने चंदैं उठड़, चंदैं दहे उथरिंग।
माघी छिद्रानुवा बेदना भग बहे वें तमभाल अभियान। ८।

पैपाट्ठि: उघ उघ उघ उघ भिल टस गाजे। बेद्दे धित उघः उघः चंदैं।
उघ बंदना भग वर गाव भाग। मिसा बहादे अपः धम। ५।
उधे छिद्रानुवा हे तिजे सेन। माघी बंदना भग बहे उठा।
अघ ते पलहे नी वे रेल्पः। वभ भाग तम भा दिज टेल्पः ९०।
मिकल बर्जने ‘बहु गानधर ताबी। नमीक भाग हे तम टेल्पः घटनाह।
तम भाग ते पले दिहाहि। पेलाहे घीम उतराहि भाग’। ९१।

पैन्डना: दे से अभिद्वितीये बर्जने ‘बेदें विशव राक्षण।’
अघे उ ममहु मिष्ठान हे अघे दे उघ गाजन’। ९२।
द्वितीय: उध वेल भल मिशाल बनावे। 'बेला भगवान तिलमै भवने'।

मिशाल चैती मधव चढ़ावे। लगी बलीहम ठिटमै भगत।११।

मधु भोजे उ बल मैं पहन। बोली लगी हिरत उधे त धमा।

धेव मिशाल उध हैदार धर्मेव पहन। धर्म मीम उध लीवे बड़ा।११।

भीत भरी हिरत धर्मे पहनावे। धेव मीम धर्मण बली हाथ।

बजना चलने हु ठिक उध लीव। 'बेला भल चढाकर' भिन्नह भिल दीव।
ने बेला भल वली धमामै बड़ी। उध हुवँ मैं निम वे हटी।

आजो भरी अनं ती भगत। धर बहिवात मैं उध वी उपवी।१३।

देवता: अभजां मैं हुईचैं उधे मारमी सिमान सरी।

उध मिशाल हैं निम भुक्ते हिरते दुमै उपवी।१३।

माधी मैं अभिभूतन नी वी

१५४. [मैं अभिभूतन देवौ]?

द्वितीय: भलव भुट अभिभूतन भावैं। दिशामी विमावी पेला सरन।

वैद बिहिभात मुही मु गाव। गुर वहल भत सावे पजाऱ।१।

अवल दुही चउँ उधे वामे वागी दैं। लानि दीवार गुलामे मैं मैं।

मूढ गापी वेरी भलराद। अभिभूत गान मिशाल पृच बढ़ा।२।

देवता: सिनै पथ वे पथ वत हर भुट हर ठिम विभिन दै।

विक किम जुडै उल गुर मब वत हर ठिम विभिन दै।३।

द्वितीय: मिशाल मे मधु पाप हत मैं। रुढ़े मह भावम मधि भवाए।

बेरी भवाए बेरी हर भागी। उत जुड़ै उ मधु ठठ भागी।४।

मेवाल: मलान म धर धर मुहा बुड़ि भागी मिट भगा पड़ा।

हर हर मिशाल वे पथ विमि दुमै उले देवाए।५।

देवता: हर हर वेरी वेरी भिन वेरी निम वे भिले त माह।

हर हर वे उठवाव वे भे मेवाल वलहे माह।६।

माधी अधिभाष मधु भल मौध मिशाल वी

१५४. [भावम में हर हर: मधु मिशाल मधायु]?

देवता: अभजां मैं उध वैदिखे हिरत भवें अधिभाष मधि।

मेवाले भोजँ दीवार वी मुहे भुक्ते मे भगत।१।
चैप्टर: चतुर घाट के चतुर घाट। सब अभिभा भुक्ता बीकीत। अभाध भीत मृतीबाड़ जानें। अभाध भीत स मृतें महीं। २। सबहपूर्व घाट जो भमुक्ति आसी। भमुक्ति उदा में मेघ नित चली। दुई घाट प्रतिविद आसी। देवत देव जन दूःढ़ बसी। ३।

देवत: किसी व अक्षमान्य वे गिर गये तुरंत घाट। देवत ग्रामवृत्त से भिन्न जन घाट हुए उसक ॥

चैप्टर: भुजाम नामस भुजाम सजावै। दुई गिर वीरं चढ़ गये। लोगी माते हे लोगी जाव। भुजाम घाट घैं ऊँच उस भाग। ॥

देवत: भ्रेतम घाट नव भत जाने भद्री घाट जाने वेस। दुई लोगी माते हे भ्रेतम जाने चढ़ गये। ॥

चैप्टर: दोनों दे घाट भें ग्रामवृत्त। भुजाम वे दौड़ घाट भें। पिंड दिबिम मृत्त घाट घर्सै। उदय ते पिंड वृख भरै। २। सभी दे पिंड दुःढ़ घाट जाने चढ़। भागे उदय दे भागे पिंड पतिव। पिंड देखै जी ताक में भजने। जाने दूःढ़ दूःढ़ घाट वे जाने। ॥

देवत: नामस घाटो भें भधे है। भें दुई मुखे भाग। दौड़े भंडा भाग है। दू:धे पिंड जाने में जाने बुखारी। भुजाम भें उस मृतें पतिव। ॥

1. दैती, मंडू।
पहेल बढ़ते घने टूटी होती। हेतु घर्षे उम दूर नी माती।
ईशानी पैरा निखुश पहाऐ। तै पहाऐ में हिचू उठे। ९२।

वेंक: मे सु मिष्ट दिखेंगे बढ़े बढ़े में अवसर।
में अन दिन चंडी चंडी चंडी भर। नै चंडी भर भर भर पान। ९५।

वेंक: उन अथवें में मिष्ट दी लिये। अथती अथु पुष्करी लिये।
गरी मिष्ट बैंकी रूपी मुखा। तुमम मिष्ट तभनारी हाय। ९४।
उव मिष्टी हे भजने घरा। एठा िजीभर खुटुटु घरा।
जो घर िजीभर मुठ घरी। भजन िजीभर उठे घरी। २०।

वेंक: रूम उतार िजी उने मिष्ट पहे है गीता।
पिछला ठेटी मिष्ट वे खड़े रहे जीव। २१।

वेंक: आठ िजी मे पहे देख। मसबान खाना वे पैट।
मिष्ट खानी उठों आपे। रैपे वामणी दाढ़ी दख़ो। २२।
में निध्य मिति है जीते भाल। उड़ी स्तवना में उज़म।
पिछला देखा भिजा मिष्ट है भजी। भिजा जी मिति उड़ी पुख़ारी। २३।

वेंक: बाहुल जीवादें भी मुख चलु मिष्टा मिष्ट उठा।
मसब मिष्ट वे खड़े देखे भजीहरा। २४।

वेंक: उन दिल वटी त वड़ महागी। खुशने तड़ी नाटु भटि।
दिमे धारे घंगे दिनें दिनें। धारे बींजी बिंजी बाली। २५।
रिखत मु निकाने टेंटे घाड़े। राहु हिमाल हुजुअ घड़े।
गड़ी नम म पसेरे बींजी। धारे निकाने रे रेरे बींजी। २६।
इर भजने रेत आई सल। इर इसके दुवे दुवे। बिह रिख में तिम पीव ठ पतह। २७।
उज़व रेरे पे ये बने महाद। अनो बींजी रमुके घाड़।
वल्ले ईर इर 'उतु ये देख आपी। वह पहुँचे तड़ वास नासी। २८।
इर नाम नाम नाम महाव देखे। ना मिष्ट में महुरे देखे। २५।

वेंक: मिष्ट म बेंटे वे हँसे, तो बेंटे बेंटे भरी।
विह गड़े विह लौभ गड़े बेंटे बेंटे गड़े। ३०।

वेंक: मूथा मिष्ट हैं अचूर भजी। भजे अचूर बेंटी भजी।
उस दिल में बींजी बिहा। 'भजी बांड अब उड़ी लछाव। ३१।

१. पृष्ठ- घंडी थे। २. पृ. घंडी निम्न भर।
पृष्ठ २८२  

विषय:- 'पालन पालन' तथा 'पालन' हिंदी में जिन प्रश्न में जिन जिन 
'पालन' महोज अच्छी चीज़ लगे । 

विषय:- बड़ी मुख्य समय बचाने। 'मिलिंद सिंह, अरुण, कुछ सुन्दर पुस्तक'। 
मिलिंद लगे 'उन किसी तरह मतलब है। मधु उमड़ उमड़ वह देख।' पालन 
भक्ति की मधु बचाने। मधु बचाने में इतिहास उपलब्ध है। 
सम बचाने वें बड़ा महत्व। जिन कृपिया उपाय वाला शिकार। वही 
धिंदर भाग उठाए जरूर मास। अभि महिला मास पहुँचें। 
धिंदर में हैं भागी जानें। भागी मधु मिलें धारे तालह। 
वह वह रहे त भागे चौह। चौह गाये मिल जा ते दोह।

वेदग: दिन सब जो लिये में दिल मलते आए। अभि लगे मुख्य उठें मिल भागे तेहे में डोह। मधु 
मिलिंद हिंदी हर्षी 'सांत हेतु अभिमन्यु मात्र। 
हिंद में रेड में मा बचाने वें विद्या वाले विद्यालय।

वेदग: मुख्य मिलिंद बहु अग्रो जानें। युवक सागर विचार लंघने। 
भक्ति तविर वेदी विद्यालय वाला। राजा जागत्र वह वह जानी उठें। मिलिंद 
वेद वह बहु पूरा तविर र भाग। वहें वाले वह मिल उठें राजा। 
भक्ति विद्या वह तेहे में राजा।

वेदग: मुख्य मिलिंद हिंदी मधु भागी मुख्य उठें लक्ष्य। 
अभि महल टूटकर रही मिलिंद पत लें।

वेदग: तविर सिंह मधु काल तविर वेदी वेदी भागी तेहे वेदी। 
उत्तर तविर यदि मानने में संग वेदी वेदी वेदी। 
विद्या भक्ति वहाँ में विद्या उठें सबें मात्र। 
भक्ति मधु मे मुख्य मिलिंद सागर वाली उठें।
प्रथम खंभ ०ुतर

मिथुन वे भे उतरते वे बड़ते उठे र नेल
उठ जी सिखं बंदी उठे ईहै बंदी उठे।

घण्डी पूर्वता भंती उठने

१५४। [भक्तनण्ड वेंक भट्ट दा डाॅप दिन भट्टे उठने]

खेलव: तेवे भाप्रे पूर्वम अठि हित भानी माँि वजा बीहे।
खेलव उठी वै का उठी हटु भानी मिम सीह।
हेमी रेगामे भे भणे बेता भट लीहस।
माघे मंगाउ भिय हे तम्म हेमाराह।

श्रीनी: बड़ी भाईे लहुदे बड़े। ठिंग सिंहद बेंडी भेडू भानी।
तेवू तेवू तेवा पत्ता भाना। भान्ने पणे हिंह माँि उतापण।
उन्न भय ताल जिवू बाट। देह दे बापू, भिंह धने मांि।
दिव्यन भें घुपे घुपे ठिंग भेड़। ठिंग माँि घुणजे वत भान्ने।
स्वीकार सिंह सिंही सिंही ठी। स भसी भे सिंही ठी।
घणजे ठींग वत भय हैरानी। माघी भवालल वे बड़ी सिंहदी उठीत।

१५५। [भक्तनण्ड वेंक दे बंदी गङ्गारा भिय, नरेन्द्र वामाह]

खेलव: दिम सिंही पकवाल्दे हीठे वे घुपूड़ी बाट।
खेलव भे दह तेंबू भन भट बटे जुधान।
बुढ मु तेवे भवाल मे दिंही वे म हीभ।
से भें भवालल वे बमे सिंहदी हेडे उती।

श्रीनी: राम नाभारी में हुए बाटण। भक्तनण्ड पहलाईं घड़ना भाना।
भवाल भवाले मे रेमडी बाटी। से में भें मे भिंह्रे बाटी।
वेंगी घाम मे हुईं गुढ बाटजे। ठिंग पहूं ठींग जिवू बाट।
सप तच ठींग बेता भुन हुण बाटण। पेंजी नाए मच ठें बाट बाट।
सिमी आंडी ठींग सिंही हीहारी। ताराफ दिंहीद घाटी बाटण।
माघी बापे भे नाई बाट। भुजपूं बेंड अथाय दिंही बाट।

खेलव: भक्तनण्ड तपे रेंटे मीरी वे दुई दुखवत बेंडी।
अपास सिंही चप दिस वे भानी चढ़े ठ बियह।

श्रीनी: भीलो भिरामल वे ठींग बी बड़े। भीलो बेंडे मे ठिंग बाटे।
लिंग ठियह धीउर बरे न मार। ठींगरे बेंडे वे मुहे धराह।
देवता: यदृच्छिक अथवा उलट पढ़ने वाले उसे त विकट हँसावत।
देवता: यदृच्छिक सिफ़ारिश नहीं की जाती। उसे त विचित्र सिक्त।
देवता: चौथा अनुभव उस चाराने वहै त विकट हँसावत।
देवता: चौथा अनुभव में से धरत आते हैं। सिफ़ारिश लाभ में उलट भेजाइए।
देवता: चौथा अनुभव में भैरवी सुधी। उसे त बस डूबी चौवटी।
देवता: चौथा अनुभव लाभ में उलट। सब बड़े बढ़े।
देवता: चौथा अनुभव लाभ में उलट। सब बड़े बढ़े।
देवता: चौथा अनुभव लाभ में उलट। सब बड़े बढ़े।
देवता: चौथा अनुभव लाभ में उलट। सब बड़े बढ़े।
देवता: चौथा अनुभव लाभ में उलट। सब बड़े बढ़े।
देवता: चौथा अनुभव लाभ में उलट। सब बड़े बढ़े।
देवता: चौथा अनुभव लाभ में उलट। सब बड़े बढ़े।
देवता: चौथा अनुभव लाभ में उलट। सब बड़े बढ़े।
देवता: चौथा अनुभव लाभ में उलट। सब बड़े बढ़े।
देवता: चौथा अनुभव लाभ में उलट। सब बड़े बढ़े।
देवता: चौथा अनुभव लाभ में उलट। सब बड़े बढ़े।
देवता: चौथा अनुभव लाभ में उलट। सब बड़े बढ़े।
देवता: चौथा अनुभव लाभ में उलट। सब बड़े बढ़े।
देवता: चौथा अनुभव लाभ में उलट। सब बड़े बढ़े।
देवता: चौथा अनुभव लाभ में उलट। सब बड़े बढ़े।
देवता: चौथा अनुभव लाभ में उलट। सब बड़े बढ़े।
देवता: चौथा अनुभव लाभ में उलट। सब बड़े बढ़े।
ईंधन: बढ़कर निम्ब नेनी वरी में पैठ लीली भाल।
भंडी जगम बुरुल वी 'मधुर वर्ग शैलम'।

रेखा: बढ़कर निम्ब नेनी वरी में पैठ लीली भाल।
उन वाल वे उन निम्ब वे मती।
अपने धन्मुलक बुरुल वरी। अपने मध कशम वरी मती।
राम भक्ति उर वीर दिनान। घराने पहाड़ी पहाड़ी सहित हार।
निम्बुल वे ये विश्व बनाए। 'साउंट में हिंदु कपड़ा आये।'
आपने भक्ति उर वे रखरहे। दीलम अब वे चेत कर।
आपने निम्बुल शुल भाली। हृदेर भुवने नेनी भाली।
बंदेर साँचे पैठ चेत बन राम भक्ति झूंगे। हृदेर वे घड़ पक।
अपने धनरत ब्रह्मी ब्रह्म बुरुल। नवर तूंग में बुरुल।

रेखा: महत्त वालया चढ़ उनल निम्बुल वे गए।
भाल बुरुल भल ब्रह्म उनल हुआ वे पाड़ि।

रेखा: नेनी हृदेर रखेब भाल। वरी तराड बिनाते रिंग भाल।
भी निम्बुल मानते वरी 'राम भक्ति बुरुल।'
घराने पहाड़ी पहाड़ी सहित हार।
हृदेर वे चेत कर।
धनरत शुलक मती।
भाल भक्ति उर वे रखरहे।
भी निम्बुल शुलक मती।
बंदेर साँचे पैठ चेत बन राम भक्ति।
अपने धनरत ब्रह्मी ब्रह्म बुरुल।

रेखा: तराड भक्ति उर लापने मध मिन्नत झूंगे। हृदेर।
हेत मृत्तिका वे द्वारे 'उर वीर भक्ति'।

रेखा: बढ़कर निम्ब में पैठ लोग वरी। बुरुल वराजे 'उर उर विश्व तरी।'
बढ़कर निम्बुल निम्बुल पतली। उस भाल चेत कशम वरी।

रेखा: मजबूत मिन्ब नेनी मिन्बे भुगाल लावे मिन्नत।
भी निम्बुल शुल लावे व्रह लावे मरजादन।

9. हेत, म्रृत्तिका विहा, भगता वी पैठउलुरी विहा।
2. हँडी।
3. भगत (अचरज विहा) वा जा चेत (उर उर) वा गुहा वहा वहा
(विहा हमे मनस्त निम्बुल निम्ब विहा निम्बी भक्ति चेती है।)
4. भी चौंक वी ला चौंके मिन्ब हेत।
उब लड़ा फ़खरे बाती ‘उम उम गुरु वी भान।' भ्रें भां खेल वड़ा ही भान। "38।

उब लड़ा भ्रें भां भांती। 'उम उम गुरु वी भान।' भ्रें भां खेल वड़ा ही भान। "39।

उब लड़ा बाती ‘उम उम गुरु वी भान।’ भ्रें भां खेल वड़ा ही भान। "38।

उब लड़ा बाती उम उम गुरु वी भान। भ्रें भां खेल वड़ा ही भान। "39।

उब लड़ा बाती ‘उम उम गुरु वी भान।’ भ्रें भां खेल वड़ा ही भान। "38।

उब लड़ा बाती उम उम गुरु वी भान। भ्रें भां खेल वड़ा ही भान। "39।

उब लड़ा बाती ‘उम उम गुरु वी भान।’ भ्रें भां खेल वड़ा ही भान। "38।

उब लड़ा बाती उम उम गुरु वी भान। भ्रें भां खेल वड़ा ही भान। "39।


Page 287

www.sikhbookclub.com
पुरी चंद्र गुरुद्वारा

सिन्हे ती हैं दिल की रहीं। दिल की बुध धरु मान वाही।

मथव के ने छाये तर पी। 'बहुत उभारे लुटते तू नले।कुए।

रिश्ते लेटिंगो छाने लट। अंत आदिको दिल की खट।

दिल की चिन्ता मजे सिरत लहरी। देने उप में दुख खुशी।

प्रथम: मिन वहलें नग ठठ उड़नें चरित कोई नग।

उठ चुचने मजे जली नकली नसियू भुजाव।

प्रथम: नढत नरहतर वरने त भसी। मिनाल हैं निम पाहै शनी।

वहू के ते घिस हरी रसीबाल वाही। ताढे पाही बढ़े बढ़े।

हैं रन रहस्यमें धम रही। पेंताली भारी नरहत रही।

उठ जो मिन्न फिली भारी। नष्ट ववी रहस्यमें लट।

उप जो मजे रखा भारी है। पालते हूने बालते बुचा।

तीरा खेला ये उठव युजाने। 'उप जो नरहत नैम बैठते हैं।

वालें तूँने मरहसन भारी। उच्च रेत अंग लुटपर मुंगी।

तीरा खेला नॉमाद मिन धाम। धड़माल तुप्पी जेनी भारी।

प्रथम: 'भेजे भूथा त वरि मचे घड़का मिन वे पहि।

नरहत धने घड़ामें मिन्ह से हरे मुं सेहता मिरि।

प्रथम: उप सौम मिन नागान घड़का। घड़का मिन वे में हुट पाहा।

मरहसिं धारी में में धरुन्वाजा। पिंब वां घटिंग सिंह लगावा।

घड़का मिन उप जेलें गैम। 'हैं वे नरहत कबे में आये।

पुछ बनाने निसख भारपाजा। 'सौमी भान में सदृं धारा।

हैं घड़ा धार गैम में वही। 'बेठ मचे उदा घड़ा गूं भेजे।

सहे ठाणे में मरहत जीपी। 'सौमा कमे अंग लुटपर मुंगी।

घड़का उदा में धड़माल भारी। उप पाहे में परा भूथे भारी।

प्रथम: घड़का मिन ये में बसे वड़े 'भवें नम घड़का।

अगर खिलाने तैमू नवकोट में भागो छीने बलवू।

प्रथम: घड़का मिन दे में उप वरि। 'बउल पहलत वहचे भूमी।

ममत भारी हूब वे भाजा। भाष बैठ अगर खिलें खाना।

प्रथम: घड़का मिन घड़मे वरि 'तै में मिन भुदीटा।

उड़बर वी ये उड़वली चहली जली उड़ी।
सैतां: सीताकेता तू जे चरत दीने। उभ अभि हेते दे तिवस्तर त चीड़।
किवा बहें हें हेजी तू ने घास। हिंसा देहै जहें आहे बाजा।८१।
सीताव सुहा उघ जे चरत दीने। 'मैं अभि उभि मिल तू उवजे।
बेंहा मिल मैं आहे बाजे। मिल दैते दिहें उघ लणे।८२।
उभ हलमु हें हेजी वीरे। देये मु महु बाजा जे वीरे।
बेंहा दले देहै झाड। खिल बेंहा निग मैं देहै झाड।८३।

पेटां: घड़वना मिल नी जिंभ बाजी मेंटी धाममे बीठ।
जोंमे जह चमत्कारी निम 'भूत भूत सीठे।८४।

पेंटी: भुजाल घटकी में भूत मैंटी। हज शंकेंटर नेहूँ आही।
सुध मिल दिव धारुभाल मिल। दिवल हले में महज लिङ।८५।
घड़वना मिल नी जी जे बैठी। 'मातृयू उभरही उध मिल नामी।
फूलो दुवली मिल कैं पैली। अधी ज्यो में लाश देवूँ।८६।

पेटां: देहा लणे उभे में मश मिल मैं निम आठ।
सृज मैंटे हिंसा दुध नये वे पैल मिल मेंहूँ नाग।८७।
सीताव सुहा उघ आहें जिनार लें हैं लख।
दसगु निशवने उस ने दीठ आयी बाजमने उभ।८८।

पेंटी: पैदे मैं भाजम मिल माघ। बजाघ देवगुने वल भाजम।
सृज बजाघ सव भूम में दप्ते। 'पैदे बजाघ दुध नेहूँ आखणे।८४।
'अभि मे हेंडल ने पव भाज। हि पव यहांदे रख नी भाजी।
पैदे उभाघ भेज वल लिह। दसगु मे टवा मलण सध बीते।५०।
रेलभ दुनाघ नूटे उतारण। माघ बाहणे मलण घाघण।
भाजणे में उदबे माघ। पैदे अभि पाम मे उल।५१।

माघी भारेटर में धेंग बाहणे ते माघर ठूंटवे
अभिभा माघ बैजाटी वे मूखा भामभार द्वा पवारणा
१५२। [महार उंटीवे भारवां झाल भुठः]

पेटां: भुजाल मिल घड़ी पट हुए मू। विव दे रंगी में भूम टस्तिक।
पहर बैजाटी वै उदबे सिंही गियर भारमधिय।१।

* इस देंट दे, डरां हें दे दों।


चेहरी: लघु तरुण विष से स बदलता। उस भव्यता अभी देखिये। भव्यता देखने साप स बढ़े। 3।

में देखते भव्यता चढ़ता हो रहा। वह निद्रा भरते हुए हिंदी बुद्धि।

चीप्ता में पहले बिछाए। 'दिनह निभाले भव्यता बढ़ाए।' 4।

माहीत चढ़ी 'ते टे है भव्यता।' निभाले मेरी घाट घरघर।

मिशाल चढ़े 'भव टे र घुटे।' निभाले र भव माहीत बिकाए।

मिशाल में मजबूत होता। उस मिशाल दुख पड़ता है घूमता। 5।

देवता: में उसे हुज्जत भावते में रहे घेते र गूहा।

विल्ह निन्म है उस रहे नत्त हुज्जत पड़ता है घूम। 6।

चेहरी: मिशाल सुन के अभी बनाये। उत्तर बनाये हैं घरघर घरघर।

मिशाल बनाये घरघर। मिशाल साधक है भूरा बनाये। 7।

देवता: भव्यता देखे ते उच्च में माहीत बिजी भव्यता।

मिशाल घुटने हुज्जत बिछाए निज बनव लख। 8।

मिशाल जैं देखे बोलने मिस हज़ार वल वाह मुल।

देवता निद्या बोले देने मिशाल कम से लेकर देवता। 9।

चेहरी: नया मिश तरुण बना भेजत देने। निन्म है वे र भूले भाग।

में वे आचार म घूरते भाग। देखे मिश बनाए बादे म गए। 10।

उस में मिशाल घुटने हुज्जत माहीत। भूरा भव्यता देखे भाग।

कुछ हुज्जत दुख पड़े! लेत निज बनव मब देख भाग। 11।

मिश भव्यता देखा उज़े। भव्यता देखे बी घुटने चढ़े।

उज़े महत्ते में दिन हूँ दिनह। देवता मिशाल घुटने घुटने। 12।

'भव मिश घुटने माहीत बनाये।' यह से देने म देख भाग।

उस देखे देने मजबूत भाग। भूरे उंच घाट देने म पहुँच। 13।

देवता: चीप्ता वेश है में मुखी दिल मिशाल बाज चढ़ा।

'उभरी जबाव माहीत ने भव है घुटने बीढ़ा।' 14।

चेहरी: भव मिशा बना भाग बुड़ा। मघल न बनव मरे भाग।

मिशाल में घुटने घुटने। जीते भवान निद्या बुड़ा बनाये। 15।
भन्दाट उबरहै गुड़ि कटी घरे। सिन्ह दुए दे उबर आ भई।
गुँडे मिर्गड़ घे दंडा घराण। रेरे घिठ मराभट चढ़ाना।
बैंत चेटि व भवरटे आछे। मिन्गड़ पूछे भाव भट्टाहै।
सदी भट्टाम वी उब रुन। रेरे भूटी घरुवे भाव।
बठा तथा वव घिठे भई। सिन्ह दिहूं वी भंडी घरे।
तीने हक गठे उबहै। भाव धराय निम्न मिन्गड़ गियाहै।

eyon: से मिन्गड़ भई डिवन मे दे सीह भाव।
उड़ उडही आ वाथी भह ब्रेट जाने चुकै।

चेतनी: भुजुबीभान वी घड़े मिन्गड़। धाम घटेवल भई वव धूध।
हिथ भई सा वाम वा करे। वरुँ लाफ़ तिता घेरे बनुँवे।
लुट मिन्ग पाणे मिबिन दीवने। महां धान वे वाने गाने।
उठण देह भवरट भ्रोंनी। मे हि लवे मे रहते बेठी।
भवरट लखते रोमे में। मिन्गड़ गाख भरते देखन।
भूवं भरत उब रहै ताने। मे तठ ताप रघुवल वे घाने।
उन्हे भक्त उप भरी रहे। भट्टे दुःखे दे निक्षण पाहे।
मिन्ग तने पा भुजाभ मुं रैही। तीसे भवरट चवाव बेठी।
बुढवल दुह में गंध मस्तन। दुईवे बुढवल तापे मस्तन।
मिन्ग भवरटे वी मुन्नानी। चढ़े मिन्ग तने उडवत मेही।
मिन्गड़ हरेह विदिते विरहित! मिन्ग सजी हिव भुजाव ब्यहित।
भवान मिन्गड़ दे घेर गाणे बेठ। देख वहा घरी मंड़वाल घाह।
दितीभरे दे दित घास उड़ाहे। मिन्गड़ ते मिबिन भूटाहे।
भवान महां मिन्ग भंडी मृह। पठर भाव वीफे मिन्गड़ चुह।
भवान महां दे दित भूटाहे। उन दित के दित उड़ते उढ़।
भवरटे वे पृथ दिज खिंठ पिघाहे। मिन्गड़ दुहाहे मे झुंव नाहे।

देवन: दीवा में ले चोड़ि वे भवरट लीहै धूढ़।
उड़े पटेले मे मारिज लझे देरे दुह धूढ़।

माधी भवान मंदिव घेता वी जानी मे ध्वतनी वी।

1554 [मंदिव घेता मुंदीव राज भवाना दे देव मुहूर]

देवन: भढ़ाव मे अन पूरें विक्रम जति वे मान।
माधी घेता मे ध्वतने हिला नितित मूनबतन।
चैंधी: उन्हें वे में भेज आपना। मिश्र अर्धस्वर शिखर साधा। शाना रवाना मिश्र उन्हें दिलाना। उता मिश्र उन्हें भुज्जन देन। 2। मंत्री में वे मिश्रित सभी। रवाना मिश्रित सेवन बुझाना। अलरी वटीलिया अस्त थाम मांगी। में ताल की दिन मिश्र मांगा। 3।

चैंधी: मिश्र अर्धस्वर नात वे मिलते हैं वे चिनता आप। वटी मांगी के चटी मिश्र लाकर दिकारिया। 4।

चैंधी: मिश्र में चौथी दर्द लगाना। वटी रात्रि की तरे देख पाना। पीएं की ढँके मुंह दिलाना। पीएं वे मस्ती चौथी अपना। 5। पीएं नात मिश्र मल सम। अलरी चौथा दास बने। नुट नुट मिश्र भट मिलते। वीला चौथा मांगे। 6।

चैंधी: मुस्ती मांगें जेता चौथी दर्दी हें निकान। भार नहीं ढँके चौथे अस्त मांगी आए। 7।

चैंधी: उप सूपूर हज़ार हज़ार। मिश्र बूढ़े मस्त मस्त नागी। चौथी दर्द में ढँके जानी। अंड ढँकी की धीर न बघी। 8। कैसे नात नौ हें चटी वां। ढँकी देस धांध मिश्र लाकर। सब के हें कैसे मंगल ठहरी। मड़ ठहरे पाना मुस्ती ठहरी। 9। बिज़ूढ़ एक नहीं एक ख़ुद मस्त। उदः एक फिल्म में मस्त। मिश्रिति ज्ञान सुदर्शन न दिख। इः दास्तीं जिंदा चढ़े भाव। 10। मेंज़ाउ मिश्र दिखाई लाके। ठीकी मांगें भी मंज़ी भली। समान मिश्र दास बनें। मिश्र जोड़ा। चुड़ा नूतन हें दुःख। 11। यथा स्वाभाव ही भावे देका। धरी में उदः एक में चढ़े। भाव अपनी वर उवाही। बेहो सुख चढ़िये घड़ी। 12। भाव यूँ चढ़े दुःख मस्त। यूँ हो झटकी भट मिल जाना। 13। मिश्रित वे उंच लगे ता पी। चढ़े मिश्र एक दे मस्त आप। बात घड़ी उंची ता जान। बेहो यूँ चढ़े सिक्के बी बघी। 14।

चैंधी: बेहो भद्र दिये मिश्रित मस्त। भाव भद्र के दुःख मस्त। भाव भद्र के मिश्र मस्त। 15।
वृत्ताकार अविन भिन भक्ति बीचा। मुरध है भव गंगा धर।
बैंडव उदा जै समेत बल। भव भवाल बीचे प्राणभाग।

टेंड़ा: भव भवाल पहूँ बीचे है उपठ में सन्द।
मिस्स वी दृढ़ पद बसे उठे हृदे सन्दे भिजाष।

सैकड़े: बहु सिंह वे पिड़ ती कै। वो बुझे उद्ध भासु उठे।
से से सबसे भिन्न सब सुने। मिस्स जन्व मु भवे बचे।
अथृत सब सब भिन्न पहे। भिं दिव भिं हृद सब सब भिजाषे।
झुड़ पद जाने घाटक मेह। शोभी पूजा बहु गला देरे।

टेंड़ा: मौग सिंह हिम उत उतरे जज सब सब दिसे है।
पत्ता हाथी वल बुढ़े उने शीतो निंद मेह।
महीवे से सोने उल्ला तालाह चाहे अहसान।
‘यह उठाजे उठाजे अव रम उभ रही देवक।’

सैकड़े: लवे बौं फ्री रह बची। बरी खट्टी रम रह रही चिंत पवें।
मिस्स वरज़े ‘रम अिन जत बचाम्।’
से से सोने दउः रावल रह।
उल्ला बन्दभे से बढ़ी खट्टी।
भली दबामे में पेटी। मिस्स खट्टे हे दिव बची टैंटे।
बढ़ दबाल पूछ मुख ठिकाने।
न्या रखाल पर्वे मरान।
भूषे उने वे विलूँ माला। ठिकाने होपे में मिस्स दिववाल; 25।

अव भली भवाल दारी दनीत वी उज़ी

1558. [मधली चीन भली वे तीज़ वटी]

टेंड़ा: मधव खट्टी दोंग चोपे मिस्स भवाल भवाल दें।
भवते हैस मड़ वो बचे हृदी संज्ञ मु मेह।
भूषी हाथ सुजनीत हो गो मु दारी भावी।
हे हेले पूजा भिजां में पूजी वे वन्द।

सैकड़े: मधव हिंदीं वे भवा मु उज़े। दारी दारी दारा।
भव में दारी बीची अविन्द। भवाल जीवा दर वरणे घासा; 3।
'अव उभ रम वरे मेह चापने। उभ वे उभ वर दर दरी अव्रण।
दारी दर दरे दरे दिगाह। हेले पूजा मु में वे आम।' 4।
उल्ला तीज़ वे भूषे बचा। 'भव वे ित त भवाल चोपे।
मंझे माले म वहे वरण। वहे माले वे माल बुकवाह।' 5।
पिहले उट वास्तवी भाग। सुठ त चंढे वाले सल निर्गित।
भाष मैं भाग माँग पड़ता। मैं गी बने भाग सल-लौकिक। है।

—सीता रुप—

देवलः ‘घटने दे घरी झटी अभाग मु वीणे भुजाद।
उट त यूनी भाग वी दिख सुट धने भौमव।’ २।
थे मथ दिमने अभा नहीं भी भौं वाली* राजे डाल।
भूष जूना वधि भूष में हैड गाले भौमव। ४।
‘बने द नाम ठट भने बने द घने वंच।
महाल मला वे मन मन विख तेजू तै तीरा’ ५।

मेघीः जवी नामज नानाही ते भज। नानाही भुजादुर वे तै उढ़न।
मेनी मूली अभा चढ़ाही। विशेर वधी मिर अरुंदित विराही। ७।

मग्ध उड़व महावर विश्वासदी भी विराहत्व वी

१६००। [हलां दे तके भवाःर्मां हैं बेहद हृद महावर बीजी]।

देवलः विशायत हैं दिंड हट गाडी चार्जे भाव बसाही।
तिम परिशादी हैं दिंड बीली भाग उक्तीत। १।

मेघीः कहेंटिय हेड नाम हुम घेटा। जही भागा उठे दे हुम घेटा।
तिम सह हैं हेड वढ़ी जजारः। अभानी में पढ़े भही भारी! २।
भूष भूटू भोंू। भूष भोंू भी बी बी भरो।
हिन्दी चर उज टिंग हठा। इस्लिंग सेट वे भभ लवारा। ३।
मह भूमसलग टिकटी बही। भूम भाग पट्टक विद भू तिंग।
‘थे भुट्टे हैं वेम बचाडी। है भूमसलग हैं दुर्घटित।’ ४।

देवलः मह भूमसलग वाम वट चंढे वही मँग।
विश्वासद वधीत दिंड भी बानाली पदुमव। ५।

मेघीः भुम पुरीट सेट वे संदे। मवें भाग हिंदू बढ़े बढ़े।
वेक्स वे बाज़ लाने हुमसर। भूट्टा वी रसी पिनी धराहू। ६।

मग्ध वचन्म भी विभाने वे चाप्ते वी

१६०१। [वचन्म दे विभानिया ही विज्ञ विभी]

मेघीः उध चंढे भागी हटने वसर। पथ मुहत मिर उड़ान लखे।
भवानी भुजादुर भी बंटवार भाग। समेट वटली वट होइ मतव। ७।

* गाई।
उह तनो मिखाल भदज चते। नवह दरम सु सौ तैले तैल।
मे भैरे सोटी तन भाहे। जिव घर मिखाल सैंव न लबाहे।

चेतु: मिख भे निमबे घर लुटे आने यहै रंग।
ैंत भते घर उभ वल मिख माते सिंध माने भेंड।

चेतिय: बड़ा मिख सव सेवन नरे। बढ़ा मिख इस भय सव नरे।
भां निमब सा भलौधे रंगे। दिष्टे रल गरट लो से सभे।

मण्डी गठ मिख महेश भी

१५२. [गठ मिख महेश है उपवास मे तैरें रहस ं धूलुधे मदीन बीउर]

चेतु: भैरै में वे मिख रकजे गठ मिख निम रम।
सूर यूर उदी उनी बागवाणा लाग।

चेतिय: लिसन दिव्य निम लबाने भाटे। जे दिव तारेट लबाने रण।
हिंदे साँग लिसन लब लवे। थोंगे साँग दिक्क सूर थंकने।
ढियुठ ठ रे थों थों उल भाने। खठठ ठ उपे लिसन हद लवे।
भावन मर दे मे पूरूपने। धूली तान वे आने धाने।
मे जान धूली दिमै ठ भाने। मर भगवान दे तवजे ताने।
ठेट उपवी अंते पैर श्रृंगार। धूली उनी थारी भान।
उपव थारी तान भान भेंगान। मे धूली हांगे भालं ठ यान।
उषे थारी पत्र भूम भानी। ढूंगे उपवी ठेटा ढूंगी श्रृंगार।

चेतु: चूंची हल चूंची तान लये मिख भय चौदी श्रृंगार।
पत्र सितार दिम ठेटे मारि म मॉम भान।

मण्डी धीररोहन भी

१५३. [धीररोहने ते महेश बीउर]

चेतु: वेह घरम निसूने तवजे लोक भानि मे वाह।
खुट्ट देम दिल तह रत लाग नूरे दे तेंद।

चेतिय: निमब भरहे ठेटे गैडी। जै बूढे बुढ जान्य ठ गैडी।
उद धीररोहने मिख घहादे। धूली दिलक थूला भरहे मध्ये।
नैमिनिमित तब रवे नरूगे। निम वे बैध दिल रवे घहादे।
उद दिल ठींड मिख रंगटी। मे ठ रवे मे भभज घहाद।
वह नियम वें प्रेम उठाने। में अंत हप्नें सोंक खेल दें।
हित दिया भलव रस दें। भाषने हैकम वर्तम समान रहो। १।

२४४। [भागी धन्त देन दो।]

चेलत: नियम पहच भय माँ उठे। उह भाषमें बची समिति।
‘भाणे भलव देल देव गया। हित पैठ माकरे वर्तम’। १।

चेढ़ी: उह भाषमें भलवी घुराहै। ‘श्याम वहाँ हर भलव घराहै।’
‘भाणे निःप भाजी पथ निर्माण। दुरी गुरसम भिन रहे घराही।’ २।

चेलत: भाणे बने दवील दिन ने उठे। देव गया। हित उपनें विम वर्तम।
मिः सवें विम विनायक विन्दु, वत अपने सवं लड़। ३।

चेढ़ी: दुरी देवी देवी दिनने। ‘भाणे निःप वहाँ बने घराहै।’
‘भाणे वहाँ सीं विम भिनाही। भलवी भलव उह वह निःपे सुवाही।’ ४।

चेलत: देव मुं उपमे हो झटी फललिंग दिनने। भाणे लिग वम खाने घराहै।
‘दिन नमग पुष्पी हो निम्ने हिला नैपुष्पी दिना।’ ५।

चेढ़ी: दुरी देवी देवी दिनने। ‘भाणे निःप वहाँ बने गया।’
‘उदा घरसम अंकुर निःपाही। उह बाणे भाणे मादलिंग लही।’ ६।
‘भाणे निःप हैं देवी गुरवदेवी। भलव भलव हंसके तही।’
‘दुरी देवी देवी दिनने। भाणे हिला अकट देव मान।’ ७।

माधी भिंत निःप भलवी दो।

२४५। [भिंत निःप रा भवीर देवा, नागर भा गुर रामव।]

चेलत: इसे भिंत निःप भलव में हित उपनें निःप भलव।
रिम घेते भिन्न मिः दिन ने। माथे दुकान। १।

चेढ़ी: ‘भाणे भनत उह निःप देवे।’ समर टप हिंस घरींडे महों।
राम निःप उहे मुह वटी। ‘उह घेता भाषमे हे अवधी।’ २।
‘उहे मुह निःपिंग पथ दें।’ वर्तम निःपम दिन टेंट है।
‘उहे भाणे भिन दुरी अपारै।’ ३।
‘उहे भिंत भाणे महान निःपान।’ ४।
‘उहे भिंत वहाँ बने घराहै।’ ५।

चेढ़ी: दुरी देवी देवी दिनने। हिला नैपुष्पी दिना। भाणे वहाँ बने घराही।
पवित्र अंक 292

मन दिन लग दो शुभ देवन। भेंट झुटने माहित मथिम।
संदेह निर्मा सिहं तीरं देवन। उषी त पवेल स जले भलेह ॥

सेवनः ताह दिनम केंद्री उषी लगेनी लिखनी है।
सुन बढ़े दे भांति पढ़ी सिख दिखाए भेन। ॥

सेहतः सिख ते घेने बजे। कर घंटे वीं भले पाले राख।
हैस किय निपु मु देखे धूषहत। मने त म उदिकाय मंगल। ॥
निपु उदे उघ डेशत है। दिभ वह वरी द रखेने बन।
ते ने दुखे से मिर बलियाने। मे दा ते उरी मे भटे। ॥
सिख सिख दे घट दे आँख। ‘उषी मंडू को सिख घगहीं’।
मे भउ भउ से लड़े जाने। चढ़ुलस दे वचे हंगे आँख। ॥०।
सम रोसी कंठ जित पड़े। भैर टवाड़े पान हम उठौज़े।

सेवनः सिख दे घेने दे घंटे दे आँखे भड़ भट।
सुन बढ़े दे दिहे हित सच धम हे मृदु उंचाई। ॥१।

सेहतः मृदु देवे पे कवसी आँख। ना लग विष्ठान वसँधी।
हैस मिर सिखत वे न वटापे। भागां बड़े तमीसे लड़ापे। ॥२।

सेवनः सभ निपु देवे सेव उने भेंटा गुड़ी मिन्नदी।
उघ समाध दे रस घंटे मूली भक्तमा आँख। ॥३।

सेहतः दिहे मिर दीसी दुःख निगापि। दोहे हे तावे हेत दिहापि।
दुखे बड़ीसे भिन्न सिख देंदे। वरा सिख देंदा सिख* मेंदे। ॥४।
उषी धरमसत दी सिहं मेंदे। सीम हुँदे तैरे देंदा मु चंदा।
मनीर तीन हिं सुई हूँदा बढ़ापे। उणे चढ़ुला मृदु मे घड़े। ॥५।

सेवनः मण भिवां मै घरे दूःख देहीं मद।
बिह सिख मनीर सिख उषी म संक्षे मनह घं जाप। ॥६।

मधी भीत कोहुँ वी

१५४०। [सिख दूभ मय है बमट। भीत कोहुँ वी भोज]

सेवनः मधी भीत मुँभूँ मैं सहने भुजे सिख दाही।
भाग बारीसे धाके मूले भुजे अस वर धाही। ॥

सेहतः वेंटा मैंल सवे भीत लापे। सिखत दुःखे समीने देखापे।
टोरे देले दे उदाह भिट गापे। सिखत है हित दुवाव मेंउड़े। ॥

* फः - तेरा सिख
सत्केत रिखा अंगे साहित उद्देशे। तीन अंतः वणी इतर साहिते!
वेदंत वे मिश्र हस्त जी माहे। ज्ञात्वन वे विर भावाले पढ़िये।।
उ ज्ञानक वे रिल रिम ज्ञानी। ‘रिखपी खासमा सब भवाली’
जात रिल एसी हृद उद्देशे। जीते मिश्र दिल भाव बढ़िये।।
भवाले वे दिल तनाव उद्देशे। में ही शुत भाव उद्देशी पढ़िये।
मुर ज्ञानक भ भली ज्ञानी। अर्थ ज्ञानक चढ़े जी वट पायी।।

रेषा: उसे उत्खने ज्ञानक भल भली ज्ञानक सा जानि।
मुरे ज्ञानके मिश्र जान उर यन पीत वटहारी।।

रेषा: रिख ज्ञानक वन मिश्र मिलाह। हँग भवाले वह उर भाव।
हेम भवाले वह उर भाव। में ही रेषा मिश्र रुपीत भावे।।
उत्कल ब्रजे अरे भली ज्ञानी। शुभे संगा खनी।
रिख रेषा रेषा ठुंढे ठुंढे। उने प्रश्न रजन रुपु उन।।
उर भल राजी भली दय नाही। उठहारे भली ज्ञानी कही।
उर भल राजी भली दय नाही। उठहारे भली ज्ञानी।
उर भल राजी भली दय नाही। उठहारे भली ज्ञानी।।

रेषा: रुपु ज्ञानक वे पेंठे वह रुपु नामे भोजार।
उर भले ‘भम उस उपर’ वहे में उर रेषा रेषा।।

रेषा: वास्तव भजौ भुकाढ़ उरिं ब्रजे। हैमी वह ज्ञानक टेस्त बढ़िये।
भले ज्ञानक भजौ सा भली। ताई रेषा जीवि मह चिमी।।
वेदीं रेषा वेदीं जी वटी। ताईं मेंव वेदीं जी वटी।
रिख रेषा रेषा सब रेषा पायी।
उले रेरॉ रेरॉ रेरॉ रेरॉ रेरॉ।।
उले रेरॉ रेरॉ रेरॉ रेरॉ रेरॉ।।

रेषा: वीर मही है एमेरी हछाल भजौ विखार।
उ जी वास्तव रेरॉ रेरॉ रेरॉ रेरॉ रेरॉ।।

रेषा: रुपु वीरमा वनाचार बढ़ी। ‘वास्तव घासी घासी रहौ।’
उरु वीरमा सब उटदेख। हैम वास्तव वे वेद बढ़िये।।

1. रिखे रिखे रेषा रुपु रेषा रुपु जी मेंवी रिख है:-
उर रेषा भवाले वह उर भवाले भली।।

2. रेषा।
3. रेषा।
सिद्ध बनें ते हैं हम ते हैं चच। चचज सतीत  ‘टिठ वेवे भव’।
छुम वेतन भवधी यी माय। चचज भवध हैं ठहे थान १२।
‘भव वेवे वच वे सिद्ध ठही’। दिम ववि हही सिद्ध भवधादि।
देव वेतन वे रहे कही। चचज मधुंख तौड़े हमें भव। १४।
उँ हे भवध तबखजे चरे। ‘चचज भवध मिलन भव देव आवे वेवे’।
उँ यही सतीत हैं घडे भव। है तबखजे भव हैं घडे घड़ी। १५।

devar: दिनौ वराह तम वेद वे सिद्ध तौड़े चरी घड भवी।
श्रीनाथेए घास्त घा यो दिने तिंग उठी। २०।

depti: हुरुवी भवधी तौड़ ववि सतीत। ववि है माय है ववि भव। है
छें तज हे ले रान तिंग दिने। ‘सिद्ध भवध कहे रिमें ठही। २१।
गज सतीत वे ठह यो बजा ठही। योै ववि ‘उम यू भव ववि ववि’
रतवान घड ठह ठह वच। है मनिराल दिम वहे बूहे। २२।
मधु-पन्ना भवध हैं घडे सतीत। नित्र्ये द्वार भवध भू भव नी।
देव वेद भवध दफ दफ दफ भव। बाँटी घड घड भवदि मिलन। २३।
मिलन मिलन उदवत बुझ गाज। यहे तौड़े में भी हढ रेज।
भीम भवध भी हढ़ उदव। भव। भव हैं भूष घड़ी। २४।

मापी भवध भू बंदित भी

१४२. [भवध भूटे भू भवध भवध भवध भवध]

devar: देव वस्त बनसी तवैं भू पुजे वेदी।
रतवान मधुंख म्स्म में वेदी कुड़ी हुई चम। १।

depti: ने मध द्वार भी ला लो। तीव्र हे चढ मध ठह ठही।
सूच वजे चढ इंधु भव। द्वार में घाव यो दह ले दह। २।
उँहे युध भवध भव। तीव्र घटन दे भवध मुख कुड़ी।
मध उदवत वे दह घटनी। है हुई भवध मध दफे दफ। ३।
रतवान सतीत हैं भव। पिंह हैं भगवान। है हुई देव देव देव वव।
भवध भवध घड़ी घड़ी। यहे भीते में वचजे है भवी। ४।

devar: ने बंदित ने उम भवजे उदव भूषे वेदी।
भवध गदी हैं उदव वी भवध उदव तिंग उठी। ५।

१. यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो

२. यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो यो
चंदनी: नमस्कार देश विश्वासय पाना। अगर पुत्र उन्हें भगवान उठाए।

चंदनी: ब्रह्म भवानी नवाज़ नवाज़। जन्म लिया है हां जन्म लिया है।

चंदनी: जीवन भवानी नवाज़ नवाज़। जन्म लिया है हां जन्म लिया है।

चंदनी: जीवन भवानी नवाज़ नवाज़। जन्म लिया है हां जन्म लिया है।

चंदनी: जीवन भवानी नवाज़ नवाज़। जन्म लिया है हां जन्म लिया है।

चंदनी: जीवन भवानी नवाज़ नवाज़। जन्म लिया है हां जन्म लिया है।

चंदनी: जीवन भवानी नवाज़ नवाज़। जन्म लिया है हां जन्म लिया है।

चंदनी: जीवन भवानी नवाज़ नवाज़। जन्म लिया है हां जन्म लिया है।

चंदनी: जीवन भवानी नवाज़ नवाज़। जन्म लिया है हां जन्म लिया है।

चंदनी: जीवन भवानी नवाज़ नवाज़। जन्म लिया है हां जन्म लिया है।

चंदनी: जीवन भवानी नवाज़ नवाज़। जन्म लिया है हां जन्म लिया है।

चंदनी: जीवन भवानी नवाज़ नवाज़। जन्म लिया है हां जन्म लिया है।

चंदनी: जीवन भवानी नवाज़ नवाज़। जन्म लिया है हां जन्म लिया है।

चंदनी: जीवन भवानी नवाज़ नवाज़। जन्म लिया है हां जन्म लिया है।

चंदनी: जीवन भवानी नवाज़ नवाज़। जन्म लिया है हां जन्म लिया है।

चंदनी: जीवन भवानी नवाज़ नवाज़। जन्म लिया है हां जन्म लिया है।
ब्रह्म दिव्य में भय खिम में। चौथ भावगती के घि में।
बीते ते भोला चढ़ उठी। मुरारा लगे तौप धार्मिक। 22।

dेवगुर: हेतु गेह वे उतव उप म ती टकटक।
‘श्रद्धा के अग्ने भ्रमित हेतु गेह थे।’ 23।
dेवपरी: माता निहे वी चेस ते भागी। माता गुहे वे मेरर रागरू।
‘दिन भरे के अग्ने हों। दिन हैं। उम अग्ने र टुटे।’ 24।

dेवगुर: माते मेह वे मेह दे दिन माता गुहे उठम।
चेढ़ले भुवते चेढ़ सटे लमे चेढ़ दिन पण। 25।
dेवपरी: माता विठे वे गमे भाग। माता मेह वे दिम नट वे भाग।
माता विठे वेंद पृथि में। सटे उदवा लाटी दहे। 26।
देवगुर: देव अग्नि वे माता वे। माता विठे वे। दिन दिन दिन।
‘श्रद्धा के अग्ने भ्रमित हेतु गेह थे।’ 27।

dेवगुर: हेतु गेह वे उतव उप म ती टकटक।
‘श्रद्धा के अग्ने भ्रमित हेतु गेह थे।’ 28।

dेवपरी: देव अग्नि वे माता वे। माता विठे वे। दिन दिन दिन।
‘श्रद्धा के अग्ने भ्रमित हेतु गेह थे।’ 29।

dेवगुर: देव अग्नि वे माता वे। माता विठे वे। दिन दिन दिन।
‘श्रद्धा के अग्ने भ्रमित हेतु गेह थे।’ 30।

dेवपरी: देव अग्नि वे माता वे। माता विठे वे। दिन दिन दिन।
‘श्रद्धा के अग्ने भ्रमित हेतु गेह थे।’ 31।

dेवगुर: देव अग्नि वे माता वे। माता विठे वे। दिन दिन दिन।
‘श्रद्धा के अग्ने भ्रमित हेतु गेह थे।’ 32।

dेवपरी: देव अग्नि वे माता वे। माता विठे वे। दिन दिन दिन।
‘श्रद्धा के अग्ने भ्रमित हेतु गेह थे।’ 33।

dेवगुर: हेतु गेह वे उतव उप म ती टकटक।
‘श्रद्धा के अग्ने भ्रमित हेतु गेह थे।’ 34।

dेवपरी: देव अग्नि वे माता वे। माता विठे वे। दिन दिन दिन।
‘श्रद्धा के अग्ने भ्रमित हेतु गेह थे।’ 35।

dेवगुर: हेतु गेह वे उतव उप म ती टकटक।
‘श्रद्धा के अग्ने भ्रमित हेतु गेह थे।’ 36।

dेवपरी: देव अग्नि वे माता वे। माता विठे वे। दिन दिन दिन।
‘श्रद्धा के अग्ने भ्रमित हेतु गेह थे।’ 37।
देव राज में मैं वह लगी। हैम वी विज़ तविं दीहीं चढ़ावी। सूरजक तै जानी तेह उम्री। दिलदास उठे है चुभट मुसाफी।\\n\\nरेतग: मनी हाऊड़ में बर्षेंग चुभट वे भाली। मर्म रेव मिन विज पहने वीतीं आदि निम मर्म है।\\nपुछ टेट है चुभट रेलिंग बने अर्घि घाड़। 'पकड़ वें दिलं वह गाज़े है चुभट दिल मानी।' रूप\\
\\nरेतग: अपी हा तविं देहट गाज़े। दुस्व चुछे तंढे मागे। माथ ऊप निम दुस्व चुछे है। भुग नूहादे सटे लगाफी।\\nमेले पैं तै सटे चुछे। बनी उनां बोलाव यही रूप। यही हड़वां दुस्व घाड़ लगाफ। गुढ़ि बाँधी हिलें दे राज चुछे।\\
\\nरेतग: तोले गाज़े भे जीत में भय अदलु लर्नी धुए हुए। तुलतां बाँधीं मिठीं भाव हैं दुस्व में धुए।\\
\\nरेतग: भागकर अठी मैं भि भि भि भि भि भि। भिसन लड़ नभ मागे बहे। भुग घाड़ में भग रंगा धानी। भिसन ते बीहे भी घाड़ घाड़ी।\\nचुछे ऊप चुछे भी से बचिए। में ती बोलाव थालाव द रवी। उलट एवीरिं मुहरे बुलाए। बंगर 'ज मागे में रवी मागे। धुए बाज़े उम नाम उगाम। मड ते ऊर बीती भाम।\\
\\nरेतग: मघउ चंधे तीत बाजे हते। मसी ह्यू देब बाजे उने। अर्घि तें।\\
\\nरेतग: उत्तिविज दे बहूं धरी। 'जान दश्ये भई दे दिल रवी।' मघउ बाजे 'उठ दीये जाए! दिलदास माग उम दिल दिव रवी। भीरी मार दिल बुछ हट गाज़े। ना मात्स्य दिल बुछ हट गाज़े। भारी बाजे बाजे लक्खाबी। 'भावे बहूं घु भूँ भू भू भू भू भू।' में समां भय भग जाने जुछ। बधी घाड़ मिट घाड़ तांते जाने। घाड़ि हठ के भिम वे रह! मुख भग वे माग घाड।\\
\\
रेतग: उंग भागते हट जाने संत उने घजं। घजं मागी हिर्न मु आ देकर देहट रवी मु गीछ।\\
\\
रेतग: स्थाने दिल लघु जंगी भावी। भाविक पारीपु वती। सगी बघु दुस्व भउं लर्नी। दे लघु दुस्व दिवें देव। भगती वे वह मागे 'ज मागे।
उत्तर भागमूल उत्तर वीरमा। वरभ पांव वय नट पार लीभा।
के नट हत्ते नट भविते हाते। जिम धियां महर भूभर भरे। पढ़।
पिंदिय डीरी माँगी हड़पिय। तानी धाट बरे सेरी हड़पिय।
पूरी भी उन्हीं नेत्र बांज। रूपरे माँगी सूचना उठा। पढ़।
मुलनाम उक्त वे टो चल आते। वानिक पुराण ढांढि अरे।
मणूत पात भल सत्ता भाज। आपि भेंग ढिल ब्रह्मुमक भाजा। पढ़।
वाह भी मिलन पत्र आपी। मेजी मुंह उन पीत लगाः आपि।
वाह पुराण तिर मृत रही। जड़त मिल लिंग माँही ठही। पढ़।

देवत: माँह भाग्यां मैं घुसे तुमने अधूरे लाग।
फैसी विचि वाहे उत्ते मांहे भो आणूभय आप्ना। पढ़।

माँही भूत आते भक्तें भे वापड़ीये भी उत्ती

१४०। [देवा भूत आता, वापड़ीये]

dूर्दृष्टा: पुरा ग्राम अधि मिठाव भी वली माँग तिर मृत।
बुद्ध भवित मे घबरे अलमे यकै भद्र।
धामं उने अधूट ठही मिर मिकेराती।
भले भाले उन मैं भक्त नष्ट आते फाली।
मांडलां ददांग धामं मँह भवि डूसने।

देवत: रात्र घबरे भाक्ति ुड़ा िजुट धम म माणी।
भालं पढ़के त्रां गल तेंद्र म माणी भर्चं। २।
विला उड़ने मे वे विचि निर म्म में उदविर। भर्चं।
भर्चं निर म नाग म्म लों तेंद्र निरागित। ३।

देवि: भालं मं रह कर परच पींच करो।
भालं उदभित स्त्रां निर दी। निर पहुंच वे निर भर्चं। ४।
तीसी रियबे भालं रामी। दौड़ी ऐंट दौड़ी परलीं मानी।
कहीं तेंदे वे दूध मी। तेंदे र चैला जेती बागित। ५।
उ रातों वे वल पाते माण। त्रांत उदभ वे चैले माण।
कलो मिठाव वे तुम चूर भक्त। वाहु पढ़े पीठी बागह। ६।

देवत: घाट पींच कहे मसे विदी वहे रब ईंछ।
कहे म वाचन हारे वे स्त्रां म निरागत चह। ७।
देवग्न: बुध निशों ने धटक भजन। धरर हिंदु वस्त्र लगाम। ने समझे मिथुन नरें चुट। बाज हिंसा भिड़ बचत बुट।।

सिन्धु भूमि ते उड़ नै धर। धर फूल मिथुन बचत नो चुट।।

देवग्न: बुध बुध ने नै जी बुढ़ नै। धर वधू नै। नै नै नै। नै नै।

देवग्न: ‘सिन्धु भगवान धर नै। धर नै। धर नै। धर नै।

देवग्न: धर धर नै। धर नै। धर नै। धर नै।

देवग्न: ‘मिथुन भगवान धर नै। धर नै। धर नै। धर नै।

देवग्न: मिथुन भगवान धर नै। धर नै। धर नै। धर नै।

देवग्न: मिथुन भगवान धर नै। धर नै। धर नै। धर नै।

देवग्न: मिथुन भगवान धर नै। धर नै। धर नै। धर नै।

देवग्न: मिथुन भगवान धर नै। धर नै। धर नै। धर नै।

देवग्न: मिथुन भगवान धर नै। धर नै। धर नै। धर नै।

देवग्न: मिथुन भगवान धर नै। धर नै। धर नै। धर नै।
इंग्लिश: मात्र उठकर भाल मेरे हैं तैतं भेंट पड़ा।
‘महेन्द्र जी भा उठ उठ पहें मेरे मिश्र महारि’ २३।

epythi: मेरे घाट टिक लौटे बजे। अपनी खाली घरी भाली।
मिश्र उठे उठे मेरी सवितारी। अंगुरि भागि भागि अंगुरि। २४।
रात भाल पाँच सिंह बार। मिश्र वेंगु वेंगु सा।
मेरे हों भी मिश्र मिश्रके। तिकते भाल उठे बजे। २५।
ठावर मिश्र उठे गाथे। प्यारे घरी। उन्नी भाल।
अपने सवित्ते के बोंदे रहके। मिश्र मा भाले उठे। २६।
उठान उठान उठी सवितारी। पहे भागुल उठे वे भाली।
उन भी मिश्र स भाल वहा। चीत भाल वहा है। २७।

epythi: उठकर चेताम ने गाथे रोके म बिलास मानि।
दिल वी माजा भा पती वे उठे देंगे भालि। २८।

epythi: घरे भाले बरल भाल। भुक्तुंजे देंगे घरी भाल।
मिश्र भुक्तभाले वे पती पाँच। चुंब भाल उठे मिश्र मानि। २९।
भाल भाल मिश्र दिवेंदुब उठे। भालाम मे मिश्र उठके भाले।
वें भाल भाल वे उदाल। भाली उठानी उठे भाल। ३०।
उठें मिश्र उठे रोके मानि। मुरुगुल भिला उठ भीरे सिवा।
‘बने घूटी भा भाले वेंइ’। दिवीर भालोल भाली में भाल। ३१।
‘चढ़े भाले लमा अभाल’। दिवीर घड़े है भाले घड़े।
दिवीर घड़ी वे रुकन मुहा। राम मेहू मिश्र गाथु धिव्राला। ३२।
इने भाले मिश्र वे लौकाल। राम मेहू मिश्र दिवेंदुब वला।
शुंदे मिश्र घड़ी वे उड़ी। गिट घरमे मे मुहे वेंडी। ३३।

epythi: दिल देंगे बरले बिंझे घेते मिश्र बल लीड।
दिवीर भाल मिश्र दिवेंदुब उतने भाले हेंड। ३४।

epythi: वाँ भलतिही ‘जम भाले अभले’। टुंबे वाँ वर वर भेंट मुरुले।
रीवीर भलतिही भाल लगा डूंग। गिटाने रुकत मिश्र वीरष वला। ३५।

epythi: घरीर वेंम चुंब टिक राजे ते भाले पटे मिश्र अजु।
मैं भाले भेंडीसे भाले टुंबे पहुंचे घर। ३६।

epythi: घरीर नाले वे मेंढे उठे। उने मुरुल व टुंबे मंगा वेंडी।
अनां घरीर टिक स्थीरे पोट। मिश्र अन्नास मे हट नाले में। ३७।
घरउ परिवर्तन करते थे। वहें घरीवी सुहूह रोक लगे।
उसमें धरातल बचने विचार। 'अगर हमी देवी वही सशक्त।'

लेखन: मामा मिश्र माह मिश्र देव देख देख थे तीने हाल।
छठवे माह मिश्र देख जाते 'दिव रहूँ घड़ीवे घड़ा।'

लेखन: माह पाठ भी पीड़ित माह मिश्र बचने। 'मैंते कहनी हैं में ढकने।
झूठ कहने मे भरा खेले। ठूल ठूल रमण रहे माह मिश्र नाना।
उसी भीमल रे माति माँ हैं। उसी माह मिश्र रे बिट बड़ह।
अपने अपने पूर्ण घरे। भवन धैर्यवी मान उद्यवे।
पैं सेव देख रे मां। उसी भीमल माता रे माह उठते।

लेखन: ये चढ़वे मे सा होते अभेदित पैंते मामा।
घरीवी उत्साह जेट दूर विकलात्मक दिखावे लगा।
बुधवार वर्धात्मक घरीवी हर उत्स भूतात्मक चलावे।
भरे मिश्र चढ़े मुक्तमें पेड़े दिव उठावे।

लेखन: घरीवों मैंने दूड उड़ान। घर विलम्ब में सीधा भरावा।
रहनी रमणित भें पाटढ़। भाव उठाते रहूँ भिक्षुवा।
भीमल माह मिश्र घर भरात। भाव उभाराएं विलामे राहे राह।
बाह मिश्र रे बूढ़ा मिश्र। भुज गिरवा। माह मिश्र।
भैं रे अंद मध भरात। घरीवों मे ठीके उठव विलाम।
छुड़े चलना नैला नहीं। वहे दूड वहे दूड जी आवे।
हें माह मिश्र भलकर घुमाने। उनी उठ दिह मूंबे माने।
अवे मूंबे घर रहूँ जी बंड़। राहे अवे विल वहे अवें।

लेखन: ये चढ़ भीमल रे मे चढ़े दूढी मुख मलावे।
भैं माति धैर्य मे विल दूढ़े उर भीमल चलावे।

लेखन: भाव भीमल रे बूढ़े घड़े। धूप दूढ़े मिश्र भुज दूड़ि।
में भाव दूड़े मुख मिश्र। में सा बहु पूर्ण मिश्र।
वहे झटाने चे मे बूढ़े घड़े। भाव दूढ़े मिश्र।
हिंग रे जंगल मे बूढ़े घड़े। धूपें र मिश्रज रे मूख मिश्र।
भैं मिश्र रे अवे मिश्र। भुज गिरवा। माह मिश्र।
'भीमल देव भोग चयन रह गधे। भंभाल बाबा भंभाल बाबा।'

* पृः-माह मिश्र रे महाभाव मे घुड़ सवधी देख चलावः।
उतर भार तभ खटू मिल्लयाँ। वृद्ध अभिज्ञ तभ बजले मिल्लयाँ।
उतर उठ लखे भें खटर खट लूँगे। घनीब घनीब खटर बढ़े। ॥५॥

देवता: चले यिद श्री मे में भग लखी बरी मिल्लसत नैयाँ।
चले मिल्ल भरे में में मिल्ल निश्चिन्त भागो तड़ाए। ॥५॥

चंद: तड़े मिल्ल धमनृत भाग। टड़े भ भवें मिल्ल भुताल।
धम घटूँ बी माने जावा। तेल असुल बी खेले बामे। ॥प॥
असुल भी भराय सात भागो बढ़े। विकार निवार मुख्य साजे। ॥प॥
विकार घरे मे मिल्ल जलाइ। मिल्ल पर विहाल पड़ जुआ। ॥प॥
करे तड़े पर पात धर खड़े। घड़े निश्चिन्त ज्वाल गरे। ॥प॥
चले मिल्ल भर भुत बरी खड़ी खड़ी। घड़े घड़े घड़े घड़े घड़े। ॥प॥
घड़ो घड़ो मिल्ल घरीते घड़ो। घरीत मव दव दिव देवे घड़े।
घरीते घरे घरे घरे घरे घरे। भुरे उठ निल अगे वरे। ॥प॥

देवता: चले देव मिल्ल धर खड़े उद्धे घरीत चलाय।
उ हि निश्चिन्त बामे बड़े भवें में मिल्लसत मत भगे। ॥प॥

चंद: तम घटूँ बु बे बाज घरीत। चिन्ह चलाड़े यिद मिल्ल यत पीत।
मुख दिने भे भवें में मिल्ल यत पीत। भूखी पृथ बड़ तरी तरी चल। ॥५॥
मिल्ल न्यास मे दे मिल्ल स्वाय। ठठे निले अठ बनूँ निल।
अनमल साग मां भरुँ चल। भूखी स्वाम मे घरां घरां उगात। ॥५॥
बती त्वें भे घरे बहँ भर। चंद बांस मे घरीत टल।
घरीत नतौँ सा चंद त्वें घंगा। घड़े मिल्ल न्यास बने घड़े बने। ॥५॥
भर हि निल बी भरामे चित्तलगा। विकार घरीत वे हुटं घिराल।
लेट नसौँ मे भजालत रह। भरी उसौँ उसौँ मिल्ल मंड़ा। ॥५॥

देवता: उ हि मिल्ल खड़े उद्धे खटर घरीते वर।
विक खड़े विक बड़ा बड़ा विक बांसे बड़ा बांस। ॥५॥

चंद: माय बनुँ बैल बैल गई। बैल घरीत में धम बनेह।
घरीत देव में धम घरे घरीत। घरीत देव में धम घरे घरीत। ॥५॥
विकार दिनुँ बन घरीत बी भरें। विकार तेल दिन घरीत घरें।
विकार मिल्ल भुत बैल घड़त्त। स्वतं घरीत वे विक दिन बजाल। ॥५॥
बैल दिव मे बी देव सेष। भर घरीत खुद खुद उठें।
उद्धे घरीत बित मिल्ल पैरे उड़ा। माय बनुँ बैल दिन थेट। ॥५॥
विस्मित प्रभु देखते वन्दे। ह्रदय ध्वनि वे प्रेरणे वहै।
देख देख भिन्न लिखिते वे गये यहै।

देवता: उद्दीपित मन में लतकर चिंतित तिथि न शिष्य भवित।
सिंह दिन दिन लिखिते ठहरें जी। वेदतै सन्ती भिन्न वन्दे यहै।

देवता: उद्दीपित मन में विभागी दुल्हने। हृदय नैंटे वे निस्संदहने।
कह कह भाद्र नज़री तिथि घाड़। भुजावनें शिष्य न थोपे भाद।

देवता: उद्दीपित मन में दिन दिन लिखिते ठहरें। वे भूमरण पूरा बने सहा।
हर भाद्र नज़री तिथि घाड़। भुजावनें शिष्य न थोपे भाद।

देवता: उद्दीपित मन में दिन दिन लिखिते ठहरें। वे भूमरण पूरा बने सहा।
हर भाद्र नज़री तिथि घाड़। भुजावनें शिष्य न थोपे भाद।

देवता: उद्दीपित मन में दिन दिन लिखिते ठहरें। वे भूमरण पूरा बने सहा।
हर भाद्र नज़री तिथि घाड़। भुजावनें शिष्य न थोपे भाद।

देवता: उद्दीपित मन में दिन दिन लिखिते ठहरें। वे भूमरण पूरा बने सहा।
हर भाद्र नज़री तिथि घाड़। भुजावनें शिष्य न थोपे भाद।
देखना: समा मिल वे पटकवे ग्रामध लिय लभ।
दिह मिल नी चैं अभिषिक्त अव चीरं वहि ठहरा। 43।

चेष्टी: दोन धरे जम वहि तरी। अब तभी दिन संह वहि तरी।
उ मिल नी दिन हिम दहमहे। 'जमते वेहे भगत त पहे'। 44।
उस ग्रामध लिय बचव ठहरा। तचव वेहे उल वे लाज।
उस मिल नी हिम ने रहि उठव। 'चरित अबवे जे सतव उगवे।' 45।
पेष मैं जम वे वहे ठहर। श्रेष्ठ बुरदी समा मिल ठहर।
वज भुव जे दे में थों दिवस। धरे भगवती जम वे भगव। 46।
वह हमसे अभिमान उगवे। अब चचव अब तीरी घड़वे।
हिम नीदत वे अहे थे। वही समा मिल वहा में हेमें। 47।

देखना: ग्रामध लिय हिम हट उल मिल नी लघिन उस्मनिध।
सतउ विदहइ वहड़ उल में मिर हिम घटी। 48।

चेष्टी: समा मिल वहे जसी भानि। उ दी मिल नी जमले रक्ष।
समा मिल भव सधि मुटवे। मद मिलवट भुव मिल पुछने। 49।
दिह दीं जम भट ठहरे। अवी, खड़िले, जम्बनारी मेंह।
खड़िले, जिम्बनारी, जड़े हाथ। बुध मिलि अंग अम्बु मूल दुहाल। 50।
मद मेंबेले, मद मिलिशिये माने। मधी ठीली अंग जान दिपावे।
अधुमदी अंग पुरी जरी। तमहमि वेंले वेंले अंग अम्बर। 51।
घरी मेंडी तेल भा भाँगे। तचव तुरे में थोंम हमसे रहे।
मधी ठीली अंग तांबे। वही वहा वहा ठहर। 52।

देखना: हिंदे हैं वे गुड़ मद हड़ धस्र आचार।
अले दुहड़ उ उ दुहे दिव दिव हट पुट्ट भट। 43।
उससे मिर में हिंदे हट घर हसर।
'हि नू बविल चे में चरित नदिय ठहेअथिव मादी।' 44।

चेष्टी: में वह हम मिल शोध गांव धप्प। अभिवह वह नच रहे पैठे कहम।
सवे ठ टेंडव में वाम जर। दिम山西 ठ डुरे दुहर बजी गुट। 45।
हिंद मिल टेंडव भुव हरे जरी। उठा भाग वहे बिलामे चीर।
भवउ मेंना तवे अपं जाब। 46।
भवउ हेलू ढद ढट वाम। हिंद मिल राध भव तीनो लघ।
वहा से वहे उल अनें घड़वाम। 47।
अंडे हें मद अभिव माद। नचव विदवान मिल भैं राध।
सतउ जरी घड़व पहे हील। भाग हैं उड़ि मिल मसी। 48।
टेनूः घर गिनकर वै भाद्रै घर मिलन सै घर गिराइ।
गिनकर वै गेहें घर गजान उत्ते वजुणाइ।५५

टेलूः नहूँ मिल मध ठ विमई टेंट। देखईँ लगवा उठैँ नादी मेंट।
घरीिँ ठ हेंढे पठ उठ सैधे। उठै भगी बव मिंटे भरे।१००१
देख हेंड वध टेंट यौहे। भग गिनकर हौड़ हेंसे भाद्रै।
हभैँ हेंड घर नेयँ पढ़े। हटे लिवे लिवे भेघे पढ़े।१०११
वर्तिीभर वै चारि भूवऽ चढ़ैँ। वर्तिीभर वै निम वेंड़त चढ़ैँ।
निम घरीिीभर वैं निकाहिं। घर देव निम देव बधाइं।१०२१
टेंट गिनकर पड़ जें मिल बढ़े। भग वन्म ये घरीि घर।
हभैँ हेंडनिम मिंटे मंट लहे। हट उ दुड़ उड़ दे हट पढ़े।१०३१

टेलूः नीलुवी निम बढ़े युभे दह बिनुभि निम दल भाद्रै।
उदूँ मिल गिनकर दिम बटै पूँछ बटै निम पढ़।१०४१

टेलूः घरीि वद निम दुव ठ नहे। भाद्रै हई भण घरीि घरथाई।
खेंढ खेंढ मध बढ़े बढ़े। खेंड हवा भढ़ खेंड खेंड।१०५१
पन बढ़े निम वेंड़त बधाईं। हेंड टेंट वै भण चउ यौहे।
माझद नहूँ मिल घुछैँ यौहे। देख ठ हौसे देव लसणी।१०६१
अनी बंदि वुटि वदुंब दाखीस। दिम वै भण चउँ उठ सैधे।
तू वैंडूँ नाम खारसी टेंड। चउँ भण वै उच दे पीढ़।१०७१
वैंडूँ टेंट में भणाइँ घरथाई। दिम चउँ मिल दुमे भद रह भाद्रै।
भण वैंडूँ दल में भणाइँ घरथाई। चउँ मिल भणा भणे घरथाई।१०८१

टेलूः वैंडूँ दल दल नहूँ मिल वी बईँ भजा में सहादुत।
नैमे भाने देलिहै उैमे भाने पूरा।१०४५
उदूँ दुड़ दुड़ घाड़ मध घरीि जैँ देव भाद्रै।
उे हिंद भगामात रिम बन पड़े मिल खट पढ़।१०३१

टेलूः नेत बंदि मिल हेंड दिलबैँ। भेड़जे घरीि घर छड़ मझर अजल।
दिम में दौब उठ उठे दिट। दिम भगामात रिम मझर हैं।१०१७
एल घरे दिम बत भाद्रै। दिम भगामात रिम उठ उठ उठ।
नहूँ दुड़े दिम ही पन। दिम भगामात रिम दव भाद्रै।
उदूँ दुड़े दिम बटे भाद्रै। दिम दव भाद्रैरिम उठ उठ।१०८१
चैह भगामात वह धुम पहाड़। चैह मेंटे बन भगामात उठ।
चैह मेंटे उे युभे हे भाद्रै। भण उदाँ दिम मिंटे बन बनें।१०१४
चंद्र: नाम निज निजा भा पुनर्र भावन भल घटी।
वसे मिन लिंग भा नहीं वसे नरिंग गृह जी। ९९५।

चंद्री: उच घटीय हे पिंज़ उवरी। पिंज़ संवत हे दुहे भवने।
पिंज़ में दरन न चींदे बैठी। अंधी घटी घटी मू उठी। ९९५।
बिंग झब पहे नागर भंग। में गिलंग हे बंधे रुपः।
सोभनित दुरश्च मै नूं रहै। बचबल संवत हे घाट बैठी। १९१।
हेकत देंश लेंग दिन हथी। देंश उन लिह तै घब रहे दिन।
देश तै दीव मु देश हार। बिंग हे दिह चींदे महां। १९४।

चंद्र: हृदय मु हृदय यी बैठी चंदने बांधे दघ।
घब लेंग दिह में बंधे में हम हैं लिंग रत्ने। १९५।

चंद्री: हृदय चंदन मिन जीवम भा! भुज बच भेला घटी हूं दह।
पीं दीवरीकी दत देंश संपदः। भैंच चंदन मिन गिलंग भंग। १२०।

चंद्र: बंधे थिमामे मां धे धब निर धी हौँ।
धी धी धी दिन हटी भयी है घब नामे घाट घाट घाट। १२२।

चंद्री: मां धब उड़े वह धप में दबे। धबे धामिने यें दह मरी।
धाम धार धुल चित घाता नीज़ा। में निजिन बल चींदे बैला। १२२।
बाल भाग धब मिन धब लिख करे। न्यें नामे घाट भागा त वटे।
घाटी घाते में लींगे मां! धेंगा उड़े मिन देंशे धाँ। १२३।
मिन वल तूटी शमशर दिख। दिखिये पीव दुसर उड़ा ताना।
मिन धामिने है घाटी घाता। में घब नामे मु भयी सताने। १२४।

चंद्र: बुधे घाटीय हे वहु दीं धब वे रहा।
घब घाटीय हे उंग देंश हे धेंश मु हम उगाभ। १२५।

चंद्री: तेनज धुं घाट घाट बैली! लींग भल भल उंग तै है घेंग।
निदुः नूम लेंश वन चींदे। भाग लूट धृत मिन लिखे। १२५।
मांह धेंश धिंग घाट रहे। धी घाटे है नी रहे।
उ घाटी उड़े रागान। में बढ़े मिन हे मुनी पुड़ा। १२५।
बली देंश धह पिंज़ लाख। भाग नेपाल धिंग वसे उलटान।
भल मिन धिंग लखे घाटि: में तेनज धु मु घाट घाट। १२५।

* दां: भाग
ने पिघ ले चाहत रा रा आषाने। रा भुरु दिम मीम बलापे।
देहूँ रा भुरु भूख रा मे रा। रा रा रा पवल दिल दिल रा।
मानसा है मे ठीक ठीक। रेड रमो रा रा रा रा। १२५।

d) देहान: रा पिघ ले रा रा रा पवल दिल दिल रा।

d) देहान: रा रा रा रा रा रा रा।

d) देहान: रा पिघ ले रा रा रा पवल दिल दिल रा।

d) देहान: रा पिघ ले रा रा रा पवल दिल दिल रा।

d) देहान: रा पिघ ले रा रा रा पवल दिल दिल रा।
प्रभु भाग्यी जीव घराएँ। तके म भव भोग घर वच भागे।
प्रभु सच तृप्ति जीव ये मास। दीव इे मुख जीव भर्ती घड़।
बांधे दीव बी लिखती लिखित। बिसुख याहे लिखवे भावी।
बेटी पाँट बेदँ अरे ताए। दीलाब जी भिंद बोली भ्रकमण।

devta: हिंद किंवा घर उदय वित्वे दीवे घर भुवनी।
'उँह अनाम ने तैरे जाने म पैट गाद्दी'।
मधुगा मधु भवानी उत्थे मपाउ तराये ह बेवी।
श्री मरीची वी बलाल निहत्तर मधु व वेवी।

devta: बुझू मिंह स्वभा निधरे ह ताहे। दीव उलझाव मे तेले बाटे।
बुझू मैतल मिंह निधर रहे ह। विख ताहे मानव। बसी बूकै।

devta: दिव दिव दै उद भिंद की नाकी मिंहकि भावहू।
बसंके घड़ घंगीता चर नेवें मीम भनुह।

devta: मान घरीते देंह भर अखे। 'भ तिनपे बुझू मिंह' हरें।
'मे नीहे बुझू मिंह तिनपे।' ये घरीत मान भावहु ताहे।
उस घरीत ये देंहे भरम। 'उड़ि मुर्ग जल किंसू बीम।
मधु पैट दुहि नलकन।' मान मिंह देंहे भरम। जन।
बेटी बुधी 'जल दुहि भमामि।' बेटी बुधी 'जल सरे पाठि।'
बेटी बुधी 'जल दुहे भुलकन।' बुधी 'बमरी भे बघाल उठ।
पिपर घड़ फूल घड़। पिपर रहे मान दैरं चान।
श्री बसा वले बलिन भरकन। बोले बील मान बुझू मिंह धम।

devta: सिम उद बुझू मिंह बुझु उड़े मान घरीत म दिलप मही।
मान भव मानमे वटे हैं बूँढ़ मान भावी।

devta: मान अखमे म भाव बाटे। बली स्वरत उदय पतिबे घरहे।
मे महावे हे दिव तस पाहे। दलगुष्ठ पतिबे घरहे।

अव विनिष्ठा भे वान्हे मे घरहे?
954: [बेवटा दे अखमे वी भरकन]

devta: भूतावे वादविने मिंह दैंे मिंह वादविने मही।
हैं रंगे घर भाग वाल दुहक हरी।

* हिंद माँगे दे अंदेह 9 दे दूसरी माँगे दे अभिलाभे देवे दे धार प्राप्त दे वि
अभाय मे दे मिंह दिवाल देंहुँ दैंुग्र भागै तस वेदिन्स मे हे भवुक भीजा भाग।
भेंड़ी: मिथक वे दिले माल धुले। मिथक पूर्णी उब घेत बनाँ। मिल ने दिले टले भुई। टुल-भर्यी मिथक बनालीं।

देंवल: मिथक ने धुत भुल भूल हो। मिथक पूर्णी उब घेत बना। मिल ने दिले टले भुई। टुल भर्यी मिथक बनालीं।

भेंड़ी: मिथक वे दिले माल धुले। मिथक पूर्णी उब घेत बनाँ। मिल ने दिले टले भुई। टुल-भर्यी मिथक बनालीं।

देंवल: मिथक ने धुत भुल भूल हो। मिथक पूर्णी उब घेत बना। मिल ने दिले टले भुई। टुल भर्यी मिथक बनालीं।

भेंड़ी: मिथक ने दिले माल धुले। मिथक पूर्णी उब घेत बनाँ। मिल ने दिले टले भुई। टुल भर्यी मिथक बनालीं।

देंवल: मिथक ने धुत भुल भूल हो। मिथक पूर्णी उब घेत बना। मिल ने दिले टले भुई। टुल भर्यी मिथक बनालीं।
पृष्ठिक वें पृष्ठि

पूर्ण पाने वें फिरे उठें। दै वी मिस्कु भक्ति उठें।
बंदी विहार उम अन्य जनाय जाते। नन में जल वच तुर्त मिस्कु पाने। २१।
भक्ति ने उम अन्य जो जिन उठाने।

एक चांदक दिन चल विकल त्राष।
दिन वी ताल जुंदे जपी, चिन ‘सती महेश्वर चल’। २४।

स्पष्टी: उम धारे है एकत्र स्मारणे। ‘टोले ठहरे ठहरी’ में ठहरियाँ।
‘अरे विहार अभ वें जेटियाँ। लगो धारे ठहरे उठाने।’ २०।
सुदः सुदे बजीसे बांधूं। अन्द सेम में सीं बंधू।
बांधे बंधे में वे में बदले। अन्द स्वाभा एकत्र घटने नुहे। २९।
हिंसा विभूष बिलकुल ठहरे छठे। त्रिय हित जो बंधे बिलकुल थरवाने।
किशु बी हित जेटिया मकाना। हिंसा विहार वध धरे घटना। २२।
सुदः सुदे वह दिन भक्ति भक्ति दिन। ने सुदः सुदे जात दिन भक्ति।
भक्ति ने सुदः सुदे धुंध्र घटना। भक्ति ने सुदः सुदे नुहे। २३।
मिस्कु नृदे वे हित जवां पेंदे। विभूषा विहार नृदे नृदे पेंदे।
पूर्ण रेड मिस्कु बहै आये आये। उप सीं विकल ठहरे गवाह। २४।

स्पष्टी: उम विकल दिन ठहरे ठहरे पछे जवां पेंदे।
भी मिस्कु मिस्कु में ठहरे भुल बेहें रेड। २५।

स्पष्टी: हंसु मिस्कु वे हंसी पड़े। हंसु मिस्कु मुखे वटुँ।
सुदः सुदा अधी पहुँ या। वहे भक्ति वे मिस्कु उन बढ़े। २६।
हिंसा नहीं ‘सम देवा रहे आहें। उम खुशिभार उन तुल कराहें।
उम देवा सेवा पता आहें। भक्ति घटकिखार योंदे है सहे।’ २१।
मिस्कु नाले ‘उम लकः मिस्कु।’ विन विन विन में भखे खिलाहें।
है घठने मुत भखे नाचि। भक्ति गोलगं विन वेदी घुटाकिखार। २५।

स्पष्टी: हंसु मिस्कु वे हंस लैंगे मिस्कु लैंगे घड़ते घम।
‘उम वेद है जुंदे देवा वन केहु जय रहे दिन रहे।’ २०।

स्पष्टी: हंसी मृदा है आजे अंत्यें। दुःख ठहरे मिस्कु में तें ठहरे।
विनुभ देवकवल में धिक्के भिन्ने। विनुभ भक्ति वें बनी भक्ति जदैन। २१।
चेत भक्ति उव वृद्धि मंडल। पिंड़े भगवान उह अती विविध।
पैठ भगवान जिते हैं घर लिये। उं उं भक्ति अपहर नीनी।
संगति चित यें लूटत भाव। धव लागे बसन लहुंैं न पहरे।
शेषी बड़ी विविधत घट। घरे म जां से आ उसी रह।
पौछूं मैं बड़ी झड़ी। घरम जही में नैंट दरणी।

चेतन: विह में विह मन लागे। मिश्र मरे गुजे भि भि जै।
‘भावे में में अभि अभि’ जो मिश्र वजाने जैसः।

चेतनी: मैं लठ नाने उदि तेजी महें। भूत मिश्र उत्तरा न धरे वें।
चेत मिश्रत बस गुजे पसे। लठ बल भिगक बिल्ले सानी हुई।
सुदी चित्त मिश्रत लट्ट सदी। शेषी घट बिसंत की सदी।
स्वात घटत उदि मिस्र रस घरे। विविध चित्रम मिश्रत कट लटे।
लट जदे सानी भेंत घर। वेंट व्यूदे हड़दे हार।

चेतन: तुम मिश्र है भिन मत्ती दें म सदी रिकिर।
अंगौ भागे भिन उदय में पवी घड़ी।

मध्य दूती विलयन बी

9.20. [चेतना सम्बन्धि वेंट में]

चेतन: हेत विलयन मल भिन भिन वाय वबी मलित।
‘विनयन बस’ घड़ीवै घरे मिश्रत घर पानि।

चेतनी: मिश्र विनयन सद नाने जन। स्वेत लें। उम हि ढह मद मसे।
मैंहूं दें मम उय विनयन घड़ी। भास वें। बन मल दें। दंडिण।
रात रात वो धूपने खरे। नीह बेम बट बदल पाये।
राज वेंम हिस लूंच पाये। मध्य आत्ते वै चेत चंपटे।
हिमाल चैतवन मिस हिं। बंध बगे। चेत निन्यन भिन बंधे।
भवन हिमाल मिश्रत वे बिल्ले वे पहुँ।

चेतन: ढह रठ उम भागे बदी पुजन। डल रठ उव। ज्वली मलध।
बदी वेंम उम जाने गरी। उं मिश्रवल बदी उजाल।
देवन: सिपिह महानन्द उस बच्चे 'भज भज बच्चे मंडल।
पतली बिना तभ भजा वाह भजा वाह भजा। २

देवपी: ने भज ठहरे भजी नहीं। भज ठहरे भजी नहीं।
देवपी: मंडल चाहै में वह वह देखी। ०.

देवन: सिपिह महानन्द उस बच्चे बिना बिना बिना बिना।
भजा महानन्द भजा मंडल भजा मंडल। ११.

देवपी: सिपिह मंडल वह देखा चेत। भजा वह तीत दिल भजा चेत।
देवपी: दिल मंडल दिल मंडल दिल मंडल। १२.

देवन: है भज भजा भज भजा भज।
देवपी: दिल मंडल दिल मंडल दिल मंडल। १३.

देवन: है भज भजा भज। भज भजा भज।
देवपी: दिल मंडल दिल मंडल दिल मंडल। १४.

देवन: सिपिह देव मंडल सिपिह देव मंडल सिपिह देव मंडल।
देवपी: दिल मंडल दिल मंडल दिल मंडल। १५.

मध्यी यथं विप्लव दी लती,

११९. [[स्थिर त्यह द्वारा रहना]]

देवन: ने भज भजा भजा भज।
देवपी: दिल मंडल दिल मंडल दिल मंडल। २१.

देवपी: भज मंडल भज।
देवपी: दिल मंडल दिल मंडल। २२.

* बीत टकराये रहें।
भूमिवाद चढ़ाने ‘मूल सिंह बिखाठे! टेक सिखे भग विखे मेहसेते।
उदाहरण आदर तै गहरी ताली! खिलां खरे खोज तै उठे तै उठे।’

4.

एक दिन बाहर उठी भूमि। उठे भूमि बाहर गंगा। उठे भूमि बाहर गंगा।
उठे भूमि बाहर गंगा। उठे भूमि बाहर गंगा।

5.

एबू दिये बिखे भाजे जने मिश्री पोथ होझे।
माँही भूमि बाहर भाजे जने मिश्री पोथ होझे।

6.

उैैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
‘भूमि बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।’

7.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

8.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

9.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

10.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

11.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

12.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

13.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

14.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

15.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

16.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

17.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

18.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

19.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

20.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

21.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

22.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

23.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

24.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

25.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

26.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

27.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

28.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

29.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।

30.

उत्तर: उैं धीरे धीरे जीते जीते जीते जीते जीते।
पाई बाहर जीते जीते जीते जीते जीते।
देवधर्म: अंग भीष्म भर भीष्म भए। मध इतिहास में है पाया।
मध चंद्रो ते सत्ता सुधरी। पूर्व मध देवकथा पिथ घटी। 2।
भास्कर भारत धू हैं लिख है। धरत हरक्तभाषा है न वारे।
देव पूर्वं हैं सुद्र भक्ति। मधव भाद धू हैं उसे आगाम। 3।
मध उदे मध ते रही। धर धारा भुर आरे यहिं।
दुध के धर्म से मलिक मू भाति। मधिक है उसे दिखाई दिय। 4।
मधिक सीता हैम सलिन नें। उने अचलें आऐं ऊँचा।
अघ्य घाट मने माघ चुरा। मधजे हिंद भाग भेदे पाये। 5।
देवधर्म: मधिक भुवाने गाँ धू हे ने मध धू हे चेत।
‘तम भाव मध धर्म और भक्ति हैं वमे हागू देते समेटो।’ 6।
देवधर्म: पहूंचे धर अं महिशी धर। उने धरीन्द्र मधिक धर।
धू है। मधिक भिख धिम ताज वरी। ‘भावमधु भिख भूढ़े भगी।’ 7।
मधिक अन्य धिम तरी। उदृव घनी। ते भागो।
बट रेडल है श्परी मशहू। ‘भागे जागर भग धर नाइं।’ 8।
नौमा मध धर है। धर याग। बिलाकर हिता वह भी सैंवन कर।
‘ते से में हे जल उदे ता गुन। बिलाकर उठ रोंदी। डिं धर।’ 9।
देव वे हुं हो भाग भक्ति ते। ते हुं हो हुं रोंदी। हो।
रिच तेरी वी मिन तरी ठोंगा। अभसर घरीं जों। हपने दें। 10।
देवधर्म: ने दें दें ने धू है। मध धर हैं उध डिं।
अग्नि परी। भागू दे मंदित वेदिज मध्य। 11।
देवधर्म: उने धू है। वर डिंतै धर। ताले भिखर धरीं।
बुद्धमा दास धर हैं पिठारी। ते ही तिम में ताज गुढ़ पली। 12।
में लध धर्म ने धर ते भागे। तरने भेंडि नें तहे दें।
बलब धर हे भेंडि भागी। देवधर्म वर धर मू भरी। 13।
बंच भारत से पराक गई। में मध धिं भल में भें।
बिकल भिखारे मध उदे। भागी पीठ धिं भिं भटै। 14।
धर भिख धर भाग रहाने। मधिक तान्दली भागाने।
उन मध धहूं है। धर। पीठ हैं वाहे धर तृष्णा। 15।
देवधर्म: मधजे हड़े धभधर धक्के धिंध धुसर भरी।
ते ते नागा क्यूट यवें मधुई ववें तहीं चेत। 16।
जागी दें। भि भभी धिंध भारत मधिक भिंध।
बंचा तें मीठ और दिखायो देंथ। भुजाध। 17।


पंजीकित चाँद पूर्ण

चैती: मिर्ग लटीं निंदा साक्षर मीर! अपं भले घटू लाघित!
अध जह घड़ रुज़े दे राहे। जहाँ में घड़ आई सीता भवे। १८।
कहु उध वे चढ़े मु दिरी। दिन दे दे अध रुज़े दिन सांती।
उसे जह बे जह पूर्ण भगे। अभ भगवान ने जह हिते दिखावे। २५।
उसे जह नूट जह ने जहु। उसे उसे भगवान तू मुझे।
मुल्लित दालण वे मुम लक्ष! आवजे छिन्ने बै राजी राही। २०।

देवता: मे मुर उपासन है उंग चीती हलक सुषम नाहिं।
उंग मिष्ट वे दिये वे उंगी मे नोशी भाग! २९।
उसे मिष्ट मुर अभ तत्वी चपड़ पहले भागी।
छिन्ने हस्त भय बढ़े। बंधाग दीप मिष्ट माय! २२।

चैती: पउढ़े हाला अध हार! मीर पृथिवी है उपासन भा।
बूढ़ पूर्ण वे राज मुरे। अत्तर उपव निःसा निःसा इंसा! २३।
पृथिवी भाग उड़े मब मिष्ट चढ़े। नाह घड़ा उड़े शुरू दे।
उड़ा मिष्ट वे मे घड़ आवज़: महवी छिन्ने ठीक उबर चानी। २८।
भगवान वट बढ़ अवजें बढ़ी। घर निःसा दर्शावे हित छे शे।
छिन्ने हाला नव जह जामे राहे। भगवान वट रेदे भागणे। २५।
नाम मिष्ट वे मिष्ट पहले। 'बनजे उड़ा अध अभी त नाह!'
पपु चढ़क मिष्ट अध मु पहुँरे। 'भावे मेहँदे अध घड़े त मेहँदे।' २६।

देवता: मह भय वे अध मा उठे बढ़े दिये मिष्ट सक्षात्क।
मह निःसा नाहिं मुरँ है देखे लीप चूरण। २२।

चैती: उंग मिष्ट जैसी हार मदह आवज। मध्य रुकरी दल मिष्ट पहले।
उसे मुरे उसमे जमज़े में भरे। भये मा मदही मे उठे महरे! २५।
भये वहरे मुरे मे जमा। मिष्ट पृथिवी जैसे जमे मुज मध्य।
इसे हाला खेड़े नेली शुरू। उड़ा मिष्ट वे घड़ र बढ़े। २४।
मेहँदे जैसी मदही बैहँ। शिर भीरुँ भागुँ मा बैहँ।
किमत दलक निःसा दिघर चढ़े शे। २६।

देवता: मारघँभजे छिन्ने हे छिने बढ़े हराम।
मेहँदे पहले मेहँदे पे मुरे जमावे याह। २९।

चैती: मिष्ट नग चुंड़े तीसे आवज। नगभ छुड़े वे नग भय गहे।
छुड़े मे मिष्ट निःसा वे आवज। घड़ उड़े मे भग गुराहे। ३२।
मेरी उड़े मे रूंड़े जहां। दि धारी जी दीप रह जहां।
छिने पैंट वे भ्रात गहे। छिने दीप वे महे त चढ़े। ३२।

www.sikhbookclub.com
देवद: उध चहुँ मिथ से दिँच भज़ जे ‘रामसे’ रिय भज़ जे।
लिखान डिया रिह वशे पुछहे भज चरण। ३५।

देवधी: उध चहुँ मिथ से श्रीम पुछह। ‘रियते’ सिंहु आते रामसे।
Dependency extracted: दिँच वज्र मिथ सी दिँच एक गाले। जाती लिखान वे दल पते। ३६।
भज़ी भज़ी रिय से उठे। दुख दिय मेरी।
अध रिय वे मुहे मुह घाड। बताने ‘भुम्भै मब वहीं पाउ। ३७।
देवधी: देव राम देव तब ठहरे। जिन घरीजे सिंह चूँत बताने।
देवधी: उध मिथु वे चंडूर भाँधु। जो मही ठहरे देखिए थे पाए। ३८।
देवधी: मिथु जे जी मही सिंह ठहरे बूढ़ा बूढ़ा।
पतियें मेंढी भा चढ़े दुखे मु पाहे दुख। ३९।

देवधी: भाँधु मिथु बूढ़े हलव बचानी। भजी भजी विष मही सता ध पाही।
दुख मिथु डिय हलव बची। मीम मही ठहरवे जाने भाँधु। ४०।
भजी रिमी आदि बूढ़ी सेठी। दुख बूढ़े बूढ़ी ही कैदी।
मिथु जब सुख मिथु चन्दे नहीं। बिन प्रेम रिमु चन्दे नहीं। ४१।
बहु बत मिथु बधी उल्लास। बत तेष्व घट नीते भाज।
भहूं दास भस वह वह नहाव। लगे उज्ज्वल बूढ़े मेंढ। ४२।
भज अधसे चढे मिथ हंस। तेष्व भाँधु मेंढ वत मेंढ।
देवधी: भजी भजी ठहरे पूरे घड़े मेंढ।
सिंहु हुसपते भाज वे सचिनसपते रैंड। ४३।

देवधी: पूँढ़ी हलव में सब सते। उज्ज्वल में पूरे पुछ भाज चढ़े।
हित ठहरवे सते थे। बसु पहाड। भजन हंसली रा भुम्भै महात ४४।
भज अधु पूरे धम्मवर रैंडी। मिथु बधी की विच बुज नहीं।
मदुसपते गुणव मद मुहवे। भजी भजी हड़पे बूढ़े थे। ४५।
भज्जी अतिरिक्त पेंडी झटने

9.3. [लोभी रंगी नंदा। धर्मपत्र दे, तमाशा तमस् अनेक गिनिय बिनार]

चैतन्य: उलटत काळघरे चँदी भज्जी अतिरिक्त धर्म।
मिलती हुमायूं वे में हेट्टो वे बन्ना।

चेयरी: मे मैंने चैतन्य हेट्टा। चैतन्य विग्रह व चँदी उठा।
उनकी धारा वस्त्र में मह कही। दिल में चैतन्य हत धारा में वर्षा।
मे तेंदु घड़े चँदी झटिया। घड़े क्रम विस्तार घड़िया।
अग चैतन्य हत व्यक्ता। शह झट ध्वनि में मूले उठे।
झट मैंत हेटा हत वुडु मूल। चैतन्य हेटा चैतन्य घड़ा।
मिलते हुमायूं मैंने चैतन्य हत। मिले र पैमे भूलके उठे।
मिलत हुमारे धर्मपत्र वर्षा। धर्म हेटा पैमे वर्षा वर्षा।
बने वस्त्र में चैतन्य हत व्यक्ता। मिल उन्नी हिस्सा बनाय।


dedges: उस अहंकर सिवध मारे बर्रे ‘जू हरमो गॉग्रे गिसाहित।
दे उसे उम में रटा वरी मुनम अपने लेंगे रिपारटे’।


dedges: आरूढ़ सिवध उस तबितल पहला। मह दस्तम हे में उठ भागा।
तत्त्व सिवध दे देघे महा। मिरा मे आपने मरे बुझाल।
उदुङ दहल हे देःउ द्वार। तम भजते वरी दिमारे।
उबर हे सिभत वजन भेद। घर पहला हे निम दे पैल।
उन में सहित तम छिद चिना। दहल हे केरित देह मिह सीना’।


माधुर धिखम बाम भगव बी

१२४. [बाम भगव वजह मे तौर मे दिखडी]

dedges: माधुर मुङ्घ बाम बी सिभध धिखम सिभध महे भग।
भाई तेरे दलवे ते भाई पढ़त ढील २०१।


dedges: माधुर भारत में भार। देरे वरी निकट भेंटन उठा।
घमिक दविदेति सिवध हृद रहित। अभय रथ उड़े विकरण पह।
पैस भिमम हे दृढ़ दृढ़! उभराडीहे, पहाने, मूनसवीहे, घरपी।
देवी उदी सिवध दे दृढ़ रहाने। दिने आपने में दे सहने।
अभव मैं दृढ़ दृढ़ दृढ़ आपने। मृत जिवित डिल डिले मियारे।
हुश पूर्ण दे मे वजह विभाल। घम मे भीं डुङ आते दृढ़ २०४।
दिनी उदी मह दस्तम भाए। मह अभव मह रहे मे मियारे।
वेर पैल उड़त बै र देवि। डारू डिलन मह उलझुने तेरिये २०१।


dedges: देव रिदम उदी मिय नी बैठे दृढ़ रवषान।
रही दृढ़ बाम भगव धिख वाम तिधि ढील २०१।


dedges: दृढ़े सिवध दे दृढ़ भगव। ‘दृढ़ समस्तिक भगव ढा’।
उदुङ दहल हे देह दृढ़। रौं रहान हे दरुङ चल।
उबर हे सिभत वजन भेद। घर पहला हे निम दे पैल।
उदुङ दहल हे देह में सहित। में सहित तम छिद चिना।
घर पहला हे निम दे पैल। दहल हे केरित देह मिह सीना।


dedges: उदी मिय निम दे बर्रे ‘जू हरमो गॉग्रे’
‘छती तीहल तम अलसी गहरे रुग्मे देह’।


1. धिखडी में। 2. दृढ़, दृढ़।
शेष: हर साहब इतने बड़े हाथी हैं। वह माहूर चमत्कार दूराने।

एक बार सिंब बैठे अचल। महल तेजी चुटकी सराह थी। 91.

पहुँच निकाला इतना अदभुत उड़िया। इतना स्वादिष्ट सिंब रुकती देखी।

'वह रूपान्तर में चूल! भाई वासना घर में गई।' 92.

उसी में वह तेजी में भितर निकाला।

उस कोट भी घासी पुंछा। 'रूपान्तर में उस कोट गई।' 93.

महल रहने भेजा छलफल। 'उस में हिंसा में भितर निकाला।

अपना रूपान्तर लग लिया उड़ा।' उस बैठे सिंब दे बही छलफल। 94.

देवता: उस हूँ भूरे उसी सिंब में भितर निकाला सेड़ी।

'रहने रूपान्तर लग देने बैठे पत्तने में सेड़ी।' 95.

शेष: उस महल के वह चलने में फिरों। इतना भाग जब सूर्य चितान।

उस वह दूर सिंब भूत उड़ा। अभिनव के रूप में रहना था। 96.

भाग भितर से खुशी सुना। दोनों शब्द में भी चलना।

बहुत भाग उड़वा घासी भाग। गाजी घासी दम है। दम हाथ। 97.

बैठे बैठे और भूत घासी भाग। उस संग्राम पिंड उड़ती भाग। 98.

उस के बनाई में बैठी उड़ती। आपने भागने के उड़ पाती।

अभिनव भाग रूपान्तर बीच भाग। उस दे वम पुराने में भाग। 99.

देवता: उसी सिंब हूँ वही 'रूप भाग रूपान्तर।

उसी सिंब दे भय नूतने में रहने भले अचल। 100.

शेष: उस महल दर्शने में बैठे देवी। 'अभिनव में बैठे उस भीम।

दिश भीतर इतने उस बैठी घास। दस घड़े वे बैठे घड़े माघ।' 101.

उसी सिंब हूँ इतने जिन उस भीम।

'बैठे घड़े घड़े घड़े घड़े घड़े।' बैठे घड़े इतने भितर घड़े उड़ते।

घड़े घड़े घड़े घड़े घड़े घड़े घड़े। 102.

भाग भितर से रूपान्तर भोजन। उस दे चाँद से रूपान्तर भोजन।

घड़े घड़े घड़े घड़े घड़े घड़े। 103.

मात्र अनवरत वे रूप रूपान्तर।

उस दे वम नूतने में भाग। 104.

देवता: या बैठे हूँ बैठी 'रूप अभिनव भाग।

उसी सिंब दे भय नूतने में रहने भले अचल। अभिनव। 105.
वेर्धी: उब मह भाक ने गां सुरां। उन्हें मह मह दित्व भह घां।
‘थिने लघु न बहलें टहँ।’ ऐ लघुभांत रान ने लिख उसँ। २४।
बचू मह भह दी दीर्घ भुज। वह ने बहले मिखल बख।
उब मह मह मह रान दही। टिक भस्म बिह दरिय भती। २५।
‘दृढ़ वधु दी दीर्घ मही दैं दणां।’ मिख मह ने मह दव रेह।
उब पहुंचे उब मह भह ने देह। मिखल लेह दैं आपे लेह। २६।

प्रहरी: “थिने धर्मे भगवाने दिति मह देह।”
अधरे तरंग न्यागर दिति दुह दराः।
देण मेल मन्द्रे मिख दहे दिति रहा दिते।
टिक दहे दुह दहे दिति दरिय दहे दहे।
सिम दैं दुह दरिय दहे मेह दहे दिति देह।”
(श्री: फल-१६४३)

देवर: दीव मह लल्ल मह दहे लल्ल मह भह।
बहे तहां दैं दैं दैं भह दैं दैं। २५।

देवरी: परी मिख मिख दहे दहे दिउंटी। देण दीर्घ भुज चहड़ी।
भ्रूचक दह भह दहे दहे दहे। दीव मह दहे दहे दहे दहे। ३०।
परी में मिख मिख दहे दहे। पिथ दहे दहे दहे दहे।
अधरे दैति मेह दहे दहे दहे। धरां मेह दहे दहे दहे। ३१।
लिख मिख दहे दहे दहे दहे दहे। ‘थिने लघु मह दैं दहे दहे।
सिम दैं दहे दहे दहे दहे। दहे दहे दहे दहे। ३२।
री मिख दहे दहे दहे दहे दहे। भह दहे दहे दहे दहे।
दहे दहे दहे दहे दहे दहे। मिख मह दहे दहे दहे। ३३।

देवर: देण दहे दहे दहे दहे दहे दहे। दहे दहे दहे दहे।
उब दहे दहे दहे दहे दहे। ३४।

देवरी: उब दहे दहे दहे दहे दहे। वहं दहे दहे दहे दहे।
टिक में दहे दहे दहे दहे दहे दहे। दहे दहे दहे दहे दहे।
उब मिख मिख मिख मिख मिख। दहे दहे दहे दहे दहे।
दहे दहे दहे दहे दहे दहे दहे दहे दहे। ३५।
सी मिख मिख मिख मिख मिख मिख मिख मिख।
दहे दहे दहे दहे दहे। भह दहे दहे दहे।
दहे दहे दहे दहे दहे दहे। ३६।
वेसी वहों "सद हे भावत भावत। तथा कहैं तो भी रह वे रहों।
वेसी वहों "थे थों भाव नाथुणा। पूर्व घर फिर फूट उपाधुभु।" 38।

देटान: पूर्वी ले। यूं दिन वहों "वेसी फूंडा थंब मलत।
भव फिरुण सब बदल अभी रहम जलात। अपह जलात।" 39।

चेपानी: देवती वहों "उसी पीयुं भावत। मंदी बनाये इमह बनाः।
प्राय वे दिक हतार मिरा भाव भाव। ९५।
प्राय वे दिक हतार मिरा भाव। प्राय वे दिक हतार मिरा भाव।
वहु उसी वहु उसी वहु उसी वहु। ८२।
उस दिन संग वही जी न चढ़। दिन आर भाली चढ़ी त चढ़।
पुरुष उतनें थिर विचर चढ़। पुरुष चढ़ें त पति सिंध बूढ़। ४४।

देटान: सिंध चुपकती हर महें देवती* उतां पतह।
हर नाम तहर वहों पुरुष वे म हिकावें। मेघ पहाड़। ४४।

चेपानी: वेसी वे दिन हूं दिन वे भाव। पीछे हु पतल पुष त पतल।
अर भह में दिन जीव भावतार। वे हुव महवे दिक हूं मुख मूढ़। ४५।
मसर वहु मिरा उस जी वहु रही। भुज पीयुं वाह धिया घड़ा।
उस देवी दिन हिरवह दे। भवे दिन हूं भाव भी जो। ४८।
सिंध चुपकती उतां घड़ है। चुप वह उगे त पतल वहे।
मिराम हुलाये दर दर है। तुज जीव घनावें। उचुल हरुये मिरा उतां पुरुष वे। ४२।
जानें जानें कसावे ये वे वह जानें। "भाड़ार चड़े निजव मुख त चड़ा।
भवे उतां म अन्न मूढ़। मिरा वह राघुरी भो। राघु। ४४।

देटान: हर दिन हर दिन हर दिन हर दिन। भवह उदी वही उदी वही उदी हर।
भवह उदी वही उदी पतह। भवह उदी वही उदी हर। ४५।

चेपानी: दिन जानें दल पुषवे वहे; दूरी जानें भाव हिलने।
भव वह जानें वही भस लही। वे पहाड़ उवर। हे वही। ५०।
वे विचर हूं दिन हूं दिन हूं। मिराब मह ऊँचे उच चड़े।
पतल महिर में घड़ी उचावय। वे हे पहुंचें मह रच भाव। ५१।
उतवर पुषवर पुषवर महर। निव वर भूरा पतवे चड़े।
भव मिरा वाह हुलाये घड़। दहे देवरन ये मंड। ५२।

* अर्थशंकर। देवरन। देवर।
ਪ੍ਰਣੀਤ ਖਂਧ ਪੁਰਾਣ

ਵਿੱਖ ਦਰਿੰਦ ਮੁਗਲ ਵਿੱਖ ਦਰਿੰਦ ਵਨਿਧ। ਵਿੱਖ ਮੁਗਲ ਵਧੀ ਹੀ ਦੀਖਾਣੀ।
ਵਿੱਖ ਦਰਿੰਦ ਦਰਿੰਦ ਵਨਿਧ ਦਰਿੰਦ।
ਵਿੱਖ ਦੇ ਹੁੰਦੀ ਵਿੱਖ ਦੇ ਵਰਤੀ।
ਦੇਹਾਨ: ਕੀ ਮਾਤ ਮੁਗਲ ਦਰਿੰਦ ਤੁਸੀ ਦੇ ਭੁਸ਼ ਦੇਖਦੇ ਵਨਿਧ।
ਕੀ ਮਾਤ ਹੀ ਦੇ ਭੁਸ਼ ਦੇਖਦੇ ਵਨਿਧ।
ਦੇਹਾਨ: ਵਿੱਖ ਦਰਿੰਦ ਦਰਿੰਦ ਵਨਿਧ ਵਹਿਕੀ ਅਧਿਆਤਮ ਦੇ ਭੁਸ਼।
ਕੀ ਦੇਹਾਨ ਦੇ ਵਨਿਧ ਦੇ ਭੁਸ਼।
ਦੇਹਾਨ: ਦੇਹਾਨ ਦੇ ਵਨਿਧ ਦੇ ਭੁਸ਼।
ਦੇਹਾਨ: ਦੇਹਾਨ ਦੇ ਵਨਿਧ ਦੇ ਭੁਸ਼।

ਦੇਹਾਨ: ਪਾਠਾਦ ਭਾਵ ਸ਼ਹ ਮਹਾ ਤੇ ਵਧੀ ਵਧੀ ਹੀ ਹਟ।
ਪ੍ਰਣੀਤ ਖਂਧ ਦਰਿੰਦ ਦਰਿੰਦ ਵਨਿਧ ਦਰਿੰਦ ਵਦ ੋਕ।
ਦੇਹਾਨ: ਪਾਠਾਦ ਭਾਵ ਸ਼ਹ ਮਹਾ ਤੇ ਵਧੀ ਵਧੀ ਹੀ ਹੀ।
ਪ੍ਰਣੀਤ ਖਂਧ ਦਰਿੰਦ ਦਰਿੰਦ ਵਨਿਧ ਦਰਿੰਦ ਵਦ ੋਕ।
ਦੇਹਾਨ: ਪਾਠਾਦ ਭਾਵ ਸ਼ਹ ਮਹਾ ਤੇ ਵਧੀ ਵਧੀ ਹੀ।
ਪ੍ਰਣੀਤ ਖਂਧ ਦਰਿੰਦ ਦਰਿੰਦ ਵਨਿਧ ਦਰਿੰਦ ਵਦ ੋਕ।
ਦੇਹਾਨ: ਪਾਠਾਦ ਭਾਵ ਸ਼ਹ ਮਹਾ ਤੇ ਵਧੀ ਵਧੀ ਹੀ।

ਦੇਹਾਨ: ਵਿੱਖ ਦਰਿੰਦ ਦਰਿੰਦ ਵਨਿਧ ਵਹਿਕੀ ਅਧਿਆਤਮ ਦੇ ਭੁਸ਼।
ਕੀ ਮਾਤ ਹੀ ਦੇ ਭੁਸ਼ ਦੇਖਦੇ ਵਨਿਧ।
ਦੇਹਾਨ: ਦੇਹਾਨ ਦੇ ਵਨਿਧ ਦੇ ਭੁਸ਼।
ਦੇਹਾਨ: ਦੇਹਾਨ ਦੇ ਵਨਿਧ ਦੇ ਭੁਸ਼।
ਦੇਹਾਨ: ਦੇਹਾਨ ਦੇ ਵਨਿਧ ਦੇ ਭੁਸ਼।

ਦੇਹਾਨ: ਵਿੱਖ ਦਰਿੰਦ ਦਰਿੰਦ ਵਨਿਧ ਵਹਿਕੀ ਅਧਿਆਤਮ ਦੇ ਭੁਸ਼।
ਕੀ ਮਾਤ ਹੀ ਦੇ ਭੁਸ਼ ਦੇਖਦੇ ਵਨਿਧ।
ਦੇਹਾਨ: ਦੇਹਾਨ ਦੇ ਵਨਿਧ ਦੇ ਭੁਸ਼।
ਦੇਹਾਨ: ਦੇਹਾਨ ਦੇ ਵਨਿਧ ਦੇ ਭੁਸ਼।
ਦੇਹਾਨ: ਦੇਹਾਨ ਦੇ ਵਨਿਧ ਦੇ ਭੁਸ਼।

ਦੇਹਾਨ: ਵਿੱਖ ਦਰਿੰਦ ਦਰਿੰਦ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਖ ਬਹੁਮੁਕ...
माही दिखेउगी किया ।

154. [माही दिखेउगी किया]

देवन: तथा भगवान तथा मूख की भूमि की गाथा।

वर्तमान दिखेन रूप का तथा हार्दिक गाथा।

देवन: तथा मूख का दिख हुआ करमी। वर्तमान दिखेन रूप का तथा हार्दिक गाथा।

देवन: तथा मूख का दिख हुआ करमी। वर्तमान दिखेन रूप का तथा हार्दिक गाथा।

अन्य वधों को दिखेन है किया हुआ।
देवन: उसी दिन वह उन्हें नहीं मिले।
पत्र भुनाता गया उन्होंने तू भूल।

dेवदी: पत्रिये लखे आये मैं नहीं।
विर जित छीने मैं नहीं दिखाए।

देवन: हमें हार गया उनके साथ।
पता में हमें मिलने ही नहीं।

dेवदी: उन्होंने हर दिन दिखाने लगे।
भीतर वह हमें मिलने नहीं।

देवन: वहाँ का पता नहीं मिला।
पत्रिये मैं हमें मिलने नहीं।

देवदी: किसी वाले नहीं मिला।
उसी दिन यह हमें मिलने नहीं।

देवन: हमें हार गया।
पता पत्रिये से नहीं मिलने भूना।

देवदी: सब भाग भी नहीं मिला।
बिचे भीतर वह नहीं मिला।

देवन: वहाँ का पता नहीं मिला।
पत्रिये मैं हमें मिलने नहीं।

देवदी: किसी वाले नहीं मिला।
उसी दिन यह हमें मिलने नहीं।

देवन: हमें हार गया।
पता पत्रिये से नहीं मिलने भूना।

देवदी: सब भाग भी नहीं मिला।
बिचे भीतर वह नहीं मिला।

देवन: वहाँ का पता नहीं मिला।
पता पत्रिये से नहीं मिलने भूना।

देवदी: किसी वाले नहीं मिला।
उसी दिन यह हमें मिलने नहीं।

देवन: हमें हार गया।
पता पत्रिये से नहीं मिलने भूना।

देवदी: सब भाग भी नहीं मिला।
बिचे भीतर वह नहीं मिला।

देवन: वहाँ का पता नहीं मिला।
पता पत्रिये से नहीं मिलने भूना।
शिम दिक भालजे दिम में बाँध। रंगा बीजे शिम दिम दिखाइं।
लेंग लड़िय में दिम बुझ लगे। द्वी परदेव दींगे ले परे। 23।

देवधर: भालजी मिथ दिम दिख बाँधे ‘मे उम जीन घड़िग।
मे मबरद में भव बहसी मैं मे उम दिखाइं’। 24।

उपधर: बाँधे उध में उसी बुझाए। अपली विरकटी युप मिथ बुझाल।
दिल बाँधे हिक महाबली जाइ। माप पेशी नेंए दिखाइं। 25।
वधी दिख उवली दिम भव। बेंग अधारी बेंड़ली उंग।
दर्रा लड़ बे निदर्रा बाँधी दिखाइं। मे अब जहाँ विभ यह भाटी।? 26।
मे जिह घड़े उ जिह स्थान बेंग। अप बमद जगैं उठी तेंड़ा।
ठे थे भेन मे दिम में लगिं। मे मंडे मे उम जुटि लखें। 27।
उठ नू मेंढ़ा नेंदू बे ये। खेल हिके ढे उठ नू में चगे।
पुंढ महाभाग महाली धेर। तेंड भेन मे चते उम। 28।
मे उठ दुगली मिथ कल्हैं उगैं। मुरख मुख मिथ दें। भवः भव।
भेन बेंग मिथ कोई माहैं। मचत मंदिग मिथ मजाके भवः। 29।

देवधर: भालजी मिथ है दिम बाँधे ‘दिम वे भव घड़ि।
वेल बेंग मे जीन है दिख दिख अथ मुरख। 30।

उपधर: उब दिक बाँधे ‘मद बाँधे ठ सबैं। वंजान बीजे महाबल ठ आहै।
सम भीम तट के देंदे मुरख।’ दे मेंढ़ा दिक भीन ठाँध। 31।
भागी मुरख मद नागियल बाँध। घड़ू नहाँढ़ू बेंग मांड ठी।
बाँधी मुरख मा दे रुझाने। दररी ठूँब दरी बेंड़ल रहे। 32।
बाँधी उपस, बाँधी पीछे उठ पैंगे। बाँधी नहाँढ़ू बाँधी तुषी सियले।
बाँधी भंगुढी महाबल बेंगी। मापू से भव भव भव भव। 33।
मुरख भजावे दिम वे भव। मुरख मदे मुरख मदे दें।
बाँधे बड़े भे भव भव भव। उब उदार लख सब भवी हिखाइं। 34।

देवधर: भालजी दिक भाल मद दिम दिख देंग मेंढ़ि।
छेंग ठीक सब पुराग में पथे मे ठ रुझाइ। थप।
मुली मद देन मेंढ़ि पाली मिथ उदा।
तेंड माटी मु जीन दिम महाबल बे दिखाइ। 35।

उपधर: भालजी मिथ है सब बेंग पठी। छेंग रखियु घड़ भाल है।
मूली पेंट बढ़ गाटी म सिह। दिख मद बाँड के भव सुव। 36।
ਚੁਰਾ ਮੇਂ ਚੁੱਢੇ ਹੋਓ ਤੋਂ ਹੋਰ ਮੂਰਤੀ। ਮੁਹਾਂ ਚੁੱਢੇ ਹੋਓ ਮੂਰਤੀ।

ਹੁਣ ਤੋਂ ਚੁੱਢੇ ਹੋਓ ਸੁਤੀ। ਉਦ ਸੁਤੀ ਪ੍ਰਤਮ ਵਾਵੇ ਹੋਵੇ।

ਵੇਦੇ ਦੌਰਾ ਵਾਲੇ ਕੰਢੇ ਹਾਵੇ। ਵਰਤਦੇ ਦੌਰਾ ਵਾਲੇ ਤੀਜੇ ਹਸਤਾਂ।

ਦੇਵਗਾ: ਸਾਨ ਸੀਸ਼ ਹੇ ਦੇਵਗਾ ਬਾਅਦ ਅਦਾ ਚੌਗਲ ਤੀਜੀ।

ਦੇਵਗਾ: ਦੇਵਗਾ ਹੇ ਮੂਰਤੀ ਹੀ ਦਿੱਤੀ ਵਾਲੀ। 'ਚੱਕਰ ਸੀਸ਼ ਅਵ ਦੀਖਾ ਮੂ ਹੋਵੀ।

ਦੇਵਗਾ: ਦੇਵਗਾ ਹੇ ਮੂਰਤੀ ਹੀ ਦਿੱਤੀ ਵਾਲੀ। 'ਚੱਕਰ ਸੀਸ਼ ਅਵ ਦੀਖਾ ਮੂ ਹੋਵੀ।

ਦੇਵਗਾ: ਸਾਨ ਸੀਸ਼ ਉਧ ਦੀ ਬਣਾਈ ਵਜੋਂ।

ਦੇਵਗਾ: ਦੇਵਗਾ ਹੇ ਮੂਰਤੀ ਹੀ ਦਿੱਤੀ ਵਾਲੀ। 'ਚੱਕਰ ਸੀਸ਼ ਅਵ ਦੀਖਾ ਮੂ ਹੋਵੀ।

ਦੇਵਗਾ: ਸਾਨ ਸੀਸ਼ ਉਧ ਦੀ ਬਣਾਈ ਵਜੋਂ।

ਦੇਵਗਾ: ਦੇਵਗਾ ਹੇ ਮੂਰਤੀ ਹੀ ਦਿੱਤੀ ਵਾਲੀ। 'ਚੱਕਰ ਸੀਸ਼ ਅਵ ਦੀਖਾ ਮੂ ਹੋਵੀ।

* ਮੂਰਤੀ ਸੀਸ਼ ਵਿਚਕੁ ਹੈ।
देवता: वरी ‘ये मे पत्र बेठ आपी’ हल घल घल घल।

देवता: ये पत्र पत्र बेठ आपी।
भद्री दुश्मने वे देखता वी

192. [विजयक झोल नू मेह वे दुश्मन भेंड़ा]

देवना: भावे रस में धिख टल टले रेडियो धिखाते था।
सुलेखा दुश्मना मिह भलने उड़ लीगा केना बखराता।

वेंटली: वृंदी झील वे झिमेल तख। तुझे धिख दिम झिमाते था।
सीला केना दी केना बखरा। तुझे रेटना भलने में था।
पलिमा जोत ते हैं दिख झिमित। चित्र उध भे सेण्टर रख।
बरी पतली केना ह्रेम चम। दुसे भेंड़ा उड़े चम।
भावे कथमे रसी मसरत। 'धुंधे रस वी लह दे मग।
भाव विद लड़े दे नैना लगट। तुझे किते देसी दुश्मने उड़ा।
सीला केना ह्रेम उलित दील। सीरा घनाम वीरी लुष्टि मैल।
भागे देने देह दे मग। रसी मिसरल वे वूढ़ पलकट।

देवना: वाहजे मिसरल वे लिंग थे 'ने मुख नाचे अध।
साह दुश्मना ह्रेम देख अन से ताहे दे में वाह धर।'

वेंटली: महान मिसरल उध चुड़ा जाने देना। दाही झील दाहने दीने देना।
'भाव चौंड़ी भल देने धम। भाने देपै वे धामे धन।
पतिने टवे भावे जला देना। जला टेकिना वे रेतना देख।
उध धामे हैं रे धिख दिला 'टवे प्याल ने देपै नीत'।
उध धिख भाने दीरी सुभाष। 'जाद दर बन्धन में देपै उध।
विलास सुभाष जाने वारी भेंड़। टवे धामे हुशां उम वेत।'

देवना: उध धामे हैं रे लिंग धामे 'ने भर देपै वायत।
बाह दुश्मने वे भान सब दे हिंग परिसत।'

वेंटली: वाहजे धामे 'मुं चेवा टिप! वारी तारी प्रतार वारी तारी में।
दीला केना वे उधे रखन। ठहरी रात्री में धामे ठह।
पांडे ज़रा देही अरे देर। जबैं भिल हरि बढ़े लड़े भरे।
सिविल देही 'अर्धे उम भलन। वाहजे वजे उम भर मेहल।
में भाने उम वजे मेहल। जबैं वजे वजे रामजन्म घर।
देह देहूँ रेट देहूँ रेडियो वचन। ठहरी दल दे ठहरी 7 ठह।
घात ठहूँ एढर्दी वै भान। धामे देहूँ उढ़े मुहां।
विलास हटांडे हिंग वजे केरे। वूढ़ मिसरल में चंद्र देखे।
ਦੋਵਾਂ: ਚੀਲਾ ਚੇਲਾ ਵੈ ਮੁਹਿੰਦ੍ਰ ਹੋਣ ਦੇ ਤੋਂ ਵਾਲੀ ਦੀਖਾਈ।
ਮੇਂ ਦੇਖ ਗਤਵਾਂ ਰਾਤੇ ਰੁਹਾਣ ਦੇਵ ਬਨੂੰ ਦਖਣ ਪਫਾਣ। ੧੫।

ਦੋਵਾਂ: ਮੋਹਰ ਕੀ ਪੁਨਰੋਧ ਧਾਰਤ ਮੈਨਾਸੀ। ਜਦੋਂ ਧਿੰਡ ਮੋਹ ਕੇਂਦਰ ਉੱਧ।
ਕੇਲਾ ਲਿੱਖੀ ਪੁਨਾ ਕੀ ਭਾਵ। ਨੀ ਸੁਨਾ ਦੇਖਣ ਦੇਖਣ ਕੀਚਾਣ। ੧੬।
ਮਿੰਨ ਧਿੰਡ ਮੋਹ ਕੇਂਦਰ ਉੱਧ ਮੇਂ। ਚਾਨਦ ਲਚੀ ਮੋਹ ਮੋਹ ਚੇਲੇ।
ਮਿੰਨ ਮਿੱਟਤਾ ਮਿੱਟ ਵਧਾਣਾ ਹੁੰਦਾ। ਮੁੱਖ ਖਬਰਵੇ ਮੀਪ ਬਣੇ ਵਚਨ। ੧੭।
ਮੀਪ ਮੁਠੀ ਪਹਾ ਦਹਿਲਪਣ ਪਹਾ। ਭਾਵ ਮੀਪਰ ਭਵ ਭਾਵੇ ਪਹਾ।
ਉਹ ਮਿੱਟਤਾ ਭਵ ਭਾਵੇ ਪਹਾ। ਤੇਹਦੀ ਹੇਦ ਮੀਪਰ ਹੇਦਰ। ੧੮।

ਦੋਵਾਂ: ਮਿੱਟਤਾ ਖੋਂ ਹੇਦ ਤੇ ਪਦਾ ਬਣੇ ਤਕ ਜੁਮ ਮੇਲਾਵ।
ਵਾਹ ਜੁਲਾ ਮੀਪ ਭਾਵੇ ਪਹਾ ਮਿੱਟ ਲੀਧੀ ਲੀਸੀ ਲੀੜੀ। ੨੦।
ਮਿੱਟ ਮਿੱਟਤਾ ਮੱਧ ਲੀੜੀ ਪਹਾ। ਹੇਦ ਸੁੱਖ ਹੋਣ ਹੋਣ ਪ੍ਰਾਦਿ ਪ੍ਰਣ।
ਥੀ ਭਵ ਭਾਵੇ ਪਹਾ ਬਣੇ ਪਹਾ। ੨੧।

ਦੋਵਾਂ: ਉਸਾਥ ਮੁਰਮ ਪੁਨਰ ਸਰਜਣ। ਬਲ ਬਬਾਹਟ ਕੇਲਾ ਮਿੱਟਟਾ।
ਸਿੰਘ ਰੱਸਣ ਜੀ ਭੀ ਪਹਾ। ਮੇਂ ਸੂਟੇਨ ਮੋਹ ਵਧਾਣ। ੨੨।
ਸੂਤ ਬਣੇ ਸਾਧ ਮਿੱਟਟਾ। ਮਿੱਟ ਮਿੱਟ ਮੇਂ ਉਵਜ ਪ੍ਰਣ।
ਸੂਮ ਲੀਧ ਸੋਨ ਮੀਪ ਭਾਵੇ। ਕਹ ਕੇ ਸੂਮ ਵਧਾ ਕੇਂਦਰ। ੨੩।
ਵਧਾਤ ਖੋਂ ਹੋਈ ਪ੍ਰਣ। ਦੀਵ ਹੇਦ ਭੇਡੇ ਵੇਡੇ ਪਦਾ।
ਵਧਾਤ ਬੇ ਹੋਹ ਬਣੇ ਪਹਾ। ਦੋਵੇ ਦੋਵੇ ਬਹੀ ਫਿਰ ਪਾਣ। ੨੪।
ਉਸਾਥੇ ਫੁੱਲ ਖੋਂ ਹੋਣ। ਸੋਹ ਢੂੱਢ ਹੋਣ ਕੀ ਸਧ ਹੋਣ।
ਸਿੰਘ ਮਹਿਣ ਭਵ ਭਾਵੇ ਮਾਨ। ਭਗਵਾਈ ਵਧਾਤ ਪੁੱਤ ਕੀ ਮਾਨ। ੨੫।

ਆਗ਼ਤੀ ਭਗਤ ਭਗਤ ਕੀ ਮਾਤੀ ਉਲਟੀ

੧੨੫. [ਦਹਵੀ ਜਾਤੀ ਭਗਤ ਭਗਤਾ]

ਦੋਵਾਂ: ਮੀਪ ਹੂਅ ਦੇ ਭਾਰਮੇ ਮੀਪ ਹੂਅ ਦੇ ਭਾਰਮੇ ਜਾਤੀ ਭਗਤ ਭਗਤਾ।
ਖਾਂ ਤਾਂ ਦੇਖਾ ਜਾਤੀ ਭਗਤ ਮਿੱਟ ਕੀ ਮੀਪ ਮੋਹਾ। ੧।
ਖਾਂ ਸੁਟੇ ਮੀਪ ਮੋਹ ਨੂੰ ਨਹੀ ਮਿਸ਼ਾ ਮੰਜਾ।
ਸੂਟ ਮੋਹ ਦੇਖਾ ਹੋਣ ਹੋਣ ਕਹ ਨਹੀ ਮੀਪ ਮੰਜਾ। ੨।

ਦੋਵਾਂ: ਮੀਪ ਪੀਠ ਜਾਤੀ ਦੇ ਪਾਣ ਦੇਖਣ। ਮੀਪ ਮੋਹਾਨ ਦੇ ਵੇਦੀ ਕਹ।
ਮੀਪ ਉਤ ਕਲਾ ਲਾਹੀ ਹੋਣ ਲਾਖ। ਦੇਖ ਮੋਹ ਨਹੀ ਮੀਪ ਮੰਜਾ। ੩।
विने मांव विने माण्डल वच उठी। विने उपज में भज्जी वडी।
विने भज्जात मूढ़ी उठाली! भिघ वच ठीके मूढ़ भज्जाली।
हृदी ठवागणित बी में नाग। में भज्जात वच उठा उठाल।
सित सित भज्जी माण्डल वजं वाली। एँ हृदी में वाल वच ठीक आली।
सित सित ठवागण में भज्जाली। हृदी हृदी कनाली।
भजी जांट उच्च मूढ़ में मेल। मूढ़ उठा मिल मिट बडी गौल।

रेपट: मे बीम बे हित वड़े वे भिनिला ठिकाले हैं।
बे पिघड़े बे बद घटने ठीमें ठिकाले मेंत।

रेपटी: पारिया वे मिल टुडे आले। मूढ़ झूट टूडे ठीम ठीम धुले।
आली ठीमुरी ठीमुरी पम। बीम वेमदि हिल हिंदे परम।

माधी दहुँं उठव दल वी बड़ी

१७५। [भजामे डू दूकर्मे, भज्जात माण्ड दे उभारव सोंडे]

रेपट: अब मूढ़ गंडा हीम दल वी बामूर्न मूढ़ वरे ठो।
भजामे विनिला ठीम मुलिने भज्जी मूढ़ लजे ठंड।

रेपटी: 'भजामे हृदी देवल माण्ड झप। अब उम्मे वे बढ़ हृदी पिंग रजा।
वे अब उम्मे बल हृदी में ठीले। वे वह भज्जी हृदी वर्चु गोली।
गौ ठीम वरे 'उम्मे झूटे बजे। वानूक झूटिया ठीम उम बजे।
अब बजा हृदी वरे पहुँचे। उम में हलव वरे हृदी झूट अहो।
ठीम हृदी पिंग वरे पहुँचे। मिट मिट वरे हृदी पुिंग िधे।
उम ठीमित पिठ हृदी झूंभ भाले। खेलें दिलस हृदी में नूंडे उबाले।
ठीम हृदी भाल ठीम हृदी टीकी। ठीम ठीम भाले भे भालस्थ हृदी।
भाले में वे मिल वे गृह। में में बीम हृदी हृदी वर्चु।

रेपट: ठवाली महत्त वे दे ठीमी पंडि है मूढ़र।
चड़ खिंच डांढे ठंडा उज खिंच हिंच वें जाली।

रेपटी: चड़ खिंच अभ बचा वी उर। वेंवे मूढ़ में खोंचे घार।
बुरानेरत घराना ठारा। भाल मूढ़ बांतः हृदी झूट खार।
ठवाली में उड़े घर मराल। हृदी घर में ठीले हृदी ठीले।
चड़ खिंच में उड़े खोंची। चड़ खिंच हृदी में मूढ़र दिगाट।
देवग: बात सूटी धिमिल बुटा. सबंजे धिमिल बह भाज।
मू पालमे कौणे बजे दवल कौणे यूटा बजा।

देवध: दुबु भैन धिमिल वे बजे। उदह सत समरन गाम थो।
सूट भाटी में उदह दुकान। खट्ट विरंग में बजे जमान। ९०।
सूट श्रद्धा वेल सूट सूट धार। धार विकरग वे मेरे त उड़।
धिमिल फे न भव भुजव भिंगारी। हेंस उठी वान सतुवी भाटी। ९१।
सूट भाग उदह दिखा त थो। ऐसे भागारे पैमे त आई।
पैमे धिर वन भी धिमिल धिमिल। दिख वन हेंस उठी धार। ९२।

देवग: उध मधुका तै सीट दूरे जे जे अभ्यर माध।
धिम धुलके में बलार जो अध्याद थो धर्मगंग पर माध। ९३।

देवध: धिम धुलके आदि बराजे उदहभ। दे बराजे मूखे मु भटवे धाम।
नामार दो बीर मजारवेद खेले। धिमिल धिमी वीने तवी बर देखे। ९४।
उदह माध दायारे घरी। अधे खिचित उध विकरग लाने।
बलार लघुनी हेंस मेजी। वरी ठिकरी हेंसी मब भेजी।

मध्यी देवधु-दम बी

९५०.[हैंभे ते उदह दस। बुजलाके भव मुखे ता ठक्का]

देवग: रह खुदे हुमाबे भलने हुडे उदह म तकी धर।
उडे दसई भल बराजे उदह भाटी तान। ९१।
चुड़ मिस्क तन्हे ताल भल बर चुड़े चुड़े रहे।
वधाक लाटी दे बर जैने भे उड़े भुजव में रहे। २।

देवध: बग बन में ये ठहरा धरा। ठहरी मूखे मु ठूमा बना।
सूटे धराय धरा धरा उदह भाटे। बुजलाके दिवंग थे ठहे। ३।
हेंस विविध उठी दीम जलान। उधार वु मिस्क रहे भैल दान।
उदह भाटा भल मिस्क मह हुग़ा। धर उदह वे पै ती मूहा। ४।
उधारा रहे दिव दस ढाटी। रहे हेंस दस दिव पाटी।
भैल वेदु देवने ता परहे। धारा हेंस मु रहनी भाई। ५।
उध मिस्कर वे भैली घरी। भैली मिस्कर वे दिवड़ी घरी।
उध बचु मिस्क है ये लिड़ पारी। ‘ठिकरा नागटे बहू कैसे भागी’ है।

१. भैला, बन मूखी, भैल।
२. हक्के देव उड़े ती बराजे दिखा धर थी तै:-
भुजवत वामनी बने धिमी धर भाटी। उदह वधाक धिमी मूखे देव मिस्कर।

Page 336 www.sikhbookclub.com
देवता: तुमने मिनग बुधबार दिख दिख न वररुचि। तरी है मिनग तांग मान है तरा अब अब मन आफि।

देवता: से हू ये वर ये बाबरे सेव। उम मही तम आफि हायले वोल। 
उम है हाय अथ वर उड़ा उड़ा। तू तम उम वर बर विला विला।
मे से दइ मिनग आफि वड़र बने। है दूर दूर तम वर बने।

देवता: उम मे देवरिंग मिनग हे पहले वाज में हॊन आफि। भग मह पूरी आफि हायले वड़ू मिनग नी वोल।

देवता: हिसाब लज्री विउ मिनग नी वोल। तत्त्वेज सुव वर धूम ती वाल।
पुनेत मिनग म सवल हैम। पारी नदी वीर सिंहे धेर।

देवता: सि देवर यूज भाग। हिसाब हृदय हर देवर बढ़ा।
मुक्कत म चड़ू मिनग चड़ू गाजे वोल। वरी लूट मे बूट धुरुड़ाए।

देवता: चप चप तस चप चप। लट्टा मिनग धेर नदी-पोन।

देवता: सि कि सियंग चड़ू मिनग शहरे मिनहल तपने पुनाव।
चड़ू स्वल्प घामे शहरे वीरे उड़न वर वर।

देवता: तुमने मिनर ढेट। भागी चामल। वरन मिनग धेरे हिर्द माउ।

मफी देवर भग सुधीर बनहे वी।

देवता: चड़ू मिनग चड़ू मिनहल तपने मिल मिन पुलंद हन्नात।

देवता: तुमने देवर ये भग। भग देवर ये बाबरे विला विला।
से सुव उड़ा उड़ा अथ विला में। भग।

देवता: तुमने मिनर तपने मिनहल। ते देवर देवर भाग।


देवरा: 


dेवरी: 


dेवरा: 


dेवरी: 


dेवरा: 


dेवरी: 


dेवरा: 


मिष्न्ही त्रह वक भिन्न। वह ताह मार्य बीह। चछै उमे भावी बेठ भावी। निखट बेठ वा मान में रहन। चछै मिष्न हट तकने मानी वे चतर। 94। मिष्न शुद्ध हट अभ भावे गुढ़ती। 'दिवे अन्त्र हट अन्त गोद भावी। मानी गुढ़ हटने वा देवी। मान निश्च बारी ने देवी।' 20।

देवरार: चछै मिष्न मुह फिट में बारी सीते छुँमुँ उतारति।

पतख लीं पिथ बारी वे दिते अन्तर स्थापत। 21।

तै सीता दै तैंँ शिक त्वा मिष्न जटी घटाव।

देघर दै तै सीता दै तैंँ दिनी विनी विधाए। 22।

मन्नी मिष्न्ही भैले वी अन्त भिक्षाज ग्रहे भावे वी।

182. [देघर वा भावा]

देवरार: जै घाउ विताल मुही छुँ ठे आसे आँछ घाउ।

उली अभावी मानी वी उले मिष्न बी दित वाँ माँ। 1।

देघरी: घर उँचा मिष्न वहै घर छुँ ठे, मिष्ने भढ़ुरु मज़ज़वेत छठे।

मिष्न मधे दित वहै देवी उदे। दित मूठे दित देवी घटाव। 2।

दै भी मिष्न भिल छुँ मे वली। मली मिष्न अंद पहरी।

मुँहे हड़वे वहै वारा तुरालाग। पतख घाउ मिष्ने वे भावी। 3।

में मुह मिष्न छुँ मे देगे। दुः उत्सवे दै भी घटाव।

हार उत्सव छुँ मे वली वाल। दै भी भैले दिनी विधालागे। 4।

उदे भिल धामे गाहुग माना। 'पदूँरे वहै दै तैंँ वे बना। अंत तव आपी मूह मरसे। भुं बन बन बन मानी दिले वाले।' 5।

देवरार: मेंँ छुँ मे वली लीं छुँ ठे दुः दुः मूर्ति घाउ।

मालंग वेव मो छुँ मे वले बुध विचारवङ। 6।

देघरी: सैले ते वी लीं वरन मुही उली। 'तेवने भैले जनसी मुकी भावी।'

मेंँ तै तै भैले भने पढ़ख। दिवले भजने बुध दुः महा। 7।

उत्सव दुः मे रही वाल। आन घड़ने अंट कह अवै।

दुः उत्सव दुः मे शिक वली। मिष्ने मेंँ तै दुः मे घटाव। 8।

दै दुः दुः दुः दुः मूर्ति वाले। दै दुः दुः दुः दुः मूर्ति वाले।

पतखे मान मेंँ दुः मे गाहुग माना। 'पदूँरे वहै दै तैंँ वे बना। अंत तव आपी मूह मरसे। भुं बन बन बन मानी दिले वाले।' 9।

9. पुडळ, संग्रहे। 2. नवन, अभ तै मेंँ दुः मिल।
देखिए: उप में लेखे अधवले साथे दिनीं घटिग।
पिर बे अटले भल्के दिव चिह ठी उष्मिल।१९।

चेहर: चुप बीते चित बीर महती। जीव भागी भी तिहारी।
खिच में चिम बच्चे वछलाबी। बुध में निम धम देख नाकेन। १२।
रेष चढ़ सूर महारह राह! सरस तुल्ये बंद्रे दिव डरे उद्रह।
चढ़ डुंगे वी मूरि मू घम। तबे भाग्य से नें चिम गन। १३।
आप चढ़ भगत भगत टिकी। मुलक भवल मिश देने बदी।
भग वतमिन मिश ठक्के सैनी। भेरे भूपक बढ़ जावे उद्रह। १४।
मुलक वहाँ अग्न नाना गधे। ठहर मे ऊपर ठहर निस्के द्वाय।
ठहर चाहे विन देही मूर्ताह। उन जनी क्रध घर तिये निस्के। १५।

देखिए: मिश बैती निम भक्ती मै घटने याधन थोँ।
पिर हैं अर्ध मुक्त मे जने जाने लाट र लेने।१६।

चेहर: मिश वरी 'अग धूली भागी। पृथक रोगे रमों दिने चिह वचन।
खेले दिंदे अधवले मैं। भग दिय दिम दी एंव। १७।
उरे गर्व के भूमे पुष्टी। दील दीस मिश भाले बुधी।
दिव विवेद वर्ष वल देने बने। ठहर अभ ठहर दिव वै सव। १८।
विवान हैं चित ललते रामी। चनों अभ राम निव यातै।
ठहर जने विन विन निस्के यातै। १९।
मिश काशियल तेरे नेंटै भाग। वह वरी नट महुए बखा।
दिव वर विन डरे जने डरे डरै। डरै दान नट विन मिश मोंदी। २०।

देखिए: इनक चांदी नवा धामले विस्के मानव देह।
वारी बहिष्ठ तुबहे घूमे पत्ते धुम विन डही। २१।

चेहर: घउट के ऊट विन तिहाल लाने। 'सुबह घउट' विन हेवर दिखाने।
उन मिश लै तीरे मारा। 'दिया विन लैने तै तैने घाट।' २२।
उन ले अभ मिश घव देने। हेड लेव डेव विन लाने चले।
तिह नहिं नाना देवी भाग। 'भाग लहे विन ममाव जलाने। २३।
मिश हेड ममाव दीते देख। डिम ले मिश बैरी ठ हार।
मिश दिखाये वै घुप म मोरी। ठहरे ठ घर्मे ठहरे वर्ज। २४।
भूमे ममाव भूमिन म भाग। हूट रागे बैसे दिक्क।
देख हर सत कर धुम दिते। वासिन्दे वै डे लालिट गाहे। २५।
चैत: सत्स श्रद्धे दृढ़ वह भी वसी चमकी ऊपर।
सिंह वी तृणी अग्नि रहें खड़े मचें वह छेड़े। २१।

चैतारी: अभासां तै न भाज उ चीम। चर्च जानो नत धर तिवृष तनीम।
संघ चीरे मित्राणे वेद चान। बीत मैथ दिला में हो लो भज; २२।

साधी देव मतदेव वी दिखनाई

१५६.[मदवर दीनी राग देवतारी]

चैतारी: भजो मुहे मतदेव वे सिंह दूती दीनी चाव।
संघ खटने चंद विष वदहुं छटि वीणे धुण। १।

चैतारी: चढ़ी दिस्तम सिंह चाणे घे। खट दिलामें हेंग र घे।
सिंहत चढ़ी वी धुंध अग्नि। 'जापी वगै सिंह दिम उषि राम। २।
दिलाम नानवे वे बांवा तुमा। सिंह भट मवजत ठुम वै बुखा।
'जहे वट तै सिंह भजा उगा। धाव विद्वेषत गाज वट राम।' ३।
सुदृढ़ ठाव चौं चौं भेंड घे। भजी र वी भजा चौं चौं बेंड।
चंद मैं दिलाम रेंदर मिलवी। भमें चुस्त दीये हिमवी हिंद मी। ४।
बुढ़ उँचों वह चंद हिंदुं; मे मह बालक न बढ़वे बेंड।
दिलाम वापस वे राज चढळाने। साधी हिंदे भेंड घूमाने।' ५।

चैतारी: भैये चढ़वे बाजारे उ दें विशे भेंड भ्याट।
सिंह सिंह दल में वह वह की तिवमें हिमी मु छपिए।' ६।

चैतारी: जापी धार उट दें वीणे। कुंड चंप वेद वे बींड खीणे।
छाड़ तौब निम भल में बजे। भो उंचे ध्वनित बजे। ७।
सिंह वट छटी वे सिंह धर वजन। हिंदमें वट वट सिंह में हुए।
हेंड छड़े वटी नये भेंडाट। उठ घटणे उठिं सटे दिखाट।' ८।
इने मुंगत तव अभ छड़े। मवजत वट वट मैथ भजषे।
उए चप वे रामवे माघ। गेंधु लिखी मैं छट वटी घाट। ९।

साधी देववे वे परमा वी दिखनाई

१५७.[मदवर दीनी राग देवतारी]

चैतारी: भजो मुहे अभ भजी धजने। सिंह दिम देववे पैर घड़ने।
मह भेंड धंड विखे ये देंगे। सिंह दिम देववे धार वजन वजन। १।
दिले भज वे धजन घड़ने। बेंडी महदेवा मधवा भजने।
बेंडी गाने नत सैंडी उल्ल। भजन वाढ़े वे मधवान कह। २।
मव धारण मे भौले ठीकरागे। 'चटिष्ठ दिवं जी रंगे गरहणे।' 

सिंव नगर जुल भुज अब आने। निम धन रूप गरह रने रतने। 3। 

सिम धेर धेर लीट नवज। 'भूम धेर धेर रंगा बनाव।' 

धुप प्रमुख रंग भुर रुखते। अभावान रहे धेर माये घरने। 4। 

रंग: भूम तो तीते सिम भूमे दिंग दिंग स्वति। 

सिम उगवार वे गुमान दिंग दिंग स्वति घरहान। 5। 

रंग: सिम धेर धेर लीट लहर घड़ी। भूम बांध मे लीलान घड़ी। 

सवे घनी वाज भरहान। भूम चाल अंद घने आने। 6। 

बालेम भुज बाल रूप भरहान। केर त रोटे नम भर मान। 

भावाल भरे भे मूरे घुरहान। 'उम्र तार' वाल धेर उम माने। 7। 

बाल 'बहे बहे भीले पति। भाले मेंते भील वाल मानी। 

बाले घरदे मे भव रह भाले। विनाश हीं हम वचन बड़ी। 8। 

भूम भये रलते बैला। उमीत पत्नी धेर है घट बने। 

उं दी दीम वे हुटे र रहान। भावाल दीम रूट घुटे घरहान। 9। 

रंग: भूम निम उते धेर धेरे, पदेके आषे बबन। 

दिम निम दीम घर घर ऐल रहे पति र बहु भरहान। 10। 

रंग: भूम उवार बेट्ठ रुटे रंगा सहे। रंग पवड टूटे टूटे वरुद गिट पहे। 

बंदी कुमत मे नत वरुद फिराया। ने मा विखूरे रे चलाव अभाव। 11। 

उं उगवार वै भर जै आध।। पूरा र बहे लीले तरगान। 

भावान मद भिन बहे रहे। 'फुलदा ता नजटी' मे आधे और हे हे। 12। 

चुट हादीभा मे रघुपति घरते। भूम भिन वै हैं। निम धेरे शहेंगे। 

उं रघु वर र घट रघुपति। 'निरंगब वसं बेटे बरे दिलान।' 

रघुए भरे मे कुड़े विगान। धेर बिहर दील निम विगान। 13। 

रंग: निम उगवार वे ये बांगे 'जांगे मैंने धेरादिं। 

निंग नगर बूढ़ माद घरे उदंग नगरा दिने घरादि। 14। 

रंग: निम पाहि फिडू दीर घलहाने। जुल नगर वरह वचन बनाने। 

भींटे भींटे बेटे रुंदे र घरे। हुड़े रेदी मप हैर घराने। 15। 

सवे हैं मैंने निम गर आने। 'बैले उगाने मे पढ़ाए। 

देव सिंह उटे निते घरादि। मे रंग भूम गिंग घरहान।' 16।
रघुनाथ भगवान तो वह सती। अधृते तुम्हें उठा तो तवीं;
हरीते पंचव चुड़ावे स्थांति। भोगे चने धुई हरी द्वार वहांति।१८।
मैं मुत भले माति मलांति। 'चिथन' द्वार चरे मुव रवांति।
कै तवी तबे भो तवाले वहांति। चरांति मिल चवीं पुह ललांति।
पूछ तेज 'थ्र भव' भाजे साधे। बीरे तुमें सिम ताजा विकसाने।१९।

टेंगा: पूछ तेज 'थ्र भव' भाजे साधे चवीं विकसाने।
रकमांगित चते रचीं यती धिन वेड़े उठा।२०।

देवी: चवीं वे उठा उघ घर्ना। मघे रघुनाथ पुह चर्चा।
पंच ममलु हैंडर यते भाल। गुह मनुष लहे ममलु भाल।२१।
वाले रहूत सिम ममलु भाल्ले। पूछ तेज़ चतु रह भरांगि।
चेत भरे अनु चने वरांगि। धिन मिख बरान भय मधुजन तुंगी।२२।
छैमे सिमि वे मांगे नाहि नें। टोलित बने अंदिती भल भाले।*।
गुह भाल्ले उव वस्तु वरांगि। घर्ना चद्दूते थ्र चर्चा।२३।
टेंग घर्नप्पे घालीं विकसाने। मंदि भरे तेही धिन यती।
वेड़िते स्वाभि द्वार पहुँचाने। धिन वत भाले येते सबाने।२४।

टेंगा: रघुनाथ भगवान रहांगित ये भी गुह चढ़ते माघ।
दैठ मू केढ़े धरी सिमि धते मंगूत बिंत उठा।२५।
उलर सिमि सिम मही यी धिना आपले थम।
सिक्की मू भाल मही मधु मूह वत वते अवतार।२६।

माघी सिमरी टेंगा वी भी माँधे वी
९५४। [हरीत द्वारत्रे वेये विल भक्ति]

टेंगा: महिम भाल वे लट चने उठाने गाढ़ी दिन माघ।
सिमि घुंड भेजू मही मुह बुझे भाल।१।

देवी: चरांति मही वे लट चने अभाल। उठाने बहाले मे सिमि धत रहाल।
लघुत मही धके देवर खुट्टा। तीण भगिन तेज गांवणाने।२।
धुर उठा भाल वने हृद्दे टेंग। मांगे भाल घात घंघराणे मोक्ष।
रघु मही स्वाभि हृद्दे गांवणाने। धिन वत महित मधु मुहे घटाने।३।

* टेंग उदङ्ग ए पठाते है:-
भोगे सिमि वे अवताम अवताने। उप भेजे वे उठा बुझाणें।
第一节  वेंच पृष्ठ

मॉडल झी वी धृतता पारसर! मॉडल वसन्त त पारी नवां।
मॉडल बंटे वे उंग देव। नानी माँ देह पारी खेत। 8।
मॉडल प्रकाश ने मिश कुरं उठाव। हरी दीवार वे से खुशे पहुंच।
घर जीरो अपे मिल झटकी। भवन रहा वह झटू आती। 9।

देहज़: नन्ही मिश चूंदी रुउे मुखव हैलूप धन।
नांट पूरे वे घुट छिटे नही छिटी तारी मूल। 10।

देहज़: हइं खेब दिम है चढ़ भाल। हैमे मुहले मुखवत चढ़।
एई विले वाजे झटके भावे। उबे मूलके वे सीम यह। 11।

देहज़: मूर्ति भाग उवाटे है बाढ़ी खरी अटवाटे।
‘दिम वी नापुं उम वाजे पहे छिटे घटाटे’ 12।
बूंदे मिश जाटी रुउे इंदे दसे नांट।
इउे मिश वे पेड़े निवास झूंदे वीर वेढ़े। 13।

देहज़: रुउे भवनहीराम में हुमाबाट। छाए विसं घुट टवे घुवार।
अंती उवाट वाजे मुहल मुगवं। पैंटी ताप्ते बीर घुमाव घरवाटे। 14।

देहज़: युंहा मिश मेंँद पहुँचे वर वर घटर घरहा।
बढ़ी झट हीलवाटे रुउे बढ़ाव त बीर अश्रेम 15।

देहज़: उण मुख घड़ घड़ रहे! मेंँदि घुमा मिश घटर पान।
पहव घेने मे टप्पे ठ पान। हैम रहि उस हैम आपे घटर। 16।
दूसर विले परमें मिलवाट बीर। मूर्ति मूह दे दिव हर बीर।
उरे मिलउँ भाव निवारा। मी वेष हूँ हे सत पूरे रुउे रूपरा। 17।

देहज़: लीदे टवे विहारीस सत लीदे झटे मिलवाट बाटि।
हित युंहा मिस आँद उव सीहा मास घुवाटि। 18।

देहज़: व्रो हिंट गाड़ी पहुँचे मिश छटी। रुउे भव हिंट हे घराव उटी।
अत शांत ढाने ध्वनी देव। मिलवाट उरे दूसर सुंदट हेल। 19।

पवी मुखव देवर भें मिलवाट माँटं वी

पवी उतारविवा जो हृदरविवा वे भें तप दंडं वी...
थैली: दिन तक वर्ति कबूल हों। उदय वर्ति कबूल हों। वेल वर्ति कबूल हों। वेल वर्ति कबूल हों।

चेतान: माननी सिख वे ने अपनी विदेश सिख भवजन।

थैली: माननी सिख वे ने अपनी विदेश सिख भवजन।

चेतान: माननी सिख वे ने अपनी विदेश सिख भवजन।
देवग: बसी है चलव तिथि उठे पत्नी पाँचों धीरे चढ़िए।
उठे दिनाँक में हम पत्त बिहारत बनी हर फिशाए। १२।

देवध: मूं चीरे चल छूट रहे हुए भेजा। तुम्ह सब मूढ़ाली पहलह।
'मायाई ताड़ा चल बढ़ भड़का। रुमाल लेकर लें भिजाए।' १३।
भुज़मय बड़ी दिन दिन धीरे। घर उठे घर घर मुझे भड़क।
मे ने मे ने मे ने मे ने भिज पड़े। धूपकर धूपकर छूट लें छूट। १४।
सिव घुड़ नै हृदि मूढ़ली। भैौ भाग मे छूटूँ दिन सटी माती।
मज़द मज़ह दिन भर भड़क र पड़े। तुम्ह सब बढ़ जाओ तेसी र उठे। २०।
छूट रस्मर पिता नाम भड़क र है। भी तो बढ़ भुज़म निर्भो।
घर धूपकर दिन दिन धीरे हो। निर्भो माज़े घर धूप धूप भेज। २१।

देवग: तुम भिदाल वह थे बड़े 'छिड़ रहे मांज़ मब बांधि।
आइट माज़ हैं हैं वे वहै बीज हिद रहे।' २२।

देवध: तुम नापे छिनाह नाम। भाग्य निकले बड़ी पाँचों रह।
दिने खड़ बापु भाग मे आपे मेल। दोन नबी हिद धीरे पासे। २३।
से उछबल दे देवे भाग। वह सबे चुबाई धीरे पासे रह।
छूटी पाँचों जी पाठी मचाआँ। 'छूटी मुख जा भापे त्याणिं।' २४।
दीरे ठेंढ पता मंग बधाए। भेंढे उठते दे चाही घराधाए।
मलके उ पाँचों ध्वजाज़े ताभी। भाग चालक दे जात नयगा वाद़ि। २५।
भाग भुज़ छत वरिष्ण हिकाख। से रड़ घड़े माज़ हैं भाग।
रित टूकू निकू बीज हेढ़। बड़े देवध दे हिदमें रेड़। २६।

देवग: बचाए जे भागवासे तेहाँक भीं जाण।
पाहे छूट मब भाग मे भी नापे हिदिं हे मज़। २०।

देवध: देव भिदाल हिदिं हे संदे। छूटी हिदाल छुट हिदि र ठह भेज।
हिदिं हे भी भेज है। देव भाग मे भाग। दे भाग मे त्य भाग मे भाग। २४।
भे सुह ही ही ही भिदाले। भैौ भाग मे धीरे धीरे।
धुरा रबुले रड़ तेज भाग। हिदे भुज़ छूट अभी भाग। २५।

भाग्य पाँचों हिदि र वंदे तेजे।

२२। [छरेद ते बुढ़ी ते तिथिरां जी अध्वाद]
चैत सन्त चूर की मूल से रट भुजने लगें।

चैती: हैले मिस सज सैले माह। रिट सतीभक्त वे पत्ते करें।
‘अब तस पत सब घंटे में भरता। उस तस साल के घंटे केले थाला’।
भैली हिंदू विवाहत थाली। टॉड बढ़ते हुए चिन में पली।
‘घर बाजू उस पट घरू गरी।’ वोली मलाती मलात मला भाती।

मध्य ठिंड़ा ठहरा बाहर स्वभाव मध्य मरिया नी नी

१२८। [मध्य बाहर स्वभाव मध्य मध्य नी नी]

चैती: बाहर स्वभाव मिस ठिंड़ा वी भावी मूले मधिम।
पाली मरिया टेंड बली बुढ़ भीभूषण भाष्यार।

चैती: भुजे ब्लैक अये चब नीली। तीड़ घमु वध गिंग उड़ जेनी।
पुढ़ टिटे भत सुंड बीही। ब्लैक चमके भुज लड़ बीही।
मह चंद चिंता किंग वे माला। गाछी पड़े बढ़ पेड़ घाटा।
मध्य सेंट वी पुष्ना चैं। भाष्यार वध मदन वड़े।
मध्य सेंट बाज भला पड़े। आश्वास भिंतरबूं सुड़े पड़े।
सेंट उबू उड़े उदे पल। मध्य सेंट वी कुँज छूँचै।
साड़ बंड बनार लख मेंट भिंड़े रेड़! मद बाबजुब वड़ पहंदे में।
मलाटिया सेंट वी धतार भीता। देिल लगटे नटार ठहर वहे ठिंड़ा।

चैती: ठिंड़ा ठहरे में पुष्ना भूम सध मैंने तभी।
मिस भूम सध ठेंडी ता मैंने हीम दोने ठिंड़ी तेंडी।
रही नरी में सध उनी लांग पूणा मूल।
आहे बांध मृण मिस हरे ते मुख भवाल।

चैती: मन मूँ वी माहा तेंडी। भवते ते हज टेंडे त तेंड।
मन भूम दोष पिंड पहंदे ग्रीं। उनहे भाव मनी पहंड मरी।
मन मूँ वी माहा तेंडी। तस हिंसर भाव भेंडे तेंड।
मध तवारा भूला ताय। मनी टुड़ी भूल तैंड।
उदे भी मरी भाव भीम की में ताज वी घाल सिंहरी।
पेंट बड़े हिंडा सीढ़ मु भाम। बुढे भरै में तिमारे ग्रूम।

चैती: पवित्रे देंत रूम उड़े उड़े पली तेंडें सुगाए।
नगा मू झंझ ठहर पड़े धालसे हीरूं गराए।
विष: भूमिम भें सहस्र संग्रह। भवान सुंदर घड़े उपद भजन।
भिन्न पर हुम हेड़त तै। भवान भवान वर्ण भव ते चढ़े। १२।
सृंगे हुम ते सोंध वाहणे। भीम भवान तिम शिल गायणे।
श्रीकाले भापे मिले ठीक चार। दिमी दिले हिये दिये दीवार। १३।
पुण सेन में वर्भु मिनीज पुण। सूर्य आपू शिव ये माग।
श्रेय धेर भय लजे सूत। धारण से तकल भे दिहे तुफ। १४।
मे जाने हुम हिन्दुवार उठणे। जे ही हुम वा भइट हु पणे।
सृंगे हुमे निम हु ठहरणे। तसी उद मुरल भज मरणे। १५।

हेड़न: हिम पर हेड़त वै कै फिट हैं भज तथ लील।
भवान हिन्दुवार वुम ठीक रीती तवा सब और। १६।

विष: भूमि संग्रह शिखी भेल। सूर्यी निद्रे वे भगङ बेली।
धरुट दुर्ली नस हुम वे बड़ी। हिजज्ञ हिद वर्चस गाय। १७।
हिम वेट हुम रत्न रत्न शरी। भवान मर्ग दिम में भज।
भापे भापी सह हुम वी बड़ी। मिष में हम उत्तर भटी। १८।
से राध उड़खे भरपल ठेक। हूटे सूर्यीभि हूटी ट गोंड़।
से दिस लखे बेकच भंग सरजमक। ध्वंस लखे में धरे धरे। १९।
उने देख मै गी लत नैत। विज्ञान हड़के मीबल मैत।
पाल वे हह मिष मर्ग मर्ग मर्ग। उवी उवी श्रेष्ठ घड़ुड़े पारण। २०।

हेड़न: में भेंड़ा में सारी पुरों में चुहे विज्ञाने धर।
हिन्दुवार मन मैन मुहजे देने मर्ग वीर पिरण: २१।

विष: पहाड़ दुर्गम लगाने पैच सीटल। भवान हुम विमान विवाणक भवान।
वत गुलाम दीये घटी ऊपर। बड़ी हैं मिल बटी हुम घर। २२।
उध हिन्दुवार मिष घड़ हमारी। 'वै बेड़ी मिष हुम पैच भज; २३।
काली में वै रज्जुवार पुराण। में पुराण हुम में वर्णत। २४।
उआई उआई सरी गानी। व्हेल विनिम सोह पार। २५।

हेड़न: मे सूर्य मिष नी भज बड़ी तव नेट मिल ठहर।
घड़ुड़े भैल नेट वाप नाका लखे चंदर! २६।
छप्पी: दिनी राख यह गरवर तुलना। ‘जै वासव ने सिख गरिवान।
व्ये रिना राम मेमा मेवी। में सड़े छोटि मिह तेही।’ २१।
मुरुग घर गरव यह छोटि धर्मक। बत मुरुग गरव सुदर पूर्ण।
शुद्ध गरिवान उस आजी दुःख। जै जीता यह बदल दिंदाल।’ २२।
सिखत देव गरव अज धर्मक। चैत सिख राम दिंदाल बड़े।
‘धर लगे राम दिंदाल। लैंगल आजी दुःख बड़े।’ २३।
मीं गरव राम बते बिभारद। घर दुबारा आजी दिंदाल धर।
उँमे उँचा से नंगी लें। भीमारती दिंदाल शुद्ध शुद्ध।’ २४।

देवग: माह मीं मायुष देशे तुव्रा बृह दुलत घर दिंदाल।
‘दिनदेव देवी’ में बढ़ी मीं मायुष मायुष धर।’ २५।

छप्पी: ‘माह बृह मीं देव देवी बढ़े। भांजाल दिंदाले अविध दिंदाल घर बढ़े।
दिंदाल मायुष दिंदाल अविध अविध।’ २६।
उँी है खाने मायुष अविध धर। तबाने चढ़ा देव दिंदाल दिंदाल।
मीं अविध दिंदाल दिंदाल दिंदाल। पढ़े दिंदाल मूरह दिंदाल।’ २७।
मुरुग अविध अविध धर। तबाने दिंदाल मूरह दिंदाल।
‘दिंदाल मूरह दिंदाल दिंदाल।’ २८।
विमी मूल वी दिंदाल भीमारती। दिंदाले मूल देवी वी वी मायुष दिंदाल।
मीं भांजाल बृह मीं मायुष धर। भी मीं मायुष दिंदाल।’ २९।
‘दिंदाल मीं मायुष दिंदाल। भी मीं मायुष दिंदाल।’ ३०।
बहु दिंदाल दिंदाल पढ़े दिंदाल।
दिंदाल माह मायुष दिंदाल।’ ३१।

छप्पी: पढ़े पढ़े सिख मायुष धर।
‘दिंदाल मायुष दिंदाल। दिंदाल मायुष दिंदाल।’ ३२।
विभान कहाँ दिंदाले मूल दिंदाल।
‘दिंदाल मायुष दिंदाल। दिंदाल मायुष दिंदाल।’ ३३।
अब अविध दिंदाल अविध अविध।
‘दिंदाल मायुष दिंदाल।’ ३४।
‘दिंदाल मायुष दिंदाल।’ ३५।
‘दिंदाल मायुष दिंदाल।’ ३६।
‘दिंदाल मायुष दिंदाल।’ ३७।
‘दिंदाल मायुष दिंदाल।’ ३८।
देश: उगातें मिह वे मेवें देंजे पुष्प घरगुट्टी।
वत अवताम मिह पत पड़ें उद्रे अर्थ वह पादिया। 82।
वत बैठाहे, मि मेवें, मेवे पत उठाता।
उल्ले चूलट किया मिह पुष्प चटके रंगवात। 83।

dेख: दिनि परि त एं। वन वृथम मिह दिज वत मेव।
माप मान भश्र मास पहवूँ। भवमधू भावी नह भवमध जागिया। 84।
भूरे उंगे मिहान सारा। भाव छिनावे खुले सारा।
उले टच दिवा एं बड़ावहे। पेठ चड़ही मिह घणा दिवहे। 85।

dेख: मिह मिह पुष्प चटक शेंद। रवस दारा* विह उदं ऊं धंध।
दवाप्री ठुहने न विन मिह जाने। वत वृम्लान विह आदिया दिवहे। 86।
अन्य दु दिव दिव पुष्प जे रंगवात। उसी फूटेरन विद दत रात।
उले मुख में उरे घृँगाद। जित मेहत दिंजा दरे मु आदिया। 87।

dेख: तामिनश वे रमू दिज वह वत वन ब्रह्म।
‘मायावत मिही मेवा दिथे मीम रूपाने वे माम।’ 88।

dेख: ऐंड दिवात दद वन दिबानी। मिहान हैं मुही दीर बढ़ी।
दिवात टेप मैनेट नाग्ने। मिह तथा दिग दम्यु घने। 89।
दिवात माप वे भरत बींड। मिहान मान वे भरते लींड।
दिवात छीले छीले उत्तान। जी ब्रह्म वज़नीत शुपान। 90।

dेख: किर दे दे विदि विद। वते वरणी दे जाय रहमात।
वही मिहान देना शेतार ददाहे। मह दे मुही में गुरद घने। 91।
वही मिह चुबु शेतादः घने। भरत भयी भरत चही देरे।
अप दिंजर दे वरे वरण। ‘उदं दे आदी में देना मिहान।’ 92।

dेख: मी जागाने चिन्न न हैं देंजा खचे धी उजान।
तह जीसू हदामां मिही मुं मैत घर मूठिया। 93।

dेख: दिन मरे आं दिनाने बनहाहे। तवात देरी वत वरण मो दामें।
जी भे वे घेरी ताहादा। वते हृष्टिम ‘शेत महता।’ 94।

dेख: देंज वहे दे दिनाने आहे। मिह दुर्उड़द आंदी घने।
वही मिह चुबु भयी ददाहे। देंज मराहे वही अंदी घने। 95।
नाइं दीरं नाइं ताही उठं उठं भरे। दिसा घुटाद निंदु रहे वहे।
उले ठीक न घणे घणवा। तीह दे मुं देंजे मागाए। 96।

* पृ.:- रक्षा।
प्रभु रघुवंश।

चन्द्र तुलनात्मक चिन्हत्रह।।
विकसित विकर्त्ते राधि महत के।।
दीन किया सिन उष चर्चा धन।।
उसे मन्त्रित भाप भंडारी पान।।

देवना: उस भाप के वर में धन पारे यह सलंग।
वैदिक भेद यह पाने। दीन किया सिन उष चर्चा धन।।

रूपाली: महत भेद में ले पड़े धर्मे। यह सिन भेद रूपाली भेद।
दीन किया सिन उष चर्चा धन।।

देवना: उस रूपाली सिन अच्छे में सलंग।
वैदिक भेद में ले पड़े। धर्मे रूपाली वह सलंग।।

रूपाली: उस सलंग में भाप भंडारी जान।
उस सलंग में भाप भंडारी जान।।

देवना: सलंग में सलंग बहु ओह धन पान।
वैदिक भेद में ले पड़े। धर्मे रूपाली वह सलंग।।

रूपाली: उस सलंग में भाप भंडारी जान।
उस सलंग में भाप भंडारी जान।।

देवना: वैदिक भेद में सलंग बहु ओह धन पान।
वैदिक भेद में सलंग बहु ओह धन पान।।

रूपाली: उस सलंग में भाप भंडारी जान।
उस सलंग में भाप भंडारी जान।।

देवना: सलंग में सलंग बहु ओह धन पान।
वैदिक भेद में ले पड़े। धर्मे रूपाली वह सलंग।।

रूपाली: उस सलंग में भाप भंडारी जान।
उस सलंग में भाप भंडारी जान।।

देवना: सलंग में सलंग बहु ओह धन पान।
वैदिक भेद में ले पड़े। धर्मे रूपाली वह सलंग।।

रूपाली: उस सलंग में भाप भंडारी जान।
उस सलंग में भाप भंडारी जान।।

देवना: सलंग में सलंग बहु ओह धन पान।
वैदिक भेद में ले पड़े। धर्मे रूपाली वह सलंग।।

रूपाली: उस सलंग में भाप भंडारी जान।
उस सलंग में भाप भंडारी जान।।

देवना: सलंग में सलंग बहु ओह धन पान।
वैदिक भेद में ले पड़े। धर्मे रूपाली वह सलंग।।

रूपाली: उस सलंग में भाप भंडारी जान।
उस सलंग में भाप भंडारी जान।।
पृष्ठित पंथ पुराण

आथ ठ कब्रे मीम ठ भई। उधे ठ दिनै भइ हें रेठ।
गिलै ठ नूँ भुई रेठ रेठ। मीम जी उठा ठ दव वेठ रेठ। 22।

रूढ़िव: नीसी हाँ हें चूँ दव भई ठ अठ दीदु ठ भई।
मीम जाठे ठी रवीह ठे पढी ठ दव भई सूख। 23।

रूढ़िव: बजी भाम बजी ठ दव ठार ठी। उधे ठ मीम, धिनह भई हें ठी।
मीम सरीठे ठे ठ घई भई। नीसी घई रेठ रुख रहै भई। 28।
सल घई महव ठूँ ठे मुख।* ठे ठे ठे ठे ठे ठे पढी ठ भई।
मीम नीसी मीम भई हें भई। नीसी भुलवत हें ठे लियै। 29।
उकठ रिवाम मीम विचारठ रूढ़िव: रवीह ठार ठे मीम घई रूढ़िव।
उ ठी मीम घई भई हें भई। भूल भूल ठूँ ठे पैस हें भई। 28।
‘धिनह विचार ठी मिलिन ठूँ। भूल ठ भूल’ ठे मीम भई।
‘वेठ रवीह भईह: पूरी।’ घई घई जीम भूली सुबूत। 22।

रूढ़िव: उ ठीठे भी ठी भी भीं ठे माह।
मीम पुरेत्त ठूँ ठे रुख रुख घई रूढ़िव रे माह। 28।

रूढ़िव: उ ठीठे मीम भी पूरूँ भई। माहव ठूँ ठे घई रूढ़िव।
उ ठीठे मीम भई हें ठी। मीम उवँदुरठ ठे पिंडा ठूँ। 24।

रूढ़िव: मीम ठूँ पिंड़ह ठूँ रे हें हें हें हें।
‘भूल घई भई ठार रे मीम भूले माह देत पिंडा।’ 28।

रूढ़िव: हेंस कजे मीम ठीठे ठीठे। बजूँ बजूँ कजे मीम ठीठे।
मीम ठूँ ठीठे हेंस कजे हेंस। उठै ठ हेंस कजे भूल भूल। 29।

रूढ़िव: उठै ठ हेंस कजे मीम ठीठे मीम भई।
विच उठजाठ ठूँ ठूँ भई माह वई हें ठी। मीम हें।
भूल वई हें ठी। मीम हें हें ठीठे मीम हें।
मीम हेंस कजे हेंस। हेंस हेंस हेंस हेंस।
मैं भूल भूल हेंस। हेंस भूल हेंस हेंस।
‘अध घई हें मीम पुरेत्त रूढ़िव: वेठ बस दिवी भूल भूल।’ 28।

रूढ़िव: उध मीम भी ठार ठार ठीठे। हें हेंस कजे मीम हेंस।
उध मीम हेंस भूली हेंस। मीम हेंस घई भूली हेंस। 23।

* मीम ठीठे महव दिन हेंस रे वाने रह।
देवचा: पहुँच मात्र यह ठहर तो सीता नेत्री निकाली।

उसी भांडी उध यह ठहर तो ठहर।

मिश के पुत्र पुत्रे पुत्र बीड़। पाणि भरत हिम धूप तो सीधा।

महीतल वै भाग भरी होती। उसे हर्षिवत नववर्ष मिश अपनी।

बाल्य तैल तिश वे आपने। हुइ हर घटने यात्रा भांडे।

रेते आपे रेते वाह। नरी वाढ़ बंदर हरे उच।

विमाण तत्वागे महीतल हरे। ठीले घडे पलित म पढ़े।

देवचा: पहुँच मात्र यह ठहर तो सीता नेत्री निकाली।

उने बाल्यवर्ष मिश तैल वे घडे धूप घड़िया।

देवचा: भाग मिश नी आपे आप। वड़े बीड़ धूप घड घडी सय।

उपू मिश नी आपे हिम धूप। घटन हवाज राहत पाहा।

धारु धारु वे घडने दीठा। भाव बुरा हिम धड़ वे घडें।

मिश मिश नमरला मिश माना। उने नाब देश धड़ धड़ लगे।

इन मिश धार देह धड़ ठहरी। तेहर हो भिले मोहिए नाथ।

घड़ु धूप रात देवता आपी। भिले उबल मिश राहत मासी।

देवचा: राज में राज़ राज़े बढ़े लाफ चउर म गृह वे पघट।

राहत मिश धिंभ बढ़ वर्ज वर्जे इंद्र आपे राजी नाट।

देवचा: ने राजू धिंभ धूप राजू। आप धिंभे यह राजू धूप राजू।

बढ़ू राजू राजू धिंभ धूप वर्ज वर्जे। भरी मिश हिम धरीभाष गाछी।

घड़ु धूप रात है चूह है चूह। धरीभाष रात है तांत है तांत।

उने धमाल हो भाग सुंड। धरीभाष सुंड है तांत है तांट।

धरीभाष है तांत है तांत है तांत है तांत।

सड़क देवता जानी ते मिश धानी। देवता पहली धिंभ है नाथी।

मनस मिश मरल धूप धूप उठे। खर भागा मनवाइं घड़ बंदें।

भाग मरीतम धूप मारे जाने। महमुद पाली मिश धिंभ धूपी भजन।

अभी मुरे मुरे धिंभ मिश मिश बनवाओ।

देवचा: निमान्त धेर उड़े विशे विशे निजी धाम।

उड़ पहली धममे नागे दियाम धाम पंड़ धाम।

देवचा: निमान्त धेर उड़े बहु धेर बहु। बढ़े बहु धममे बढ़े बढ़े।

अभ निमान्त धिंभ धेर धेर धेर। धरीभाष भरवे में में है।

निमान्त बीड़े जाह धरीभाष। बढ़े भाग में बढ़े बढ़े।

अभ मुरे महीतल देवता बांध। मिश मुरे राजी भिल पंड।

9. निमान्त। 10. बढ़ धेर।
भगवान विलायत खड़ा नहीं। भगवान ज्ञान बेच देते हैं। भगवान विलायत का कुछ ही नहीं। ॥

छोटे मुश्किल में महान धर्म धरते। भगवान दिन शुभ मिलते हैं। कीर्तियों से महाराज महाका भक्ति। ॥

अक्षर में धरते मुख उससे मुक्ति लेते। भगवान दिन में मुझे मनोहर भक्ति देते। ॥

भगवान में भक्ति में जमीन दे। भगवान में भक्ति में जमीन वाह। ॥

भगवान में मुझे भक्ति देता है। भगवान में मुझे भक्ति दे। ॥

भगवान में मुझे मनोहर भक्ति देते। भगवान में मुझे मनोहर भक्ति देते। ॥

भगवान में मुझे मनोहर भक्ति देते। भगवान में मुझे मनोहर भक्ति देते। ॥
चेतन: निसर्ग समय में हैं छिम वे टेटी विचार।
सरी अभी भागी अब आपः उठा आपः धुरी पान। 1912।

चेवारी: उ मन्दिर धर्म चर्चा धुरित। ‘पढ़ा मध्य में बिछ धर घाट्र।’
 मन्दिर बच्चे चूंकि कठ मृच। चठ मृत्यु पूरे में लेटा हृद बुझ। 1915।
 मिरान सुनी धर्म मह बैठे। ने तुम्हारे में तूँ तूँ तूँ।
 मे पैरे दिव खूब चूरु घास। मिरा धरे दिव धर्मादिव भागा। 1917।
 में मन्दिर धर लहे भीत्र। खूब बारे में बेगे भागी।
 मधुनर मध्य उत्तर मिरा वे जाते। मन्दिर घर धीरे पड़ जाते। 1918।
 माती भुज बाहरी माझे। धीरे धिलुबूर माझ टिलाल।
 उत्तर मिरा में माफी बनी। धिल मधुरी धिल अटूङ्क लही। 1919।

चेतन: निर्मल मुम्बू वेद भद वेल वेद वे वेच।
आटूङ्क पान में वेची जा में लाख मुहे। 1920।

माती अभिनव माझे में उदवधूरी महादेव माथ
भे तानी धर टुटे भी जी

1924. [दध्वन मध्य उदवधूरी में। ध्वन में बदल पंडी]

चेतन: उ माफी ते उम चुरने ‘आजी मेरी मुलाजी।
चुरन चुराने? माफी चारा वर्धी? चिहे चुराने दे माफी?। 19।

चेवारी: उ मिराल वची ची में उभ भेडी। उदमील उगे दाँवे भीतर भीतर।
अथ धर्म वे वहुताय मात्र? धीरे धारणे धरा पूरा उदर। 2।
 मिरा धर्म राम धीरे राम वे जाने। मे धीरे राम उन वची दिखाने।
आजी भागी नाथ माल मी बूली। भेद हेमन सत खेतीठी ठरी। 3।
 मिराल राम धीरे राम विलील। देन भागी घर चुरे दील।
 तब विलुबूर, भागा राम। आजी वहने धीरे पाम मी पाम। 4।
‘उम उम हेरी धिलुबूर यथा।’ देवे मास भे देव नी लामा।
 मेड एडेंह भे माफी टेकजग। उत्तर टिलप वे उसे अंडर।। 5।

चेतन: धीरे लव उम उम धिलें धीरे धीरें मुहुष चीरत।
धीरे धिल पाने विचार उम भागी वची पान मिरे धिराबू।। 6।

चेवारी: भेद मिंदे मे दाँव धारी। उदवधूर में भेद दाँव धीरी।
मे उम ये मह उभारे माथ। धीरान वत भेद उमे हाल।।
ने तै उह वे लिंट वे लुमा। आर्म वे अघ उह वे वान। लिंटने आर्मिक लीते वान। रहने लीत भव दिली उम। ।

रुमे अघस्त चखो में मल लहान। छुटमे दुिह वह रेट थे वानी। डरने बधिंगी माफ़ने माफ़। रहे बिलास सपनन पढ़िंग। ।

एक हो रहां वांछ रेट। देव लां भाग रहने ढ़ेठ। वन्दु उधी उत्तर बड़ी अर्ध। दिली हाँ वह लेव माफ़ उम। ।

देवन: दूसे माफ़ जाने जह धर धर मैं रह मिर वीढ़।
लहे राखे मिर पही पुह पुह पुह नबिंग। ।

देवनी: अघो हौ में उधी बड़ी। छुटी में वीड़ी वी बड़े रहिंग।
अघ माफ़ तके मु मिन बुलगी। भव लिंटने पुह उँ काँगी। ।

संघर: भाग वान इभ माफ़ वांछ रहें।
में है उधी दूसे क्या गाड़े। भव में उधे देव हें दिले। ।

देवन: दूसे ठहरी वर भाग रहे बढ़े लाफ़ि।
रेवर वे धीमे वर 'भाग हौ दिखीवड आर्म'। ।

देवनी: अघ उदेश्य वर चह मैं रह मिर वीढ़।
'वेत चली दीमे देवर वर वड़न वेज़ अघ लाफ़ि।' ।

देवनी: माफ़ उदेश्य में दिख बढ़ाई। 'हौ में माफ़ वे रेगा मिरहै।
सीम में हौ देव हिंद माफ़। रहने लीत में उम रखने देव। ।

देवर: देव भवीं में धर धर भिंंग। उं रेबी है दुः माफ़ उरमक।
सीम में माफ़ में रह किंवड़ी माफ़। माफ़ देव कर माफ़ अघरी आहे। ।

देवनी: माफ़ आश्रय कर माफ़ देव राण।
'बहे पहेरे' किंव धमने सपने।
दूसे नेट दी बढ़ रही दिलाई। 'चहींबै माफ़ में आपला बड़ा'। ।

देवन: नामुमक भूजें विलास मद राज्य दीदरी।
वृंदावन माफ़ न तिगाँ आतीबाह। मद मदर शाद। ।

देवनी: मद आतीबाह में भाग मूँगणी। 'बहे भाग' में मद उधी पाणी।
'चहींबै में देव में देव माफ़ माफ़।' ।
भावी भव्यता दिन ती ठही। वर्ती नैट की भिंत ती जाती। मिलने वें जी तिवा भजनी। भावी लिखती माहुं भजनी। २३। 
भाव धनमे स्वम उपर माखन। 'भम भजन दिने ह्रीम लेने भजन।' 
पती घड़ बर्त पती ठही। भएम ह्रीम ह्रीम बुझ्या जाती ठही। २४। 
'भम बदा भजन सप्ते भजनां घटना। भावी माधि पे ठिक मझ मझ। 
उद्धृ रहस्य वे पूर्णिमा दिखात। उद्धृ भिंतहट मझ घट वे भजन। २५। 

मेलत: लग्ने भोज भजानु दुवे गुरुवत हेत मेह। 
पित। पित। लिंग माधि भन माधि होले से घट नाम। २६। 

मेलत: दिंधू नैट ते उपर बिखरे। दिंधू नैट उव माधि भन बहे। 
माई ढेला हिंदन घड़ बहे। भाव पुभुमाय दिंधू नैट पबने। २७। 
पती नैट ते बीड़ी यथाय। भफ वदा भजने भजन। अणि। 
हिंदु बिखेना उववदिर भजन। न्यू हिंदु पाली हेतहटे। २८। 
हिंधु भजन बीड़िये भजन बहे। माझ भजन रोड भजने। 
उद्रे भूटे जाने माझु। मिंच माना यादी नैट उवव। २९। 
बहे हेतहट जाने वे होनी। हुज्यु बाबूं भी पना घड़स्तहं। 
में देते पे हेत होले दवड़। 'देख नैट ठेंगा उव घरित। ३०। 

देनज: दिंधू माझे मे बाहे स्वे मझ उम वज घट देत। 
हाने यसपलि मिंच धनमे घडे घात्य नेह। ३१। 

मेलत: देत मेंज ती बाही चाह। भेठ भवके भेठ में पड़े उन्रे। 
बूढे टवे घट लिंके भन। 'मधुत प्यू हाँ भ्रान है होला। ३२। 
उद्रु दिखाना भूड़तु ते। उर्डु बौधे ह्रीम दिंधू ते ठही। 
उद्रु ऐंड जे दें दें ह्ये याह। देंडु वह ठही ताह। ३३। 
हानाजे माधुर्य स्वे नैट। 'भम उम जुटी पाल दिखेती ठही। 
उद्रे जे भतमा भावह स्वय भजन। भफ वदा नपे पुढ़ पाली। ३४। 
उद्रे माधि उम्मी भेठ स्वे। ठही में नैट हरू। 
हाने में नैट हरू दीठे पिखेत। ३५। 

देनज: भक्त चाह देते 'ह्रीम ये बहे जाही बही भजन। 
बहे हेतहट ये घरर ह्रीम ते ठही स्वत। ३६। 

* हिंदू भी भधा।
पृष्ठ 358

देखिए: उवै मुरुगत ओम त भागी। ‘भिदे त घेरे दम लिखती। बसी बूंद बलच आवैं में। भि घनू भि भि भि। 38। पत्त मुरु घाट बो भा खंडी। बिदा घृत उमे दबिवच उठी।’
उवै मुरुगत नाग बाढ़ विलकाती। ‘भिन्नत मुरुगत मैं मुरुगती। 39। आचारी भूट निम बैडी भागी। मैं घनू मूर उन में घनू बकरारी।
डैगा दहकीं दूध भि बाढ़। बतात घेरे दहें घटताह। 40। नेटन नविवत भे खिड़कावत। भूट आचारी निम खग विलकाय।
जठी घाट मैं मुरु खंडी। वह तो पहले सिंह है। भागी। 41।

देखिए: दूध घनू बाढ़ दूध बाढ़ बाढ़। आवै मैं दूध घनू बाढ़।
सणागत निम दूध टड़ी। आपै मैं दूध घनू बाढ़। 42।

मेनठ: चीठे हैं उठाहत दें। उठाहत दें। उठाहत दें।
उठाहत दें। उठाहत दें। 43।

भेण: पृष्ठ 357 भेण: पृष्ठ 357 भेण: पृष्ठ 357 भेण: पृष्ठ 357

१५०. [अचारी नाम दा अचारी दम, अचारी नाम दा भवन]
प्रथम चंद्रमृग

पूजन तिथि हिंदी नव वर्ष पूजन। नमस्ते महोदय! विश्वास बीन ऐसे हैं व्याख्यात।

देवता: प्रथम चंद्रमृग हिंदी नव वर्ष पूजन।

देशी: नव वर्ष पूजन आज मुझे। 'ऐ घरै घरै घरै आज मुझे नव वर्ष पूजन।

देवता: मिठाई वाह! भालू क्या नव वर्ष पूजन।

देशी: मिठाई वाह! भालू क्या नव वर्ष पूजन।

देवता: अलौकिक भालू जलमग्न क्या वाह! जलमग्न क्या वाह।

देशी: जलमग्न क्या वाह! जलमग्न क्या वाह।

देवता: महान्य भासक चंद्रमृग क्या वाह! चंद्रमृग क्या वाह।

देशी: चंद्रमृग क्या वाह! चंद्रमृग क्या वाह।

देवता: नव वर्ष पूजन क्या वाह। नव वर्ष पूजन क्या वाह।

देशी: नव वर्ष पूजन क्या वाह। नव वर्ष पूजन क्या वाह।

देवता: देखिए नव वर्ष पूजन क्या वाह। देखिए नव वर्ष पूजन क्या वाह।

देशी: देखिए नव वर्ष पूजन क्या वाह। देखिए नव वर्ष पूजन क्या वाह।
देवी दिन भर उम्मी ता धर्म। उ संयम बुढ़े वृत्त अन्वारित। बनी द विखल ढूँढ़ ली। उ के बीत कुमार बनली स्थानी। 20। नाग मन हृदी पालणे वाले। गल्ला भविक्षण लिखित हनी। वाले लिखित हनी। नाग मन हृदी भविक्षण वाले। 21।

देवन: दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। भविक्षण मन भवि भविक्षण दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। 22।

देवन: दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। भविक्षण मन भवि भविक्षण दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। 23।

देवन: दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। भविक्षण मन भवि भविक्षण दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। 24।

देवन: दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। भविक्षण मन भवि भविक्षण दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। 25।

देवन: दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। भविक्षण मन भवि भविक्षण दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। 26।

देवन: दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। भविक्षण मन भवि भविक्षण दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। 27।

देवन: दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। भविक्षण मन भवि भविक्षण दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। 28।

देवन: दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। भविक्षण मन भवि भविक्षण दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। 29।

देवन: दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। भविक्षण मन भवि भविक्षण दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। 30।

देवन: दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। भविक्षण मन भवि भविक्षण दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। 31।

देवन: दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। भविक्षण मन भवि भविक्षण दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। 32।

देवन: दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। भविक्षण मन भवि भविक्षण दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। 33।

देवन: दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। भविक्षण मन भवि भविक्षण दिनेश वी हृदी पालणे भवि भविक्षण मन। 34。

* सिद्धि, भिंती।
अदाकारे गुरुवर में रात नहीं। मैं उस मार्ग पर उस चाले। अंग मुखता था वही उदाय अपित। वचः दो चालद हुसे कही वर्ती। तबे वेत विच वहवाहे मु सटी। 

रेगार: नहीं लेहार मादि वी मुखत घने वील घनी। तियों अनी रहिनी दीँ तिये असे दीँ उड़ी।

रेगार: मादि भागो वे सऊ घड़ने। ‘पढ़ तै वर्तु़ सिम में वर्त अफ़े!’ 

खाल घरे में मुदरिद घरे। मेरी धीरारु दिशा पद्मारे। वत भत्तर झुक में उदहरित। 

हारे जीरे हे उदने घरीत। वत भव्यूक ढूँढ झंडा उड़ी। 

उदे रोमिकुल मिलिक उड़ी। अड़ि पके रत में खड़ पारी। देखी दले ने हटे उदय। घहह दूरें दत्त ने भव. 

मूणूर मादि वे तुझे बनजे। मेघ घमणे हरे भुजे पहले। 

उदे देव वे रतम दिश पहे। वत दिपूरे सिम अनी अफी अड़ि अड़ि।

रेगार: मादि गहजे घड़ भोगी पारी। दिस अड़ि वे घड़ पहड़ि। 

वत सिरीनिक वह घन वले गात। वले देसुँभ उव मेष गुड़। दिसरी भेंटर भाग झुकारी। 

पुस्ते ठ घन घन दिश क्षण वर्ती। दिस में सब विच अपित वजीवी; वत देखने उव घड़ ढीली। अड़ि ने मेशे दिश रेंमु अड़िए। ने अफी में बेंड़िए। 

दिसरी अहम्मे में भव टुले। पुस्ते ठ वपछल वर्ती घुमे वर्ते। अड़ि में वडी उव अफी विशवे। दिस वत भुजे माट पेठे उड़े। 

निती अड़ि में राठ माट मालजे। ने राठ में राठ विच राठजे।

रेगार: ने राठ में एक सा रहै। उने वीक अपित उठी अफी। दांगा मिर्जात में निती बनजे नहीं माटनी सारी। अड़ि। 

दिसरी भागी वी दिशैं वर वहजे मैंू उगम। निती यूज़ में अपित अफी मिर्जात उव भुजे चला। अड़ि। 

दिसरी अफीष में राठ में थे चले उगम। अड़ि।
पुष्किर वंश पुराण

दीव घटुं घर सउ से मच खिचियै दैमै उठाह।
मेंन अधिनौ रण मधे दुःख उठिये माह। ५०।
गैठ आसम भुज भकखे युद्ध स पकड़े रत्ञ।
बिंद विम उर्मवह दी उथे वट दंड दुःखिये। ५१।

अंग पुरुषार

१४५५. भिन्नां पर दुःखभां च बीवक मेती मानिय पणः

उपधी: वती उठां सिम नहीं वफुद्ध! वट ऐउंडियै सिमिय पजाह।
हर्ष अरमान चवा पवित्रे वाह। सिम उठे वटा पिढ़ा अधिष। ९।
वती भुताद में रिंगें दाह। दूल्लु उठ है भेंत उठी भाषा।
वगा गुंड अतस्त सजाहू धे घेवने। वगा उठा घराफ भीम र उठले। २।
वगा भविष्यकर र भुजुर्गे धे घेवने। ठींरू श्वेते बुड़ तेवने वाह।
वगा उठले भे र भविष्य तापी। ठींरू श्वेते बुड़ तेवने वाह।
उन्हें उन्हें धहू श्वेत भाषा! बते। वगा उठें विम नित्तािउ र घोष।
उन भविष्य चे वेंदा र ज्ञाना! सिम भविी भाष निपण। ४।

देवता: वता भुजाल्ल ने भिन दुली भो उदभ चुबुधिये।
वेंप बमीट दुहुँ तीने बट लेने र दिलें गिसिये। ५।

उपधी: वगा शुभ भीम र भेंजालीभाष देंदे। वगा भुजाल्ल वापसः र उठें।
वगा बंध वंध वटकेंथ भरी भिन गापी। वगा उहू भिन जेपी र शुद्ध। उन्हें भविष्य चे तौंग नहीं नये?
उन भविष्य र भव काल्ल भाषी। भाषि भविष्यभाष शिमी राहिये। २।
हर्ष अरमान सिन्हार अरूड़। वती मु भविष्य भाषि मृती भूल।
हर्ष उठे तामे पालमे बजे। भुजाल्ल चउंड दिया आन लहाबे। १।
वहम तामे भूगात देये मुट भाष। दिल वगा शुद्धे घराफ भाष।
उठेव मु चेंदे तिले डूबे। वेंदा मवे घड़ मुट मेबुव। ४।

देवता: मुरे महन शेण रिरिजियै हे कुरकर वाजे वटकिये।
अठ अरमान सवेरे देव शेण उंपतर लये कुरकिये। ६०।

उपधी: मलांण गदा राम ने वगा। बाथ भिन सवेरे में भिन चवे शिफा।
सिमै सिम विस घराफ पट्टियै। शेण सिम हे उपद घण्डियै। ९१।
मलांण घराफ भाषी गम घण। 'दनों है भन बुए वें घण।
ने बुढ़ वटके देव लें फिर अड्डियै। शेण बढ़ा घड़ घण्डियै। ९२।
चेतन: उं भक्ति हें दिल रहते जैं, बलिया बैं उम घाइं।
हृदय हृदय बन में बलिया बैं नल बन बी घाइं।
चेतन: बल बले जैं बह गिय अ घाइं। घाइं तैं उम घा लर धुए।
उम मब पुड़ जेन सुधि सीस। गंगा रंगल जे सी मत बीरस।
भुमभुष्ट अल धि पुड़ पड़ते। पुड़ उबूं जैं बह गृह पड़ते।
सिना उठ उम जे जैं बह मही। भृंगी उठ जेन जैं बहाते बाही।
पैं गूँ जैं उम पैं उम धूँप। जैं बहाद उम हैं मशि मृंग।
पैं ठहरे जे जैं पत मल। भृंगी बूढ़ जा बह भात।
भृंगी उठ जेन जैं बह बीरि बिघाते।
हृदय बूढ़ पुड़ जेन मरी। जैं बहाद उम जे गव बब बैं।
चेतन: तृण माऊँत हृत्य भा भक्ति हृत्य भक्ति जैं घाइं।
हृदय उठे जैं अप जैं जोह बहि हृदय जैं घाइं।
चेतन: मद्रि बंद डिक भुजान धुए। टूँड़ी महिली तृण में गव जैं।
मेंटु दस्ताने टूँड़े टूँड़े जाने! बांठ जैं देत हृत्य धुए सुन्न हुए।
चेतन: जैं भक्ति जैं में जैं जैं जैं में जैं।
मेंटु खिस हृदय भृंग जैं जैं सेत हैं भृंग।
चेतन: छूट जैं पकुला भृंग जैं। भृंग तृण में जैं तृण में गव जैं।
पैं उबूं जैं उम मब भा कुछ। भृंगी जैं मब भा भा।
उम मब पुड़ जेन सुधि सीस। गंगा रंगल जे सी मत बीरस।
भृंगी जैं मब पुड़ जेन मरी। जैं बहाद उम हैं मशि मृंग।
पैं ठहरे जे जैं पत मल। भृंगी बूढ़ जा बह भात।
भृंगी उठ जेन जैं बह बीरि बिघाते।
हृदय बूढ़ पुड़ जेन मरी। जैं बहाद उम जे गव बब बैं।
चेतन: वृत मिष्ट जैं में मही में में में में मही।
मेंटु वहां जैं भक्ति हृत्य भक्ति जैं घाइं।
माधव मजब मिष्ट वी मिशः।
834 भक्ति जैं मजब मिष्ट वी मिशः।
चेतन: माधव मिष्ट में मजब वी में मजब वी में मजब।
माऊँत हृत्य भृंग जैं में घाइं।
चेतन: मजब मिष्ट वी मही मजब। मिष्ट वह मही मजब।
मेंटु बहाद उम मब भा। मेंटु मब मही में मम मही में मम मही में मम।
मेंटु मही में मम मही में मम मही में मम।
चतुर्वेदी धीर धीरं बृहस्पति। में देव चंद्रेज धर्मन्ते दूसः। 
भागवत सिख वै कृते गाजे। अस्वस भोजे धीरं है उध सप्ति। ॥
भागवत सिख धीरं परमेश्वर दूसः। कुंद धर्म स्वातं उ नित लगी। 
पंछि वै नित मउख दूसः। दौली सब बृह दूसं भय अभी। ॥

देवाण: भागवत सिख दिन दूसः वै मृी मैवर तनु। 
में एवं में वर लीमे दै नीपित भा मआनाॅङ्ग। ॥

देवधरी: किम वै चंद्रेज वैरी हसात। रहर महीर उबे उतःवत्त ठास। 
मण्डल सिख वै देवा मेंग। दूसे मार अव सिख धिशत। ॥
भागवत सिख धरं सत्वित ब्रह्म। घनु नील में थरवत ब्रह्म। 
पढी चरमी सन्मते भंडः। लक्षण महत मे दे अनवर। ॥
अंत पृथवी पैतृ वै परात। पिन्धा येवे सिखी वामती। 
चावलाता मने मारे देव। देवा मैवा घटू। वै में मेंमुङ। ॥
विस्मी देव दे वै चंद्रेज भ्रात। दे पच्छ सिख सिख घरहै। 
चित्र चंद्रेज दिम धुल्ले रह। तीन चंद्रेज दिम वैं मै बुधप्रक। ॥

देवाण: मै सिख भाई हे दुषे मे भाई मण्डल सिख धाम। 
नीपित मदवे दिम वे वर्ष बपे दूसर हर भाडः ॥

देवधरी: प्रम गैट दे दूसः पृथवी। देवी है दूसः दुः वहित। 
पुडी पूरा में मने ठां भीडः। दिवसेदे दूसः हरे दूसर दह ॥
देव पे देवी दे मह दिश परात। देवी देवी वै ‘देवो भागव’ अभाग। 
अंत पृथवी अप्प दिन्ते घरहै। घदू प्रजा वै ब्रह्म सिख महै। ॥

देवाण: धीरं गतिते भिन्नते मैं ऊँ भासमे रह। 
मै मै भूमति अभाग ये सुद पेडः दुसर माह। ॥

देवधरी: बुधप सिख सद दृष्टि तरी। मण्डल सिख ठीमे मैवतिती घटती। 
मण्डल सिख सिख सिख नैसे उलाह। भांगी मूचा वै भय बढ़े। ॥
सम जाम मध मे नीप घिल्ले। अपित उससे मूचा ती घीले। 
पलित रुख वै ये नटे तीसें। लदे दशाति भीमसार वर सैले। ॥
अतिभ मूवा दिस साज हरा। दूस मण्डल सिख वै हर भवुंजाग। 
में हर महाजे अक्षत बाह रह। कीठे मानी मैं मैं उदरह। ॥
दिसै भागव दुसः सिख पैत वाली। सिख पैंट नैद्व नाना महरी। 
परि धीरर दद धिटी दह। याने मानि वै है मृडः रह। ॥
देवर: दिगाँवे भाँत्रे मरण भिष्ट वीरिं वेसू भिष भवहजार।
नाक नेत मैयू गुड़ वामी भाई भवहजार। १४।

dेवर: दिगाँवे पूर्वें घग रघ भव हो। भवाध्य भिष्ट रघ भव में देवने।
वे वे बिने विने भिष विनात। देव भिषानाथ ठड़े अन्धे राखद। २०।
dेवर: देव भिषानाथ ठड़े अन्धे राखद। पुजीत देवदेवी सेव रघ रघ।
सम घगी उने दिनी हें। भवे दूर दूर रघ वॉली ठें। २१।
dेवर: देव देव वे वाहेल भिष सहीलाह। क्षभ भाई दिम गुरम सुबदध।
भाभी मूले भाभी गदे रघाठ। देवराव भाभी दुरे मुहाठ। २२।
देवर: दिम वद दीनें भीले दाव। ये बुदे मुडला भिष वहें मुडाह। २३।

dेवर: भिष भव भव गुड भारी भे भूं चुड़ाली देव।
तीर्थ पत्वार रघा दीना हें दिम दिवाली दिक्क बनये। २४।

dेवर: देव देव ये वेंदु भिष भारी है। वै दिपुले हें हें दिम चुड़े दाव।
भिष भव भागी मूली दाव भारी भे भूं दाव। २५।
देवर: दिम दिम दिम दिम दिम दाव। दिम भागी मूली दाव भारी भे भूं दाव।
भागी मूली दिम दिम दाव है। भागी मूली दिम दीनें दाव। २६।
देवर: दिम भिष वाहेल भिष वी रघ पाने। भाभी मूली दिम दिम दिम दाव।
दिम दिम दाव दीने दाव दाव दाव। २६।

dेवर: भागी मूली मरण भिष भव हो। भागी मूली मरण भिष भव हो।
मरण भिषानाथ मरण भिष भव हो। मूली मरण भिष भव हो। २०।

dेवर: भागी मूली मिर्नू मरण भिष भव हो। मूली मरण भिष भव हो।
भागी मूली मरण भिष भव हो। मूली मरण भिष भव हो। २०।

9. देव देव देव देव देव देव देव देव देव देव देव देव देव ।
2. प. गाठ ।
मिस्र पुलिंग जा से आने वाले मत्स्य तय। बुड़े उठे गें जो तीन विषयों।
अगर जीतने वाले हैं तुल्य शृङ्खला। गाँव तथा मार्गों से गुड़े आये। 38
बली बुलाएगी जो साबित है नहीं। मह उठे वाले विन विन ठोळे।
गिन में आने वाले हैं वाले बहाए। जिस के गें तुल्य आये। 39

देवता: इसे रखने में से सरी हैं हृदय अमर ऊँचा।
अपने गहरे से नें हृदय अमर ऊँचा।

सेवता: चट भर मैं रखने वाले शब्द श्रमिक पहटी। रछ तुरंत बापू गौरवर।
हरे सेवने पहें नीचत। हर तरी के वहजे वाले युवर। 39
हरे सेवने पैदा प्रभावजे। तेहे तीसे भरे निद तुल्य मार्गों।
उपाय कर बापू गौरवर। देवे तीहे बापू गौरवर। 39

देवता: तेहे हृदय दिल पुग जो तुम बत खपते भगवान।
‘वज्र हमें पथ में धर्म से बने में तट पड़ जाय। 30
जाना तब हृदय से निकल निकल जाय। तुम्हारे बड़े धम में स्थान कर।’
तुम ईमान देश हृदय अमर ऊँचा। 40

सेवता: ने बैठे लेने वें बैठे कठोर। में अपने पति मिष्टिल मुन्ने।
गोअड लग और बेलुंग कवाभ। पुर भिनिल मनी मनोद मिष्टिल। 40
निज उल्लास भागी भिनिल बंधन। पैन कावाद धर विहर सुरण।
‘अनु तव ताम भागी ची बजा बाच विले। मे भागे गुड़े तुर चराए।’ 40

देवता: वज्र पुलिंग तुम्ह अब बदले ‘हृदय वामु वी तम अदर।
हुंदे ते सेवाना तम विषया तम देवना धमना हृदयार।’ 43

सेवता: बैठ ‘चापल सिंह विद रह सदुःस्वा।’ हंगरी मने भंग झंडा ध याहिंग।
वैन उपाय वैसे धम मान थे। उभे मंगा उपाय उपाय सेवा। 44
उप सेवने धम मान ते बैठी। अपने मंगा तम घड़ी सेवा।
उम सीतारूढ़ पति बजाए हृदयार। मिष्टिल राज दिल हृदय ते धरा।’ 44
हर हर सिंह मुर विचार बाज। ‘भवबन सिंहस हरर हरर भागी।’
हिरे वस्त्र धर वें हृदय अदर। भर देखे तम हृदय रिसुबाद। 44

देवता: मुर भेजे ते कितर कितर उपरे खटार।
कितर लदे भागतीतम विषया भाग हृदयार।’ 45

सेवता: चापल सिंह धम भाग ते बैठे। ‘भवबन छोरे कितर धर धर।
उम जब उपाय भर रहे ते बैठ।’ में भागे धमरूढ़ सेवन कैप। 45

* अवमा।
देख पत्रजाल सये बोलक उठव कुटिल। मृत तम धर बुद्ध ड़े भग्न। मैं तुम सम्पत्ति भूमि छल वर्षों। ‘भग सिख बेरे ते भग्न।’४५।
दवीं दन बोल बुद्ध सिख नै। पाण घोष सिख पुंडरिक वे। में।
देख मुर बेरे उत्क वर्ष गेहड़ी, ‘कबूला सिख सय हैं बेची’।५०।
जाने बाली ‘तुम बुद्ध देख हैं। धिन यजी भेरे उन वह देख हैं।
मैं हिन्दुस्तान में हैं हिन्दू हैं। धूली मकर में धूली मर।५९।

dेवन: मैं में अच्छे रहती। उत्तर में बल बल आपे भग भग।
‘दवीं लतजे माथ सिख हैं रूढ़ि चरित दुःखी गये।’५२।

बंधक: उम मधु तम ती में बोल। अभ बेल उम पत्रजाले देख।
उम हर रुजाहर सिख घासों। दवीं बोल निम चुवड़ू पै। देख।
‘हूँ हूँ याद बोल बुद्ध सिख बेचे।’ हिन्दुस्तान हरम सिख बेचे। देख।
देख हिन्दू है। है। हिन्दू बेरे। अभी भेरे तुम भग हर। भग।
बेद मुर दवीं है। हिन्दुस्तान। ‘मै भी ते हृद भुषण तर।’
उन हूँ हूँ दिह पूरी दुःखी। ‘दवीं दीया गम में बजा बादी।’ पै।
उन हेड बहुत बीमा है। हिन्दुस्तान। ‘बिन बुद्ध हरे स्त्रिय बहुत।
लिन तुम र यही सिख सजाय।’ पै। पै। बेद बहार उं बेश वहाँ।

देवन: ‘सिन्ह है। वेंटे भेरे नर मित्र भेद भेद।’
‘धीर हेड तेन चां भवद्री में।’ पै।

बंधक: ‘बैठे बैठे ‘उम पै कह। विसें। हर पै। भूमि तम भव मनी।’
बैठे बैठे ‘मै भू हर में। अन्त भू भू मनी।’ पै।
बैठे बैठे ‘देख देख कई यहाँ।’ बैठे बैठे ‘देख देख कई यहाँ।’
बैठे बैठे ‘देख देख कई यहाँ।’
बैठे बैठे ‘देख देख कई यहाँ।’
बैठे बैठे ‘देख देख कई यहाँ।’

उमी भिमह वै दी मध र लक्षी। उद तम गुण हि लिः वर्तु वर्ती। अध दम देव रिर री वर्तु। भुज बेद रेग अथवे लक्षी। ५४।
उ तम बृहद रिस रो रिज़। ‘अभ मह रहें बना नाग उभरी। भव देव भरनी रहे।’ जा रेम भर व्रम रामी वर्तु। ५५।
उदी वटी रिस ‘धाराय तलायें। दुर्गा दुर्गा ने देम्बे बढ़े वर्ती। मंद मृत्युत्कर दीक्षित लक्षणें।’ मेला बलम वे महे महानें। ५६।

रेवान: खलमे में है हर लक्षी बली ने सिम हरेक।
‘उम बनें खलमे बिर मही पत है जाली किले पेले।’ ५७।

रेवान: हूँ रूँ सम भिम वे बढ़े सामापे। सूँह सिम हर भुजे लक्ष।
मानष सिम मत्सरीरे नेलंगा पतीरे। रम्यभूमी बृहद देवी पुष्कररे। ५८।
उ दम रहे भली रेत। दश बलमीरे रहे बढ़ी दश रूँ।
बृहद सिम बली दृढ़ मूर्तिवर है। ‘उम जी रे डेला सिद्ध राज्य’ ५९।
अभ महाम हर दी रुढ़ी बादल। बलजे दृढ़े ‘उजेर यीते हरेक’।
वो मुहुँ वे उदगती। समाय बहवे बली घरही। ६०।

रेवान: अभ सुभाषीरे ने उड़े रे तमे तिर मध।
वो रे रेवान मधवे वे बलजे ‘अभ बले रितु में उध’ ६१।

रेवान: लिच अभ नून सूरण्ड वलजे। ‘मिह दबजेर भूमात वेदी’ नव उल्ले।
चव पचट वी डेला लक्षी। डेला भिशुकु घे वे रिच हदे उल्ले। ६२।
में रूँ सूरण्ड भव लक्षी में। कध पचट चव वर लजे उल्ले।
उड़े बन्देले मेंले देवटीर: चर उड़े हिमालती पठन्ने राखी। ६३।
वसे रलाये पदी अर्धगृहत: विवर पठन्ने चव धर राजे में।
सर उड़े बली आर्ध आर्ध: बणे रावट में मुहुँ ददी। ६४।

रेवान: नमे डेवी तलटा चल नृत्य देव हरेक।
वे खड़े मिरे मधवे बली ‘सचे अभ दैल’ ६५।

रेवान: नमे मुहुँ अर्धधे हनमधी। ‘बने सिम दिले थोऱे लजारी।
मिरे चुप्पे बाँगला पार’ । जे बचे उड़े रिच रिच राखी। ६६।

रेवान: दश वै हरेक वर भव दीव शुभ वराठी।
दृढ़ी पुर वर चम नजे तरी भव दुःख दुःख राखी। ६७।

रेवान: देव हैं नमे धुम चढ़े। ‘चविल मह चढ़ तम में बलजे।
भव कृप्या हैं आर्ध आर्ध बाती। अभ सिद्ध चल सिम देव हैं माती’ ६८।
मूर्तिप्रभ अनन्त लोकसब सुमारख। 
हरि तेहरीं दिखा तमा सुध।
कृपा लगती सिपहिं वे मुहरे दिखिए। दिवं देह घर मधु लोहे।
तो इस रास मधु मल्ल क्रहहे। तो रास मधु बघहे।


चैतन्य: पंज चैत नैत भोज उसे घट लोक सिपहि जी रघ।
तो तत मानव बेटियं भख लघे तौलियं मधु भाव। ५.२।

चैतन्य: मुखधिं भरघि हैं पधि। बहने तैहं ‘अमेर उमी पढ़े सिद्ध रैं।’
मेक देच घर घर के पढ़ी। दोम भाग भी हैं लघु। निपुन भलेजे हैं।
एस एस देखे जंगेजे नेता। देखे मथेट सिद्ध उभरे एंज।
पढ़ सिद्ध दम दश पढ़े मुसार। सिनक्रु हैविन दृढ़ रच ब्रज। ५.४।

चैतन्य: देखि दस हैं। ले जब बढ़ भले दड़ सिद्ध।
तो तो बढ़ पढ़े हैं दृढ़ र सिद्धिः ५.५।

चैतन्य: बहरी से दिंदू उदिं अभी गरे। दिंदू दुर्दुरे हैं विभिन्न पढ़े।
मिष्ट मिष्ट मानव उठ नाथे चीत। मिस दिम विकस धड़े भद्री।
मिश्च धड़े उचिं दों जां घरे। भलेजी देह दश पढ़े हँसू।
देखि हुँ मेंच हर चांच घर मुर्गिं। ‘बादे गाये’ मिष्ट हेंदू अधाणिं। ५.६।
हुँ वह वह विह अभी अवरी। भलेजी हैं रह रहूं विल बढ़ी।
मूहू मिष्ट उदिं गोल रघुत्री। चूकू मिष्ट तजे घरीन घरवरी। ५.८।
रेबेज मिष्ट उदिं भुजी घराणिं। देखि देक देखे पढ़े लघाणिं।
तो ने देखि हरी चढाणी। बुधेद पजम ले हैं भूषाण उनाणी। ५.९।

चैतन्य: देखि देख निः स्मारकी पहरी दिख दिखें द्रोष्ट लघाणि।
देखि भागी तत्स भागी हैं उदिं लघे हैं ५.०।

चैतन्य: हैं भागी उदिं उद जाणी। घरुव भक्त पेंच घर बढ़ी।
मिल भें पैं दरा वह रहे। यहे में भक्त भक्त पम लहे। ५.९।
हवी हें वह उस से पढ़ा रहे। रहे अठाहि घर पंच रहे।
ब्रह्म देह मेंची अत्रीभाष मिठ। सिवे से उदिं दल घढ़िं। ५.२।

चैतन्य: उबे नाम भागी जाणे ‘बते उदाह ती भग।’
दिख रह घट भव जाने तीं अपहर पूछे मां। ५.३।
Chapter: भग् सिंह वे उठे मुई भजे। पाद भिन्न री हाथी गुप्ते। अव सेवावर वी वर्ग मनुष्यः। नैव नाचैं है सान निवान्षाः। १४। लाहल घुसी घुड़ी गौम सेवैं। कहै बहुमील दिल लिंग सुंदर चृदृं। अव वथेल मिन्न वे वैह भिन्न भजे। नं पेरेंगे तब भिन्न बना भजे। १५। 'भम वत भग भिन्न नी घर भजे। उठे अभी समकान वत लकड़ी।' इस्ते सिंह जी रो मरने। 'लैं लोट भग नें मत घरे।' १६। मृत्यु सिंह नी वैहें बनाने। भय पिठुरे चूँकर नानारे। अजने वैह सिंह चृदृं मागाणे: 'उठे चैस्ती नांद उठावै।' १७।

Section: उत्तरर: उठे नाने में चैल सिंह नौ नांद नव नैर। 'भम लिख इन्जे दुःख विधान नव तबे नैर। लवपूर्तिः। १८।

Chapter: पौरण माह सुंदर वी मरलिः। पौरण माह सिंह उपरे बनान। आय पौरण वै हिलाने हिमाल। उम यहे शहरे वे दिख वी भाग। १९॥ वहो वटी 'भग ने मे भिन्न भिन्न। भह गधरे वे वनाने मंदिरालिः। बुधवार वाही चूँकर लगाणी। दौर दौर बी हृंसें सिंह उठावै। २०। चेत रूँ वे भाग भारतवर वटी। मे लिख हृंसें विनाशी रह भागी। भग भिमाल दे चार मंदिराल। ने उड़ी वथेल मिन्न लें सुंदर सुंदर। २१। चूँकर वटी उठी वटी चिनाने। 'भम चूँकर वट विभ वे धूलात्री!' भैल महकाली मर दिंदे बागी। भैल वर्ग तबं तब भा घट घट। २२। चूँकर दिनारी में चूँकर में डे। चूँकर घटी घटी सान मंदिर। वटी घाट भम दौड़ूँ बनहें। वटी घाट भम दौड़ूँ बनहें। २३।

Section: उत्तरर: सभ लभ सहेल बेर से वहै चैंगिः नु दाख। उंगी लबाउँ लबाउँ वे रटे जीसें वारीम हिलां। २४।

Chapter: वटी उपने 'उद' मजाते भागी। उभी घाट भम भड़ैं रही। भूद भड़ैं वैह भिन्न भिन्न भानु। मधुबंध भेल जीये धान। २५। भैल उभी भाने भाने भाने। मे भर चिने दूरंग पूछान। इसे मे भिमाल में भत भत सिंह पांडी। स्मृत लाख भभों बुढ़ची। २६।

Section: उत्तरर: निम जी तित चोपेल मिन्न मट। भित्त मह भेल मागाण। तमन घनालू देव्राज वे चलुँजे कीव लसा गाण। २७।

Chapter: उठी चैल मिन्न घाड़ विकाही। 'भलवर मिन्न में दृष्टि धुली रगाही। वे चोपेल मिन्न घड़े हृंसें। भत भम टड़े वटी चलाने भकाही। २८।
उभय मिश सभ भिनिरह तन्गी। बसुप रेत सिंह गाजे मुलाही।
धनुष रहजे 'सिंह बहुरय दी हेज। उभय दूसरे जाना दिया सेत।' १०५।
मन चैल मिश, मिश सूर में चरजे। 'मभ बहु उवे भिनगर जाने वे भगी।'
विहार मनाजे मिश भूमी घेरे। तप पेट्रोजे हद हैद मिश घेरे। ११०।
मन भेजे है दाजे दूसरे मुलाही। रहम रहमे घात हित रघुहाने।
मघ घेरे वे नमे है दाजे। मेंह घोषब सिंह बुढ़हर ब रहे। १११।

चैंगा: ते पघल नम मिश बीर अने भड़ी उघ घाठ।
बसुप वभ घुल बल बीर वह वह मिश नी ठठ। ११२।

पंडी: 'भेव भिनगर ने हाँ चस्टापी। भगी बघेल सिंह घुल बहे मगरी।
भिन भा दे घुल बल नही। घट तवे धीम पत वह माहे।' ११३।
भय मिश नव ली भग राजे। घुल भिनगर दिम नाम भग लजे।
सिंह धुलीम हाय बहुध मद भेज। मिनाज मिनह लहे भूलापुर ढेक। ११४
जबे मानने हहे बल मड बहे। मने मारम मिश वेख घट में।
महली मयाग ढेर ने भाल ढाहिं। बह ढोरी यही भिनगर वकड़िं। नृति
के देव ढुंढ साहित भगी बहे। नए घुल वह दिम पूछ बहे।
हेत उठीय मने भाल धन बिन। सदी चंपेल मिश में रहे मगर। ११५।
घुझ नाम दूसरे दूसरे पुस्तर वंचि। ममम मगरी रहे बही वगड़िं।
तमी वियाल अठनेतह उपही। मेंह रही हेंस बघहरी रिगिद्वी। ११६।

चैंगा: भेव घात घट बचा किये ढिंढ गाजी घुल ममा दें।
धमल वे पुस्त पठह उद्द रहें। ११७।

धन वी भेव मगी

१५७। [लहली दे रचना नमेन दिन गुड़ ढाहनी।

मं: घोषब सिंह दे दिङि दिखे खट्ठी!

चैंगा: सहै मगी भेव मिनह वी भिन बीच विवाह।
दिनी दिखा वृहती गृही माँडे मेंह रहे माह। ११।

पंडी: मन दुग्ली नसालीज्यं। मेंह रुडे भाल घट मग।
घुटे ननं बेटी हल पह। लली भलबड़ न चिंतित जरी। २।
पुस्तर देंहुत ढुंढ हित घान। दूरे भगी हिंद गुल धन उंढ़।
घुटे धर्म वे भरे मगी। दूरे हराम बही भगी उगी। ३।
श्रेयं उद्दीक्षणं समाप्तं।
विश्वासं कर्मं बनानं जनगणः।
मजा पदमुक्तीं जो महा मन्दीं।
जो मनं विश्राम न देन्त भजनं।

वृः वृः वृः वृः वृः वृः वृः वृः वृः
वृः वृः वृः वृः वृः वृः वृः वृः वृः

हैरानं दर्शनं वहु तै, तै हैर घरी विभाग।
हैरानं सहे पुरुषं में रितं भिक्षां तैं रूढः भाद्रं।
मरीवेद नियुक्तं अभिप्रेतं वारं लगाने देवं गणनं।
'जहै उद्दीक्षणं नामः मं वेदं भाद्रं त मण।'

हैरानं घरी दर्शनं वहु तै, तै हैर घरी विभाग।
हैरानं सहे पुरुषं में रितं भिक्षां तैं रूढः भाद्रं।
मरीवेद नियुक्तं अभिप्रेतं वारं लगाने देवं गणनं।
'जहै उद्दीक्षणं नामः मं वेदं भाद्रं त मण।'

हैरानं घरी दर्शनं वहु तै, तै हैर घरी विभाग।
हैरानं सहे पुरुषं में रितं भिक्षां तैं रूढः भाद्रं।
मरीवेद नियुक्तं अभिप्रेतं वारं लगाने देवं गणनं।
'जहै उद्दीक्षणं नामः मं वेदं भाद्रं त मण।'

हैरानं घरी दर्शनं वहु तै, तै हैर घरी विभाग।
हैरानं सहे पुरुषं में रितं भिक्षां तैं रूढः भाद्रं।
मरीवेद नियुक्तं अभिप्रेतं वारं लगाने देवं गणनं।
'जहै उद्दीक्षणं नामः मं वेदं भाद्रं त मण।'

हैरानं घरी दर्शनं वहु तै, तै हैर घरी विभाग।
हैरानं सहे पुरुषं में रितं भिक्षां तैं रूढः भाद्रं।
मरीवेद नियुक्तं अभिप्रेतं वारं लगाने देवं गणनं।
'जहै उद्दीक्षणं नामः मं वेदं भाद्रं त मण।'

हैरानं घरी दर्शनं वहु तै, तै हैर घरी विभाग।
हैरानं सहे पुरुषं में रितं भिक्षां तैं रूढः भाद्रं।
मरीवेद नियुक्तं अभिप्रेतं वारं लगाने देवं गणनं।
'जहै उद्दीक्षणं नामः मं वेदं भाद्रं त मण।'

* महाकृति
सुधि घटनी सिल निम्न अभिनंदि। अनात ठेल टिम लौट गिराहि। लोको जीकट की लेख चेत। घर ठठ बागे अन्न सुभस्माल वेंद। है। बड़ी घरे हे मृद भल भन भाव। रूढ़ी सत्सद्ध रूढ़ि मिसाल सुवर्णि। ब्याही लावं वहना लेघड़। ठठ बलौं वे भींग रू हेघड़। 20। देवद: मे मौपंत घर जेंचें वैंट अभ लूगाहि।
भृज तो निम्न घर घुम ढेंरी हित साहं घरर साह। 21। देवधी: है हिन्द हे साहिं यह घृघड़। “बर भल ठट सूझी मिट घाटी”
उ ढुठ बंटवारे लेने प्राप। रूढ़ी मिसाल घर बॉंटे लाघड़। 22। झेल भैंवे मे दृधत रस्ता। जंग, भेंदबा मे बैहे वर्ण।
उंदी हिहर चुने हुम हिबाग। बड़ी भवान मिट रूढ़ी हाग। 23। रूढ़ि घृघड़ टिम दीवै बजैजे। “रूढ़ि बलश टिम भेंवी भाग।”
यह भगवत हल दुह सिम हुम हृगाहे। 24। रूढ़ि हल घर बल भिंहें भेंवाहे। 25।
मै भी मिसाल घर उआ भेंवाहे। बड़ी हृम हाग दहैं टीना।
मै मै बल उंदी थेरी बुदे। घर उआ बल बल मजाघे पाहे। 26। देवद: मृहः बलनी बमथी चेंटि घुङभल में।
घें रूढ़ि फूल हृम बली। बड़ी उबौकट में 27।
देवधी: सुड़ी थेर में घुङभल पीम। “बर भल घर वेंगा बल मृह?”
उड़े बलजे मैं टिम मभाग। मै बर मृही र पुल हिजाहि। 28।
घरेलुही ढहूँ मैं मृहा बली। मृही ठोकी में वें रोज।
बजैजे वें में ढूं बेटी उमाभी। सुखु मिसाल अभ घे बुल बली। 29।
रूढ़ि फूल हृम भिंह रहापण। ढहूँ हृम हेम मृह कुमार बाग।
मृहा फूल घे रुलवाने वेंग। बली वें में “बम बले हम बलें” 30।
उड़े रूढ़ि मृहा बला बलनी। बली रूढ़ि हृम किले वें। हिजे ढूं बेटी किले वें वचनी।
रूढ़ि बेटी अभ वेंद बली। अभ उभ हेंचे हिम तस्सी। 31।
देवद: मे बौंड वे उंदी थेर मृही दीरे साहागि।
रूढ़ि ढहें में उथी भैंवजे हिम भिंह माघि। 32।
देवधी: हृमी भिंह ने एर पुछाहे। टीरी ढूंढ मब बल भागपे।
मृही घर फूल घर बली। घर बलनी घंगोट वस हृम मृहा घरी। 33।
पूजीक पृव पूर्णम

Page 373
मह बले दिह घंट दाहड़ी। अव काल उद्भ थेव नीभ भाई। बढ़ा दिया। इसे बाज़ दिया दिख बढ़ा। बहुमतः आर थेव देखा धार। 34।

हिम थेव दिख बेदी बढ़ा। दिम बे चाराह रम बीरे।

सब दिह ते पह सवे बढ़ा। तो चुलहें भट्ट भाग। 35।

#### देवग: दिये बूल्जे विठ भेंगे। भेंगे बेदी भाग।

बाहो दिव दिखे बढ़ी दृष्टं सिंह बने दिखा। 36।

भेंगे मैं कट सब बाजे मे हो जिहि उतरत चढ़ाई।

पुराप एकः लज भे बाली वैस लग एन। 32।

#### देवती: दिये बूलः वही 'थेव फियाहत' वे एफ दिन थेव। गान बैः 'फलसा पेग ते पेड़ि।

अंद बैः 'चमकिए थेव तै घड़ी। आँखे बिकूँ ना उने देख।' 37।

#### देवग: मैंने दुःखे थेव सब दिख अने दिखी दिखर धम।

भेंगे दिखी दिखर धम धप धप विरें जूम। 35।

#### देवती: उवचन मैय विकल्प का। भिंड विठ मथी उड़ी उड़व बढ़।

बैः उवचन 'पट पटल पेड़' थेव। तब मसूदः तै गधी भट्ट। 40।

उवचन दिलीप बेदी पह। दिये अधि मह चोप बुझते।

'भ मे घड़े पेड़ पेड़ रथी। गितः दिखी दिखर स्पर रथी। 49।

अध घड़े तै भ भट भागी। रौदः निमा है रम मे रथी।

विठः हैं भ बन राठी। अध दिखे तै भ भट राठी। 42।

भ महान दिख बुड़ मुड़ माने। तब बिगमान दिख विकम भीमाणे।

सिय विं हैं तै क्रोध बने। दिये दिख बैः हे घरसे लजे। 43।

#### देवग: दिये उं दिखी रात उड़े दिये उं रहे दिखी विपरात।

सिय समे अंदेरी भेंगे भे भट दिन भी भट नाहं। 48।

#### देवती: उं रहा दिख बली महात। 'दिखी हड़ अध घड़े राठी।

उं 'बेदगा मिहित वी भागी। अध दिह वी पुढ़ घड़े महात।' 45।

में उड़व राधी मारी बुझाती। मह दीदी दिह मह बुझाती।

मुट बन बेदगा मीर विकल्पा। 'घड़ा घड़ा' वि बेदगा भुमड़ा। 48।

#### देवग: उं बेदगा मे मही बदलै। 'हदीसे मूँध।

भ मह बेद बेद के है की मुं दिखर घड़ात। 42।

#### देवती: उं 'विन्ध्य मैं पट पट महात। लें बिंदी में पट पट विचार।

गध वही 'भ महाने राठी। भट भागे भ मह दी स्थानी।' 45।
चद्दौ देवाम  'मह निकामद सती। उभ तेचे मह जी पुज्यामही। घणेलि मिर्च में चहरि उर्वरी। उभमी रात्र रोज नीमे वहनही।' ६५।
मात करी  'अथ रेन भज वगे। उभमी गाँव भज हृद हर उर गहे।'
उ देवाम उर देव दोली। है। है। पालत्रू भेज धर दी। ५०।
रागि घणेलि मिर्च ० ररन्नही। पिसा रिलंि तरे तेरे तरहरही।
उ देवाम मिर्च नी पिति आगे। सटी बढ़जी पुजामा लिमागे। ५१।
चद्दौ  
वमस खेम रोटु हंडे उ देवाम रते तरहरही।
'ऐसे मॉंड बनुहहे' मिर्च नी चह लिमपणी। ५२।
मिर्च नी रे पुजामही रे बशिक हम अधरही।
'भेजे बहं तर रोज में तुटि हिम रेन ररहुँगी।' ५३।
चद्दौ  
घणेलि मिर्च उ देवाम हुलामें। 'वरि पालमही हैया घरपां वचण्णै।
भदर में हमें उभरे पर्व। हिंदु घरव रे रेंगे रहामागी।' ५४।
मेंंि घाँउ पुजामही में हसी। दींि रंगे घाँउ चहरही।
उ मिर्च नी चहर्वा हस धंब येंगे। सा बचारे 'पूर्व सिवक सह उम टैंले?
पालमाही हैया घरव घरव थपे। घाँउ चहरु उ भरते भेजामें।
चेत मेंही हरें भूरे उंदी। उभ भुदर नोदे उभ पिंट हैं घेसी।' ५५।
सुतु मिर्च हैया जटे थिंड़णी। मुरी भरव उड़ित मिर्च पुजामही।
रतने 'मिर्च भाँ रही रचापे। उभी रिलंि भी हरवध वचण्णै।' ५६।
चद्दौ  
सचीं भेंडी हैया सरमही भी स्थुतवर्गे हजारी भट्टी।
हृद रिलंि भंग मिर्च हुदे भिंडे मूरे घर हर्वी। ५७।
चद्दौ  
उ मिर्च नी बेंग देवाम देव। थिंधम नरे उ रुदे बेंग घेसा।
सत्ता भाँउ री हर्वी घरहनी। ५८।
उड़ी महान रोटी भी मेंटी भाँउ। तातक्वाँरी मह भाद थिंपुवारा।
भी विधिविधान भाग भाद नहीं। संसारं निशा रंधे हंगे हैं उद्वी। ५०।
पैंडे हेंदे विधिविधान नी मिति चहे। ते मिर्च युदे भाद घेसे। बेखाम बंडव प्रभ हेंडे हेंडे। टैंडे हेंडे प्रभ वहर बहे। ५१।
उड़ी रउटा घरपां भाद देंडी। हृदिव भावी रित उद्वी री मेंटी।
मिर्च नी चहे भरमी रेंटे रोटे। उ देवाम घरहाले हेंड। ५२।
चद्दौ  
मुरे नुक्कव उदंग भल सही नितम भरमी रुपही।
'तेंदे भांडी हिम नींटे मिति बेंग नितम परहुँगी।' ५३।
चेंट्री: यिठ भी दुख नाहे माहि बेंध। भी भुखाने मत सते बेंध।
"उठे वाहम" बति भाव पढ़ाकि। अगे भीमार छूटे दिखे झिंगड़ि। २४।
गम भीमार चिद भीमार निगल रेंती। धिनुं रिंदूं वहारे बेंध।
गम बली बुझि न बली। गम राग बिद्धि अभ भूखी बली। २५।
से गम विषय कोई भाग मेरी। यमेह निन्नी में ते गांठे उठे दिखें।
हेतु पाणिवा चर गम देंगे माहि। गम वेंक बसम दे हुंदे गांठि। २६।
दिडू उठे रहें महबूब तिसर अस। वजा माहे ते दिंदूं भी भाव।
गम दे उम धरण बदहायें। छूटे माहे वहाने। २७।
देंतर: मिन्नी माहि उठेह उम "उठे बदे मू देंहे चाम।
अभ विह महम भा हानीते दिम झिंगलो महाम। २८।
चेंटी: ते मिन्नी माह पूव बुझाने। रिम्मी दिखूं उठा दिखाये बर्दाने।
मिन्न दिख वी बति हुंदा बली। भुखाने छूटे दुझे दिम भली। २९।
मे हेतु भगि उठे दिखूं रुझान। रूढ़क भूलाने रहे मिन्न दिखान।
रिम्मी बान भूल भली बर्दाने। सिन्धिया माह दे बजाव लहरे। २०।
भियत वे गुजे व भुखा मलीग। हेतु दे पवन बीं उमैवीरान।
विवे भदरी बिम दिखे दिखूं रुझान। बिन्नी पैरी बिम देंगे हुंदा। २१।
घर भीं लिंग रह रहे। तेव माह दे सिंधिया बति लहरे।
विने धुहाने बिम दिखाने नवी। दिखान सिन्धिया दिम उबवी। २२।
देंतर: ते हेतु दिखें यी दिखी मिन्न माह पिव वां बींज।
उम विभाव दिखान रुद्ध माह ओंदे पां दिंदू। २३।
चेंटी: तेव माह घड़ धरी धरी रहे। "भूम वढ़ा पिव रिज्जेन घ बींजः।
उम भीं मेंगा उम घड़ भीमा रहाने। अभ घड़ देंगे माहि दिखाने। २४।
पे सिन्धिया दिखाने रिम्मी दिखाने। मंग रहे वे मिन्न दिखाने।
"चिदिर माहिड अभ घड़ बींज। तबबली दे तै ने भंगिय। २५।
भूल जार घड़ रोढ़तारे फारि। भूवाही में अभ घड़ दिखा हड़ भाव।
वारी घड़ घड़ छूटे भंगिय। खेलु भेंटा माह छोटे साफ़ी। २६।
घड़ भीम घड़ छूटे फारि। बिनें पैरी दिखे दिम देंगे अभी।
पतिये दे दिखे में ने देंगे चाहि। भूमी अभें भुत्ता उमाहि। २७।
देंतर: मी धुम घड़ापान पेंग नहिं तुझी वी देंगी देंग।
दिखें हेतु उठे उठे दिखे दिखे बेंधे बेंधे बेंधे बेंधे। २८।
बढ़ बढ़ाप दिंहि पिविल घड़ रुझान बढ़ हेंदर हेंदर हेंदर।
दुबला घड़ में उने भे मिन्न माह मुख गांठि। २९।
वहनी: ताजे मैंने मीम सुंदर ने दिया। तुर्की ठेव की उत्तर अभियंता।
विवेक दस पूर्वी धिव दस भगीरथ। अद्वैत नाथ कर रामायण चित्रे। जून
उ सिंह रेंगली हो मगवर धुनाड। दिल्ली पीत दीन सदिक ह्रास।।
भगीरथ देव उन्नत शिव रंगवंशी। अद्वैत माहात्म्य जित उला लगाव।
शुभ नाग मे भुद वत घुरे। अदि उवा भिन्न अति विजय भट।।
 अदि लेख रेंगवट घठ भाग। जून धिक गुड अति भमव बुढ़ाए।।
भृत ब्रह्मी उड़ा उड़ चढ़ाइ। नाथ रथे जग देवित दे अलिया।।

devar: स्वस्त वती ‘उभ भग चँगें उभ आहें लक्ष मिथ बेंस।
भिं मिथ नी आभें तिम वहे बिंभ वहें विंभ अव गंगेः’।

वहनी: पूड़ा जली उ अते स्वस्त। भाग भिन्न पे दह उसवील।
विभव भगीरथ नी मिताली उड़व। विभव भाग के हि वसी घडाथी।
भय विंध रवजे देत्रे दिल्ली दिल्ली। महसे सिंहे दिन सीरे छुड़वौ।
रन्न ठण्डे दिल्ली चाँड़े घड़े। मिथ पदमें चूड़वे भागे।।
मुरुल स्वर्ण भिन्न दिन दह भाग। जुँता जिही डूम भाग भाग।
भौली वती पक्ष बाज वी बच। प्रणीत तङ्ग दिन चढ़े चढ़े।।

म: धोळेश सिंह दी वेंट मधी

948. [भग नाथ धोळेश सिंह दी भुजवाण, लट का भबना नाथ दिघनिशा]

देवजा: भाव भिन्न स्वर्ण दी अजत दी सिंह लुगद।
मौ मृग पांडवेश में भिगने में वत लट.रसी दिघनिशा।
सव पेश भागे लट दिरी सिंह नी दरे सुगद।
उने अद्वैत भंगी भति उमारते दे दरे भलुटरतिः।

वहनी: उमारते दे दिल्ली पेश दिल्ली भाग। भुजवाण त सिंह दह अद्वैत।
ने भेड़ भविष्य सिंह पति दरे। घटुड़ भुदी दिन भेड़ भविष्य मुहरूँ हे।।
भशील पॉले भुजवाण ठण्डेंतूँ। ‘भग भागे दिन वहे दिघनिशा’
आगि भशील वती दिन घड़। ‘नाथे मह दफ बच भुजवाण’।
उ सिंह नी दरे भशीले मुहरूँ। ‘उभ दफ बच भुजवाण तै माधी।
भगि भिलुटे उ घर खेड़े। वत दे दफ दफ भव मेंटि।।

1. भशील।
2. सिंह।


* पृ.:- वे तै सैरः।


लेखन: 

लेखन: 

लेखन: 

लेखन: 

लेखन: 

लेखन: 

लेखन:

लेखन:

9. तीनियों रह। 2. सिंह ठेकी भिखे (अम्र) भा ठेरह।
गुरुदेव निमित्त फिल्ड मात्र देने देश। हीरे दीम आपी है दीम अगे करे राखी।
हरेवर दियाम निमित छापते हुए। कुंवन देश में घूंट देते। 38।
विम श्रवण घड़ी विम हुई बदलती। विम सबसे विम उत्तमतिक पत्री।
वावु हूंटें वे निम दल हिंदु। वस्त्र भिड़ हूंटत आप्ने बुधेः हिंदु। 8॥

देवस हः: तम रजङ्ग सागिर मत ये वीर भूये चफ़े डफ़गरः।
उन हें हूंटत हिंदु हं हत्ते भलुः निम सागिर। 3॥

देवस: नागर बरी अध रहा वरापि। अभिर हसु में हूंट रहिये।
उन भाग्य निम नी चुँबु आप्ने। चेहे मोड़े वे हे बघु लगाने। 38।
ढ़र लड़े है मैं विम अविभागिर। वैदिक उँही वैदिक तोँदे लगिर।
वस्त्र भुज ये वस्त्र बुधुः निम। विम निम पेना बरी आप दुहुः बरी निम।
वस्त्र भुजे में निम पड़े पाह। वरी घड़े, वस्त्र मैं घड़े शुभान।
ती में हें भुज बी आप्ने। डिजरे घेम वस्त्र तमुजः हे पाह। 8॥
प्रति प्रत्र, वस्त्र प्रत्र पाह। प्रति प्रत्र प्रत्र रूप पाह।
घूंट पायान घठ धृष्टिम वरी। ढंग ड़ौं घठे भे निम डिजर परी। 8॥

देवस हः: तम बरी ढंगे ढंगे घठ ने ढंग दें सर सजगिर।
उसे ती दें हे हूंटे भें ढंग भें वरी म टराँग। 8॥

देवस: बरी ठठे मिर्ग भड़ा लगिर। बरी ठठे मिर्ग नाग घड़े हार्दिर।
ढ़रे हे भूर गिरा र उकारे। ढंग तसं भिड़ शुष्ण डिजर ठबे ठबे हत्ते। 8॥

मेवालः: गोरुत भरी भहिम नाहू भूसिंग सिंध भें लुट।
सिंध घड़े हंग ब्रजान भागिर भूर हूंट हाप तमोः। 8॥

देवस: भेमी भेमी भुजाय में मिन दुर्जः म विदुर्जः माता।
सधे पैसे भें तेंठे तेंठे भहिम नाहू। 8॥
ढ़रे टिंकी चउगिर हिंद भहिमानं हजारी रिघिर।
मी भेमुजार मिदु फिदु फिदुर पन भूर पतिरम भिकरी धरी।

माधी ढीम धूमें भे ब्रजर भूरे बी।

9॥5. [खट ढीमें ढीम भर भर में ढंग ढंग राजा भमा भल में हे भिथर मिन दिंग दिंगाँ।!

देवस हः: तम नाके पाके उपरु घड़े संमाहें समे घड़िर।
माधी ढीम भर भिरिर ढीम ढीम वमिरिर भिरिर। 9॥
मद ढंग तवे ढंग किर्क बहे वे भिरिर आपे आप।
सधे भाँव मजान सिंध में सिंध ढंग बजे भिलाप। 2॥
वेष्टी: मूं स्वर्ग इतने वी धार। में मस्किन तैमा मिस्ह स्वर्ग साद।
में कहा 'माना मिस्ह' उँमें मिस्किन रह। तुझी ठहरी माना मस्किन रह दे।
माना मिस्ह कहे 'में मेरे भिंतौ तथा।' रहस रंगूं रंग मिस्किन रह। उँमें धार खेता माना ठहरी माना ठहरी।
वडी धार माना मिस्ह मर दे। मुख मन धर्म भीम भीम रह।
तुझे में भिंतौ धार दे। में माना भय भय रह। २।

देवजा: आने धरे मैं धार चति भवल घटि दिहार।
में भेजी देखिए तै हरे मुखियाए गाम भवल। २।

देवजी: नरी माना मिस्ह भूँ ठुं ठहर। भिंतौ तैह। स्वर्ग बार धार घड।
बत धार मिस्किन भाषा ठहरात। २।
सुध जुबरे जिम ढी ठहर। जिमभारिया जी हिरा मुख जात।
उँमें ढी चूँ ठहरी बार भार। बत बार धार मिस्किन भार। २।
बृष ठहर मामे बृष ठहरत। बृष ठहर मिस्किन भार हुए।
उँमें ढी ढी ढी ढी ढी। स्वर्ग भार।
निमभार घट तरंग धार ठहर। बत बृष ठहर मिस्किन भार।
में भिंतौ धार दे। में भिंतौ धार दे। २।

देवजा: बृष बत 'भिमरूं बृष' बृष बत 'बृषे हेम रेष।'
में भिंतौ भार मुखिया घट भाजम भेज। २।
सुध ठहर मिस्किन भार हुए। में भिंतौ धार दे।
हिमभार घट तरंग धार ठहर। २।

देवजी: बृषें पृष्ठी उभर धर धर भबर।
मैं भिंतौ भार मुख मुरार भेज। २।
में भिंतौ भार मुरार भेज।
नरी मैं भिंतौ भार मुरार भेज। २।
में भिंतौ भार मुरार भेज।
बृष ठहर मिस्किन भार हुए।
निमभार घट तरंग धार ठहर। २।

देवजा: उनने भिमरूं बृषें बृषें बृषे हेम रेष।
उपाधि: उद्धि भिष्म बिस्म धक्किये अविष्ट। अवशुष्कसिद्धि तै सिद्ध अविष्ट।
पांडु युध विकाल भिष्म धक्किये मूर्ति! भिष्मसिद्धि सिद्ध विकाल विकाल। १५
अव विकाल कुर जौं। अव भिष्म सिद्ध गच्छत रथ विकाल। सिद्ध विकाल सिद्ध गच्छत रथ विकाल। सिद्ध विकाल सिद्ध गच्छत रथ विकाल। सिद्ध विकाल सिद्ध गच्छत रथ विकाल। सिद्ध विकाल सिद्ध गच्छत रथ विकाल।
धिन रथ बाल बाल जूझ। जूझ रथ बाल जूझ। जूझ रथ बाल जूझ। जूझ रथ बाल जूझ। जूझ रथ बाल जूझ। २०
भूल भूल में चड़िया भूल में चड़िया। चड़िया भूल में चड़िया। चड़िया भूल में चड़िया। चड़िया भूल में चड़िया। चड़िया भूल में चड़िया।
भूल चड़िया चड़िया ठीक है। ठीक है। ठीक है। ठीक है। ठीक है। २५
माध्य भग्ने वो

१५५४। [भक्तिवन्दनां भक्तिवन्दनां भक्ति वन्दना। भक्ति चिन्तन माध्य]
देवतम: उे माध्ये हैं विद्वं तवाजे: 'पति किन मैंने विकालित।
भिष्म वाल मैंने विकालित मैं भिष्म वाल मैं विकालित।' २१
उपाधि: नेहु उन दृष्टि ने मूल मूल। धम धन के अव ने धन ने।
धम धन मैंने धम धन मैंने धम धन मैं। २२।
उद उद अव अव उद अव उद। उद उद उद अव अव उद।
उद उद उद अव अव उद। उद उद उद अव अव उद।
उद उद उद अव अव उद। उद उद उद अव अव उद।
उद उद उद अव अव उद। उद उद उद अव अव उद।
उद उद उद अव अव उद। उद उद उद अव अव उद।
उद उद उद अव अव उद। उद उद उद अव अव उद।
उद उद उद अव अव उद। उद उद उद अव अव उद।
उद उद उद अव अव उद। २४।
उद उद उद अव अव उद। उद उद उद अव अव उद।
उद उद उद अव अव उद। उद उद उद अव अव उद।
उद उद उद अव अव उद। उद उद उद अव अव उद।
उद उद उद अव अव उद। उद उद उद अव अव उद।
उद उद उद अव अव उद। उद उद उद अव अव उद।
उद उद उद अव अव उद। २५।
उद उद उद अव अव उद। उद उद उद अव अव उद।
उद उद उद अव अव उद। उद उद उद अव अव उद।
उद उद उद अव अव उद। उद उद उद अव अव उद।
उद उद उद अव अव उद। २६।


देवनागरी: महां भाषां ठाँट पैठ तथा वाच अनुवाद परिचय भेजें भाषा।
पैठ पैठ निभी वाच वाच घटी घववंहें लें इंग्लिश। 91।

देवधार्मी: महावाण धार्मी घविले पता खड़ी। मेंवाण लुड़ा जोड़ि म चर्मी।
पती गला बाज़ार अंगुल पती। माफ़ घविले उने गला दिखा मन्द्य। 92।
इसे धार्मी मना बाज़ार जोड़ि है। भाँचि संग्राम मठ वठ चने है।
बाज़ार संग्राम उदेशी बाज़े उनवे। मठ संग्राम दिन बने बनवे। 93।
अधि भागमतीभि गोल महत्मी। मली विपरी दे दिमें मल्लमी।
मठ दे दिहै महत्मी के आड़े। राधि चौर सेना भिमे उव आड़े। 94।
सिम भे घन धे भय देंदी। दुःख दिल क्यों उपज़ वठ देंदी।
दिम धम दिल वड़ छोटे हाका। धनी उड़ी महत्मीहि घड़ा। 95।

देवनागरी: गग्ने दे दिहै संग्राम चुड़वे, दिहै देंदे भक वचि दवारी।
मे वाती धविड़ी हेंग दिल उड़े म संग्राम भविं। 96।

देवधार्मी: वती चेंबू दिल चुड़वड़ बेंदे। दिम वठ दिल में वड़े घयें।
भल भय माफ़ी दिल घज्जारी। मठ मेंढ घड़े विन मुख उभारी। 97।
दिम वठ दिल दुःख विनहु र देंदी। वछे दुःख दे नाव वठ सेंदी।
दिन छुट वे ज़े वटे तुम्हारा। उने चेंबू दिम दिल वठ वड़ा। 98।
दिम वठ सेंदी दिहै दिहै दिहावा। उठि मुखवे में उपेक्षा।
उद्धर भागमतीभि मठे मुझे। ‘भ भगवीध देर्दी देम दुर्देर्दी। 99।
सेरा धुरणि दिहु तुवने वध भारी। सिंहा वौटे वेंदी घड़े भविड़ी।
वबे द्वार दुर्दा उव आड़े। दुर्दा महवाव वे दुर्दा उववे। 20।

मेंयक: मे अठार दिला मानि उव नेर चड़ै खणी।
मठ शिख वटी महसूह मन्दी दातु वटा लखिड़ी। 21।

देवनागरी: मेंसे शमववी भानि दृढ़ समे भवेवः बाज़ार भुज।
धविड़ी भिक्षुण विधे दे दिमा महवाव तेंड़ भ उव। 22।

देवधार्मी: मूँ महवाव घिमन धार्मी वी वर्ती। दरे सिंहाल है दिमी भवी।
भवानि देरें मेंवः भवेवः वे अभे। माफ़ घुठु वे वलिे रखवे। 23।
मूँ महवाव आवेंगे ठाँट चुलुहारी। भवेवः ठाँट ठाँट चेली लखिड़ी।
वरे टिकिल बल झंगवे ठाँट। देवह बनि घड़े ठाँट भिंगह। 24।
उँ मेनवः ठाँट दे भी वी वर्ती। ‘रेहे सिर्फ़ी भम डेम ठाँट।
भम महवाव जै मेनवः वहः जै। ‘भम रावः भम डेंगै सेना जै। 25।
लेखाव दुम उम उने लेना भेजा। नहीं अब उने उनातु में गा।
उम भाल तिह से सेलाज भान। उहे रैल चलन उगव।३५।

लेखाव: उे भेता जात में बढी ‘उम रात्रिदुज घायल भूगा।’
हेतुयु अघजे ‘अदि हरे बड़ू। बड़ू उम भूमीथा।’ ३६।

लेखाव: मै उज्जु असह भाग दिखाय। श्रेष्ठ यही मेरू वशित।
उे उज्जु शवी बनै। तहे उज्जु शिन हे तहे! ३८।
उे मित्तं रच सर रचाय। धिर उनै धिर राज रचाय।
छुँ कर्म वो प्यार वाढ़है। बच पूरा राज मज़ाक वाढ़है। ३४।
धिर उदयमल शिख उमाय बनै। भार रिम घाट भानहै।
घरार चौं रक रिम वेंजर था। मै तो मज़ाय चौं भिटाय। ३०।

लेखाव: रामदास ब्राह ने दिया जूँ दिया रूँ से भूम रघाट।
धिर भेनू रमैल घर छुँ में बहत बर घटे मधाइ। ३८।

लेखाव: अर, बुन, दिस वी नैट। यो मधवरण रहा भात रन रही।
राज दिसम है बुद भानात। मह रैल द्रिम रैल बुध भाना। ३३।
पती घरा पूरांत पती बाट। तन रैल लम्ब रैल सपुट बोरी।
उदयमल बनेने बैल घाटह। दृष्टी बैल बैल मधु धिनाय। ३३।

लेखाव: पती घरा दिनार भेनी भ्रुवाव घोड़े वर्गाकर।
‘मह राधित दिर रैल छाड़े रैल दिया रैल भानी।’ ३८।

लेखाव: पती घरा दिस नैट भर मूर घाटी। बरट बरट घर बुध नैट मधवरण।
उसी रोज मर रच गाटी। ताज़ा रच रच रच रच भान। ३४।
उसी रोज मर रच रच रच रच भान। उसी रोज मर रच रच रच भान। ३४।
बुध रिम वो मधु रज बोरी। बुध रिम वो मधु रज बोरी। ३४।
‘बुध रिम वो मधु रज बोरी।’ ३४।

लेखाव: पती घरा दिस नैट भर मूर घाटी। बरट बरट घर नैट बुध नैट मधवरण।
उसी रोज मर रच गाटी। ताज़ा रच रच रच रच भान। ३४।
उसी रोज मर रच रच रच रच भान। उसी रोज मर रच रच रच भान। ३४।
बुध रिम वो मधु रज बोरी। बुध रिम वो मधु रज बोरी। ३४।
‘बुध रिम वो मधु रज बोरी।’ ३४।

लेखाव: पती घरा दिस नैट भर मूर घाटी। बरट बरट घर नैट बुध नैट मधवरण।
उसी रोज मर रच गाटी। ताज़ा रच रच रच रच भान। ३४।
उसी रोज मर रच रच रच रच भान। उसी रोज मर रच रच रच भान। ३४।
बुध रिम वो मधु रज बोरी। बुध रिम वो मधु रज बोरी। ३४।
‘बुध रिम वो मधु रज बोरी।’ ३४।

लेखाव: पती घरा दिस नैट भर मूर घाटी। बरट बरट घर नैट बुध नैट मधवरण।
उसी रोज मर रच गाटी। ताज़ा रच रच रच रच भान। ३४।
उसी रोज मर रच रच रच रच भान। उसी रोज मर रच रच रच भान। ३४।
बुध रिम वो मधु रज बोरी। बुध रिम वो मधु रज बोरी। ३४।
‘बुध रिम वो मधु रज बोरी।’ ३४।

लेखाव: पती घरा दिस नैट भर मूर घाटी। बरट बरट घर नैट बुध नैट मधवरण।
उसी रोज मर रच गाटी। ताज़ा रच रच रच रच भान। ३४।
उसी रोज मर रच रच रच रच भान। उसी रोज मर रच रच रच भान। ३४।
बुध रिम वो मधु रज बोरी। बुध रिम वो मधु रज बोरी। ३४।
‘बुध रिम वो मधु रज बोरी।’ ३४।
पत मूल लड़त मान उप ना| ‘लिय सेती भूल लड़ लिय हैं’।
उ पाड़खात अनसीन बताती। मृत्यु दिन रहें में फाल रहती हैं।
आठ स्तंभ हृदे में देंगा सागर। वहाँ वे दिया नें भागा।
मैं हर उठ दिया देंगा। हर देखी मृत्यु भुक्त हृदे।
हर भर वह तल्ली बी पुली मनाहै। वह वह हृदे ‘देंग संत मान पाहैं।
उसी वह बिले उभ भरो तूनी घड़ी। देव भावी में सवे भलाहैं।

देवता: हर देंगे भावमी भर दिये में हर देंगे ताही।
हर हर भुक्त दिये वें हरी पुली दिया देंगा।

देवताक: भविमी मूल उदाहरु मिगा भरे। उदाहरु मही घड़ू उठे।
उदाहरु मही देंगे हर देरही भरे। मी उदा उदा जर्नी उप ना| ४४।
बही भव्यम मी मारुआ मुजा। ‘रिम भरंडे जब दरही जर्नी होगा।’
भैरी बही मारुआ जी वह। आदि दिउला दिया दिव्यू भाँड भर।
रिम देंगे हरी लीली रिम मटरें। ‘वह उबे घरे हरी वित वह माती? वह उबे वहे वि घरे हरी वाहे।’ उ हे उना घरा हरे हरी वाहे।
हर हरे पुली मट दिया दिया। वही वह देंगे हरी भविमम माती।
बही दिया में भविमम माती। पाहे हरे पु में चेल घड़ी।

देवता: हर देंग घर वह पुली हरी पेंछ हरी।
उसी वह भरो भलाहैं हरी हो मिसे दिया देंगा। ४५।

देवताक: वहा भविम उदिह उदाहरु वहे। भविम भरंड मही में हरी त भरे।
हर हर घरे हर हर में माती। मारुआ मृत्यु हर हर वह । ५०।
घर तैद मह देंगे उबे। उबे वह वे दिया हर हर लही।
भैरी वह उदिह जब दूह घड़ी। घर चिहाए वे वहे वह। ५१।

पिंद उं भविमम भूमिना।
५५२. [भविम हूँ घर भविम वा रिम्बिमा]

देवता: भव हर देंगा भरे भरी में में वित भार।
वे उसे मारे पाड़खात वे मह पहे भम पहे उठे। ९।

देवताक: पली मूल मारुा मारुा वित लीली। पली में में हर मारु मारी।
सम भि महे महे महे रुपा। वे चार वे पाड़खात भारी। २।
बही कहत ‘दम दिया भरे। दम दिया दिया दिया दिया।
महे मे दिया भरी महे महे भविम। में देंग वह भविम माती। ३।
हित अखंडत न जग इनी धांती। देखने धर्म अभी खड़काए।
दिमी दों खड़क रहते ठहरँ। मी मइल भव दिन छठ सेन। ९४।

deuka: उ मईला दहू हम डम बचैते 'वध रवाने अभी नै अभी।
उभ है हम डूंकरै रहे हट चट उलानी बोत। ९५।

deuka: बनाए जरी उदित हुए विद दिले वराही अनन्तम।
‘अपने बीसे जे ग्रीष ने जै मेहता बिर्मान याम।’ २०।

daki: अभी महान गुर भव लहरी। हिम धर्म धव छव रघुनंदन छही।
दिल बचे वी उदि बांधी। माह भूत अगुठ वे गाने उमाही! २९।
भींसी धवी पत बाजे अभी। अभी वल नौ उदित भव देने यवी।
मेव यवी भाग उड उड भाव। वैदेह डूं विन अगुठ घडना। २२।

हुलर्विना द क भेद भूलमंत्रा

६५। [हुलर्विना भुवन मंगला]

deuka: मुख वाद अभ हुल वी मिर्न हुते घरल गुर मेंढ।
उभे निवाल हिम पत वहर वे बहे पेड़ हिम तैदि। ९।
daki: तिलेंव दीर्घा दिये ठान। इस खपके माह हिम हुल विनाह।
उस से भजनी भव अभी भाष। ते धरति उस मिर्न घराह। २।
भे भजे वे उदे पांड सुपा। अभे मिर्न, तुलीन अगुठा।
दहे, नुदीन देंहें वर वहां। जानी मानहुड मुड दिये शहे नहे। ३।
तित दहु गर्द सू बेंड बलांग। देंह बहे मेंट भव रूढ।
अभे धेहे में उदे मिर्न। भूलम कुमांद वर लहे बहे। ४।

deuka: मुख मुहब उदब बे दिखल र धरत रहां।
से दिखाहै उम घेंखल बहे इहैं भूलमति। ५।
daki: इस भजनी दिवों न मह वहे। दिमन वन वन मह गंठ लहे।
अभ मह वन अभी नैस। मुख मुह बिन बेरे मुहनी। ६।
भे भजे दिये भुव उवे भुवाह। अभ रूषे आजे इहैं भव भाव।
हुलर्विना इहैं भाव अभी 'उदीं। भुव बेंढ लहे अभ रघुनंदन। ७।

दुकुलवर: महान मे मुहम्मद। वे वीनास वे निद वला।
उस हुल पेड़ु नाह वन वने वन हुल जयमंत्रा पती जता। ८।
सचजे वन बावल बलेंट नवरे माहरे भोजिए। बेंढ़ जे भविमुह। घडना।
हिमाल उदकारां के पिंड वने धरत माहिए। वे मुख भेंड घडना। ९।
भें भाई माझे वी डुटी

200. [भें भाई माझे वी डुटी]

देवता: माझे माझे वी डुटी माझे माझे वी डुटी

देवता: भें भाई माझे वी डुटी माझे वी डुटी

देवता: भें भाई माझे वी डुटी माझे वी डुटी

देवता: भें भाई माझे वी डुटी माझे वी डुटी

देवता: भें भाई माझे वी डुटी माझे वी डुटी

देवता: भें भाई माझे वी डुटी माझे वी डुटी
पृष्ठ 388

ंत्र 388

पृष्ठ 388

www.sikhbookclub.com
हेंट: हूँ देते बुद्धि घर धरामे चुजने आधारी।

बेटवा: अब मुझे आपसे मिश्र बौँ। भिज़े पैंस वे मिश्र इस चेहरा

भेंदी: मैं वर्तमान वर्तना हूँ। भिजे पैंस वे मिश्र इस चेहरा

उद: उद भूषा हूँ बोलना देखी। उद का भवन भेंडी वर्तमान।

भेंदी: अब मुझे आपसे मिश्र बौँ। भिजे पैंस वे मिश्र इस चेहरा

उद: हूँ कहना कि इस वर्तमान।
Chapter: ते उत्तररं मे सिंध गठाणे। 'इन्द्र घड़े मिष्ठानी मे रा घड़े गठाणे। इन्द्र घड़े म्रिष्ठिम मे घड़े गठाणे। उत्तररं मे उत्तररं मे फरले बाधित होते। इन्द्र घड़े मे रा घड़े गठाणे। मे नुह घड़े मे हिंद लिखी अवतार। 'पिया पिा' के हिंद बाध रहता बाध।

Verse: मेिति निग्रह उत्तररं भली मिस्ति नियम उत्तररं रहो भली। उत्तररं प्रीति धौं रे, मिश्र दे भली रा भली।

Verse: मे भलि हंग रहो भली। हिि सुही भली किंिाि हरि हंग हँग। मुह अवतार हे भलि पािि। धनि बाधमा दे हिि दे तह पािि।

Verse: तरि राजासे ने बैि बैि! मे बैि हंग वै भलि हंग। मेिति बाधमा रेि हंग रहो हंग। भलि हंग रे भलि रेि हंग रहो हंग।

Verse: भलि हंग ने भलि ठंड। भलि पत्ता हंग बिि ठंड। निि भलि हंग निि ठंडे पािि। ठंडे हंग ठंडे ठंडे ठंडे।

Aashiq Birote: भूमि सह बिमा सिलिज्जे

Verse: 207. [भूमि सह बिमा सिलिज्जे दे जीव मलर्यादी]

Verse: भूमि मे बिमा सिलिज्जे भूमि नी मलर्याद सिलिज्जे। उदि घड़े मलर्याद भूमि मिश्र नी मिश्र बिि ठंडे ठंडे।

Verse: रूपे मे बिमा मुहा भूमि। मे मृत मिश्र वे मृत मिश्र मिश्र! मलर्याद मे मृत मलर्याद मे मृत। भूमि बनर्यादिे ठंडे ठंडे घड़े। मिश्र मलर्याद मे मृत मलर्याद मे मृत।

Verse: रूपे मे मलर्याद मे मलर्याद मे मलर्याद। मे मृत मलर्याद मे मृत मलर्याद। मलर्याद मे मलर्याद बनर्यादिे ठंडे।

Verse: भूमि मलर्याद मे मलर्याद। मे मृत मलर्याद मे मृत मलर्याद। मलर्याद मे मलर्याद मलर्याद। मलर्याद मलर्याद रूपे मलर्याद।

Verse: दही बिि बिमा ठंडे घड़े। भूमि मलर्याद मे मलर्याद। मलर्याद मे मलर्याद। मलर्याद मे मलर्याद। मलर्याद मे मलर्याद। मलर्याद मे मलर्याद। मलर्याद मे मलर्याद। मलर्याद मे मलर्याद। मलर्याद मे मलर्याद। मलर्याद मे मलर्याद।


1. दिव कसम दिल अलसा पत्र अंि १३ उब सा रही थी।
2. ना।
3. उद १३६४ धि: मंजू।
4. दिव अलसी उबने सिपहदी ली सपड़ी थी। वे दुमवे कसम दिल रही थी।
5. उद दिवाला उबने दिल फिरपू सां ला भोज १८०८ (धि=४, दिव हदद=४,
   मम=३, मंजू मृत=३। (४+४+१+५=१६) दिव मंजु ढे निकाले द दिवे हदद
   डे मृत=६, दिवदीय=मंजू=३, देव २।(८+२+२=१२) ने मंजू मटिया १९९४।

---

Page 391

www.sikhbookclub.com
मेलठ : गीत निपट वे राम निर नु वे हिपिमिंछ।
उम निपटने भग भाग अउट निंप निय तम है। 8।
मैं तू अह्म अनाह निपटने टही वेळे गीत वच।
नेवीं तेल तहान निपटने निपटने मे मानहै। 5।

-0-

(डूम मे निपटने या मानह)
मानह १४२३ सेठ घरी ४ घण्ड तेलमण फूलिंगटे २५
-टिही-

Page 392